(अनिरुद्ध पाण्डेय

बीती रात
सबेरा आया

आवेदन

'पन्ना पुखराज' की कहानी सन् १६३० मे १६३७ तक के स्वतंत्रता संघर्ष पर आधारित थी। उसी क्रम मे 'बीती रात सवेरा आया' सन् १६३६ से १६४७ तक के स्वतंत्रता सग्राम की कहानी है। आजाद हिन्द फौज की ऐतिहासिक क्रान्तिकारी भूमिका कथा की संजीवनी है। युद्ध की इतिवृत्तात्मकता बडी कठोर होती है। उपन्यास की सरस विधा मे मिल कर भी उसका मूल धरातल बदलता नही। फिर भी पाठक देखेंगे कि प्रस्तुत कहानी बडी मनोरम और हृदयग्राही बन गयी है। तत्कालीन भारतीय जनमानस की वृतियो का इसमे बडा ही संश्लिष्ट और रोचक चित्र उभारा है। सच तो यह है कि प्रस्तुत उपन्यास युद्ध, यौवन और जीवन का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्र बन पड़ा है। युद्ध विषयक साहित्य मे इस विशेषता के कारण प्रस्तुत उपन्यास भारतीय साहित्य की अनमोल निधि है।

दूसरे विश्व युद्ध के वर्षों मे मुझे बर्मा के सरहद्दी प्रदेशो और दक्षिण पूर्व एशिया के कितने भूभागो मे रहने का सुअवसर मिला। इधर उन पुरानी स्मृतियों को ताजा करने के लिए मुझे दो बार बर्मा की सीमा मे मिले नागा प्रदेश की यात्रा करनी पडी। वहीं, कोहिमा मे, यह उपन्यास पूरा हुआ। हिन्दी टाइप की वहाँ सुविधा नहीं मिली। अत उपन्यास की पाण्डुलिपि जैसी लिखी गयी वैसी ही रही। उसे दुबारा जाँचने, घटाने-बढ़ाने का मौका नही मिला।

मैं कितना चाहता हूँ कि उपन्यास आसामी और नागामी भाषाओ मे भी प्रकाशित होता। उससे आसाम और नागालैण्ड के सहृदय मित्र तथा विद्वान मेरे प्रस्तुत प्रयत्न को स्वय पढ पाते। उनमे कथावस्तु के बारे मे मेरी विशद चर्चा हुई थी। लेकिन पैंतीस वर्षों के बाद भी राष्ट्र भाषा हिन्दी अभी भारत के हर भू-भाग में पूरी तरह प्रतिष्ठित नहीं है। मैं शुभेच्छु मित्रो से क्षमा याचना ही कर सकता हूँ।

यह कम अचरज की बात नही कि मुट्ठी भर अंग्रेज व्यापारी छल और धोखा तथा हमारी आपसी फूट से भारत के शासक बन बैठे। उन्होंने भारतीय सैनिकों के बल पर ही समूचे देश पर अपना अधिकार जमा उसे दासता की जंजीरों मे जकड़ रखा। उस महान कलंक को आज़ाद हिन्द फौज के वीर सेनानियो ने समूल धो दिया। वही अंधेरा मिटा कर उजाला लाये। मेरी बडी अभिलाषा है कि उन

अमर सेनानियों या उनके वंशजों के पास प्रस्तुत कृति जरूर पहुँचे। वे सुदूर भविष्य के किसी काल में भुलाये नहीं जा सकते और वे हमेशा देश के प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे। जेनरल शाह नवाज़ खां की सुप्रसिद्ध पुस्तक 'आज़ाद हिन्द फौज' से उपन्यास लिखने में बहुत मदद मिली। उनके प्रति आभार न व्यक्त करना अकृतज्ञता होगी।

दीपावली १९८३

—अनिरुद्ध पाण्डेय

सन् इकतालीस का साल बीत रहा था। फ्रान्स की दुर्भेद्य मैजिनो लाइन (जर्मनी की सरहद पर बनायी गयी रक्षा पंक्ति) कब की टूट चुकी थी। फ्रान्स पर अधिकार कर हिटलर की फौजें इंगलैण्ड की ओर मुँह किए 'इंगलिश चैनेल' के फ्रान्सीसी किनारे पर डटी थी। जर्मनी के हवाई हमलों से इंगलैण्ड के निवासियों का जीना हराम हो गया था। राजधानी लंदन का सारा काम-काज ज़मीन के नीचे खोदी गयी खाइयों, गुफाओं और तहखानों में लुक-छिप कर चल रहा था। हिन्दुस्तान युद्ध के मैदान—योरोप—से बहुत दूर था। हिन्दुस्तान इंगलैंड के अधीन था। उसने हिन्दुस्तान को भी युद्ध में झोंक दिया था। नगर नगर में फौज की भर्ती के दफ्तर खुल गये थे। जगह जगह किसानों की खेती की जमीनों पर छावनियाँ बनायी जा रही थी, हवाई अड्डे बनाये जा रहे थे। देश-विदेश की फौजें हिन्दुस्तान लायी जा रही थी। जन-जीवन त्रस्त था। कीमतें बेतहाशा चढ़ने लगी थी। भूखे भारत में चारों ओर दुर्भिक्ष, महामारी और पेट की त्राहि त्राहि मची थी। बंगाल की दशा भयावह थी। पेट की ज्वाला में भुनकर आदमी अपने को बेच रहा था। लाज, शर्म, हया भूल गयी थी। काला बाजारी, चोर बाजारी, घूसखोरी, बेईमानी और लूटपाट का ताण्डव शुरू हो गया था। अंगरेजी सरकार को अपनी लेनी की देनी पड़ी थी। उनके छक्के छूट रहे थे। उन्हें हिन्दुस्तान की नंगी भूखी मानवता से कभी कोई वास्ता नहीं रहा था। दुर्भिक्ष, अकाल इस संकट में उनके सहायक सिद्ध हो रहे थे। अंगरेज की लड़ाई सदा से हिन्दुस्तानियों की भूख पर ही लड़ी गयी।

निम्न मध्यम वर्ग के पढ़े-लिखे लोगों की जान सांसत में थी। अमीर, उमरा, रईस भी कम सन्तप्त नहीं थे। व्यवसायी, बड़े या छोटे, अनैतिकता के प्रवाह में बेरोकटोक बह रहे थे। बीते कल की दीवारें गिर रही थी, आने वाले कल का भरोसा नहीं था। सभी गोता लगा रहे थे—अपना अपना कोठा भर रहे थे। लूट खसोट की बाजारें गर्म थी। साधारण जन ही नहीं असाधारण भी इसी पटराग में बह रहे थे।

जैसी बहे बयार पीठ तब तैसी कीजे, कुटिल जनों के इसी मंत्र को सभी अपना रहे थे।

बनारस के चौक की मुंशी बाबू की ऊँची हवेली में इसी देश काल की चर्चा चल रही थी। बनारसी साड़ियों के दलाल और कारबारी जुटे थे। दूधिया ठण्ढाई छन रही थी। मघई पान के बीड़े मुंह में दबा कर बाबा विश्वनाथ की बलैयां ली जा

रही थी। मुंशी बाबू के जिगरी दोस्त त्रिभुवन प्रसाद पण्डा ने अपनी गर्दन को मोड़ कर एकाएक कहा,—"महाभारत हुआ था। उसमें भारत गारत हो गया। कलियुग उसी के बाद आ पहुँचा। यह सर्वग्रासी महायुद्ध दुनिया को खत्म करके छोड़ेगी। प्रलय का अनहद गूंज रहा है। कोई नामलेवा नहीं बचेगा।"

मुंशी बाबू ने अपने विशिष्ट अन्दाज़ में मुस्कुराते हुए कहा,—"जरमन के पास अग्निबाण है। इस बार आदमी की परछायीं भी नहीं बचेगी। लंदन, सुना, तहस-नहस हो गया।"

कालिका राय जमे बैठे थे। शेर बोल उठे,—'आशिक का जनाजा है, ज़रा धूम से निकले।'

मिसरा सबको पसन्द आया। सब ही ही कर दाद देने लगे।

सुकवि विदीर्ण ने दो की जगह पान की चार गिलौरियां मुंह में दबायी थीं। बनारस का पान खाया नहीं चाभा जाता है। कवि जी ने मुंह में दबाये बीड़ों को चाभ कर इस आशय से कि वह कालिका राय से पीछे न रह जायँ, कहा,—"चक्र शैतान ने है तेज़ चलाया अब के।"

कालिका राय ने ही दाद दी,— "विशेशरगंज के भाग जग गये। गाड़ियां लद कर दनादन कलकत्ता भाग रही है। जौ, चना, सोने के भाव बिक रहा है। लाला वित्तूमल करोड़पति बन गया। उसका मुनीम हरप्रसाद, वह छंटा बदमाश, लाखों से खेल रहा है।"

"हरप्रसाद का बाप कल तक कुंज गली में बन्ने रंगरेज के यहाँ दहाड़ी पर रंगायी करता था।"—मुंशी बाबू ने किसी ध्यान में खोये हुए मानो भेद की बात कही।

"अरे, हरप्रसाद भी शकरकंदी का खोंचा लगाता था। मैंने ही पन्द्रह रुपल्ली पर उसे वित्तूमल के यहाँ नौकर रखाया। वह नम्बरी चार सौ बीसिया है। बालों में खिजाब लगाता है, हाकिम हुक्कामों को डाली भेजता है। दरोगा के साथ 'वार फण्ड' में चन्दा वसूल करा रहा है। दोनों की पाँचों घी में हैं। मिस्टर फिशर ने उससे हाथ मिलाया ......।"—लाला गोपालदास ने, साड़ियों के प्रमुख व्यापारी, व्यंगोक्ति कसी। हर प्रसाद ने कभी उनको चूना लगाया था।

"अरे, एक हरप्रसाद हो तो कहा जाय। विशेशरगंज में जो कल कौड़ी कौड़ी का मोहताज था, आज लाला बना बैठा है। दमड़िया ने कलकत्ता में आढ़त खोल ली है। यहाँ खरीदता है वहाँ बेचता है। कापी बही में माल नदारद दिखाता है। कहता है, जापान हिटलर की ओर खड़ा हो गया है। वह बर्मा पर धावा बोलने ही वाला है। तब वह चाँदी सोने के महल में रहेगा"—कालिका राय ने विदीर्ण पर रोब जमाने के लिए दमड़ी साहु की कारस्तानी सुनाई।

सुकवि उन्नीस कैसे रहते? आँखें नचाकर बोले,—"सारी दुनिया पागल हो रही है। अरे, सोने की लंका जल कर भस्म हो गयी थी। ये चोर बाजारिए क्या

रुपयों से अपनी चिता फूकेंगे ?'

मुंशी बाबू ने बात काटी,—"दुनिया रसातल को जा रही है। आपने सुना नहीं, कल एक गोरे ने छावनी में जबरदस्ती एक देहातिन से अपना मुंह काला किया ?'

"कब, कैसे ?"—सुकवि विदीर्ण घटना का विवरण जानने के लिए अधीर हो उठे।

"हरौआ की ओर से किसी गाँव की औरतें गंगा नहाने आयी थी। नहा कर, विश्वनाथ जी पर जल चढ़ा कर, वे गाँव वापस लौट रही थी। दोपहरी बीत चुकी थी। स्टेशन के पार छावनी मे उस समय वैसे ही सुनसान रहता है। औरतें एक रिक्शे मे थी। गोरा अपनी बैरक से निकल कर रिक्शे पर झपटा। एक युवती को खीच ले गया। रिक्शा वाला दूसरी सवारियों के साथ भागा। गोरो के आतंक से पास-पड़ोस के लोग घरो मे छिपे रहे। पुलिस ने साँझ बीते युवती को उसके घर पहुँचाया।

मुंशी बाबू ने विवरण इतनी रोचकता से सुनाया कि सबकी साँसें टँगी रही। बनारसी रेशम के रंगीले व्यापारी घुटे मेहरा ने जो अब तक चुप बैठे थे, कहा,— "भगवान जिसका नाश करता है उसकी बुद्धि पहले हर लेता है।"

कालिका राय उबल कर बोला,—"ये विडालाक्ष रावण के पुत्र नारतक की सन्तान है। इनका राक्षसपन जल कर राख हो जायेगा। वह घड़ी अब आ गयी है। क्यों विदीर्ण, तुम्हारी क्या राय है ?"

सुकवि विदीर्ण अगरेज जाति का इतिहास नही जानते थे। उन्हे अपनी ही जाति का इतिहास कहाँ मालूम था ? कालिका राय की खोज पर कुछ भी कह पाना उनके बस के बाहर की बात थी। असल मे विडालाक्षो की बात कह कर कालिका राय ने विदीर्ण पर ही वार किया था। सुकवि भर्ती के दफ्तर मे हाल ही मे सम्पर्क अधिकारी नियुक्त हुए थे। उनका प्रमुख काम फौज मे भर्ती और 'वार फण्ड' के लिए प्रचार करना था। उनको इस काम के लिए साठ रुपया महीना वेतन मिलता था, भत्ता अलग। ऊपर से भर्ती वाला कप्तान हफ्ते मे एकाध रम का पौवा दे देता था। सुकवि को नया रसास्वादन मिला था, जीवन मे नयी गरिमा ने प्रवेश किया था। उनकी देशभक्ति, समाज सेवा, काव्य-साहित्य-साधना, मित्र राष्ट्रों की विजय पर समर्पित थी।

कालिका राय की व्यंग बरषा से सुकवि मन मसोस कर रह गये। कुछ कहने के लिए वे अपना दिमाग कुरेद रहे थे कि कालिका राय ने आगे कहा,—"काटन मिल के सोनी के यहाँ जल्सा है। चलते हो ?"

मुंशी बाबू भी वहाँ निमन्त्रित थे। वे बोले,—"मुझे भी वहाँ पहुँचना है। निपट कर सीधे वहाँ जाऊँगा।"

मण्डली उठ पड़ी। नीचे सड़क पर कालिका राय ने विदीर्ण से कहा,— "सोनी के जल्से में जुहिया नाचेगी। वहाँ चलने से पहले आँखों को मद-रस से सरा-

चोर करना जरूरी है।"

सुकवि सदासुहागिन की तरह आँखों को रतनार करने के लिए हर क्षण तैयार रहते थे। उन्होंने कालिका राय की ओर आह्लाद से देखा। वे सीधे पंडित मूलचंद की अंगरेजी शराब की दुकान पर पहुँचे। वहाँ से थर्ड क्लास रम का एक अध्धा खरीदे। कालिका राय ने दाम भरा।

"किसी होटल में बैठा जाय।"—कालिका राय ने सुझाव दिया। सुकवि बोले,—"नेपाली पोखरे वाले के यहाँ चला जाय। कहीं से एक छोकड़ी लाया है। बला की हसीन है।"

नेपाली पोखरे वाले शर्मा का नाम कालिका राय ने सुना था। उसे कहीं देखा भी था। वह औरतों की खरीद-बिक्री का धंधा करता था। कालिका राय कितना भी तो सोने-चांदी का व्यापारी था। शर्मा के यहाँ जाने के लिए उसे उत्साह नही हुआ। विदीर्ण ने जोर देते हुए कहा,—"राय साहब, चल कर देखो तो! लार न टपक पड़े तब कहना।" कालिका राय ने सुकवि को घूर कर देखा और इच्छा के खिलाफ उनके साथ चल पड़ा।

शर्मा घर पर ही था। कालिका राय के बारे में उसे जानकारी थी। इतना मोटा आसामी विदीर्ण जैसे लुच्चे के संग उसके यहाँ आया, इससे वह चकित हुआ। व्यवहार में उसने आंच नहीं आने दी। खड़े होकर बड़े आदर भाव से स्वागत करते हुए बोला,—"धन्य भाग्य, राय साहब, आज सूरज पश्चिम में कैसे?"

कालिका राय संकोच में पड़कर मस्ती से बोला,—"आजकल पश्चिम का ही बोलबाला है।"

शर्मा ने दुबारा अपना भाग्य सराहा और चाय-पानी के लिए निहोरा किया। सुकवि का हाथ जेब से अध्धा निकाल लाया। उन्होंने आदेश के स्वर में शर्मा से कहा,—"गिलास और पानी मंगाओ।"

तीन मटमैली गिलासें और वैसे ही हरे जग में पानी आया। विदीर्ण ने बड़ी ललक से तीनों गिलासों में बराबर-बराबर ढाला, पानी मिलाया, एक-एक गिलास सबके सामने रखा। अपनी गिलास को उठा कर उसने 'जय बम भोले' कहा और गिलास को होठों से लगा लिया। उसके रम पीने के अन्दाज से कालिका राय उत्फुल्ल हुआ। बोला,—"विदीर्ण भर्ती के दफ्तर में जाकर निखर आया है।"

सुकवि ने उक्ति को अपनी प्रशंसा समझा। उन्होंने गम्भीर भाव बना कर कहा,—"हिन्दुओं का असली पेय रम ही है। ऋषि लोग सोम रस पी कर समाधि में रम जाते थे।"

"तुम कहां रमते हो?"—कालिका राय ने परिहास किया। सुकवि हंसे। जवाब में बोले,—"आज कल चांदी कट रही है। भर्ती के लिए अच्छे लोग मिल नहीं रहे हैं। भर्ती अब सबके लिए खोल दी गयी है। रोज दस-बीस चूड़े-चमगादड़ आ ही जाते हैं। फी आदमी एक रुपया अपने राम को मिलता है।"

"असली चादी काटनी हो तो मेरे साथ कलकत्ता चलो।"

"कलकत्ता मे क्या है ?"

"क्या नही है ? वहा की माटी भी सोना उगलती है। एक से वहा हजार बनता है। साहस चाहिए।"—कालिका राय ने दात निपोरते हुए कहा।

"कैसे ?"—शर्मा ने पूछ लिया।

कालिका राय ने गिलास की रम को गटगट खाली करते हुए कहा,—"वहा फौज को सब्जी, अडे, फल और नमक मसाला देने का मेरा ठीका है। मेजर ब्लैक सप्लाई डिपो का इन्चार्ज है। आदमी लालची है, रुपये मे चार आना लेता है। शराब, सूखे फल, मेवा आदि ऊपर से, डाली मे। इतना कोई अपने पास से दे तो ठीकेदारी हो चुकी है। बहुत कुछ करना पड़ता है। रोज हजारो का वारा न्यारा होता है। दूसरे ठीके भी हैं। जितना गुड दो उतना ही मीठा होगा। कलकत्ता मे क्या नही है ? कल पर कलकत्ता, उसकी सत्ता अलबत्ता।"

शर्मा ने ललक से कालिका राय को निहारा और ऊँची आवाज लगायी,—"गरमागरम पकौडिया भेजना।"

शर्मा की बीवी या वह जो कोई भी रही हो पकौडियों की तैयारी पूरी कर चुकी थी। शर्मा की आवाज पर उसने छानना शुरू कर दिया। मिनटो मे ही एक मृगनयनी युवती, बनाव-शृंगार किए, तश्तरी मे प्याज की पकौडिया ले कर आयी।

शर्मा ने परिचय कराया,—"कवि जी को तो तुम जानती ही हो। ये राय साहब है। ठठेरी गली मे इनकी जौहरी की दुकान है।"

जौहरी की दुकान का जादू जमा। वह रुक गयी और छोटी-छोटी तश्तरियों मे पकौडिया परोसने लगी।

रम का दूसरा दौर खत्म हो रहा था। सुकवि विदीर्ण उस युवती के आचल पर आखे गडाये थे। कालिका राय कुशल जौहरी की तरह सोच रहा था कि अगर शील स्वभाव की अच्छी हुई तो लोहता का काम बन जायेगा। बढती जवानी है और रूप भी कम मोहक नही।

रम की बोतल खाली हो गयी थी। कालिका राय काटन मिल जाने का विचार छोड चुका था। वह और पीना चाहता था। उसने विदीर्ण से कहा,—"तुमने लिया भी तो अध्धा।"

शर्मा बोल पडा,—"राय साहब, आपके सेवक के पास भी एकाध रहती है।" साथ ही उसने आवाज लगायी —"आलमारी मे बोतल रखी है। दे जाना।"

जो बोतल लेकर आयी वह अधेड उमर की थी। शर्मा ने बताया,—"मेरी बीवी है।"

बीवी वह जरूर थी। चुपचाप बोतल रख कर बिना बोले भीतर चली गयी।

जब नयी बोतल की पुरानी शराब का पहला दौर चला तब कालिका राय ने आखे गडाते हुए उस युवती से पूछा,—"छम्मो, तुम्हारा नाम क्या है ?"

सम्बोधन पर सभी विस्मित हुए। युवती सकपकायी । कालिका राय ने दुगुने जोम से पूछा,—"राजा, अपना नाम तो बताओ।"

युवती के लिए नाम न बताना अब असम्भव हो गया। उसने लाज से भर कर कहा,—"मुझे अंगूरी कहते हैं।"

"क्या खूब, मद से छलकता हुआ नाम है। कहां की रहने वाली हो ?"

शर्मा की आंखों में आपत्ति आ झलकी । तब तक युवती ने बताया,—"डुमरियागंज की।"

"कौन जाति हो ?"

"मेरा बाप ब्राह्मण था ?"

कालिका राय ठठा कर हंसा। मां चाहे जो हो, जाति बाप से ही चलती है। कौटिल्य का यही विधान था। उसने आगे पूछा,—"कुछ पढ़ना लिखना जानती हो ?"

युवती सिर हिला कर नहीं कहने जा रही थी कि शर्मा बोल पड़ा,—"कल कचौड़ी गली से इसके लिए तोता मैना की किताब खरीद लाया हूं। यह पढ़ना सीख रही है।"

युवती कालिका राय की परीक्षा में पास हो गयी। उसने शर्मा से कहा,—"इसे जब तक मैं कुछ न कहूं संभाल कर रखना। पढ़ा गुना लो, कुछ अदब कायदा भी सिखा दो। अच्छी कीमत मिलेगी।"

शर्मा मुंह ताकता रह गया। सुकवि विदीर्ण जो अब खासे नशे में थे आंखें फाड़-फाड़ कर कालिका राय को देखने लगे।

कालिका राय ने बोतल को गिलास में उड़ेल लिया, बिना पानी मिलाये गट-गट घोंट लिया और उठ खड़े हो विदीर्ण से पूछा,—"यहीं मरेगा या चलेगा ?"

विदीर्ण के उत्तर की परवाह न कर, शर्मा के हाथों में कुछ नोट थमा, कालिका राय चल पड़ा। सुकवि पीछे पीछे भागे।

नेपाली पोखरे से बाहर ज्ञानवापी पर पहुंच कर कालिका राय ने विदीर्ण से कहा,—"कल शाम को मिल जाना" और मदमत्त हाथी सा अपना रास्ता नापने लगा।

•

बनारस से दस मील पश्चिम लोहता में नया हवाई अड्डा बन रहा था। कई गांव के किसानों की खेती की हजारों एकड़ जमीनें सरकार ने हवाई अड्डे के लिए अधिग्रहण कर लिया था। गरीब किसान दर-दर के भिखारी बन रहे थे, गांव उजड़ रहे थे। लड़ाई लड़ने के लिए हवाई अड्डा का बनना जरूरी था। किसान कलक्टर के पास फरियाद करने गये। अंग्रेज कलक्टर ने उनकी कुछ नहीं सुनी। उल्टे कहा,—"जमीनों का मुआवज़ा मिलेगा, हवाई अड्डे पर काम मिलेगा, फौज में नौकरी मिलेगी। यह सब क्या कम है ?" किसान क्या कहते ?

हवाई अड्डे का निर्माण भारत सरकार के एक वरिष्ठ इंजीनीयर की देख-रेख में हो रहा था। वह अंगरेज था। उसकी सुख सुविधा और मदद के लिए हिन्दुस्तानी इंजीनीयरों और दूसरे अधिकारियों की पूरी फौज तैनात थी। इस फौज के इन्चार्ज एक वरिष्ठ डिप्टी कलक्टर थे। उनकी राजभक्ति से प्रसन्न होकर अंगरेज सरकार ने उन्हें 'राय साहब' की पदवी से विभूषित किया था। उनका नाम था राय साहब ओंकार नाथ। उनकी उम्र अड़तालीस को छू रही थी। अब वे अधेड़ हो चुके थे। तबियत अभी पहले सी जवान थी। उनका रुतबा था। उनकी बात, तकनीकी मामलों को छोड़ कर, सभी पर असर रखती थी। कलक्टर, कमिश्नर, जेनरल तक उनकी पहुँच थी। उनका पूरा दबदबा था। उन्हीं राय साहब से कालिका राय का काम पड़ गया था।

धन की चाट जिसे लग जाती है वह अधिक से अधिक धन बटोरने का छोटा से छोटा मौका भी चूकता नहीं। पूंजी की परम्परा में धन का यही चलन है। कालिका राय ने लोहता अड्डे की सड़क और 'हैंगरों' (वह बड़ा हाल जिसमें बड़े हवाई जहाज रखे जाते हैं) के ठीके के लिए आवेदन का रूप पत्र भरा था। दोनों काम की अनुमानित आय लगभग बीस लाख थी। सरकार के ठीके में अपना धन कम लगाना पड़ता है। चालू भुगतान के नियम से सरकार से ही अधिकाधिक धन किए गये काम के बदले या अग्रिम भुगतान के रूप में मिल जाता है। न हर्रे लगे न फिटकरी, रंग चोखा। इन ठीकों से कालिका राय को कम से कम दस लाख के शुद्ध लाभ की आशा थी। इस ठीके को वह कदापि नहीं छोड़ सकता था। राय साहब ओंकार नाथ की मर्जी से ही यह ठीके उसे मिल सकते थे—यह वह जानता था।

सुकवि विदीर्ण दूसरे दिन जब उससे मिलने आये तब उसने कहा,—"लोहता में ठीकों के लिए मैंने रूप पत्र भरा है। क्या तुम मेजर टामस से मेरा काम करा पाओगे?"

विदीर्ण ने आंखें फाड़ कर कालिका राय को देखा। वह मन ही मन सोचने लगा कि कालिका राय को कितना लाभ होगा और वह उन्हें कितना देगा। उसने कहा,—"टामस का लोहता से कोई वास्ता नहीं।"

"टामस साडर्स का जिगरी दोस्त है। साडर्स लोहता का सबसे बड़ा इंजीनीयर है।—"कालिका राय ने मुस्कुराते हुए कहा। उसे सुकवि की बुद्धि पर तरस आ रही थी।

"टामस नम्बरी है, ऊँचा लेता है। वही हाल साडर्स का सुनते हैं।"

"अरे कवि जी, हर अंगरेज हिन्दुस्तान में ऐसे ही पनपा। ठीकेदारी भी ऐसे ही पनपती है। उन्हें टटोलो। तुम्हारा भी हिस्सा रहेगा।"

सुकवि प्रसन्न होकर बोले,—"टामस को हिन्दुस्तानी छोकड़ियों का रोग है।"

कालिका राय इस जानकारी से बहुत खुश हुआ। उसने सुकवि से कहा,—"इतनी सालाबारी नर्सें हैं। किसी को ठीक कर।"

सुकवि अंगूरी के बारे में सोच रहे थे। उन्हें लगा कि कल जो कालिका राय ने शर्मा से अंगूरी को संभाल कर रखने के लिए कहा था वह इसी कारण था। अंगूरी कवि जी के हृदय मे हलचल मचा चुकी थी। उन्होंने सोचा कि टामस के बहाने शायद वह अपना उल्लू सीधा कर सकें। उन्होंने सुझाव दिया,—"इसके लिए अंगूरी अचूक निशाना रहेगी !"

"अंगूरी नयी है। शर्मा ऊँची कीमत लगायेगा। उसे दूसरे काम पर डालना है। टामस के लिए तू कोई नर्स बीन ला।"

सांस लेकर कालिका राय आगे बोला,—"इसी हफ्ते काम होना है। तू इसमें जुट जा। सारा खर्च मेरा।"

कालिका राय ने कवि जी को एक दस का नोट थमाते हुए कहा,—"छोकड़ी का खर्चा ले जाना।"

दस के नोट ने कवि जी को प्रसन्न कर दिया। उन्होंने काम बनाने का वादा किया।

कालिका राय उसी दिन घुण्टे मेहरा से मिला। उनसे राय साहब ओंकार नाथ से मिलाने का आग्रह किया।

घुण्टे मेहरा का, एक प्रमुख व्यवसायी के नाते, राय ओंकार नाथ से गहरा परस्पर था। घुण्टे मेहरा ठीक ठीक यह जानना चाहता था कि कालिका राय ओंकार नाथ से क्यों मिलना चाहता है ? उसने पूछा,—"ओंकार नाथ से क्या काम आ पड़ा ?"

"बड़ा काम है। तुम चाहो तो उसमें साथ रहो।"—कहते हुए कालिका राय ने मेहरा के हाथ पर हाथ मारा।

घुण्टे ने कुछ समझा, कुछ नहीं समझा। प्रसन्न भाव से बोला,—"कल सवेरे उसके यहाँ चलकर 'डि फ्रान्स' होटल में उसे खाने की दावत देंगे। बड़ा से बड़ा काम एक जाम पर तय होता है।"

कालिका राय ने मुस्कुराकर कहा,—"कलकत्ता में लंच या डिनर पर लाखों का वारा न्यारा होता है।"

लाखों का वारा न्यारा सुनकर घुण्टे मेहरा को अपनी बुद्धि पर तरस आई। उसने कालिका राय को ठोंक बजा क्यों नहीं लिया, उसका काम जान क्यों नहीं लिया ? बात वह हार चुका था। उसे पूरा करना ही था।

राय ओंकार नाथ ने दावत स्वीकार कर ली। घुण्टे मेहरा ने कालिका राय का परिचय कराते हुए बताया,—"ऊँची दुकान है।"

राय साहब खुश हुए कि उनकी जाल में एक और बड़ी मछली फँसी। शिकारी को और क्या चाहिए ? वह भी अंगरेजों की लड़ाई के इस सुयोग में जब चारों ओर लूट खसोट का ही नंगा नाच हो रहा था। घुण्टे मेहरा से उन्होंने बात बात में कभी कहा था कि जिसने इस अनमोल सुअवसर को खोया वह बुद्धि की बोरसी है, उसके

बच्चे उसके नाम पर थूकेंगे।

राय साहब ओंकारनाथ ने जब चलते समय कालिका राय से हाथ मिलाया तब उसकी पकड़ हार्दिकता की थी।

कालिका राय बेपढ़ा लिखा सही, उसकी बुद्धि पैनी थी। उसने उसी शाम ओंकारनाथ के पास अपने विश्वस्त मुनीम से ह्विस्की का बड़ा 'केस' भेजा। वह बिना हिचक स्वीकार हुआ। बड़ी मछली का रुतबा बड़ा होता है—राय साहब *ओंकारनाथ मन ही मन परम प्रसन्न हुआ।*

दूसरी शाम को होटल 'डि फ्रान्स' में दावत का सरंजाम विशिष्ट था। कीमती से कीमती विदेशी शराब थी, शैम्पेन था और फ्रान्स के बहुमूल्य 'लिक्योर' थे। पेय के साथ खाने के लिए टिक्का कबाब, अफगानी मुर्ग और तीतर का सलाद था। ओंकारनाथ फूल कर कुप्पा हो गये। उनका नशा सौगुना बढ़ गया। घुण्टे मेहरा इस विचार से अप्रतिभ था कि कालिका राय बड़ी आसानी से पहली ही बार ओंकारनाथ की निगाह में जम गया।

दस बजे तक पीना पिलाना होता रहा। ठण्डे मुल्क के रहने वाले अंगरेज अधिकारी इसके आदी थे और अपने देश और स्वजनों से दूर वह अपनी 'बोरियत' मिटाने के लिए खूब पीते थे। हिन्दुस्तानी अधिकारियों ने अपने अंगरेज आकाओं की भोंडी नकल क्यों की, यह समझने का विषय है। जो हो, खाना कमरे में ही आया। खाने के पकवानों को देख कर पूरे नशे में भी ओंकारनाथ के होश उड़ने लगे।

खाना इतने प्रकार का और इतने सुस्वाद का था कि पकवानों को क्रमवार *चखते चखते ही ओंकारनाथ को डकार आने लगी। खाना खत्म होते ही एक विशेष* 'लिक्योर' (फ्रांसीसी नशीला पेय) का दौर चला।

घुण्टे मेहरा ने बाजी अपने हाथ में रखने के लिए अपना तुरुप का पत्ता फेंका। उसने कालिका राय से कहा,— 'राय साहब को यह लिक्योर पिलाने के लिए साकी चाहिए।''

नशे में धुत्त राय ओंकारनाथ ने रसिकता दिखायी, कहा —' कयामत ढाने वाला साकी होना चाहिए।''

कालिका राय मुस्कुराते हुए उठा, होटल के किसी दूसरे कमरे में गया। वहाँ शर्मा धुत्त हो रहा था। अंगूरी बनाव श्रृंगार किए प्रतीक्षा कर रही थी।

शर्मा ने अंगूरी के लिए कपड़े-लत्ते के अलावे ढाई सौ नकद लिये थे। कालिका राय अंगूरी के हाव-भाव, श्रृंगार प्रसाधन, बनाव खिंचाव से खुश था। केवल उसे ऊँचे समाज का अदब कायदा नहीं मालूम था। इसीलिए उसने यह तय किया था कि जब ओंकारनाथ नशे में चूर हो जाय तभी अंगूरी का जल्वा उसकी आँखों में चमके।

जल्वा खूब चमका। ओंकारनाथ के साथ घुण्टे मेहरा भी उसे ताकता रह गया। पलकों में जैसे हरकत आयी वैसे ओंकारनाथ ने वह कृत्य किया जैसा होश में

अक्षर भैंस बराबर थे। श्याम सिंह सातवीं तक पढ़ा था। बरियार खाँ भी दर्जा चार पास था। उन्होंने अंगनू पंडित को चिट्ठी भेज दिया। उसमें उन्होंने लिखा कि अगले सोमवार की शुभ साइत में वह गाँव से चल पड़ेंगे और महीने भर में अहमदाबाद पहुँच जायेंगे। पंडित जी उनके लिए नौकरी का जोगाड़ बनाये रखें। महीने भर में पहुँचने की बात इसलिए लिखी कि उनके पास टिकट खरीदने का दाम नहीं था। उन्होंने पैदल चल कर ही अहमदाबाद पहुँचने का निश्चय किया। बनिये महाजन से उधार लेने पर भेद खुलने का डर था। घर वाले तब उन्हें जाने ही नहीं देते। वे किसी को भी बिना बताये चले जाना चाहते थे।

सोमवार को दो घड़ी रात रहते वे गाँव के बगीचे में पुराने महुए के पेड़ के नीचे अपनी यात्रा के सामान के साथ मिले। वह पेड़ पुराने जमाने से सिद्ध माना जाता था। किम्वदन्ती के अनुसार उस पेड़ पर किसी नेटुअवा बीर का वास था। यह उन्हें नहीं मालूम था कि नेटुअवा बीर किस योनि के थे। पुराने समय से ही मनो-वांछित फल पाने के लिए उन्हें गाजा की चिलम चढ़ायी जाती थी। श्याम सिंह ने गाजा खरीद लिया था। बरियार खाँ गाँव के कुम्हार के हाते से एक नयी चिलम चुरा लाया था। घास फूस जला कर उन्होंने आग बनायी. चिलम पर गाजा रखा और उसे पेड़ की जड़ में रख दिया। एकाध मिनट में ही चिलम से धुआँ निकलने लगा। चिलम नेटुअवा बीर को स्वीकार हो गयी—यह जान कर श्याम सिंह ने चिलम को हाथों में उठा दम खींचा। चिलम से लौ निकली। श्याम सिंह ने उसके पहले गाजा पिया नहीं था। उसका सिर घूम गया, आँखें जलने लगीं और खाँसते-खाँसते उसका दम फूलने लगा। बरियार खाँ ने तब चिलम पकड़ी। उसने 'जय सिद्ध पुरुष नेटुअवा बीर' का उच्चारण कर दम लगाया। वह तम्बाकू पीता था। उसका दम भी फूलने लगा। चिलम पूरी सुलग चुकी थी। बरियार खाँ चक्कर खा गया।

चिलम के जगने को दोनों ने नेटुअवा बीर का आशीर्वाद और शुभ-लक्षण माना। वे चिलम के बुझते ही उसे पोटली में संभाल, पेड़ के नीचे माथा टेक, प्रसन्न मन अहमदाबाद की ओर चल पड़े। गाँव के सीवान पर पहुँच कर श्याम सिंह की आँखों में उसका घर परिवार और नव विवाहिता पत्नी का मुखड़ा आ झलका। उसने पत्नी को भी कुछ नहीं बताया था। उसका मन भर आया। रोना चाह कर भी वह चलता रहा।

बरियार खाँ के मन में भी उसकी माँ आ समायी। वह चुपचाप श्याम सिंह के पीछे बढ़ता रहा।

ढाई मील की दूरी पर रेल का स्टेशन था। वहाँ वे सूरज की पहली किरणों के साथ पहुँचे। पास ही एक पोखरा था। वहाँ नित्य-क्रिया से निपट, स्नान कर, वे दाना-पानी करने के लिए प्लेटफार्म पर एक ओर आ बैठे। वे सुबह का कलेवा करना चाहते थे। बरियार खाँ खाने का कुछ सामान अपने घर से लाया था।

प्लेटफार्म के सामने चौरस मैदान में एक बड़ा शामियाना टंगा था। उसके चारों ओर रंग-बिरंगी झण्डियों की सजावट थी। वहीं शामियाने में लगा एक स्वागत-द्वार भी बना था जिस पर तोरण सजे थे और लाल रंग में अंगरेजी में सुस्वागतम लिखा था। पुलिस के वर्दीधारी सिपाही लाल पगड़ी बांधे वहाँ पहरा दे रहे थे। कुछ लोग आ जा रहे थे। शामियाने के अन्दर से हारमोनियम, ढोलक, झाल के बजने की आवाज आ रही थी। तब लाउड स्पीकरों का प्रचलन नहीं था।

वे दोनों दाना-पानी कर शामियाने की ओर तमाशा देखने आये। वहाँ उन्हें मालूम हुआ कि फौजी मेला लगा है। बनारस से दस बजे वाली गाड़ी से भर्ती का कप्तान, कलक्टर और डिप्टी के संग आयेगा।

श्याम सिंह ने उसी गाड़ी से इलाहाबाद तक बिना टिकट यात्रा करने की सोचा था जिससे वे घर और गाँव वालों की पकड़ से जल्दी ही बहुत दूर निकल जायें। गाड़ी में अभी बहुत देर थी। वे दोनों शामियाने के अन्दर आकर बैठ गये।

वहाँ अभी भीड़-भड़क्का बहुत नहीं जुटी थी। पास-पड़ोस के प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के लड़के अन्दर पंक्ति बद्ध बैठे थे। उनके मास्टर उन्हें शोर न मचाने की ताकीद कर रहे थे। सामने स्टेज पर एक अधेड़ उम्र का फौजी सिपाही हारमो-नियम पर मटक मटक गाना गा रहा था। उसका गाना बेसुरा था। ढोल मजीरा और हारमोनियम के असगत आवाज में वह चिल्ला चिल्ला कर गा रहा था— युग युग जिओ विक्टोरिया रानी।'

श्याम सिंह ने मुस्कुरा कर बरियार खाँ से कहा — साला विक्टोरिया रानी के जीने को मना रहा है। वह दशकों पहले मर चुकी। चलो प्लेटफार्म पर ही सुस्तायें।"

वे चले जा रहे थे कि एक वयस्क फौजी अधिकारी ने आकर उनसे कहा,— "तुम दोनों—उस दफ्तर वाले खेमे में चलो।'

दोनों हक्का-बक्का हुए। वे समझ नहीं सके कि उन्हें उस खेमे में क्यों ले जाया जा रहा है? वे सशंकित मन से खेमे में पहुंचे। अधिकारी वहां पड़ी मेज के बीचों-बीच एक कुर्सी पर बैठ गया। उसने पूछा —'तुम लोग कहां से आये?"

श्याम सिंह सहम गया था। उसने झूठ बताया — हम पड़ोस के जिले जौनपुर के रहने वाले हैं।"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"श्याम सिंह?"

"कहाँ तक पढ़े हो?"

"सातवीं तक।"

"और तुम्हारा नाम क्या है'

"बरियार खाँ।"

"तुम कहाँ तक पढ़े हो?"

'दर्जा चार तक।"

ठीक है। इस कागज़ पर दस्तखत करो।"—अधिकारी ने एक एक छपा रूपपत्र उन्हें दिया।

वे दोनों सोच रहे थे कि जाने किस विपत्ति में वे आ फँसे हैं। उन्हें रूपपत्र पर हस्ताक्षर करने से मना करने का साहस ही नहीं हुआ।

उनके हस्ताक्षर करते ही अधिकारी रूपपत्रों को लेकर बाहर चला गया। लोहता गाँव के पटवारी से उनकी शिनाख्त करा, उनके पिता, सकूनत आदि को रूपपत्र पर सही सही लिखा कर वह लौट आया। बोला,—"तुम दोनों फौज में भर्ती कर लिए गये। तुम्हें डाक्टरी के लिए अभी जीप से बनारस जाना है। तुम ऊँची जाति के हो। काम लगन से करोगे तो उन्नति कर मेरे जैसा बनोगे। मैं भी सिपाही भर्ती हुआ था। आज मुल्तान में सूबेदार करम इलाही, ओ० बी० ई० को कौन नहीं जानता?"

श्याम सिंह को घिग्घी बंध गयी। उसने किसी तरह हाथ जोड़ कर सूबेदार करम इलाही से कहा,—"हम फौज में भर्ती नहीं होना चाहते।"

सूबेदार ने सुनी अनसुनी कर आवाज लगायी। फौजी वर्दी में कमीज की बाजू पर तीन त्रिल्लों का निशान लगाये एक हवलदार भीतर आया। उसने एड़ी जोड़ कर सूबेदार को सलाम किया। सूबेदार ने उसे हुक्म दिया,—"हवलदार सरूपा, इन दो जवानों को सीधे बनारस ले जाओ। वहीं खिलाना पिलाना।"

हवलदार सरूपा ने दुबारा पहले की तरह सलाम किया, श्याम सिंह और बरियार खाँ को आगे पीछे खड़ा कर चिल्लाया,—'तेज़ चल' और उन्हें खींचते हुए बाहर ले गया।

शामियाने के एक ओर कई फौजी गाड़ियाँ खड़ी थीं। उनमें एक जीप में इन्हें ले जाकर बैठाया गया। जीप का चालक मौन साधे था। उसने इंजिन चालू किया। जीप बनारस के रास्ते पर दौड़ पड़ी।

जीप जब मीलों पार कर गयी तब हवलदार सरूपा ने अपना मुंह खोला,—"पिछले दो महीने में तुम दोनों ऊँची जाति के पहले जवान हो जो भर्ती के लिए आये। चूड़े-चमगादड़ों से नाक में दम हो गया है।"

"हम फौज में भर्ती नहीं होना चाहते।"—दोनों ने एक साथ ही कहा।

"तब कागज पर दस्तखत क्यों किये?"—हवलदार सरूपा ने कड़ी आवाज में कहा। दूसरी सांस में उसने आगे कहा,—"अब भाग भी नहीं सकते। कोर्ट मार्शल में गोली से उड़ा दिए जाओगे।"

श्याम सिंह और बरियार खाँ की नानी अब मरी। उनके होश खोने लगे। उन्होंने हाथ जोड़ कर हवलदार सरूपा से कहा,—"हमारे साथ धोखा हुआ है। हम लाम पर नहीं जाना चाहते। हमें बचाइये।"

दोनों की आँखें बहने लगीं। हवलदार सरूपा उनके साथ किए गये धोका को जानता था। भर्ती ऐसे ही हो रही थी। उसे अपने पेट की चिन्ता थी। नैतिकता

और आत्मबल गरीबी के पहले शिकार होते हैं। उसने कड़क कर कहा,—"इतना गबरू जवान होकर नाम से डरते हो।"

"डरते नहीं। हमारे सात पुश्त में डर नामक चिड़िया को किसी ने भी नहीं जाना······।"

श्याम सिंह की बात काट कर हवलदार सरूपा ने पूछा,—"फिर क्या बात है ?"

"गांधी महात्मा कहते हैं कि यह हिन्दुस्तान की लड़ाई नहीं। हिन्दुस्तान गुलाम देश है। हमारी पुरखों से चली आ रही जमीन को कलक्टर ने हवाई अड्डे के लिए छीन लिया है। हम कहीं के नहीं रहे····· ।"

हवलदार सरूपा ठठा कर हंसा। बोला,—"बेटा, भाग खुल गया तो तगमे पाओगे, ओहदा बढ़ेगा और जमीन इतनी मिलेगी जितनी जोत नहीं सकोगे। लायलपुर, सरगोधा, मुल्तान में जाकर देखो। फौजी लोगों की जमीन्दारियां बनी हैं। यहां भी साहू लोगों को कैसे धन मिला ?"

"लेकिन··········।" श्याम सिंह और बरियार खां फूट पड़े।

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं। तुम बादशाह की फौज में नौकरी करने का शपथ पत्र भर चुके हो।"

हवलदार सरूपा चार मीनार की सिगरेट जला कर पीने लगा। उसने पूछा जरूर,—'तुम लोग सिगरेट पीते हो।' उत्तर की प्रतीक्षा न कर वह कश खींचने लगा। श्याम सिंह और बरियार खां बिलखने लगे। बड़ी देर तक दोनों की आंखों से आंसू बहते रहे।

बनारस छावनी के अस्पताल में उनका डाक्टरी मुआयना हुआ। वे ठीक पाये गये। उन्हें लगर में चाय, पराठा और बिस्कुट खाने को दिया गया। खाने के बाद एक मजरी कमीज और पाजामानुमा मजरी का ही पैंट पहनाया गया, किरमिच का जूता और मोजा दिया गया। शाम को पूरा खाना खिलाया गया और रात की गाड़ी से फौजियों के लिए एक सुरक्षित डब्बे में उन्हें लाहौर के लिए रवाना कर दिया गया।

गाड़ी में चाय बिस्कुट फिर मिला। उसके बाद सब सो गये। श्याम सिंह और बरियार खां की आंखों में नींद आने का नाम नहीं ले रही थी। आधी रात बीतने पर श्याम सिंह ने पास लेटे बरियार खां से चुपके से कहा,—'नेटुअवा बीर यही चाहते हैं। क्या जाने हमारी बरकत इसी में हो।"

आगे कहने सुनने को कुछ बाकी नहीं रहा। दोनों रोते-रोते थक कर सो गये। लाहौर मेल रात के अन्धकार को चीरता तेजी से भागा जा रहा था।

लाहौर छावनी में पंजाब रेजीमेंट के केन्द्र के रंगरूटों की कम्पनी में वे प्रशिक्षण के लिए रखे गये। यहां पूरे फौजी कपड़े और बड़ा काला बूट मिला। उनकी साज सज्जा बदल गयी, उनका रहना, खाना-पीना, पढ़ाई, खेल कूद सब अनुशासन

बद्ध हो चला। सुबह से रात के सोने के समय तक उनके एक-एक क्षण का हिसाब था। कड़ी शारीरिक मेहनत, फौजी पढ़ाई और खेल कूद की व्यस्तता में उन्हें सोचने समझने को फुर्सत ही नहीं मिलती थी।

दोनों एक ही कम्पनी में थे, पल्टनें अलग-अलग थीं। श्याम सिंह हिन्दू राजपूतों की पल्टन में था, बरियार खां मुसलमान राजपूतों के। दोनों के लंगर अलग-अलग थे। बाकी सब काम शारीरिक कसरत, (पी० टी०), परेड, फौजी पढ़ाई, हथियारों की सिखलायी, उनका रख-रखाव, खेल-कूद, मनोरंजन आदि एक साथ थे। सब काम का और खाना, नाश्ता, चाय आदि का समय निर्धारित था। लड़ाई के कारण प्रशिक्षण के दो साल के 'कोर्स' को छः महीने में कांट-छांट दिया गया था। इसलिए प्रशिक्षण का आयोजन इतना पूरा था कि रविवार के अतिरिक्त किसी दिन किसी को कोई अवकाश नहीं मिलता था। शाम को खाने के बाद गिनती की परेड होती थी कि सब हाजिर हैं। गिनती पर बटालियन के और ऊपर के फौजी कमांड के आदेश पढ़ कर सुनाये जाते थे। उसके बाद रेडियो सुनो, फौजी अखबार पढ़ो, गप्प लड़ाओ या सोओ। नौ बजे बिजली गुल कर दी जाती थी। दिन भर की थकावट से चूर सभी घोड़े बेच कर सो जाते थे।

फौजी कवायद में व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं रह जाता। हुक्म का पालन करना पहला और आखिरी कर्त्तव्य है। हुक्म समझ में आये या नहीं वही सर्वोपरि है। उसे बिना मीन मेख के मानकर चलना ही श्रेष्ठ अनुशासन है। लोहे के चने अक्षरशः चबाने वाला कठोर परिश्रम का जीवन जवान को ठोंक पीट कर मशीन की तरह पक्का बना देता है। जब जैसा चाहो जो चलाओ। न चलाओ बन्द रहेगा। अंगरेजों की यही दूर-दर्शिता थी। इसी में वेतन मिलता था जिससे ग़रीब जवान और उसके परिवार का तन-पेट साथ चलता था।

प्रशिक्षण बहुत ही कड़ा था। पसीने नहीं जवानों के छक्के छूट जाते थे। श्याम सिंह और बरियार खां कभी पस्त नहीं हुए। जब लाख चाह कर भी उस जीवन को छोड़ नहीं सकते थे तो उसका पूरा सदुपयोग क्यों न किया जाय? उन्होंने निश्चयपूर्वक ऐसा ही किया।

ए कम्पनी का कमांडर कैप्टन स्काट था। वह स्काटलैंड का रहने वाला था। विनोदी स्वभाव का था। अपने को अंगरेज कहते सुन बुरा मानता था। नये रंगरूटों को वह अंगरेज और स्काट का भेद प्रेम से समझाया करता था यद्यपि सूबेदार मेजर जीवन खां गूजर के अनुसार वह भी बिडालाक्ष ही था। वह सिपाही से अफसर हुआ था। हर सीढ़ी का काम जानता था। और प्रशिक्षण की विधाओं का विशेषज्ञ माना जाता था। उसका अनुशासन बहुत कड़ा था। प्रशिक्षण की विभिन्न टोलियों में वह अकस्मात् प्रकट हो जाता था। लड़ाई की हर सम्भव मुसीबत, हर दाव पेंच, आक्रमण, बचाव, धोखा धड़ी, दुश्मन की आंखों में धूल झोंकना, कठिन से कठिन विपत्ति में अडिग रहना, बिना खाने के, बिना पानी के, डंटे रहने की अग्नि-

परीक्षात्मक अभ्यास आदि वह कराता रहता था। फौजी हिकमत अमली मे उसके कम सानी थे। उसकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक के सिखलायी केन्द्रो मे फैली थी। एक दिन गिनती पर उसने कम्पनी को सम्बोधन किया—'आप लोग बहादुर राजपूत जाति के है। राजपूत बात के धनी और आन के पक्के रहे हैं। उनका इतिहास रहा है कि चाहे गर्दन कट जाय उनके शौर्य पर दाग न लगे। महाराना प्रताप ने अपनी शौर्य की रक्षा के लिए कितना कष्ट नही भोगा। बहादुर योद्धा का यही बानक है। उसकी गर्दन कभी झुकती नही। राजपूतों ने कम्पनी के समय मे ही हमारी सरकार का अपूर्व बहादुरी मे साथ दिया। आप जिस पल्टन मे हैं उसने कम्पनी सरकार की लडाइया जीती। सन् चौदह के युद्ध मे उसने जर्मनी के दात खट्टे किए। तानाशाही जर्मनी आज दुबारा दुनिया के मित्र राष्ट्रो से जूझ पडा है। हमने उसको मिटा डालने की सौगन्ध बादशाह सलामत के नाम पर खायी है। हम राजपूत हैं। हममें से प्रत्येक अपनी सौगन्ध की प्राणपण से रक्षा करेगा। राजपूत बहादुरो, दुनिया के सभ्य राष्ट्रो की आँखें आज तुम्हे देख रही हैं। युद्ध के मैदान—रणतीर्थ—में या तो बहादुरी का यश मिलता है या स्वर्ग। तुम मे से प्रत्येक को अपना जौहर दिखाने का शुभ अवसर आ गया है। बादशाह सलामत जिन्दाबाद।'

जिन्दाबाद के जयघोष के साथ ही सूबेदार उमराव सिंह ने कडक कर आवाज दी,—"कम्पनी, सावधान।" एडियो के कडक की एक आवाज आयी। उमराव सिंह चिल्लाया,—"सलामी दो।" कम्पनी ने अपने कमाडर को एक गति, एक लय मे सलामी दी। स्काट ने भी कम्पनी को सलामी देकर अभिवादन स्वीकार किया। परेड छूट गयी।

स्काट लगर मे आकर अक्सर जवानो का खाना चखा करता था। संगरियो, भिश्तियो और जवानों से वह भाई चारे के व्यवहार से मिलता जुलता था। उसके देश मे सिपाही और अफसर मे उतना भेदभाव नही था जैसा अगरेजो ने यहाँ कर रखा था। लगर मे या जवानो के सग उसका स्वाभाविक गुण खुल आता था।

लम्बे पैदल मार्च मे भी वह उस जवान के पास जाने कहाँ से आ जाता था जो थक कर पीछे पड जाता था। उसकी वह हिम्मत बधाता था। एक बार प्रशिक्षण कम्पनी ने सौ मील का पैदल 'रूट मार्च' किया। ओढ़ने का कम्बल, बिछाने की बरसाती, पहनने के कपडो की दूसरी जोडी—पीठ पर के खाकी झोले मे लटकाये, राइफल और उसकी सौ गोलियाँ लिए, डब्बे मे दो दिन का पका सूखा खाना लिए, इलाके का नक्शा दूरबीन आदि से लैस होकर, सभी चल रहे थे। रास्ते में कही काल्पनिक आक्रमण या बचाव का जानलेवा अभ्यास करना पडता था। पानी की बोतल में पानी होते हुए भी बिना आदेश के पिया नही जा सकता था। इस तरह कठोर परिश्रम, कष्ट-सहिष्णुता और धैर्य की परीक्षा होती थी।

ऐसे रूट मार्च मे जब कम्पनी की दो दिन में सासें फूलने लगी तब अचानक काल्पनिक दुश्मन की झाड़ियो पर संगीनें तान कर आक्रमण करने का आदेश मि

२

आक्रमण में श्याम सिंह आगे रहा। उसके बाद सहज चाल में वह बेहद थक कर पीछे पड़ गया। स्काट जाने कहाँ से आकर उससे बोला,—"आगे बढ़ो, बढ़ते चलो। अच्छा सैनिक मन के बल पर बढ़ता है, पाँवों से नहीं। वह योगी होता है।"

श्याम सिंह उसके साथ-साथ चलने लगा। क्या तेज उसकी चाल थी। उसने श्याम सिंह से पूछा,—"तुमें यह जीवन कैसा लगा?"

"बहादुरी का जीवन है, हुजूर!"—श्याम सिंह ने नीतिपूर्ण जवाब दिया।

"तुम्हारे परिवार में पहले कोई फौज में रहा है।"

"नहीं, हुजूर।"

"कोई बात नहीं। तुमने श्री गणेश किया। राजपूत का जीवन रण-क्षेत्र है। उसमें वीरगति पर स्वर्ग और विजय पर राज्य मिलता है। इसलिए राजपूत संसार की सबसे बहादुर कौम है। अपने बादशाह की भक्ति, उससे बढ़ कर क्या कर्म है।"

श्याम सिंह सोचता रहा कि देश बड़ा या विदेशी बादशाह। हिन्दुस्तानी फौजों ने सन् सत्तावन के बाद स्वदेश के लिए क्या किया? वह क्षुब्ध हो जाता। स्काट की वह तारीफ करता कि अपने देश के लिए वह कितना प्रयत्नशील रहता है।

पढ़ा लिखा होने के कारण श्याम सिंह हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलनों से भी साधारण रूप से परिचित था। उसमें दिलचस्पी भी लेता था। पल्टन में फौजी अखबार के अतिरिक्त कोई समाचार पत्र पढ़ने को मिलता नहीं था। कभी-कभी शहर में किसी दुकान पर वह मिलाप देख लिया करता था। उसमें देश-काल की खबरें मिल जाती थीं। श्याम सिंह महात्मा गाँधी के इस कथन को सत्य मानता था कि यह लड़ाई हिन्दुस्तान की नहीं। सत्य और अहिंसा के पुजारी गांधी जी ने निहत्थे हिन्दुस्तानियों को खिलाफत के दिनों से ही किस प्रकार स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत किया, यह उसे मालूम था। उसकी कम्पनी के दूसरे जवान भी गांधी जी के कथन का प्रायः उल्लेख किया करते थे और आपस में चुपके-चुपके बातचीत किया करते थे कि हिन्दुस्तानियों को अंगरेजों ने बलि का बकरा बनाया है। वे स्वयं पीछे रहते हैं और हिन्दुस्तानी सैनिकों को अगली पंक्ति में कट मरने को धकेल देते हैं।

पड़ोस में गोरों की एक पल्टन थी—लंकाशायर रेजिमेंट। श्याम सिंह उनके रहने की सुविधायें, खान पान, कपड़े लत्ते आदि पर चकित था। उनकी तनख्वाह भी बहुत अधिक थी और सप्ताहांत में वे होटलों, रेस्तरां और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों पर अपने अधिकारियों के संग मनोरंजन के खेल कूदों, नृत्य और पार्टियों में बराबर की सामाजिकता से भाग लेते थे। हिन्दुस्तानी सैनिकों को उनके अंगरेज अधिकारी कुत्तों से भी गया बीता मानते थे। उनका यह भाव कभी भी अप्रकट नहीं रह पाता था।

एक रात श्याम सिंह की कम्पनी कमांडर के बंगले पर चौकीदारी की ड्यूटी लगी। स्काट के गोल कमरे में कई अंगरेज अफसर अपनी पत्नियों, प्रेमिकाओं के संग चहक रहे थे और शराबों के जाम पर जाम पी रहे थे। आपसी बातचीत में

लड़ाई का लेखा-जोखा चल पड़ा। मिस्र के मैदान में जर्मन जेनरल रोमेल ने अंगरेजी सेना का भारी नुकसान किया था और उसे भागने के लिए विवश कर दिया था। इसमें हिन्दुस्तानी सेना की चौथी डिविजन भी थी। वह अगली पंक्ति में कट मरी थी। बची खुची टुकड़ियाँ सबके संग पीछे आ गयी थीं। उसी की एक अंगरेज मेजर चर्चा कर रहा था,—"अब हिन्दुस्तानियों पर भरोसा नहीं किया जा सकता।"

स्काट की उक्ति थी—"वाइसराय और अंगरेजी सरकार ने हिन्दुस्तानी कुत्तों को जरूरत से ज्यादा मुह लगा लिया है। इस बड़े देश को हमने हिन्दुस्तानियों की सेना से ही जीता। अब रोज गांधी से बातचीत का एलान होता है। इस से हिन्दुस्तानियों के हौसले बढ़ रहे हैं। अनुशासन चौपट हो रहा है।"

आक्सफर्ड से अपनी पढ़ाई छोड़ कर जबरिया भर्ती में आया लेफ्टिनेंट हैगर था। वह बोला,—"हिन्दुस्तानियों को कमीशन्ड अफसर बनाना भारी भूल है। वे बराबरी की कोशिश करते हैं और मेस में हिन्दुस्तानी खाने की माग कर रहे हैं।"

"यह सब गांधी को शह देने का नतीजा है।"—स्काट ने जोर देकर कहा।

"गांधी बोस से लाख अच्छा है।"—एक कर्नल बोला,—"गांधी अहिंसावादी है। बोस का पाँसा बैठता तो हमें लेने के देने पड़ जाते।"

"बोस जेल की सींकचों के अन्दर ही अच्छा है। गांधी के कुत्ते भौंकेंगे, काटेंगे नहीं।"—स्काट ने निर्णयात्मक उक्ति कही। एक महिला ने जो किसी खान के मालिक की बेटी थी और जिसका पति हिन्दुस्तानी फौज में कैप्टन था कहा,—"बाबा, इन्हें भी तो जीने का मानवोचित अधिकार है।"

हैगर तमतमा आया। उसे आक्सफर्ड में पढ़ाया गया था कि हिन्दुस्तानी जाहिल और असभ्य हैं। अंगरेज उन्हें उचित शिक्षा दीक्षा से सभ्य बना रहे हैं। वह बोला,—"हम उन्हें आदमी की तरह रहना सिखा रहे हैं। कितने जंगली और अंधविश्वासी थे ये। अंगरेजी राज में कितनी उन्नति कर गये हैं। इन्हें हमारा उऋण होना चाहिए। हम न रहे तो ये खड़े भी रह पायेंगे?"

श्याम सिंह ने अक्षर-अक्षर सुना। उसका खून खौल उठा। उसके पास राइफल थी, गोलियाँ थीं। उसके मन में तूफान सा उठा कि गोल कमरे के सभी फिरंगियों को वह भून दे। उससे लाभ क्या मिलता? नंगी भूखी हिन्दुस्तानी सेना उसकी मदद को तैयार कब थी? अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता है?

दूसरे दिन श्याम सिंह सूबेदार उमराव सिंह से कह रहा था,—"अंगरेज हमें कीड़ों मकोड़ों से भी बदतर समझते हैं।"

"हम कीड़े मकोड़े न होते तो मुट्ठी भर अंगरेज हमें गुलाम कैसे बना लेते।"—उमराव सिंह की बात में छिपे दर्द से श्याम सिंह तिलमिला गया। सूबेदार ने तब तक आगे कहा,—"हम अंगरेजों के बलि के बकरे हैं। पेट के कारण हम इनके फौज की नौकरी करते हैं। न करें तो बाल-बच्चे भूखे मरें।"

श्याम सिंह उस दिन अनायास सोचता रहा कि अंगरेजों ने देश को ग़रीब बना कर इसका कितना शोषण किया है। सूबेदार उमराव सिंह के प्रति उसके मन में श्रद्धा भर आई। सूबेदार के शब्दों में इशारा था कि देश के लिए उत्सर्ग होने का सुअवसर आयेगा। उस शुभ दिन के लिए अभी से तैयारी करनी है।

श्याम सिंह अपने काम को अच्छा से अच्छा सीखने लगा। उसका खाना, कपड़ा मुफ्त था। चालीस रुपया महीना वेतन मिलता था। पांच अपने लिए रख कर पैंतीस घर भेज दिया करता था। वह नशा नहीं करता था न सस्ती छोकड़ियों के पीछे भागता था। सप्ताहान्त में वह मन्दिर में पूजा प्रार्थना में अधिक समय बिताता था। वरियार खां को भी जबरदस्ती मस्जिद भेजता था। मन्दिर में वह देश की स्वतंत्रता के लिए देवता से मन ही मन प्रार्थना किया करता था।

वरियार खां चाल चलन का अच्छा था। उसकी पल्टन के अधिकतर जवान झेलम जिले के राजपूत मुसलमान थे। उनमें से कई पीते-पिलाते थे। वरियार खां को भी यह लत जल्दी लग गयी। वह लेफ्टिनेंट जान का अर्दली था। अर्दली का काम अफ़सर की निजी जरूरतों की देख भाल था—कपड़ों की, जूतों के चमक की, उसके खाने पीने की। जान अपनी आलमारी में शराब की बोतल रखता था। वरियार खां उसकी शराब पी डालता था। जितना पीता था उतना पानी मिला देता था। जान को कभी पता ही नहीं चलता था। कभी-कभी वह पूरी बोतल गायब कर देता था। अपने दोस्तों के संग उसकी चुस्की लेता था। और मस्त हो सबको आल्हा सुनाता था। आल्हा वह चमकदार तलवार की तेज़ गति सा गाता था।

'ए' कम्पनी की सिखलायी के बाद राइफल, मशीन गन, मोर्टर तोप, ग्रनेड आदि अस्त्र-शस्त्रों की विधिवत परीक्षा हुई। परीक्षा में पूरी कम्पनी में श्याम सिंह पहले नम्बर पर आया। उसको एक बिल्ला देकर नायक बना दिया गया। खेल कूद, पी० टी०, ड्रिल में उसे पहले से ही उस्ताद माना जाता था। उसे अनुशासन के लिए भी कम्पनी का पहला पुरस्कार मिला।

इसके बाद घर जाने के लिए एक महीने की छुट्टी मिली।

वरियार खां भी अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण था। उसे भी छुट्टी मिली।

वे दोनों बड़े प्रसन्न मन गांव आये।

गांव का कोई भी आदमी उनके फौज में भर्ती होने से खुश नहीं था। श्याम सिंह के पिता ने उसका नाम कटाने के लिए बड़े लाट के पास दरख्वास्त भी भेजी थी। जहाँ जबरन भर्ती हो रही थी वहां ऐसी दरख्वास्तों की क्या पूछ होती?

वरियार खां की मां ने दरख्वास्त नहीं भेजी थी। वह रात दिन रोती बिसूरती रहती थी और सुबह शाम अपने बुजुर्ग मौलवी साहब की दरगाह पर बेटे की राजी खुशी के लिए प्रार्थना किया करती थी। वहीं उसके पति की कब्र थी। वहाँ हर पूरनमाशी को वह दिया जलाया करती थी।

वरियार खां के एक बड़ी बहन थी। वह ब्याहता थी। वरियार खां अपनी

बहन को जाकर उसके पति के गाँव से लिवा लाया। बहन के बच्चों के संग वह और उसकी मां दोनों व्यस्त रहते थे।

श्याम सिंह की नयी नवेली पत्नी थी। उसने रोते-रोते श्याम सिंह से कहा,—"तुम्हें फौज मे भर्ती होने की मति क्यो आई? हम हवाई अड्डे पर ही मेहनत मजदूरी कर लेते।"

मा बाप, नाते रिश्तेदार भी दु खी थे। श्याम सिंह ने सबको धोखे से भर्ती की बात बतायी। अब किया क्या जा सकता था? श्याम सिंह ने सबको आश्वस्त कराया,—"मैंने युद्ध मे बचाव के सभी तरीके सीख लिए हैं। यो काल आ जाय तो उसके लिए मै कुछ नही कह सकता। अगरेजो की इस लडाई मे जो कट मरा वह पल्ले दर्जे का उल्लू कहलायेगा।"

सबने सान्त्वना पायी या नहीं, सबके लिए श्याम सिंह की बात नयी थी। बरियार खा भी इन्हीं भावों को प्रकट करता था। वह मस्त था जैसे न अनहोना कुछ हुआ है और न होगा।

महीने भर की छुट्टी मेल मुलाकात, नाते रिश्तेदारी, मित्रो के दावत मनोरंजन मे कट गयी। वे लाहौर लौट आये। वहा एक नयी बटालियन संगठित हुई। दोनों उसमे रखे गये। बटालियन जगल की लडाई के प्रशिक्षण के लिए छिन्दवाडा आई। यह प्रशिक्षण तीन महीने मे पूरा हुआ। बटालियन कोचीन आई। वहा वे समुद्री जहाज मे चढे। बगाल की खाडी और अरब सागर पार कर वे मलाया के सुन्दर बन्दरगाह पिनाग पर उतरे। उनकी बटालियन मलाया के विशाल ब्रिटिश सेना की अग बनी।

●

श्याम सिंह उस दिन अनायास सोचता रहा कि अंगरेजों ने देश को गरीब बना कर इसका कितना शोषण किया है। सूबेदार उमराव सिंह के प्रति उसके मन में श्रद्धा भर आई। सूबेदार के शब्दों में इशारा था कि देश के लिए उत्सर्ग होने का सुअवसर आयेगा। उस शुभ दिन के लिए अभी से तैयारी करनी है।

श्याम सिंह अपने काम को अच्छा से अच्छा सीखने लगा। उसका खाना, कपड़ा मुफ्त था। चालीस रुपया महीना वेतन मिलता था। पांच अपने लिए रख कर पैंतीस घर भेज दिया करता था। वह नशा नहीं करता था न सस्ती छोकड़ियों के पीछे भागता था। सप्ताहान्त में वह मन्दिर में पूजा प्रार्थना में अधिक समय बिताता था। बरियार खां को भी जबरदस्ती मस्जिद भेजता था। मन्दिर में वह देश की स्वतंत्रता के लिए देवता से मन ही मन प्रार्थना किया करता था।

बरियार खां चाल चलन का अच्छा था। उसकी पल्टन के अधिकतर जवान झेलम जिले के राजपूत मुसलमान थे। उनमें से कई पीते-पिलाते थे। बरियार खां को भी यह लत जल्दी लग गयी। वह लेफ्टिनेंट जान का अर्दली था। अर्दली का काम अफसर की निजी जरूरतों की देख भाल था—कपड़ों की, जूतों के चमक की, उसके खाने पीने की। जान अपनी आलमारी में शराब की बोतल रखता था। बरियार खां उसकी शराब पी डालता था। जितना पीता था उतना पानी मिला देता था। जान को कभी पता ही नहीं चलता था। कभी-कभी वह पूरी बोतल गायब कर देता था। अपने दोस्तों के संग उसकी चुस्की लेता था। और मस्त हो सबको आल्हा सुनाता था। आल्हा वह चमकदार तलवार की तेज़ गति सा गाता था।

'ए' कम्पनी की सिखलायी के बाद राइफल, मशीन गन, मौर्टर तोप, ग्रनेड आदि अस्त्र-शस्त्रों की विधिवत परीक्षा हुई। परीक्षा में पूरी कम्पनी में श्याम सिंह पहले नम्बर पर आया। उसको एक बिल्ला देकर नायक बना दिया गया। खेल कूद, पी० टी०, ड्रिल में उसे पहले से ही उस्ताद माना जाता था। उसे अनुशासन के लिए भी कम्पनी का पहला पुरस्कार मिला।

इसके बाद घर जाने के लिए एक महीने की छुट्टी मिली।

बरियार खां भी अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण था। उसे भी छुट्टी मिली।

वे दोनों बड़े प्रसन्न मन गांव आये।

गांव का कोई भी आदमी उनके फौज में भर्ती होने से खुश नहीं था। श्याम सिंह के पिता ने उसका नाम कटाने के लिए बड़े लाट के पास दरख्वास्त भी भेजी थी। जहां जबरन भर्ती हो रही थी वहां ऐसी दरख्वास्तों की क्या पूछ होती?

बरियार खां की मां ने दरख्वास्त नहीं भेजी थी। वह रात दिन रोती बिसूरती रहती थी और सुबह शाम अपने बुजुर्ग मौलवी साहब की दरगाह पर बेटे की राजी खुशी के लिए प्रार्थना किया करती थी। वहीं उसके पति की कब्र थी। वहां हर पूरनमाशी को वह दिया जलाया करती थी।

बरियार खां के एक बड़ी बहन थी। वह ब्याहता थी। बरियार खां अपनी

बहन को जाकर उसके पति के गाँव में लिवा लाया। बहन के बच्चों के संग वह और उसकी मां दोनों व्यस्त रहते थे।

श्याम सिंह की नयी नवेली पत्नी थी। उसने रोते-रोते श्याम सिंह से कहा,—"तुम्हें फौज में भर्ती होने की मति क्यों आई ? हम हवाई अड्डे पर ही मेहनत मजदूरी कर लेते।"

मां बाप, नाते रिश्तेदार भी दुःखी थे। श्याम सिंह ने सबको धोखे से भर्ती की बात बतायी। अब किया क्या जा सकता था ? श्याम सिंह ने सबको आश्वस्त कराया,—"मैंने युद्ध में बचाव के सभी तरीके सीख लिए हैं। यों काल आ जाय तो उसके लिए मैं कुछ नहीं कह सकता। अंगरेजों की इस लड़ाई में जो कट मरा वह पल्ले दर्जे का उल्लू कहलायेगा।"

सबने सान्त्वना पायी या नहीं, सबके लिए श्याम सिंह की बात नयी थी। बग्गियार खां भी इन्हीं भावों को प्रकट करता था। वह मस्त था जैसे न अनहोना कुछ हुआ है और न होगा।

महीने भर की छुट्टी मेल मुलाकात, नाते रिश्तेदारी, मित्रों के दावत मनोरंजन में कट गयी। वे लाहौर लौट आये। वहां एक नयी बटालियन संगठित हुई। दोनों उसमें रखे गये। बटालियन जंगल की लड़ाई के प्रशिक्षण के लिए छिन्दवाड़ा आई। यह प्रशिक्षण तीन महीने में पूरा हुआ। बटालियन कोचीन आई। वहां वे समुद्री जहाज में चढ़े। बंगाल की खाड़ी और अरब सागर पार कर वे मलाया के सुन्दर बन्दरगाह पिनांग पर उतरे। उनकी बटालियन मलाया के विशाल ब्रिटिश सेना की अंग बनी।

●

३

श्याम सिंह ने पिनांग में फौज की अलमस्ती के जीवन का एक नया रूप देखा। फौजी जीवन के हर दिन का जैसे मिनट-मिनट का व्यस्त और कड़ा काम था वैसे ही शाम के बाद बड़ी रंगीनी और बेफिक्री का समां रहता था। सैनिकों के अवचेतन में, विशेष कर उनके जो भाग्य पर कम विश्वास रखते हैं, युद्धकालीन परिस्थितियों में अधिकाधिक भोग की वृत्ति घर कर जाती है। शायद परिवार के वातावरण और सुख से दूर उनमें जीवन के उपभोग की जरूरत तीव्रतर हो जाती है। इससे मानसिक तनाव भी कम रहता है। श्याम सिंह ने देखा कि गोरे जवान और अफसर मस्त होकर भोग में लिप्त होते हैं इतना कि उच्छृंखल भी हो जाते हैं। हिन्दुस्तानी जवान और अधिकारी संस्कारवश वैसा नहीं कर पाते हैं। उन्हें रंगभेद का शिकार भी बनना पड़ता है। हिन्दुस्तानी अधिकारी भी गोरे अधिकारियों की तरह खुल खेल नहीं पाते। वे अपनी विवशता पर कुढ़ते रहते हैं।

पिनांग में हर गोरे अफसर की कोई न कोई युवती मित्र थी। वे रखैल प्रेमिका की तरह हर समय अपने अफसरों से चिपटी रहती थीं। मलाया में, पिनांग में भी, अंगरेजों और ऐंग्लो मलायियों की काफी आबादी थी। चीनी नस्ल की भी गोरी चिट्टी आकर्षक युवतियाँ थीं। अंगरेज इनमें से मन चाही प्रेमिका चुन सकते थे। इन युवतियों में से वही जिनको अंगरेज मित्र नहीं मिलते थे हिन्दुस्तानी अधिकारियों से मेल जोल बढ़ाती थीं। वह भी खुल कर प्रेमी प्रेमिका की तरह एक साथ नहीं रह पाते थे क्योंकि अंगरेज अधिकारी यह सहन नहीं कर पाते थे कि काला हिन्दुस्तानी कोई अंगरेजी नस्ल की प्रेमिका रखे। हिन्दुस्तानी अफसर इस तरह उखड़े-उखड़े रहते थे। वे अंगरेजों की तरह मनचाहे रास रंग में डूब नहीं पाते थे।

हिन्दुस्तानी जवानों की दशा और अधिक दयनीय थी। वे सर्कसों, सस्ते नाचघरों, बाजार की सस्ती चीनी और मलायी युवतियों को ही जान पाते थे। अच्छे नाच घरों, सर्कसों और क्लबों में उनका प्रवेश वर्जित था। अंगरेजों ने हिन्दुस्तानी जवानों को विभिन्न श्रेणियों और सम्प्रदायों में बांट रखा था। पल्टनों में 'अ' कम्पनी राजपूतों की होती, 'ब' सिखों की और 'स' मुसलमानों की। जाति और वर्ण का भेद सर्वोपरि महत्त्व का बना कर अंगरेजों की निरंतर यह कोशिश रही कि कि हिन्दुस्तानी सैनिकों में कभी एका न होने पाये। हिन्दुस्तानी सैनिक इस तरह आपस में बंटे रहते थे। हिन्दुस्तानी अफसर अंगरेजों की इस चाल को खूब समझते थे मगर काट नहीं पाते थे। अंगरेज उच्चाधिकारी हिन्दुस्तानी अफसरों से चाहे वह किसी धर्म या वर्ण के हों हार्दिक घृणा करते थे।

पिनाग के बड़े क्लब में तैरने का तालाब था। ऊंचे से ऊँचे हिन्दुस्तानी अफसर उस तालाब में नहीं तैर सकते थे। युद्ध के कारण क्लब के वे सदस्य हो सकते थे। एक सिख अफसर कैप्टन मोहन सिंह से इस पर खासी लड़ाई हो गई।

मोहन सिंह क्लब के सदस्य थे। एक दिन वे तालाब में तैरना चाहते थे। उन्हें तालाब में घुसने नहीं दिया गया। क्लब के मंत्री से उन्होंने कहा,—"नियमों में ऐसा कहीं नहीं लिखा है कि वर्णभेद के कारण तालाब में सबको तैरने नहीं दिया जायगा।"

मंत्री ने बताया,—"क्लब के नियमों में भले न लिखा हो, यह इस क्लब की परम्परा है।"

मोहन सिंह ने कर्नल, अपने कमांडिंग अफसर, से इसकी शिकायत की। कर्नल हक्का बक्का रह गया। उसने मोहन सिंह से कहा,—"क्लब की परम्परा से उस तालाब में जहाँ अंगरेज औरतें भी स्नान करती हैं गैर अंगरेजों का जाना नहीं होता रहा है। मैं इस परम्परा को आदेश से नहीं बदल सकता।"

कैप्टन मोहन सिंह ने कहा,—"जब हम क्लब के सदस्य हैं हमें क्लब में उपलब्ध हर मनोरंजन का वैसा ही अधिकार है जैसा दूसरे सदस्यों को। वर्णभेद की नीति, जब हम एक साथ लड़ मर सकते हैं, कदापि नहीं चलने दी जायगी।"

कर्नल आगबबूला हो गया। कैप्टन मोहन सिंह की उसने पिनाग के ब्रिगेडियर से शिकायत की।

वर्णभेद के कारण मेजर कयानी को अफसरों के मेस में ही नीचा देखना पड़ा। हिन्दुस्तानी अफसरों के लिए हिन्दुस्तानी खाना सप्ताह में तीन बार पकाने का आदेश सर्वोच्च कमांड से आया था। इसके पहले अफसरों के मेस में हिन्दुस्तानी खाना नहीं पकता था। मेजर कियानी मेस के इनचार्ज थे। उन्होंने आदेश के मुताबिक सप्ताह में तीन दिन हिन्दुस्तानी खाने, रूमाली रोटियाँ, बिरिआनी, कोफ्ते, कबाब आदि की व्यवस्था की। कर्नल ने उन्हें बुला भेजा। गुस्से से उनसे कहा,—"क्या अफसरों के मेस का आप जवानों का लंगर बनाना चाहते हैं?"

मेजर कियानी ने कर्नल का आशय समझ जवाब में कहा,—"अंगरेज अफसरों के लिए अंगरेजी ढंग का खाना ही पकेगा।"

"मैं मेस को लंगर नहीं बनने दूँगा। केवल रविवार को लंच पर मुर्गे की करी और चावल बन सकता है। अंगरेज डेढ़ सौ साल में मुर्गी करी और चावल खाना सीख गये हैं।"

मेजर कियानी ने सर्वोच्च कमांड के आदेश की याद दिलाना निरर्थक समझा। वह अपमान का कड़ुआ घूंट पीकर रह गये। उनसे मेस का चार्ज छीन लिया गया। कुछ दिनों बाद उनसे कम्पनी की कमांड भी हटा ली गयी।

पिनाग के हिन्दुस्तानी पल्टनों में इस बात की चर्चा फैली। सूबेदार फजल मोहम्मद दूसरे सूबेदारों से कहते सुने गये,—"अंगरेजों की बुद्धि नष्ट हो गयी है।

हर मोर्चे पर हार रहे हैं। ऐंठन अभी पुरानी ही है। गुलामों को अपना खाना भी नहीं खाने देते। कल लड़ाई के बाद काले हिन्दुस्तानियों को अफसर भी नहीं रहने देंगे।"

सरदारों के साथ-साथ जवानों में भी इस बात से बेचैनी फैली। हवलदार अकरम ने श्याम सिंह से कहा,—"कांग्रेस और मुसलिम लीग का झगड़ा पीछे देश में छूट गया। यहाँ हमें एक होकर जीना मरना है।"

सिपाहियों में अब अंगरेजों के प्रति गुलामों की पुरानी 'माई बाप' वाली आस्था नहीं रह गयी थी। अंगरेजों की चालाकियों को वे परखने लगे थे और अपने मानवोचित अधिकारों के प्रति जागरूक हो चले थे। सिख कम्पनी का सिपाही मुख्तार सिंह बराबरी के इतने पक्ष में था कि वह खुले आम पंजाबी में अंगरेज अफसरों को गालियाँ देता था। वह अपने कम्पनी कमांडर कैप्टन हंट का 'बैट मैन' था। वह प्रतिदिन हंट की ह्विस्की चुरा कर बिला नागा पीता था। हंट को कई बार इसका शक हुआ। उसने मुख्तार सिंह को डांटा। मुख्तार सिंह उसको दूसरे सिपाहियों के सामने 'मां दा पुत्तर' कहता। दूसरे हंसी नहीं रोक पाते। हंट चुप हो जाता।

एक ऐंग्लो मलायी छोकड़ी हंट की प्रेमिका थी। उसका नाम कुमारी सिल्विया जेन था। वह किसी बाल काटने की दुकान में काम करती थी। बीयर बहुत पीती थी और टिन में बन्द सार्डिन मछली चाव से खाती थी। मुख्तार सिंह उसके लिए तले टोस्ट और सार्डिन बनाया करता था। उसे मुख्तार सिंह का बनाया टोस्ट सार्डिन ही पसन्द आता था। हंट की अनुपस्थिति में वह मुख्तार सिंह से खूब हँसी मजाक किया करती थी। उससे कहा करती थी,—"मुझे सिख नौजवान बहुत पसन्द हैं।"

मुख्तार सिंह उसका भाव समझता था। 'जो हँसी सो फंसी', यह वह अपने साथियों से कहा करता था। एक रात हंट और सिल्विया किसी नृत्य समारोह से पूरे बुत होकर लौटे। अपने क्वाटर में भी उन्होंने पीना जारी रखा। हंट थोड़ी देर में पलंग पर औंधा होकर पड़ गया। मुख्तार सिंह सिल्विया को सार्डिन बना कर लाया। सिल्विया ने मुख्तार सिंह को अचानक अपनी बाहों में भर लिया। इस आकस्मिक व्यवहार से मुख्तार सिंह चकित रह गया। सिल्विया ने उसकी आँखों में आँखें डालकर और उसके मुँह को अपने मुँह से सटा कर कहा,—"मेरा पहला प्रेमी सिंगापुर का एक नौजवान सिख टैक्सी ड्राइवर था।" उसने मुख्तार सिंह को जबरदस्ती ह्विस्की का एक जाम पिलाया। जाने कैसे हंट औंधे-औंधे ही बोला,—"हे सिल्वी, क्या हो रहा है।"

"कुछ नहीं। तुम सो जाओ। एक ह्विस्की भेजती हूँ,—"कह कर उसने कई शराबों को मिला कर एक गहरा 'काकटेल' बनाया और हंट को जाकर अपने हाथों गटागट पिलाया। हंट का रहा सहा होश छूमंतर हो गया। उसकी नाक बजने लगी।

सिल्विया धुत थी ही। वह मुख्तार सिंह को पकड़ कर उसके साथ नाचने लगी। नाचते-नाचते उसे गोल कमरे को सोफे पर उसने दबोच लिया। मुख्तार सिंह

तरनतारन इलाके का लोभाना सिख था। सिल्विया या किसी नारी को वह निराश कर ही नही सकता था। उसे अपने पुरुषत्व का घमण्ड था।

उस रात के बाद सिल्विया और मुख्तार सिंह आपस में खुल गये। वे एक दूसरे के चहेते दोस्त बन बैठे। हंट ने शक से कभी मीन मेख भी किया तो सिल्विया ही उस पर चढ बैठी। मुख्तार सिंह आश्वस्त रहा। उसने सिल्विया से 'रोमांस' के किस्से अपने सीधेपन मे कितने साथियों को बताया।

मुख्तार सिंह की कम्पनी का सरदार लालसिंह सूबेदार था। अंगरेज सूबेदारो के ज़रिये ही अपनी कम्पनी के सैनिको से बात व्यवहार रखते थे जिससे एक दूसरे को समझ कर उनका फौजी प्रशासन निर्बाध चलता रहता था। सूबेदार लाल सिंह विनोदी स्वभाव का था। वह मुख्तार सिंह से हाथ जोड कर कहा करता था,—"पाइयाँ जी, उस सिल्वी की बच्ची से साड्डा (मेरा) भी योग मेल करा दे।" मुख्तार सिंह हसता। ऐसा वह कहाँ करा पाता। वह हट की आलमारी से स्काच ह्विस्की की बोतल चुराकर सूबेदार को देता। सूबेदार पिनाग के बन्दरगाह पर सस्ती मलायी और चीनी युवतियो को उसे पिला कर अपना रंग जमाता।

उस पजाबी बटैलियन का कमांडर कर्नल रेड फाक्स था। उसकी पूरी नौकरी पंजाबियो मे ही बीती थी। पजाबी बहुत अच्छी बोलता था। उसे हिन्दुस्तानियो से हार्दिक घृणा थी। सिपाहियों को वह खरीदा हुआ गुलाम समझा करता था। उसका दावा था कि हिन्दुस्तानियो को रोटी देना ही क्या कम उदारता थी? वह यह जरा भी नही समझ पाता था कि हिन्दुस्तानियो के पर क्यो निकल रहे हैं और वे अगरेजी शासन के ऋणी क्यो नही महसूस करते। वह प्रायः कहा करता था कि अगरेज हिन्दुस्तानियो को समुन्नत कर रहे है। गांधी और नेहरू अगरेजी शिक्षा की उपज है। वे देश की उन्नति चाहते हैं। उनकी गलती यही है कि अंगरेजो की हिन्दुस्तानियों को शिक्षित और सभ्य बनाने की नीति को वे नही समझ पाते है। सब हिन्दुस्तानी, वह कहा करता था, उनकी तरह लंदन के स्कूलों में जाकर तो पढ नही सकते। उसकी भी एक एग्लो मलायी प्रेमिका थी। कमांडिंग अफसर की रखैल होने के कारण सभी उसका अदब मानते थे। एक दिन उसने रेडफाक्स से कहा,—"तुम हट के बैटमैन मुख्तार सिंह से अपना बैटमैन बदल लो।"

रेडफाक्स हैरान रह गया। उसका बैटमैन सिपाही अता मोहम्मद था जिसे बटालियन के सूबेदार मेजर दिलावर खा बहादुर, ओ० बी० ई० ने खास तौर पर रखाया था। वह चुस्त, चालाक और वफादार था। हमेशा शाई रसी सजा बना रहता था। अंगरेजो ने देशी रियासतों के राजाओं की पोशाक को चपरासियों की पोशाक बनाया था। अता मोहम्मद रणक्षेत्र मे भी उसी पोशाक मे मैस रहता था। वह अंगरेजी समझ लेता था और रेडफाक्स के इशारे को पहचानता था। सूबेदार मेजर का वह खास आदमी था। बटालियन का सूबेदार मेजर वही बनाया जाता था जो कर्नल की बटालियन में हुई छोटी बड़ी सहत्व की बातों को सूचिया और पर

घटनाक्रम से बटालियन के सिखों में ही नहीं, मुसलमानों और राजपूतों की हिन्दू कम्पनी में भी असन्तोष धीरे-धीरे सुलगने लगा। बरियार खां एक दिन आपे से बाहर हो गया। अंगरेजों को वह बहुत बुरा भला कहने लगा। सूबेदार फज़ल इलाही और श्याम सिंह ने उसे शान्त कराया। वह शान्त हो गया। पूरी की पूरी बटैलियन मगर अशान्त हो आई। तब तक पिनांग से बटालियन को जीटरा का मोर्चा संभालने का आदेश मिला।

8

जानलेवा वियोग की अवधि काटने के बाद मिलन का सुख असीम होता है। नरेन्द्र और पुखराज का परिणय ऐसा ही था। वे दोनों दिल्ली से बड़ी ललक और अरमानों से भरे रंगून आये थे। नरेन्द्र को सेठ भीमसेन दारुका के मुकदमे में रंगून उच्च न्यायालय में आना ही था। सेठ ने रंगून के पास समुद्र तट पर स्थित अपनी बगीचा कोठी को बैरिस्टर नरेन्द्र और उनकी सद्य परिणीता पत्नी पुखराज के लिए अभिनव आकर्षण और सुरुचि से सजाया था। हिन्दुस्तान से बाहर के मुक्त वातावरण में, उस बगीचा कोठी में, नरेन्द्र पुखराज एक दूसरे में खो मिटने के लिए सागर की उत्ताल तरंगों की तरह उतावले रहा करते थे। उनका प्रेम अन्तरिक्ष के कोण को चूमना चाहता था। अपने निवास के पहले महीनों में उस बंगले के बाहर उन्होंने कदम भी नहीं रखा।

सेठ भीमसेन ने उनके सुख सुविधा की व्यवस्था उत्तम की थी। सर मेहता की बेटी और दामाद को वे कोई असुविधा होने ही नहीं देते।

सेठ भीमसेन उच्च शिक्षित नहीं थे। दुनिया उन्होंने बहुत देखा था। एक दिन वे बगीचा कोठी आये।

उनकी आँखें मधु चन्द्रिका से प्रस्फुटित नरेन्द्र और पुखराज की कमनीयता देखती रह गयी। कुंआरापन रस स्निग्ध हो दिव्यरूप में निखर आया था। पुखराज की रूपराशि प्रज्वलित थी। सेठ भीमसेन ने मन ही मन सच्चे कुआरेपन और सच्ची तरल मधुचन्द्रिका की प्रशंसा की। परिहास के स्वर में बैरिस्टर नरेन्द्र से उन्होंने कहा,—"रंगून का बड़ा पैगोडा अपूर्व है। जब कहें वहाँ जाने का प्रोग्राम बना दूं।"

"आपके मुकदमे की तारीख अगले महीने है।"

नरेन्द्र का भाव सेठ ने समझा। मुकदमे के लिए न्यायालय जाना ही पड़ेगा। ऐसे अभी वे बगीचा कोठी से कहीं नहीं जाना चाहते थे। सेठ गद्‌गद भाव से थोड़ी देर और बात करते रहे।

अगले महीने के शुरू में बैरिस्टर नरेन्द्र स्थानीय कानूनी सलाहकारों के संग सेठ के कार्यालय में विचार विमर्श कर मुकदमे की तैयारी करते रहे। चौबीस घण्टे में चार छः घण्टे मुकदमे की तैयारी, शेष सारा समय बगीचा कोठी में पुखराज की स्वर्गिक धड़कनों को अपनी धड़कनों में मिलाना—यही उनका काम रहा।

मुकदमे की पहली पेशी पर नरेन्द्र को हाईकोर्ट जाना पड़ा। उभयपक्ष की ओर से उस दिन दस्तावेज दाख़िल हुए। वाद बिन्दुओं पर प्रारम्भिक बहस हुई। वाद

विन्दुओं के निर्धारण के लिए लम्बी तारीख पड़ी। सेठ भीमसेन के फर्म का प्रश्नगत सम्पत्ति पर पुराने समय से कब्जा चला आ रहा था। प्रतिपक्ष से सम्पत्ति पर मुकदमे के फैसले तक सरकारी प्रबन्ध करने का आवेदन किया गया। उसके समर्थन में प्रति-पक्ष के बैरिस्टर ने जोरदार बहस की। नरेन्द्र ने उनके आवेदन के विरोध में सूक्ष्म किन्तु सारगर्भित तर्क प्रस्तुत किए। अदालत ने नरेन्द्र के तर्कों को स्वीकार कर लिया। सम्पत्ति पर सेठ भीमसेन का ही कब्जा रहा। यह साधारण सफलता नहीं थी। सेठ भीमसेन ने भरी अदालत में नरेन्द्र का चरण छू लिया। प्रतिद्वन्द्वी बैरिस्टर ने भी अदालत से बाहर आकर बैरिस्टर नरेन्द्र को हार्दिक बधाई दी।

वे अब निकलने पैठने लगे। उन्होंने रंगून के सुप्रसिद्ध बड़े पैगोडा में जाकर भगवान बुद्ध की पूजा की। छोटे पैगोडा और दूसरे दर्शनीय स्थानों को भी देखा। वे माण्डले गये। वहाँ की जेल में उस कोठरी का जहाँ तिलक महाराज कैद में रखे गये थे उन्होंने दर्शन किया। नरेन्द्र ने पुखराज को बताया,—'इसी काल कोठरी में गीता-रहस्य लिखा गया। यहीं बाद में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस भी कैद में रखे गये।'

बर्मा के सुरम्य विहार स्थलों, रमणीक नगरों और प्राकृतिक दृश्यों को देख कर वे जम्बू द्वीप गये। 'जम्बू द्वीपे भरतखण्डे,' आर्यों के संकल्प के आदि के स्थल निर्देश को पुखराज ने नरेन्द्र को स्मरण कराया। जम्बू द्वीप प्राकृतिक सौंदर्य की खान है। वहाँ के पर्वतों, वनों और धान के खेतों पर सतरंगी इन्द्रधनुषी आभा अभिनव सौष्ठव से हमेशा छायी रहती है। बिना देखे उस दिव्यता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। वहाँ के लोग भारत मूलक हैं। उनकी भाषा संस्कृत मूलक है। वे डचों के साम्राज्यवाद के शिकार हुए। कोई भी विदेशी शासन किसी देश में वहाँ की मूल संस्कृति और सभ्यता को मिटा कर ही पनप पाता है। अंगरेजों की तरह डचों ने अपनी संस्कृति और सभ्यता फैलाने की अथक कोशिश की। उन्हें उतनी भी सफलता नहीं मिली जितनी अंगरेजी थोपने में अंगरेजों को हिन्दुस्तान में मिली। वहाँ की जनता की दशा भी विपन्न थी। पुखराज और नरेन्द्र मधुचन्द्रिका मना रहे थे, राजनीति से कुछ समय के लिए छुट्टी ले ली थी। इसलिए वे एक दूसरे के बाहर बहुत नहीं रमे। वे चकित एक बात पर हुए—वहाँ भी फौजों का जमाव था। उन्हें पहले पहल वहीं आभास हुआ कि दुनिया में प्रलय होने वाला है।

जावा के रंग, रस और श्रृंगार ने उन्हें अभिभूत कर लिया। वे जावा छोड़ना नहीं चाहते थे। सेठ के मुकदमे के कारण उन्हें रंगून जल्दी वापस आना पड़ा। प्रति-पक्ष ने सम्पत्ति के कब्जे के लिए नया आवेदन किया था। उस आवेदन पत्र को निरस्त कराना जरूरी था। वह निरस्त हुआ।

हिन्दुस्तान लौटने के पहले वे पिनांग होते हुए सिंगापुर गये। सेठ भीमसेन ने उनसे कहा था कि जापान की आँख मलाया पर उठने वाली है। बाद में उस अपढ़ सेठ के सूझ-बूझ की नरेन्द्र को दाद देनी पड़ी।

सिंगापुर में वे सुप्रसिद्ध रैफल्स होटल में ठहरे। तब उस होटल में बहुत विशिष्ट एशियाई ही अपवाद स्वरूप ठहर सकते थे। उनको भी होटल के कई भागों में जाना वर्जित था। वे भाग सिंगापुर के विशेषतः रैफल्स की जाति और देश वालों के लिए सुरक्षित थे। होटल के सबसे ऊँचे तल्ले पर एक खुली छत थी जिसमें बेल बूटे पौधों को उगा कर एक रमणीक उपवन बना दिया गया था। वहाँ एक 'बार' था। खुले मैदान में जोड़े प्रकृति की रमणीयता का आनन्द लेते हुए बाल डांस किया करते थे। उसका नाम रखा गया था—अलकापुरी। निस्सन्देह वह अलकापुरी थी। वहाँ अमृत की नहरें बहती थीं, अक्षुण्ण यौवनाओं का मधुमादन महका था। अभिजात नर-नारी—केवल योरोपियन—वहाँ जा सकते थे। साम्राज्यवाद ने उन्हें पृथ्वी पर ही स्वर्ग भोगने की सुविधा प्रदान की थी। पराधीनों को नरक भी मिले, न मिले।

नरेन्द्र पुखराज को यह भेदभाव जान कर बहुत क्षोभ हुआ। वे अभी मधुचन्द्रिका में अभिभूत थे। उन्हें अलकापुरी में जाने की फ़ुरसत ही कहाँ थी? अलकापुरी की अप्सरायें उर्वशियाँ पुखराज को देखने के लिए अवश्य लालायित रहती थीं।

सिंगापुर के चोटी के बैरिस्टर थे श्री राजरत्नम। वे भारत मूलक थे। उन्होंने नरेन्द्र पुखराज को अपने घर खाने पर बुलाया। उस खाने में सिंगापुर के चोटी के दो-चार भारत मूलक परिवार सम्मिलित हुए। एकाध मलायी परिवार भी थे।

बैरिस्टर राजरत्नम के घर पेय अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के थे। उनका खाना भी ऐश्वर्य गरिमा का था। पेय देने वाली मलायी परिचारिकायें सुन्दरतर से सुन्दरतम थीं। उस दावत की समता अलकापुरी क्या खा कर करती? वहाँ पुखराज की आभा छिटकी। पुखराज को देखकर नर नारी, दास दासियाँ, सभी पल-छिन के लिए ठगे से रह जाते थे। मधुचन्द्रिका से स्वर्णकमल सी निखरी पुखराज अपनी गरिमा से अपरिचित नहीं थी। उसे सकोच का बोध जरूर होता था। इसमें उसका क्या दोष था? दोष अगर था तो उस कुम्हार का जिसने उसे अपना प्राण लगाकर गढ़ा था।

सिंगापुर के प्रसिद्ध भारत मूलक व्यापारी अब्दुल करीम सालीम अपनी धर्मपत्नी के साथ उस दावत में आये थे। उन्होंने पेय के उपरान्त नरेन्द्र से पूछा—"बैरिस्टर साहब, यहाँ आपने क्या देखा?"

नरेन्द्र जब तक जवाब दें तब तक श्री करीम सालीम ने आगे कहा—"हिन्दुस्तानी फौजों की दमघट पर आपकी नजर पड़ी होगी।"

"जी हाँ, सिंगापुर में मारे हिन्दुस्तानी फौजों की [illegible] हिन्दुस्तान मूलक निवासियों की संख्या भी यहाँ कम नहीं।"

"हिन्दुस्तानी फौजों ने ही इसे दुर्जेय गढ़ बनाया है।"

"हिन्दुस्तानियों की दशा [illegible] भी यहाँ [illegible]"

"बैरिस्टर साहब, [illegible] की दशा [illegible] से भी दयनीय [illegible] है। हिन्दुस्तानी [illegible] को चाहिए अफीम और [illegible]। [illegible]

का नाम भी नहीं सुना था। शेर सिंह ने तब उससे 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां' सुनाने को कहा। वह भी उन्हें नहीं मालूम था। शेर सिंह तब स्वयं खड़ा हो कर गाने लगा,—"पतली कमर है, तिरछी नजर है।" सब ने सावधान मुद्रा में शेरसिंह का गाना सुना। उसके बाद अति गम्भीर वातावरण में पार्टी विसर्जित हुई।

होटल से बाहर राना ने शेर सिंह से कहा,—"तू ने हम लोगों की मदद करा दी। क्या गा दिया?"

"अरे, चुप करो। मुझे जो आया वह मैंने गा कर मौका संभाल लिया। किसने समझा होगा? तुमने क्या फ्रेन्च या आस्ट्रेलियन गीत समझा?"

कुमारी मोहिनी मेसी ही ही कर हंस रही थी। राना भावाकुल हो सोच रहा था कि अपना राष्ट्र गीत तक नहीं। कब वह दिन आयेगा जब अपना भी राष्ट्रगान होगा?

वे 'हैपी वर्ल्ड' से बाहर आ अपनी अपनी प्रेमिकाओं के साथ रात का जादू जगाने चले गये।

हैपी वर्ल्ड के दावत की चर्चा राना या शेर सिंह ने किसी से नहीं की। दो दिन बाद मेजर अल्ताफ ने राना से कहा,—"इस दावत के कारण कमांडिंग अफसर शेर सिंह से बहुत नाराज है?"

"क्यों?"

"क्योंकि शेर सिंह ऐंगलो इंडियन युवती को अपने साथ ले गया था। ऐंग्लो इंडियन अंगरेज नस्ल के बनते हैं।"

राना का चेहरा क्रोध से तमतमा आया। मेजर अल्ताफ और उसने एक साथ ही कहा,—"हम गुलाम जो हैं।"

बात जवानों में फैल गयी। सब कमांडिंग आफिसर से चिढ़ उठे। नतीजा यह हुआ कि जवान भी ऐंग्लो इंडियन या ऐंग्लो मलायी युवतियों से दोस्ती बढ़ाने लगे। अंगरेज अफसरों ने इस प्रवृत्ति को रोकना चाहा। इस पर हिन्दुस्तानी अफसर चिढ़े। अंगरेजों और हिन्दुस्तानी अफसरों में एक प्रकार का शीत युद्ध शुरू हो गया। कमांडिंग अफसर कुछ कह नहीं सका। योरोप में अंगरेज पिट चुके थे। मिश्र में भी पीछे भाग रहे थे। पूर्वी एशिया में भी कब क्या हो जाय इसका कोई अनुमान नहीं लगा सकता था।

अंगरेजों ने हिन्दुस्तानी औरतों की जो सहायक सेना बनायी थी उसमें अधिकतर ऐसी ईसाई महिलायें थीं जो थोड़ी बहुत अंगरेजी बोल लेती थीं। अंगरेजों की फौज में गरीब और लाचार लोगों के अलावा कोई दूसरा भर्ती नहीं होता था। हिन्दुस्तान के ईसाइयों में, यह मानना पड़ेगा, ऐसा भाव कभी नहीं आया कि धर्म परिवर्तन से वे हिन्दुस्तानी नहीं रहे। उन्होंने न अपना नाम बदला नहीं भेष-भूषा। रहन-सहन भी उनकी भारतीय रही। वह वैसे ही बदले जैसे देश के दूसरे निवासी अंगरेजों के सम्पर्क से बदले। अंगरेजों ने कोशिश जरूर की कि वे हिन्दुओं से अपने को अलग समझें। आधुनिकता में रंगे ईसाइयों में कुछ पर इसका प्रभाव भी पड़ा। साधारण

रूप से ऐसा अपवाद स्वरूप ही रहा।

पढ लिख कर उनकी युवतियां रोजी कमाने और सेवा करने के लिए परिचारिका—नर्स—आदि कामो मे दूसरो से अधिक आगे आयी। उसी तरह कैंटीन के काम मे भी वे आगे बढी। अंगरेजों ने ऐसी युवतियों की महिला सहायक सेना बनायी। इस सेना के सगठन मे अगरेजो का उद्देश्य सेवा-सुश्रूषा आदि परिचारिका का काम तो था ही, अगरेज अफसरो और जवानो के मनोरंजन का साधन जुटाना भी था। इंग्लैण्ड के सामाजिक जीवन के आधार पर युद्ध मे शारीरिक से अधिक मानसिक सुविधा और स्नेह के लिए यह सेना उपयोगी साबित हो सकती थी।

बदाऊँ के मिशन से दो युवतियां इस सेना मे भर्ती हुई थी, कुमारी उषा पैट्रिक और कुमारी रीता न्यूटन। दोनों दसवी तक पढी थी।

कुमारी उषा पैट्रिक अपने जीवन के अप्रकट तीखे अनुभवो के कारण गम्भीर स्वभाव की बन गयी थीं। वे अपनी प्लटून के साथ सिंगापुर आते समय बंगाल की खाडी मे जहाज पर कर्नल हिगिन्स की नजरो मे चढी। जहाज में महिला सहायक सेना थी और गोरों की एक पल्टन थी। अगरेजी सेना के उन्मुक्त वातावरण मे रोज डास, खेल-कूद तथा सामाजिक मेल जोल हुआ करता था। अधिकाश ईसाई युवतियां गोरों से हिल मिल गयी थीं। डास के बाद वे जहाज के 'डेक' पर 'कुट्टनीमतम्' को चरितार्थ करतीं या वात्स्यायन के गूढ सूत्रों का अवगाहन करतीं। उषा पैट्रिक डांस समाप्त होते ही अपने केबिन मे चली जाती थी। कर्नल हिगिन्स उनकी इसी विशेषता पर रीझा। उसने कुमारी पैट्रिक को अपने केबिन मे खाने की दावत दी।

कमाडिंग अफसर के निमंत्रण को अस्वीकार करना सर्वथा अशोभन होता। उषा पैट्रिक दावत मे गयी। कर्नल इससे बहुत खुश हुआ।

उनका हाथ अपने हाथ मे लेकर उसने उन्हे प्रेम से बैठाया और पूछा,—"क्या पियेंगी?" और दो गिलासो मे ह्विस्की ढालने लगा।

"मैं शराब नही पीती, सर।"—उषा पैट्रिक ने शालीनता से ही कहा। वे प्रतिरोध नही करना चाहती थी। शराब उन्होंने बडे दिनो के अलावा भी कई बार चखा था।

कर्नल ने उनके असमंजस को ताड़ कर कहा,—"शराब नही लोगी तो युद्ध के भीषण तनाव मे स्वस्थ कैसे रहोगी?"

ह्विस्की का एक गिलास उसने मिस पैट्रिक के हाथों मे थमा दिया। मिस पट्रिक से उसका आग्रह अब अमान्य नही हो सका। वह चुस्की लेने लगी।

कर्नल शायद पहले से पी रहा था। उसने एक डब्बे से तले काजू निकाला और मिस पैट्रिक को खिलाया। गिलास की ह्विस्की जैसे खत्म हुई उसने दूसरी ढाली और गिलास को अपने हाथों मिस पैट्रिक के होठों पर लगा दिया।

तीसरे जाम पर उसने मिस पैट्रिक से कहा,—"डार्लिंग, दूर क्यों बैठी हो? मेरी गोद मे बैठो। यह जहाज डूबेगा भी तो हम तुम एक एक क्षण का सदुपयोग

इसके साथ लहरों में गर्क होंगे। लड़ाई की भँवर में कब जाने क्या हो जाय?"

मिस पैट्रिक का होश उभर आया। वे इसके लिए कदापि तैयार नहीं थीं। उन्होंने नीति बरती। कर्नल कहीं उठा कर उन्हें समुद्र में फेंक न दे इसलिए कहा,—"सर, मैं हिन्दुस्तानी लड़की हूँ।"

"क्या तुम क्रिश्चियन नहीं?'—कर्नल किंचित अचकचाया।

"क्रिश्चियन हूँ। लेकिन......... ।"

"ओह" उसके मुँह से वितृष्ण भाव से निकला। उसने आंखें तरेर कर कहा, "सुनहला समय व्यर्थ न खोओ। मैं भी जिम्मेदार व्यक्ति हूँ। मुझे खुश रखोगी तो तुम्हें तरक्की पर तरक्की मिलेगी। मैंने तुममें कुछ देख कर ही इतनी लड़कियों में से तुम्हीं को चुना।"

कर्नल ने मिस पैट्रिक को अपनी बाहों में भींच उनके होठों का चुम्बन ले लिया।

मिस पैट्रिक बेवकूफी में कह बैठीं,—"सर, आपको मुझसे विवाह करना पड़ेगा। मरियम के पवित्र बेटे की आपको सौगन्ध खानी पड़ेगी। मैं प्यार का प्रतिदान कर सकती हूँ।"

कर्नल मिस पैट्रिक के दुस्साहस पर हैरान हुआ। वह नशे में आ चुका था। उसकी पूरी नौकरी कलकत्ता के कोयला घाट के मजदूरों की देख-रेख में बीती थी। उसने चतुराई से काम लिया। उठ कर उसने मिस पैट्रिक का इस बार दीर्घ चुम्बन लिया और कहा,—"युद्ध में विजय मिलने के दिन ही हम विवाह कर लेंगे।"

मिस पैट्रिक को हिगिन्स की बातों पर विश्वास हुआ या नहीं, वह नशे में थीं या नहीं, उन्होंने फिर अनाकानी नहीं की। खाने के बाद उन्होंने अपनी वह रात कर्नल के केबिन में ही बितायी।

कर्नल की वस्तु बन कर मिस पैट्रिक दूसरी युवतियों से विशिष्ट बन गयीं। कोई उन्हें छेड़ता नहीं। कर्नल ने उनके साथ व्यवहार भी ऐसा किया जैसे विवाह के लिए 'कोर्ट' करने वाले जोड़े करते हैं। मिस पैट्रिक पूरे समुद्री सफर में कई रात कर्नल के केबिन में रहीं। जिस रात वह उस केबिन में नहीं जातीं वह विजय के शुभ दिन के सपने देखतीं। वह सोचतीं—यह भी तो हो सकता है कि कर्नल अपनी बात का धनी निकले।

जहाज निर्धारित तिथि पर सिंगापुर पहुँचा। महिला सहायक सेना के संग मिस पैट्रिक रेस कोर्स की छावनीनुमा बैरक में टिकीं। कर्नल को भी वहीं एक छोटा बंगला मिला। कर्नल अगर चाहता तो मिस पैट्रिक बेखटके उसके बंगले में आ जा सकती थीं। उसने कभी बुलाया ही नहीं। शनिवार के डांस में उसने हद कर दी। उसने मिस पैट्रिक को पहचाना तक नहीं। वह एक ऐंग्लो मलायी युवती की बाहों में थिरकता रहा। मिस पैट्रिक के अभिवादन को उसने अनदेखा कर दिया जैसे वह उनसे अपरिचित हो।

उषा पैट्रिक पर उस दिन मनो गाज गिरी। वह कर्नल की वासना को बुझाने की मात्र वस्तु थी। मधुलोभी भौंरा एक फूल पर कितनी देर टिकता ? उषा पैट्रिक ने अपना सिर धुन लिया। उनका सारा अनुभव, उनकी अक्ल, चरने चले गये थे। अब विजय के दिन की आशा से उनका रिश्ता टूट गया।

उस दिन परेशान होकर उन्होंने मिस रीटा न्यूटन से कहा,—"हमारा अंगरेजों को बढ़ावा देना भारी भूल है।"

"हिन्दुस्तानी अफसर तो हमे फूटी आख भी नही देखते। हमे अपना सुख देखना है।"—कुमारी रीटा न्यूटन ने अपना भाव बेझिझक प्रकट किया।

"हम भी हिन्दुस्तानी हैं। हमें हिन्दुस्तानी अफसरो से दूर नही रहना चाहिए। अंगरेज हमे भंगी की औलाद कहते हैं। उनके मुंह पर हमे थूकना चाहिए। हमारी फौज इसलिए खडी की गयी है कि अंगरेज चकलों की बीमारियों के बचे रहे। हम उनकी अक्ल दुरुस्त कर देंगे।"

मिस रीटा न्यूटन हैरान रह गयी। वह भी प्लटन कमाडर थी। अंगरेज अधिकारियो को वह अपनी ओर खीच लेती थी। उनका मित्र एक अगरेज सार्जेन्ट था। परदेशी मे प्रीति की वह कायल नही थी। जीवन मे सब कुछ क्षणिक है। सुख भोग को स्थायी बनाने की कोशिश हास्यास्पद है। युद्ध की विभीषिका मे इसकी कल्पना भी नही करनी चाहिए। उन्होंने उषा पैट्रिक से पूछा,—"स्थायी सुख क्यो संजोना चाहती हो ? वह क्या मिल सकेगा?"

"हम क्रिश्चियन है।"—उषा पैट्रिक ने गम्भीर भाव से कहा,—"हमे किसी की काम पिपासा को बुझाने का साधन नही बने रहना है। नही हमे विलायत जाना है या काला निगर कहलाना है। हमे वस्तुस्थिति को समझना चाहिए। हमारे पूर्वज हिन्दुस्तानी थे। हमे हिन्दुस्तानी बन कर रहना है।"

मिस रीटा न्यूटन का चेहरा अकारण स्याह पड गया। वह भागी भागी अपने कमरे मे गयी। वहा पश्चाताप की मुद्रा मे वह सत जान का उपदेश पढने लगी। ईसाई मत मे पाप ईश्वर के पवित्र उपदेशो को अमान्य करना होता है। अगरेज ईसाई है। जर्मन भी तो ईसाई है। वे ईसाइयो के प्रति उचित व्यवहार कहा कर है। संत जान के उपदेशो मे उनका मन लगा पर शान्ति नही मिली। अंगरेजो अश्लील व्यवहार के कई उदाहरण उनके ध्यान को विचन्नित कर गये। वह अजार भय से भर आयी।

गोरी पल्टनें क्रम मे सामाजिक मनोरंजन के लिए 'बाल डास' का समारोह किया करती थी। इनमे हिन्दुस्तानी महिला सेना की बहुत माग होती थी। अगले सप्ताहान्त मे लंकाशायर पल्टन मे समारोह था। उसमें मिस पैट्रिक और मिस न्यूटन गयी ही नहीं। उनके प्लट्न मे भी सयोग से कम लडकियां गयी। बाल डांस मे युवतियों की भरमार न हो तो नृत्य फीका पड़ जाता है। पल्टन का उसकी समारोह युवतियो के अभाव मे फीका से भी बुरा रहा।

शिकायत हुई। कर्नल स्वयं उस समारोह में गया था। वह हैरान हुआ, सोचता रहा।

मिस उषा पैट्रिक को कर्नल के सामने सोमवार को आफिस में पेश होने का आदेश मिला। कर्नल ने बिना किसी औपचारिक शील सौजन्य के कड़कती आवाज़ में पूछा,—"परसों लंकाशायर प्लटून के डांस में तुम्हारी पल्टून की छोकड़ियां क्यों नहीं गयीं ?"

"मैं अस्वस्थ थी। यह मुझे नहीं मालूम कि लड़कियां क्यों नहीं गयीं। डांस का निमंत्रण सबको बता दिया गया था और नोटिस बोर्ड पर लगा दिया गया था। सब जानती थीं।"

कर्नल चिल्ला पड़ा,—"भंगी की औलाद, जबान लड़ाती है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि सामूहिक प्रतिरोध फौजी कानून में षडयंत्र माना जाता है। अपनी सारी छोकड़ियों से कह दो कि दुबारा ऐसी बात हुई तो सबके चूतड़ में मिर्च भर दिया जायगा।"

उषा पैट्रिक सलाम कर आफिस के कमरे के बाहर चले जाने के अलावे कर क्या सकती थीं ? उस दिन उन्हें शैतान का असली रूप दिखायी पड़ा। शैतान वही नहीं, उन्होंने सोचा, उनका अपना समाज भी था जो छलावे के जाल में अपना असली रूप भूल चुका था।

उषा पैट्रिक को सांघातिक चोट लगी। उनका दिल बैठने लगा। वे बीमार पड़ गयीं। उन्हें अस्पताल में भर्ती होना पड़ा।

अस्पताल में वे दो सप्ताह रहीं। जिस दिन अस्पताल से वापस लौट रही थीं दिन कैप्टन डाक्टर रमन ने उनसे सहानुभूति के स्वर में कहा,—"आपका रोग मानसिक परेशानी के कारण था। परदेश में अकारण मन को मलीन न किया करें।"

"डाक्टर साहब, अंगरेज हमें पशु से भी बदतर समझते हैं।"—मिस पैट्रिक के मुंह से निकला।

"मैं समझ सकता हूं। उनके पाप का घड़ा भर गया है। धीरज से काम लें।"

कैप्टन रमन की सहानुभूति से मिस पैट्रिक हिन्दुस्तान में पहुँच गयीं। महात्मा गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय कांग्रेस हिन्दुस्तान की आजादी के लिए आन्दोलन कर रही थी। गांधी जी की राय के विरुद्ध पेट की ज्वाला से जले हिन्दुस्तानी फौज में भर्ती होकर बलि के बकरे बन रहे थे। महिला सहायक सेना मूलतः अंगरेजों की कामपिपासा बुझाने के लिए खड़ी की गयी थी। उनकी दशा बंधुआ मजदूरों से बेहतर कब थी ? उस दिन मिस पैट्रिक के मन में क्रान्ति की चिनगारियां पहली बार फूटीं। एक नयी प्रेरणा ने उनके जीवन में घर किया। वे नये अन्तरिक्ष की ओर सधे कदमों से बढ़ने लगीं।

कर्नल हिगिन्स ने भी महिला सेना की गति विधियों की खुफिया रिपोर्ट उच्च कमांड को भेजा। उच्च कमांड महिला सेना के विरुद्ध कोई कार्यवाही करने का कारण नहीं ढूंढ़ पाया। उन्होंने इस सेना को सिंगापुर से मिश्र के रणक्षेत्र में भेजने पर गम्भीरता से विचार किया।

९

नरेन्द्र पुखराज को सिंगापुर मे एकाध तीव्र संघर्षों मे अभी और जूझना था। स्थानीय फौजी कमांड ने लड़ाई के चन्दे (वार फंड) के लिए एक वृहद बाल-नृत्य का आयोजन किया। मलाया-सिंगापुर के अंगरेज गवर्नर इस समारोह के संरक्षक थे। उनकी ओर से हजार हजार रुपये के दस टिकट सेठ सलीम के पास आये थे। उन टिकटों को अस्वीकार किया ही नही जा सकता था।

सेठ सलीम ने दूसरे मित्रों के साथ नरेन्द्र और पुखराज को भी आयोजन मे निमंत्रित किया। वे सलीम परिवार के साथ समारोह मे गये। वहां कितने और उच्च धनी भारतीय और मलायी परिवार भी थे।

हाल मे सिंगापुर के सभी उच्च पदस्थ फौजी और नागरिक अधिकारी अपने परिवार वर्ग के साथ नृत्य के आकर्षक और सुन्दर परिधानो मे प्रसन्नता से चहक रहे थे। चारो ओर हंसी-खुशी का शान्त कोलाहल व्याप्त था। वातावरण युवतियो के मनमोहक परिधान और बिजली की रंग बिरंगी मद्धिम रोशनी मे इंद्र धनुषी छटा का था। पेय उत्कृष्ट थे और पेय के साथ खानो का चयन बहुमूल्य था। चारो ओर आनन्द के कलरव मे नर नारी इन्द्रपुरी की सुषमा बिखेर रहे थे।

पहले नृत्य के लिए बैंड की धुन बजी। हाल अंगरेज नर नारियों के जोड़ों से थिरकने लगा। सब बेफिक्री की मस्ती से एक दूसरे की नृत्य गरिमा मे लयमान थे। उन्हें देख कर कोई सोच भी नही सकता था कि दुनिया मे कहीं पास या दूर युद्ध का महाविनाश अट्टहास कर रहा है।

पुखराज डांस करती नही थी। नरेन्द्र ने भी डांस नही किया। डांस करने वाले जोड़े नृत्य की परिक्रमा मे नरेन्द्र पुखराज के पास से निकलते हुए पुखराज की अलौकिक रूप राशि पर आंखे जरूर गडा देते थे। हाल मे चारो ओर हर मेज पर पुखराज की ही चर्चा थी। पहला डांस समाप्त होते ही पुखराज के अतुल सौन्दर्य को देखने के लिए अंगरेज नारियां लाइन बना कर भीड इकट्ठा करने लगी। सबको आशा थी कि पुखराज अपने जोड़े के संग नृत्य करेगी। जब दो तीन नृत्य समाप्त हो गये और पुखराज नृत्य के लिए नही उठी तब एक ब्रिगेडियर ने आकर उससे अपने साथ नृत्य करने का निवेदन किया। पुखराज ने सधन्यवाद अस्वीकार जताया। एक दो नृत्य और बीते। एक मेजर जेनरल ने आकर पुखराज से नृत्य का अनुरोध किया। पुखराज ने सधन्यवाद उससे कहा,—"मै नृत्य नहीं करती।" जेन[illegible] अपने अनुरोध के अस्वीकार की आशा नही की थी। उसने सेठ सली[illegible]

कहा,—"आप लोग जब डांस हाल की मर्यादा नहीं निभाते तब ऐसे समारोहों में आते क्यों हैं ?"

सेठ सलीम का दल हज़ार हज़ार रुपयों के सोफों पर था। उन्होंने शालीनता से ही जवाब दिया,—"यहां के गवर्नर ने हमारे पास टिकट भेज कर हमें यहां निमंत्रित किया है।"

"फिर भी डांस के समारोहों के कुछ सौजन्य और नियम हैं।"

जेनरल का स्वर शालीन नहीं था। नरेन्द्र ने उससे कहा, — "आप तिल का ताड़ बनाने की कोशिश में अपना समय बरबाद कर रहे हैं। यह सब आप गवर्नर से जाकर पूछें।"

जेनरल अवाक रह गया। गुस्से से भर कर वहाँ से हटते हुए बुदबुदाया,— "काला निगर।"

नरेन्द्र, जवाब में, गुस्से से तमतमा कर बोला,—"अबे, ओ-फिरंगी सूअर।"

पता नहीं जेनरल ने नरेन्द्र की उक्ति को समझा या नहीं। उस नृत्य के बाद ही डांस का आयोजन समाप्त कर दिया गया।

उस रात नरेन्द्र पुखराज क्षुब्ध रहे। दूसरे दिन सवेरे ही बैरिस्टर राजरत्नम आये। उन्होंने कहा,—"आप होटल छोड़ कर मेरे निवास पर ठहरें। यहां रहना निरापद नहीं।"

"क्या होटल में हमारे रहने पर आपत्ति उठ खड़ी हुई है ?"

बैरिस्टर राजरत्नम ने न चाहते हुए भी बताया कि गवर्नर ने सिंगापुर के चीफ कमिश्नर को भेज कर यह अनुरोध किया है।

"क्या मतलब ?"—नरेन्द्र गुस्से से भर आया।

"बैरिस्टर नरेन्द्र, अंगरेजों को आपसे अधिक कौन जानता है ? उनकी मति मारी गयी है। उनके सिर पर विनाश नाच रहा है। वह तो यहां हिन्दुस्तानी फौजें हैं नहीं कल ही जाने क्या हो जाता ?"

नरेन्द्र ने गम्भीरता से सोचा। अंगरेजों को वह निकट से जानता था। ऐसी छोटी बात के कड़े विरोध से समस्या पैदा करना उसे अच्छा नहीं लगा। बैरिस्टर राजरत्नम के अतिथि कक्ष में वह जाने को तैयार हो गया।

पुखराज को रंग भेद, साहब गुलाम के भेद, का नया अनुभव था। वह बहुत दुःखी हुई। नरेन्द्र ने रंगून में सेठ भीम सेन को टेलीफोन कर उनसे हिन्दुस्तानी जाने की व्यवस्था करने को कहा। सेठ भीमसेन ने यात्रिक हवाई जहाज में इनके लिए दो सीटें सुरक्षित भी करा लीं। जाना किन्तु हो नहीं सका। टिकट बेकार गये।

दिसम्बर इकतालीस में जिटरा की ओर से जापानी सेना स्थल मार्ग से मलाया में घुसी। जिटरा क्षेत्र की सरहद पर सुरक्षा का भार स्काटीश फ्यूजीलीयरस पल्टन का था। अंगरेजी कमांड ने कभी आशा नहीं की थी कि जापानी उधर से आक्रमण करेंगे। स्काटिश फ्यूजीलीयरस् बिना लड़े मैदान छोड़ कर भाग निकली।

उन्ही की जगह पिनाग से पंजाब रेजिमेट को भेजा गया।

युद्ध में आक्रमणकारी को पहला लाभ जरूर मिलता है। स्काटिश फ्यूजीलीयरस के भागने के साथ ही जापानी तेजी से आगे बढ़े। पजाब रेजीमेट ने आकर जब मोर्चा संभाला तब उनकी तेजी रुकी। पंजाब रेजिमेट ने जापानी पल्टन के सामने खाइया खोद कर मोर्चा बाधा। वे आक्रमण की तैयारी कर रहे थे। अभी आगे बढने का आदेश नही मिला था। अचानक जापानियो ने पीछे से पिनाग की सड़क को काट कर पंजाब पल्टन को घेर लिया। चारो ओर से घिर जाने पर पजाब पल्टन को लड कर कट मरने या आत्म-समर्पण कर देने के अलावे कोई रास्ता नही रह गया। उन्हे न आक्रमण का आदेश मिला न आत्म-समर्पण का। अच्छी फौज विना आदेश पाये आत्म-समर्पण भी नही करती।

एक खाई मे सभी कम्पनी कमाडरो की बैठक बुलायी गयी। उसमे एक भी अंगरेज अधिकारी नही पहुँचा। कर्नल भी लापता था।

सबसे वरिष्ठ अधिकारी मेजर कियानी थे। उन्होने नक्शो का अध्ययन कर अलोर नामक स्थान पर चिह्न लगाया। कम्पनी कमाडरों को उन्होंने आदेश दिया, —'कल तक अगर कोई आदेश नही मिलता तो ए कम्पनी को मोर्चे पर छोड हम जगल के रास्ते अलोर की ओर अंधेरे मे चल निकलेंगे। रात बीतने के पहले अधेरे मे ही मोर्चे वाली कम्पनी जगलो के रास्ते पीछे हट आयेगी।''

दूसरे दिन सूरज की किरणो के साथ ही जापानी सेना ने बाये दाये से पंजाब पल्टन पर जोरदार आक्रमण किया। दो कम्पनिया लडी मगर गिरफ्तार हो गयी। मोर्चे वाली कम्पनी डट कर लडी। किरचे तान कर उसने जापानियो का मुकाबिला किया। उनकी प्लटून की प्लटून साफ हो गयी। जापानी सैनिक गिरफ्तार होने से पहले हाराकारी,—आत्म हत्या—कर लेते है। कितनो ने आत्म-हत्या किया। पीछे से जापानियों की नयी कुमुक ने आकर खाई की रक्षा वाली कम्पनी का सफाया कर दिया।

'ए' कम्पनी कुछ पीछे थी। वह भी लडी। बहादुरी से लड़ते लड़ते वह जगलो मे पहुँच गयी। वे जगल के रास्ते से अलोर की ओर बढे। उन्हे दिली दुःख इस बात का हुआ कि वे अपने घायलो-मृतको को साथ नही ला सके।

जगल के रास्तो मे श्याम सिंह की प्लटून नेतृत्व कर रही थी। उसके तीस जवान दुर्वह घने जगलो मे झाडी-झखाड काट कर अलोर की ओर तेज़ी से बढने का रास्ता बना रहे थे। मेजर कियानी बटॅलियन के केन्द्र के इनचार्ज थे। उनसे श्याम सिंह का बेतार के तार से सम्पर्क था। जंगल मे यह सम्पर्क अटूट रह नही सकता था। वह जल्दी ही खत्म हो गया। श्याम सिंह मेजर कियानी के केन्द्र को जान नही सका कि वह कहाँ है और किस रास्ते पीछे हट रहा है।

लगातार भूखे, प्यासे, नीद के माते, वे पाच दिन बियावान निर्जन जंगल मे नक्शे के सहारे अलोर की दिशा मे चलते रहे। पाच दिन पर वे एक ऐसी जगह

पहुँचे जहां से अलोर बीस मील उत्तर-पूरब पड़ता था। वहां डी कम्पनी की एक टुकड़ी कैप्टन हबीबुररहमान के नेतृत्व में मिल गयी। अफसर मिला, निदेशन का भरोसा मिला। सब लम्बे पड़ सुस्ताने लगे।

कैप्टन रहमान की टुकड़ी कुछ राशन ले आयी थी। दाल-चावल सबके लिए काफी था। नमक बिलकुल नहीं था। कैप्टन रहमान ने सबके लिए अलोना खिचड़ी पकाने का हुक्म दिया। खिचड़ी झाड़ियों में छिप-छिपा कर पकी। सबने खाया। कैप्टन रहमान ने विनोद भाव से कहा,—"अब अंगरेज के नमक का हौवा हम से उतर गया।"

श्याम सिंह ने पूछा,—"सर, अंगरेज पल्टन भागने में जगत प्रसिद्ध है। हमारे बटैलियन के अंगरेज अफसर हमें छोड़ कर क्यों भाग गये?"

कैप्टन रहमान ने श्याम सिंह को बड़े गौर से देखा और कहा,—"अभी सब आराम कर लें। उसके बाद अलोर या स्तार के लिए चल पड़ना है।"

श्याम सिंह को अपने सवाल का जवाब नहीं मिला। कैप्टन रहमान के चेहरे पर कुछ भाव बने बिगड़े। वे ऐसे थे जिनसे श्याम सिंह उनके प्रति श्रद्धा से भर आया।

आधी रात तक सब सोते रहे। उसके बाद कैप्टन रहमान ने सबको जगाकर चलने का हुक्म दिया। टोलियाँ, जैसे आसमान में हवाई जहाज एक के पीछे एक उड़ते हैं, कतार बना कर चल पड़ीं। रात भर बिना रुके वे चलते रहे। सवेरे रुक कर, सांसों को बोतल के पानी से तर कर, वे आगे बढ़े। कहीं कन्द-मूल-फल मिल जाता तो इकट्ठा कर लिया जाता था। शाम को जहां रुकते थे वहाँ सब में बराबर बराबर बांट दिया जाता था। पानी की बड़ी लोड़ रहती थी। जहां पानी मिलता बोतल भर ली जातीं। पीना आदेश पाकर ही होता था।

लगातार तीन दिन वे चलते रहे। चौथी रात को सुस्ताने के बाद वे चलने ही वाले थे कि उन पर ओलों की तरह गोलियों की बौछार पड़ने लगी। सब खन्दक खाइयों में लेट गये। श्याम सिंह ने एक निशान पर मशीन गन को साधा, उसकी गोलियों का बेल्ट चढ़ाया। वह मशीन गन का बटन दबा कर गोलियां दागने जा ही रहा था कि रेंगते रेंगते कैप्टन रहमान आ गये। उन्होंने गन चलाने को मना कर दिया। पांच मिनट तक वे गोलियों की रफ्तार और दिशा देखते रहे। मशीन गन के पीछे वे स्वयं आकर लेट गये। दूर धूंधलके में एक छतरीनुमा वृक्ष दिखायी पड़ा। उनके बायें-दायें कैप्टन रहमान ने गन को साधा। उन्होंने बटन दबाया। मशीन गन आग उगलने लगी। दूर वृक्ष की ओर से रोने, चिल्लाने, पत्तों की तरह गिरने, की आवाजें आने लगीं। कुछ देर में सब शान्त हो गया। कैप्टन रहमान ने कान लगाया, सूंघा और कहा,—"दुश्मन जगह छोड़ गये। मैं जाकर देखता हूँ।"

हवलदार श्याम सिंह और दो जवान उनके साथ गये। लाशों और घायलों से पता चला कि वे दुश्मन नहीं, स्काट फ्यूजीलीयरस के भगोड़े थे।

"लड़ाई मे ऐसा प्राय. होता है।'—कह कर कैप्टन रहमान ने मृतकों का सामान इकट्ठा कराया, घायलो की मरहम पट्टी की। सूरज उगने के पहले एक गड्ढे मे मृतकों को विधिवत दफना दिया गया।

घायलों से मालूम हुआ कि करीब पाच मील की दूरी पर एक उजड़ी हुई बस्ती है। कैप्टन रहमान दो तीन जवानों के संग रातोरात वहां गये। कुछ निवासी गाव मे थे। उनके साथ वे लौटे। सारी प्लटून तब तक आ चुकी थी। गांव वालो की सहायता से घायलो को तत्काल गाव पहुँचाया गया।

गाव वालो ने चाय पिलाया। जवान पानी ही पा कर प्रसन्न थे। सबने एक एक 'मग' चाय पिया।

पानी की सुविधा से वहा सबने स्नान किया। श्याम सिंह को सतर्कता की पंक्ति बनाते देख कैप्टन रहमान ने उससे कहा,—"यह उचित ही है। जापानियो की रणनीति यातायात की आम सडकों पर बड़े बडे ठिकानों को पकड कर आगे बढ़ने की है। हम यहा निरापद है।"

निरापद वे थे। जापानी अभी उधर नही दिखायी पड़े थे। वे वहा से पन्द्रह मील की दूरी पर कुलकेरा गाव के लिए चल पडे। घायलों को गाव वालो की सुरक्षा मे छोड आये।

शाम होते होते वे कुलकेरा पहुँचे। यह समुद्र के पास मछुआरो का गाव था। वहा नौकाये मिल गयी। मछुआरे उन्हें रातो रात पिनाग पहुँचा गये।

पिनाग मे हवलदार श्याम सिंह को पहले पहले यह अनुभव हुआ कि कही लड़ाई हो रही है। पिनाग का जन जीवन, बाज़ार, यातायात, फौजी और नागरिक संस्थान —सब का सब, अस्त-व्यस्त था। वहा से बडी तेज़ी से सेना भी जा रही थी। कैप्टन रहमान ने इसका कारण जानना चाहा। किसी ने कुछ बताया नही। उल्टे उन्हें यह आदेश मिला कि पंजाब रेजिमेंट के जितने जवान हो सब पिनाग-सिंगापुर मार्ग की छठवी मील मे स्थित पुल की सुरक्षा के लिए कैप्टन रहमान के नेतृत्व मे तत्काल कूच करे।

कैप्टन रहमान कहना चाहते थे कि अभी जवानो ने किसी बैरक मे कदम नहीं रखा, आराम नही किया, नहाया-खाया नही, वे इस कूच के हुक्म को कैसे बजा लायेंगे।

फौज में आश्चर्य से चौका देना ही सफलता की कुंजी है। कठोर से कठोर हुक्म मानना ही अनुशासन है। कैप्टन रहमान को अपना गुस्सा पीना पड़ा। श्याम सिंह नये हुक्म पर चुप नहीं रह सका। उसने चिल्ला कर कहा,—"यह सरासर अन्याय है।"

कैप्टन रहमान ने उसे समझा बुझा कर चुप कराया। वे नहा धो, खा पी, हर्बा हथियार की कमी पूरी कर छठवी मील के पुल के लिए निकल पड़े।

निर्धारित पुल की सुरक्षा में तैनात गोरखा कम्पनी विद्रोह करने पर तुली हुई

थी। उनके सूबेदार का सवाल था कि पुल से गोरी पल्टन को हटा कर उन्हें क्यों तैनात किया गया ?

कैप्टन रहमान ने सूबेदार को आश्वस्त किया। अपने जवानों को सूबेदार के अधीन कर वह स्वयं पुल की सुरक्षा में जा डंटे। वहां ब्रिगेडियर का नया हुक्म आया,—"पिनांग से फौजें योजनाबद्ध स्कीम से हटाई जा रही हैं। आप पुल को प्राणपण से सुरक्षित रखेंगे। आपके लिए हटने का आदेश मिलने पर ही पुल से हटेंगे।"

तीन दिन वे पुल पर डंटे रहे। रेडियो से और राहगीरों से पता चला कि जापानी फौजें तेज़ी से मलाया में बढ़ती आ रही हैं। पुल से अभी वे साठ मील की दूरी पर थीं। अंगरेज पिनांग खाली कर रहे थे।

ब्रिगेडियर ने अपने वचन का पालन किया। चौथे दिन उन्हें हटने का और स्टीमर से आइहो पहुँचने का आदेश मिला। आदेश से यह साफ नहीं था कि स्टीमर कहाँ मिलेगा।

वे पिनांग वापस आये। अंगरेजी फौजें हट चुकी थीं। हिन्दुस्तानी फौजें अभी हटी नहीं थीं। फौज में ऊपर के किसी हुक्म या नीति की आलोचना प्रत्यालोचना वर्जित है। कैप्टन रहमान अंगरेजों के भेद भाव की नीति से दुःखी हुए। उन्हें एक स्टीमर में जगह मिल गयी। वे आईहो के लिए रवाना हो गये।

"आइहो सिंगापुर के पास है। सिंगापुर अंगरेजों का दुर्भेद्य गढ़ है। वहां हमें अपना जौहर दिखाने का मौका मिलेगा।"—कैप्टन रहमान जवानों को समझा रहे थे। पर आइहो पहुँचने के पहले ही समाचार मिला कि जापानियों ने अंगरेजों के पूर्वी जंगी बेड़े के दो बड़े सैनिक जहाजों 'प्रिन्स आफ वेल्स' और 'रिपल्स' को सिंगापुर के बन्दरगाह में डुबो दिया है। इस खबर से सनसनी फैली। श्याम सिंह ने कहीं सुन लिया कि अंगरेज सिंगापुर छोड़ कर भागने वाले हैं। कैप्टन रहमान ने इस अफवाह को निराधार बताया। उन्होंने श्याम सिंह से कहा,—"भाग कैसे सकेंगे। जंगी बेड़ा नहीं है, हवाई जहाज भी कम उड़ते दिखायी पड़ रहे हैं। अंगरेज सिंगापुर पर जीवन मृत्यु का मोर्चा बाधेंगे नहीं तो उनकी रही सही शोहरत खत्म हो जायेगी।"

कैप्टन रहमान की यह समीक्षा ग़लत साबित हुई। अभी वे आइहो पहुँचे ही थे कि सिंगापुर के प्रधान सेनापति ने बिना गोली चलाये ब्रिटिश साम्राज्य के परम सुरक्षित गढ़ को आक्रमणकारी जापानियों को सौंप दिया। ऐसा निरीह आत्म समर्पण संसार के इतिहास में कभी हुआ नहीं था।

पन्द्रह फरवरी सन् बयालीस को सिंगापुर के फरेर पार्क में आत्म समर्पण की रस्मी परेड हुई। अंगरेज सेनापति की ओर से कर्नल हंट ने जापानी सेना के प्रतिनिधि मेजर फाजीवारा को बिना शर्त समर्पण कर दिया।

उसी परेड में एक दूसरी ऐतिहासिक और क्रान्तिकारी घटना घटी। मेजर

फाजीवारा ने अगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना की कमाड को कैप्टन मोहन सिंह को विधिवत सौंपा और घोषित किया,—"कैप्टन मोहन सिंह आजाद हिन्द फौज का संगठन करेंगे और उसके प्रधान सेनापति होंगे।"

परेड मे एकत्रित हिन्दुस्तानी सेना के आश्चर्य का ठिकाना नही रहा। मगर सूरज की पहली किरणो से जैसे वन, प्रान्तर, उपवन की क्यारी-क्यारी, पंछी, खिल कर लहलहा उठते है वैसे ही सारी हिन्दुस्तानी सेना अभिनव पुलक से चहक उठी। सबने तुमुल हर्षध्वनि मे समवेत स्वर से आजाद हिन्द फौज का जयघोष किया और कैप्टन मोहन सिंह को सलामी देकर अपना प्रधान सेनापति स्वीकार किया।

•

अंगरेजों के आत्मसमर्पण से मलायास्थित हिन्दुस्तानी फौजें ही नहीं हिन्दुस्तानी मूलक सारे मलायावासी स्तब्ध रह गये। पुखराज को इसका दुःख नहीं हुआ कि वह और नरेन्द्र हवाई जहाज में सीट सुरक्षित करा कर भी रंगून और वहाँ से स्वदेश नहीं पहुंच सके। पुखराज नरेन्द्र से कह रही थी,—"अंगरेजी सेना के शौर्य का बड़ा बखान सुनते थे। ये गीदड़ निकले।"

"उनका हमेशा यही हाल रहा। वे आँखों में धूल झोंकना जानते हैं, लड़ना नहीं। सन् सत्तावन की क्रान्ति में ही ये उखड़ गये होते अगर हममे एका होता। सिखों ने अपने कारणों से इनका साथ दे दिया। इन्होंने सिखों को भी चूना लगाया।"

"अब क्या होगा।"

"हिन्दुस्तान का स्वर्ण अवसर आ गया है। भीतर से घोर संघर्ष और बाहर से आक्रमण कर हिन्दुस्तान को स्वतंत्र कराना होगा।"

बैरिस्टर राजरत्नम आ गये। उन्होंने बताया,—"कल रेस कोर्स के विशाल पार्क में हिन्दुस्तानियों की आम सभा बुलायी गयी है। हम उसमें जा रहे हैं।"

"हम भी चलेंगे।"—नरेन्द्र पुखराज ने एक साथ ही कहा।

पार्क की सभा में विजयादशमी और ईद की सम्मलित भीड़ थी। जहाँ तक दृष्टि जाती थी नरमुण्ड ही नरमुण्ड दिखायी पड़ता था। छतों पर, पेड़ों की डालों पर, आदमी पत्तों की तरह लदे थे। औरत, मर्द, बूढ़े, जवान, बच्चे, उत्सव के नये कपड़ों में सजे बने सभा में आये थे। सहस्त्रों लाखों हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक मलायावासी वहाँ एकत्रित थे। पार्क के बाहर मीलों तक उनकी भीड का रेला पेला था।

पार्क के बीचोबीच मंच पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तिरंगे झण्डे फहर रहे थे। मंच रंग बिरंगे परिधानों से सजाया गया था। उस पर भारतीय नेताओं की तस्वीरें फूल मालाओं से सजायी गयी थीं। बीचोबीच महात्मा गाँधी का बड़ा तैल चित्र था। उसके बायें दायें जवाहर लाल नेहरू और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की बड़ी तस्वीरें थीं। दूसरे नेताओं में प्रमुख सरदार पटेल और मौलाना आजाद थे। विशाल जन समूह गगनभेदी स्वर में भारत माता की जयघोष कर रहा था।

सिंगापुर के प्रमुख नागरिक सरदार ईशर सिंह जी मंच पर आये। असंख्य जनसमूह 'सत श्री अकाल' का जयघोष कर उठा। सेठ करीम आये। 'अल्ला हो अकबर' की विजय ध्वनि से आसमान गूंज उठा। बैरिस्टर राजरत्नम के साथ श्री देवनाथ दास और श्री सहाय आये। 'हर-हर महादेव' का तुमुल नाद हर हिन्दू,

मुसलमान और ईसाई के कण्ठ से निकला। कितने दूसरे गणमान्य भारतीय—हिन्दू, मुसलिम, सिख, ईसाई—मंच पर आकर सुशोभित हुए।

सरदार ईशर सिंह सभापति चुने गये। वन्देमातरम् के राष्ट्रगान के साथ सभा शुरू हुई। सरदार ईशर सिंह ने अपने ओजस्वी भाषण में कहा,—"सन् १७५७ में प्लासी के मैदान में क्लाइव ने मीर जाफर के साथ जाल रच कर धोखे से सिराजुद्दौला को पराजित किया। मीर जाफर और उसके बाद मीर कासिम से छल कपट कर अंगरेज स्वयं नवाब बन बैठे। इस तरह धोखाधड़ी से वे व्यापारी से शासक बने। अंगरेजों की इस धोखाधड़ी को दक्षिण में हैदर अली, टीपू सुल्तान, महाराष्ट्र में अप्पा साहब भोंसले, पेशवा बाजीराव, पंजाब में सरदार श्याम सिंह अटारी वाले, उत्तर भारत में महारानी लक्ष्मी बाई, तातिया टोपी, नाना साहब और राजा कुंवर सिंह आदि महान वीरों ने खूब समझा। उन्होंने अंगरेजों को उखाड़ने के लिए विद्रोह का बिगुल बजाया। सन् अठारह सौ सत्तावन में मुगल बादशाह बहादुर शाह के झण्डे के नीचे क्रान्ति की रणभेरी बजी। वह क्रान्ति सफल होती अगर कतिपय जयचन्द न उभरते। वह असफल हुई। अंगरेजों ने दमन किया, सारे उत्तरी भारत में घोर अत्याचार किया। वे जम गये। उन्होंने सारे देश को निहत्था बना कर अपना निरंकुश साम्राज्य स्थापित कर लिया। देश ने तब भी हिम्मत नहीं हारी। राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। उसने संघर्ष जारी रखा। अंगरेज वादे पर वादे करते गये। पहले विश्व युद्ध में उन्होंने भारतीय स्वायत्तता को स्वीकार लिया था। युद्ध के बाद वे अपना वादा भूल गये। महात्मा गांधी का उदय हुआ। तिलक और गांधी ने निहत्थों को सत्याग्रह और असहयोग का नया शस्त्र दिया। अंगरेज कांप गये। उनका दमन चक्र निरंतर चलता रहा। पहली लड़ाई में उन्होंने स्वायत्तता का वादा किया था। इस युद्ध में वे लड़ाई के बाद भी हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने को तैयार नहीं। कटने मरने के लिए उन्होंने हिन्दुस्तान को युद्ध में झोंक दिया है। अंगरेजों की बहादुरी हम यहां देख चुके हैं। हमें स्वदेश की आजादी और अपनी सुरक्षा के लिए उठ खड़ा होना है। जापान ने, जिस कारण भी हो, दोस्ती का हाथ बढ़ाया है। हमें उसे स्वीकार करना चाहिए। उससे स्वदेश को स्वतंत्र कराने का हमें सुअवसर मिलता है। क्या हम अपने देश की आजादी के लिए इस कठोर चुनौती को स्वीकार नहीं करेंगे। हमें आज एक हो कर स्वतंत्रता के महायज्ञ में अपना सर्वस्व आहुति में लगा देना है।"

जनसमूह चिल्ला उठा,—"हम अपनी बोटी बोटी देश की आजादी की वेदी पर कटा देंगे। हिन्दुस्तान आजाद होगा।'हर हर महादेव' 'अल्ला हो अकबर।'

सेठ करीम दूसरे वक्ता थे। उन्होंने कहा,—"आप लोगों ने स्वदेश का जयघोष कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रासबिहारी बोस शीघ्र ही यहां आने वाले हैं। वे प्रवास में देश की आजाद सरकार के अध्यक्ष होंगे। सेना बन ही रही है। जापान के हाथ को हम मजबूती से पकड़ेंगे। हम देश की

आज़ादी के नये संघर्ष में कोई कोर कसर नहीं उठा रखेंगे। साथ ही हम सावधान रहेंगे कि हमारे साथ धोखा न हो।"

सरदार ईशर सिंह ने स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए तन, मन, धन लगा देने का शपथ पत्र पढ़ा। विशाल जनसमूह ने आर्द्र कण्ठ से उसे दुहराया।

सभा 'अल्ला हो अकबर' और हर हर महादेव' के तुमुल जयघोष से विसर्जित हुई।

रणभेरी बज उठी। हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक मलाया वासी महान संघर्ष की अपूर्व तैयारी करने लगे।

सेठ करीम की दावत में आज़ाद हिन्द फौज के प्रधान कैप्टेन मोहन सिंह ने नरेन्द्र से पूछा,—"हिन्दुस्तान में सेना कौन करवट लेगी ?"

सेठ करीम ने जबाव दिया,—"क्या कहीं भी ऐसा मनुष्य हो सकता है जिसे स्वदेश की स्वतंत्रता प्यारी न हो। प्रतीक्षा अनुकूल अवसर की होती है। वह आ गया है।"

कैप्टन मोहन सिंह ने गम्भीर स्वर में कहा,—"सेना जानती है कि हिन्दुस्तान को ऐसा सुअवसर जल्दी दुबारा नहीं मिलेगा।"

"सेना के संगठन और साज सज्जा पर बड़ा खर्च होगा।" नरेन्द्र ने कहा।

"जहाँ इरादा साफ और नेक है वहाँ सफलता जरूर मिलती है। वैसे हिन्दुस्तानी फौज अस्त्र शस्त्रों से लैस है। जापान हमारी पूर्ति करता रहेगा। सुदूर पूरब के हिन्दुस्तानी भी इसका बीड़ा उठायेंगे।"

सांस लेकर कैप्टन सिंह ने आगे कहा,—"इन्हीं सब व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए मैं टोकियो जा रहा हूँ।"

"बर्मा में क्या होगा ?"—पुखराज ने पूछा।

"अंगरेज बर्मा से भी भागेंगे। उन्हें हिन्दुस्तान की पड़ी है। उस सोने की चिड़िया को खो कर वे कहीं के नहीं रहेंगे। उनकी पूरी शक्ति वहीं केन्द्रित होगी। वहाँ वे मोर्चा लेंगे।"

कैप्टन सिंह ने साथ ही कहा,—"हम वहाँ पहुँचेंगे तब उन्हें मालूम होगा कि वहाँ की सेना ही नहीं सारा हिन्दुस्तान हमारा साथ देगा।"

"हमलोग अपनी सारी सेवायें आपको अर्पित करते हैं। हमें जहाँ चाहे लगायें। —पुखराज ने गौरव परिपूर्ण स्वर में कहा।

हर नागरिक देश का सिपाही होता है। आपमें से प्रत्येक को बहुत बड़ा काम करना है। सेना सरहद पर तभी सफलता प्राप्त करती है जब उसके पीछे का जन मानस—मनोबल—उसका पूरा पूरा साथ दे ; हमारा आपका दायित्व बराबर है। हम एक जुट हो फिरगी को हिन्दुस्तान से मार भगायें।"

सबकी आखें अभिनव प्रकाश से चमक उठीं। पुखराज को अचानक बलराज मास्टर के तर्कों की याद आ गयी। वे कहा करते थे कि स्वतंत्रता का रास्ता सुधार का

उपस्थित सभी मुसलमान अफसरों ने जमादार जहाँदाद खाँ के कथन की भर्त्सना की। सवाल देश को स्वतंत्र कराने का था न कि अंगरेजों की चालों में उलझने का।

कैप्टन मोहन सिंह ने अन्त में पूरे विचारों का समन्वय करते हुए कहा,—"हम सब स्वदेश की दासता से मुक्ति चाहते हैं। स्वतंत्रता का सूरज यह देख कर नहीं चमकता कि उसका प्रकाश हिन्दू, ईसाई या मुसलमान के घर पर पड़ रहा है। प्रकाश सब पर बराबर फैलता है। हमारा पुनीत लक्ष्य, सर्वोपरि धर्म, होगा पराधीनता के अंधेरों को मिटा कर सवेरे का प्रकाश लाना।"

उन्होंने यह भी एलान किया कि आज आजाद हिन्द फौज के संगठन के पक्ष में सबका समर्थन मिल गया। फिर भी जो हिन्दुस्तानी सैनिक या टुकड़ियां उसमें किसी कारण शामिल नहीं होना चाहें तो वे इसके लिए पूरी तरह स्वतंत्र होंगी। उनकी मान मर्यादा, सुविधाओं आदि में कोई कमी नहीं की जायगी। वे युद्ध बन्दी माने जायेंगे। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही आजाद हिन्द सरकार सिंगापुर से काम करने लगेगी। उन्हीं के द्वारा आगे की नीतियां और कार्यक्रमों का निर्धारण होगा।

इंगलियों पर गिने जा सकने वाले इक्कों दुक्कों को छोड़ कर हिन्दुस्तानी फौज की सभी पल्टनें अपनी पूरी संख्या में आजाद हिन्द फौज में शामिल हुईं। सब ने परम पुलक से स्वदेश को आजाद कराने का नया शपथ लिया। हिन्दुस्तानी कमीशन्ड अफसरों का उत्साह देखने लायक था। अंगरेजों की फौज में वे इसीलिए भर्ती हुए थे कि कभी अनुकूल अवसर आने पर वे अपने देश को गुलामी से मुक्त कराने वाले शूरमा बनें। महिला सहायक सेना में अधिकांश ईसाई मतावलम्बी थीं। वे सभी आजाद हिन्द फौज में शामिल हुईं। इक्का दुक्का जो छूटे रह गये वे उन गद्दार नवाबों, राजाओं और श्रीमानों की संतान थे जिनकी अंगरेजों से देशद्रोह के पुरस्कार में मिली जागीरें और जमीन्दारियां थीं। प्रकट रूप में वे भी भरसक आजाद हिन्द फौज के संगठन की सराहना करते थे।

फौज से बाहर हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक नागरिक, नौजवानों और युवतियों में भी फौज में शामिल होने की होड़ बढ़ी। उनका उत्साह देखने लायक था। वे पुरुष सैनिकों के साथ बर्मा से पार हिन्दुस्तान के सीमान्त प्रदेश का अध्ययन करतीं, कब वे सरहद को पार कर हिन्दुस्तान की पवित्र धरती को चूम पायेंगी, इसकी योजना बनातीं। इतिहास के पन्नों में अंकित अंगरेजी कालीन स्वदेश भक्तों की वीर गाथायें जबान जबान पर थिरकने लगीं। अपनी आन पर बलि जाने वाले महाराणा प्रताप, शिवा जी, और टीपू सुल्तान की गाथायें हिन्दू मुसलमान सबकी आदर्श बनीं। युवातियों में दुर्गावती, चांद बीबी, महारानी लक्ष्मी बाई, के नये गीत गूंजने लगे। सब का इरादा दृढ़,दृढ़तर, दृढ़तम बनता गया—मातृभूमि को धोखेबाज अंगरेजों से स्वतंत्र कराने के लिए।

प्रशिक्षण के नये स्कूल खोले गये। श्याम सिंह सिंगापुर के केन्द्रीय प्रशिक्षण स्कूल का अध्यापक, बाद में कमांडर बना। वहां उसका गांव-भाई बरियार खां भी उसकी शिफारिस पर नियुक्त हुआ। बरियार खां 'झांसी वाली रानी थी.........' इस ललक से गाता था कि सुनने वाले जापानी और मलायी उसकी लय के जोश में तन्मय हो जाते थे। वातावरण ही बदल गया था। चारों ओर 'अल्ला हो अकबर' और 'हर हर महादेव' की समवेत जय ध्वनि गूंजती थी। बरियार खां मौलवियों को भी बताया करता था—ईश्वर एक है। उसे जिस नाम से चाहो पुकारो। उसे काट कर बाँट नहीं सकोगे। तौहीद (एकेश्वरवाद) को वेदों ने ही सबसे पहले प्रकट किया।

अंगरेज युद्ध वन्दी थे। विजयी जापानी विनम्र थे। वे आजाद हिन्द फौज के सैनिकों और सारे हिन्दुस्तानियों से अधिकाधिक भाई चारे का व्यवहार करते थे।

एक दिन श्याम सिंह को किसी काम से अंगरेज युद्ध वन्दियों की शिविर में जाना पड़ा। वहाँ उसका पुराना कम्पनी कमांडर स्काट मिल गया। उसका नया सौहार्द देखने लायक था। बात-बात में उसने स्वीकार किया,—"किसी भी देश की आज़ादी सबसे बड़ी नियामत है। हम खुश हैं कि हिन्दुस्तानी पल्टनें इसे समझ रही हैं।"

श्याम सिंह चकित हुआ यद्यपि वह जानता था कि हर नयी परिस्थिति की नयी भाषा होती है। अंगरेज इतनी जल्दी अपने में आ जायेंगे इसकी श्याम सिंह पहले कल्पना नहीं कर सकता था। वह अपने पुराने कम्पनी कमांडर से बराबरी के सौजन्य से ही मिला। पोरस ने सिकन्दर से यही चाहा था। सैनिकों का दुश्मन से भी यही आदर्श होना चाहिए।

श्याम सिंह की ललक दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ रही थी। उसके स्कूल का प्रशिक्षण, कर्नल भोंसले की राय में, सर्वश्रेष्ठ था।

एक दिन प्रधान सेनापति जेनरल मोहन सिंह ने उससे कहा,—"परसों अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार के मनोनीत अध्यक्ष श्री रास बिहारी बोस टोकियो से सिंगापुर आ रहे हैं। आज़ाद फौज उन्हें सलामी देगी। उस सलामी की परेड का नेतृत्व आप करेंगे।"

श्याम सिंह प्रधान सेनापति के सामने सावधान मुद्रा में था। वह भर आया। उसे प्रधान सेनापति ने जो सम्मान दिया वह असाधारण था। उसने मन ही मन उस दिन प्रतिज्ञा की कि वह हमेशा—अपने जीवन भर—उक्त सम्मान के योग्य बनने की निरंतर कोशिश करता रहेगा।

आज़ाद हिन्द सरकार गठित हुई। उसका केन्द्रीय सचिवालय माउन्ट प्लेजैन्ट स्थित एक विशाल बंगले में स्थापित हुआ। वहां से निकट ही नरेन्द्र पुखराज एक सुरम्य बंगले में रहते थे।

पुखराज महिला विभाग की अध्यक्ष मनोनीत हुई थी। नागरिक महिला संगठनों की देख-रेख के अतिरिक्त महिला सहायक सेना की विभिन्न सेवाओं से भी उसका सम्पर्क और नियंत्रण था। उस सेना की एक लड़ाकू रेजिमेंट भी बनी जिसकी प्रधान कर्नल लक्ष्मी थीं। परिचारिका महिला सहायक सेना की कुमारी उषा पैट्रिक अब कम्पनी कमांडर थीं।

कुमारी उषा पैट्रिक की कम्पनी में नयी गरिमा का वातावरण था। ऐंग्लो इंडियन युवतियां भी उसमें शामिल हो रही थीं। वे सब की सब ख़ालिस हिन्दुस्तानी दिखायी पड़ती थीं। उन्हें अब ईसाइयों की सेना समझा ही नहीं जा सकता था। राष्ट्रीयता का धर्म से कोई सम्बन्ध है [illegible] नहीं। धर्म व्यक्ति की घर के भीतर की मर्यादा है। बाहर वह अपने देश का [illegible]क है। देश की राष्ट्रिकता और

स्वयं के धर्म मे किसी संघर्ष उत्पन्न होने की गुंजाइश नही। ऐसी स्थिति अगर आ भी जाय तो धर्म नहीं देश की वरीयता ही सब धर्मों की सीख है। क्योंकि देशभक्ति से बढ़कर दूसरा कोई भी धर्म नहीं।

महिला सहायक सेना अब भारतीय नारी सुलभ शील और गुणो की प्रतीक थी। उसके सदस्यो की नैतिकता की सर्वत्र सराहना होती थी।

जापानी इस पर मुग्ध थे और क्षुब्ध भी। भोग-विलास के अनैतिक आचरण मे जापानी सैनिकों का मुश्किल से कोई सानी होगा। उनके दुर्व्यवहार की खबरें आती ही रहती थी। पुखराज उनके सामने भारतीय नारियो का आदर्श प्रकट करने का मौका ढूढ रही थी।

कुमारी पैट्रिक ने एक दिन पुखराज को बताया,—"पिछले शनिवार को 'हैप्पी वर्ल्ड' के नृत्य में जापानी कैप्टन इसीनावा ने कुमारी रीटा न्यूटन के साथ घोर दुर्व्यवहार किया। उसने उनके साथ दो तीन डास किया। इसी बीच धोखे से उन्हें कोई बहुत नशीला पेय पिला दिया। वह डास के बाद मिस रीटा को उनके निवास पर छोड़ने के बहाने अपनी गाडी मे लिवा गया। उनके निवास में न ले जाकर वह उन्हें अपने क्वार्टर पर ले गया। मिस न्यूटन की आँखें वहाँ खुली। उन्होंने घोर प्रतिरोध किया, शोर मचाया। इसीनावा धुत था। उसने कुमारी रीटा को मारा पीटा, उनके कपड़े फाड दिए और उन्हें बुरी-बुरी गालियां दी। मिस रीटा किसी तरह उसके शिकंजे मे निकल भागी। वह बहुत दुःखी हैं—उनके जीने का उत्साह ही मिट गया है। वह रात दिन बाइबिल के उपदेशो मे शान्ति पाने की कोशिश करती है। उपदेशों को पढ़ भी नही पाती हैं। दूसरी लड़कियो मे भी बड़ा आतंक है।"

पुखराज सोचती रही। अब वह सयानी हो चुकी थी। काम का उत्तरदायित्व किसी को वयस्क बना देता है। पुखराज को मालूम हो चुका था कि जापानी अंगरेजो से कहीं अधिक शरीर भोगी हैं। उनकी महिला सेना मे 'गिशा' बालिकायें भरी पडी थीं। हिन्दुस्तानी महिलाओं से उन्हें दूर रखना था। स्वदेश की आजादी के लिए उनकी मदद जरूरी थी। उनकी अनैतिकता को किन्तु कड़ाई से रोकना था। उसने कुमारी पैट्रिक से कहा,—"ऐसी घटनाओं को हमे तत्काल रोकना है। हमे लाठी को बचा कर साप को मार डालना है। साप शैतान होता है।"

'श्रीमती नरेन्द्र, हमारी युवतियां बहुत डरी हैं। वे चूल्हे से निकल कर कड़ाही मे नहीं झुलसना चाहती।

"आप अनुशासन बनाये रखें। मैं इस सवाल को हल कर के छोड़ूगी। आप कुमारी रीटा को कल मुझसे मिलने को भेजें।"

कुमारी रीटा न्यूटन दूसरे दिन कार्यालय मे पुखराज से मिली। पुखराज ने उनसे कहा,—"हम भारतीय युवतियां प्राण देकर अपने स्वत्व की रक्षा करना जानती हैं। आप अगले डाम में कैप्टन इसीनावा के साथ डास करें। वह अपने जगती स्वद-

हार के लिए सच्चाई से माफी माँगेगा या उसका दिमाग दुरुस्त कर दिया जायगा।"

कुमारी न्यूटन विस्फारित नेत्रों से पुखराज के भावप्रवण चेहरे को देखती रह गयीं। पुखराज ने अपनी टेवुल की घण्टी दवायी। उनके कार्यालय सहायक सिपाही इम्तियाज़ अली ने आकर एड़ी ठोक कर सलाम किया।

"इम्तियाज, अगले शनिवार को यह मिस साहिबा 'हैप्पी वर्ल्ड' में जापानी कैप्टन इसीनावा से मिलेंगी। इन पर चौकसी रखना है। वह कैप्टन अगर किसी भारतीय ललना से उच्छृंखल व्यवहार करे तो उसका होश ठिकाने लगाना है।"

"जी"— सावधान होकर इम्तियाज अली ने विश्वास पूर्वक कहा।

इम्तियाज़ गूजर मुसलमान था। गुजरांवाला जिले का रहने वाला था। आकर्षक व्यक्तित्व का था। रोज़गार की तलाश में एक जहाज पर खलासी वन कर दो तीन साल पहले सिंगापुर पहुँचा था। यहां एकाध छोटी मोटी नौकरी करने के वाद उसने कलिया पराठा का ढावा खोल लिया था। आज़ादी का विगुल वजने पर अपना सर्वस्व आज़ाद हिन्द फौज को सौंप कर वह सुरक्षा सैनिकों में भर्ती हो गया। वह अब पूर्ण प्रशिक्षित सैनिक था। महिला सम्पर्क कमेटी के केन्द्रीय कार्यालय में सुरक्षा को ध्यान में रख कर ही उसे तैनात किया गया था।

पुखराज के विलकुल साफ आदेश से भी कुमारी रीटा के चेहरे की घवराहट नहीं मिटी। पुखराज ने प्रेम की मुस्कान से उनको विश्वास दिलाते हुए कहा,— "इम्तियाज़ के रहते चिन्ता का कोई कारण नहीं। आप उस नराधम कैप्टन को सवक सिखाने में मदद करें।"

कुमारी रीटा को उस स्नेह-सनी मुस्कान में एक नवीन प्रेरणा मिली। उन्होंने सावधान होकर कहा,—"मैं शनिवार को डांस में जाऊँगी।"

इम्तियाज़ और कुमारी रीटा एक साथ ही सलाम कर पुखराज के कमरे से बाहर निकले।

कुमारी रीटा ने इम्तियाज से बाहर पूछा,—"क्या आप शनिवार को मेरे निवास से मुझे 'हैप्पी वर्ल्ड' ले चलेंगे ?"

इम्तियाज़ ने खुशी से भर कर कहा,—"इसे मैं अपना सौभाग्य मानूंगा।"

कुमारी रीटा ने छिपी नज़रों से इम्तियाज़ के आकर्षक चेहरे को देखते हुए कहा,—"आप आठ वजे मेरे क्वार्टर नम्बर पाँच पर आ जाइयेगा।"

इम्तियाज़ भावुक प्रकृति का था। उसने कहा,—"आपका हुक्म सर आँखों पर।"

कुमारी रीटा मुस्करा पड़ीं। इम्तियाज़ पर अपनी आँखें पूरी तरह निक्षेप कर उन्होंने विदाई के नमस्कार के लिए अपने हाथ जोड़ लिए।

शनिवार को इम्तियाज कुमारी रीटा के क्वार्टर पर ठीक आठ वजे पहुँच गया। वहाँ से इम्तिहाज़ के आग्रह पर वे पहले 'लिटिल वर्ल्ड' गये। 'लिटिल वर्ल्ड' के सवसे अच्छे चीनी रेस्टरां में इम्तियाज़ ने कुमारी रीटा को खाना खिलाया। उस

रेस्टरां का 'चाऊ माऊ' (तले चावल की ब्रीहि) मशहूर थी। दोनों ने उसे चाव से खाया। खाने की उत्फुल्लता से 'लिटिल' वर्ल्ड से 'हैप्पी वर्ल्ड' को चलने के पहले उनके बीच हार्दिकता स्थापित हो चुकी थी।

हैप्पी वर्ल्ड के डांस हाल में वे दस बजे पहुँचे। कुमारी रीटा की कम्पनी की कई युवतियां और अधिकारी वहाँ आई थी। वह अधिकारियों की मेज पर हंसती उछलती जाकर बैठ गयीं। इम्तियाज हिन्दुस्तानी सैनिकों के बीच जाकर वितण्डा करने लगा।

कैप्टन इमीनावा जापानी अफसरों के बीच ऐंग्लो मलायी और चीनी नस्ल की युवतियों के संग शराब पी रहा था। डांस हाल में सभी दल अपनी मेज़ों की युवतियों में ही मग्न रहता है। ऐसा नहीं कि वे हाल की दूसरी रमणियों को देखते ही नहीं। कैप्टन इमीनावा ने शायद कुमारी रीटा को नहीं देखा। बैंड जैसे बजा कैप्टन इमीनावा अपनी मेज़ की एक ऐंग्लो मलायी युवती के संग ललक से डांस करने लगा। उस डांस की परिक्रमा में उसने कुमारी रीटा को देखा। उसका चेहरा बना बिगड़ा। उसने कुमारी रीटा से परिचय वाला अभिवादन भी नहीं किया जो न करना डांस हाल के सौजन्य में अशिष्टता थी। दूसरी परिक्रमा में मिस रीटा न्यूटन की आंखों में उसने किंचित गौर से झांका। उसे शत्रु भाव नहीं दिखायी पड़ा। तीसरी परिक्रमा में उनकी आँखें चार हुईं। कुमारी रीटा मुस्करा रही थी। कैप्टन ने अब उनका अभिवादन किया। कुमारी रीटा ने आँखें नचा कर उसे स्वीकार किया।

दूसरे डांस का बैंड बजते ही इम्तियाज ने कुमारी रीटा से डांस का निवेदन किया। वह उसकी बाँहों में फुदकने लगीं। इमीनावा की ईर्षालु आँखें अचानक कुमारी रीटा के जोड़े का आकर्षक व्यक्तित्व परखने लगी। कुमारी न्यूटन इम्तियाज के साथ नृत्य में लीन थी। फिर भी जब वह परिक्रमा में इमीनावा के पास से गुजरीं उन्होंने उसकी आंखों में अपनी आंखें डाल दीं। इमीनावा की बाछें खिल गयीं। उसने कुमारी रीटा से तीसरे डांस का निवेदन किया। वे हाल में थिरकने लगे।

कैप्टन इमीनावा कुमारी रीटा के साथ नृत्य में शिष्ट और सुन्दर व्यवहार दिखाने की चेष्टा कर रहा था। वह जैसे अपने पिछले व्यवहार पर दुःखी हो और उसके लिए हार्दिक पश्चाताप कर रहा हो। साथ ही कुमारी न्यूटन के आज के व्यवहार पर उसके मन में एक भ्रम ने भी घर कर लिया। वह धीरे-धीरे खुलने लगा। उसने मिस न्यूटन को अपने से सटाने की कोशिश की। मिस न्यूटन ने जब विरोध का भाव भी नहीं प्रदर्शित किया तब उसका नशा बढ़ चला। उसके हाथों की हरकतें अलक्षित रूप से शुरू हो गयीं। उसके दाहिने हाथ की कुहनियां कुमारी रीटा को आबद्ध करते हुए नीचे से वक्ष की ओर बढ़ीं। बैंड द्रुत में था। हाल में सैकड़ों जोड़े एक दूसरे से आबद्ध डांस लय पर थिरक रहे थे। कुमारी रीटा के अविरोध से इमीनावा की हविश उभर आयी थी। उसने नृत्य गति में अपने बदन को तिरछा कर कुमारी रीटा के वक्षों को अपनी छाती से सटा लिया। कुमारी रीटा

को अब मौका मिला। वे छटक कर अलग खड़ी हो गयीं। इम्तियाज़ ने पलक मारते आकर कैप्टन इसीनावा के चेहरे को थप्पड़ घूसों से लाल ही नहीं लहूलुहान कर दिया। सारी घटना इतनी आकस्मिक हुई कि कोई कुछ न समझ सका न कुछ कह सका। बैंड रुक गया, हाल में क्रोध का कोलाहल छा गया और जापानी तथा हिन्दुस्तानी अधिकारी तथा सैनिक अचानक एक दूसरे पर झपटने की मुद्रा में ताल ठोंक बैठे।

एक वयस्क जापानी कर्नल भागा-भागा आया। उसने बीच बचाव किया। झगड़े का कारण वह समझ चुका था। उसकी उसने चर्चा नहीं की। उसने कैप्टन इसीनावा को तत्काल 'हैपी वर्ल्ड' से बाहर चले जाने का कड़ा हुक्म दिया। कुमारी रीटा और इम्तियाज़ से उसने माँफी माँगी और हिन्दुस्तानी तथा जापानी सैनिकों को एक होकर साम्राज्य शाही शक्तियों का सफाया करने की अपील की। उसने वादा किया कि आगे से समुचित व्यवहार के लिए जापानी फौजियों को कड़ा आदेश प्रसारित किया जायगा।

दुर्घटना होते-होते बच गयी। नृत्य आगे चला। उस दिन के बाद सिंगापुर में फिर दुर्व्यहार की घटना की शिकायत नहीं मिली।

कुछ दिन बाद रानी झांसी रेजीमेंट की कमांडर कर्नल लक्ष्मी ने यह भेद प्रकट किया कि पुखराज ने आज़ाद हिन्द फौज़ के केन्द्रीय अधिकारियों से कैप्टन इसीनावा का उदाहरण देते हुए शिकायत की थी। केन्द्र ने जापानी कमांड को लिखा। जापानी जेनरल ने पहली घटना की खुफिया जांच की। उसी ने उस वयस्क कर्नल को कैप्टन इसीनावा की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए 'हैप्पी वर्ल्ड' में भेजा था।

कैप्टन इसीनावा जैसी दुर्घटना फिर कहीं नहीं हुई। कैप्टन इसीनावा को उसके कमांड ने जापान वापस भेज दिया।

कुमारी उषा पैट्रिक जब किसी दूसरे काम से पुखराज से मिलने गयीं तब पुखराज ने उनसे कहा,—"इन्सान की इज्जत उसके हाथ में होती है। नारी की तो इज्जत ही भगवान है।"

उषा पैट्रिक इन शब्दों पर अपने अतीत में पहुँच गयीं। उनकी आँखों में पुखराज की द्युति सरोवर में शुभ्र कमल जैसी खिल आई—"नैसर्गिक, परम पवित्र, प्रवहमान।

आसमान में जैसे बड़ी आंधी अन्तरिक्ष को धूल धूसरित कर देती है वैसे ही आज़ादी के संघर्ष की तैयारी की गूंज से सिंगापुर और मलाया की दिशायें भर आयीं। जापानी आक्रमण को लोग भूलने लगे। उसकी जगह आज़ाद हिन्द फौज़ और सरकार हिन्दुस्तानियों, मलायियों तथा अंगरेज कैदियों पर छा गये। प्रवासी भारतीयों ने अपना सर्वस्व निछावर कर दिया। अंगरेजों के माने-जाने सिंगापुर के भारतीय मूलक

धनपति सरदार ईश्वर सिंह और सेठ करीम ने भामाशाह की तरह अपना सर्वस्व दान कर दिया।

नरेन्द्र आजाद हिन्द सरकार का वित्त सलाहकार था। उसका प्रमुख काम सरकार के लिए धन संग्रह करना था जिससे आजाद हिन्द फौज को स्वावलम्बी बना कर उसे पूरी तरह सजाया जा सके। वह दिन रात काम करता था।

पुखराज उससे भी अधिक व्यस्त रहा करती थी। फौज के लिए कपडे, ऊन कम्बल, दरी, बरसाती, तकिया से लेकर साबुन, अंचार, डब्बो में बन्द तरकारियां, गोस्त आदि की आपूर्ति में उसे कितना कठोर परिश्रम करना पडता था। उसकी लगन दूसरो के लिए आदर्श प्रस्तुत करती थी। न उसे खाने की सुधि, न आराम की, साँसों की तरह लगातार काम करते रहना ही उसका दैनिक जीवन था।

नरेन्द्र स्वतंत्रता के पुनीत यज्ञ के आयोजन मे उसी तरह जुटा था। एक दिन विनोद में उसने पुखराज से कहा भी,—"मुझ अकिंचन के लिए तो तुम्हारे पास समय ही नही।"

पुखराज आह्लाद मे बोली,—"बातें बनाने मे बुन्देलो को कौन मात दे सका है?"

"बुन्देलों को तो तुम जानती ही हो। अपनी आन पर वह क्या नही त्याग देते?"

पुखराज की आखे गर्व से भर आयी। उसने नरेन्द्र की ओर अनिर्वचनीय भाव से देखा। आंखो के उस जादू से नरेन्द्र ने पुखराज को बाँहो मे भी भरकर प्रेम चिह्नो की भरमार कर दी। पुखराज को बल पूर्वक उसे रोकना पडा।

नरेन्द्र ने विनोद को और अधिक सरस किया। कहा,—"कुंवर दद्दा की राय मे हमे जल्दी लीन हो जाना चाहिए।"

पुखराज लाज से लाल हो नरेन्द्र की छाती मे छिप गयी। क्षणिक मौन के बाद उसने पूछा,—"कुवर जीजा की कोई खबर है क्या?"

"सपने मे उन्हे देखा था। माँ को भी।"

पुखराज भावो मे विभोर हो गयी। बहुत देर की चुप्पी के बाद वह बोली,—"मैं कितनी अभागिन थी। माँ जी मेरे यहाँ आई। मै उन्हे पहचान भी नही पाई, उनकी चरण-रज भी नही ले पायी।"

पुखराज के तरल भावो को रोक कर नरेन्द्र ने कहा,—"माँ के आशीर्वाद से ही हम दो से एक हुए। माँ हमारी बाट जोह रही होगी।"

"क्या माँ जी ने मुझे माफ कर दिया?"—

पुखराज को अपने मे समेट कर नरेन्द्र बोला,—"इस दिव्य ज्योति से माँ भी चकाचौंध खा गयी, इसकी वशीभूत हो गयी।"

'धत' पुखराज के मुह से निकला। उसकी आँखो मे एक नयी ज्योति आ

झलकी—आजादी की दिव्य ज्योति जिसके प्रकाश में ऊँच नीच, गरीबी अमीरी, जाति पांति, अनैतिकता, भारतीय समाज से मिट जायेंगे। वह उस दिव्य प्रकाश की कल्पना में नरेन्द्र की बाँहों में बंधी जाने कब तक अपनी अलौकिक भावधारा में तिरती रही।

'सेना लड़ती है, दुश्मन से देश के सीमान्त की सुरक्षा करती है। नागरिक उस सेना की साज सज्जा जुटाते हैं। नागरिकों का जितना ऊँचा मनोबल हो उतना ही ऊँचा सेना का शौर्य होता है।'—झांसी रेजिमेंट की कर्नल लक्ष्मी ने आजाद हिन्द सरकार को पुखराज के काम की प्रशस्ति लिख भेजी थी। आजाद हिन्द सरकार के अध्यक्ष श्री रास विहारी बोस ने पुखराज को व्यक्तिगत शाबासी देने के लिए भेंट करने को बुलाया।

निर्धारित तिथि को समय से पाँच मिनट पहले वह आजाद सरकार के अध्यक्ष के कार्यालय में पहुँच गयी। कार्यालय सिंगापुर के भव्य ऊँचे भवन के एक तल्ले पर था। अध्यक्ष से भेंट के लिए उसे उनके कमरे तक लिवा जाने जो अधिकारी कैप्टन के भेष में तग़मों से सुसज्जित आया वह उसके पूर्व परिचित बलराज मास्टर उर्फ श्री रमेश चन्द्र सिन्हा थे। कैप्टन बलराज सलाम कर उसे श्री बोस के कमरे में ले गये। आजाद सरकार के पहले अध्यक्ष ने उसके काम की तारीफ की। उन्होंने सच्चाई से कहा,—"हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के इतिहास में आपका नाम अगली पंक्ति के सेनानियों में अंकित किया जायगा। आपकी अमूल्य सेवाओं के लिए हम सब आपके आभारी हैं।"

पुखराज मौन थी। श्री बोस ने आगे कहा,—"कैप्टन बलराज ने आपके और बैरिस्टर नरेन्द्र के त्याग और संघर्षों का गौरवपूर्ण उल्लेख किया है। हिन्दुस्तान की आजादी का अर्थ ही नाबराबरी को मिटाना होगा जिससे सब सुखी और समृद्ध हो सकें। इसी तरह भारत विश्व में नया प्रकाश फैला सकेगा।"

पुखराज आभार प्रकट करना भूल उस क्रान्तिकारी सेनानी के श्रीमुख को देखती रह गयी। अंगरेजों ने ऐसे देशभक्त पर घोर अत्याचार किया। उसे जन्मभूमि से दूर जापान में जीवन भर शरण लेनी पड़ी।

चाय का एक प्याला उसके सामने रखा गया। अध्यक्ष द्वारा यह उसका विशेष सम्मान था। चाय उसने पी। चाय के बाद दोनों हाथ जोड़, सिर नवा, उसने क्रान्ति की उस ज्योति को प्रणाम किया और कमरे से बाहर हो गयी।

कैप्टन बलराज उसे बाहर तक छोड़ने आये। उन्होंने बताया कि दिल्ली से भाग कर वह कई देशों में होते हुए जापान में श्री बोस के पास पहुँचे। वहीं उन्होंने आजाद फौज में नाम लिखाया। श्री बोस के साथ ही वे टोकियो से सिंगापुर आये। उनका जीवन इतना व्यस्त था कि अभी कहीं वह आ जा नहीं सके।

पुखराज ने कुछ कहा नहीं, कुछ पूछा नहीं। वह भावों से भरी रही।

●

५

मलाया को जापानियों को बिना लड़े सौंप कर अंगरेज बर्मा में लड़ने को कदापि तैयार नहीं थे। उन्हें हिन्दुस्तान में मर कर भी मोर्चा लेना था। हिन्दुस्तान को खोने का मतलब उन्हें अपनी समूची शक्ति, धन और वैभव को खोना था।

ब्रिटेन के सरकार की रणनीति हिन्दुस्तान की सुरक्षा में अमेरिका को जोत देना था। चर्चिल उसकी धड़ल्ले में कोशिश कर रहे थे।

हिन्दुस्तान में भर्ती को तेजतम कर दिया गया था। उसका नतीजा सरकारी दृष्टि में सन्तोषजनक नहीं था। लखनऊ कमांड से टामस को डाँट मिली थी। भर्ती बढ़ाने का कड़ा आदेश भी आया था। टामस किसको डाटता। उसने विदीर्ण पर अपनी खीझ उतारी। उसमें साफ-साफ कहा,—"जो ऐश उड़ा रहे हो वह सब बन्द हो जायगा। भर्ती कल में बढ़ाओ। वह नहीं बढ़ी तो मैं तो डूबूगा ही तुम्हें भी नहीं बख्शूगा।"

उसने आगे कहा,—"इस भोजपुर क्षेत्र ने कम्पनी के समय में सरकार का साथ दिया है। अब इसे क्या हो गया है?"

विदीर्ण कहना चाहता था कि इन्हीं भोजपुरियों में मंगल पाण्डे निकले, कुंवर सिंह निकले। वह नीति में विचारों को मन में पी गया। औपचारिकता पूरी करने के लिए उसने जवाब में कहा,—"यहाँ नेहरू, राजेन्द्र बाबू और जयप्रकाश की तूती बोलती है। जे० पी० बलिया के हैं।"

टामस का खून उबल आया। चिल्ला कर बोला,—"इन दुष्ट लोगों का कहीं पता भी नहीं चलेगा। जापानी अगर आये तो इनकी बोटी-बोटी चबा डालेंगे। इंगलैंड को यहाँ जापानियों को किसी हालत में नहीं आने देना है। आज इंगलैंड का हर बालिग मर्द और औरत जबरिया स्कीम में फौज में पहले से ही भर्ती हो गया है। वहाँ अब भर्ती के लिये कोई बाकी नहीं। हम हिन्दुस्तान जैसे बड़े देश में जबरिया चलाना नहीं चाहते। हिन्दुस्तानी नौजवानों की भर्ती जैसे भी हो बढ़ानी है। सरकार ने सैनिकों का वेतन बढ़ाया है, सुविधायें बढ़ायी हैं, हिन्दुस्तान की मित्र राष्ट्रों की जीत में ही लाभ होगा। तुम यह सब समझाओ। इसका प्रचार करो और भर्ती में नतीजा दिखलाओ। तुम हिटलर या टोजो जैसे तानाशाह के अधीन तो नहीं होना चाहते?"

विदीर्ण सांस रोके मौन था। उसका दिल बैठा जा रहा था। वह सोच रहा था कि गांधी महात्मा सच ही इस लड़ाई को अंगरेजों की बताते हैं। अंगरेज भारत

को लड़ाई के बाद भी स्वायत्तता का अधिकार तक नहीं देना चाहते और तानाशाहों का भय दिखाते हैं। अंगरेज कितने कुटिल हैं। वे सहानुभूति से नहीं दुर्भिक्ष लाकर फौज में भर्ती बढ़ाना चाहते हैं।

आदमी घोर से घोर दुःख सह लेता है, पेट की भूख नहीं सह पाता है। पेट उसे कहाँ नहीं पटक देता है। इसीलिए हिन्दुस्तान में अनादि काल से पेट को लात मारना पाप माना गया है। पेट भरने के इस सनातन सवाल से विदीर्ण संकट में पड़ा। उसकी नौकरी जाने से उसके पेट भरने की समस्या ही नहीं उठ खड़ी होगी, उसका राग रंग, काव्य, प्रेम, सब मिट जायगा। उसने अपने पेट पर हाथ फेरा और घोर दुश्चिन्ता में टामस से कहा,—"अगर एक महिला सम्पर्क अधिकारी की नियुक्ति हो तो मेरे प्रचार के काम में तेजी से नतीजा मिलेगा।"

"महिला सम्पर्क अधिकारी पर कितना खर्च होगा?"—टामस को भी सुझाव कई कारणों से रुचिकर लगा।

"बी० ए० पास महिला अधिकारी का यात्रा और दैनिक भत्ते के अतिरिक्त ढाई सौ रुपया मासिक वेतन होगा।"

टामस के देश में जीवन निर्वाह को ध्यान में रख कर न्यूनतम वेतन और पारिश्रमिक निर्धारित था। विदीर्ण का बताया व्यय उस अनुपात में कुछ भी नहीं था। उसने कहा,—"मुझे नतीजा चाहिए, व्यय चाहे जो हो। हम बड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं।"

सुकवि आश्वस्त हो कालिका राय की ओर पैर घसीटने लगे। लोहता के काम में कालिका राय की पाँचों घी में थी। वह नोट पर नोट कमा रहा था। अंगरेजों को वह जान गया था। उन्हें वह चाँदी की जूती से मारता था।

सुकवि मुंशी बाबू की हवेली पर पहुँचे। वहाँ पंच चौकड़ी में कालिका राय भी डंटा बैठा था। मुंशी बाबू बता रहे थे,—"अंगरेजों ने महात्मा जी की यह बात भी नहीं मानी की युद्ध की समाप्ति पर हिन्दुस्तान को स्वतंत्र कर दिया जाय।"

"मित्र राष्ट्रों के एटलांटिक घोषणा को कि सभी राष्ट्र स्वतंत्र होंगे चर्चिल ने हिन्दुस्तान पर लागू ही नहीं होने दिया। रूजवेल्ट भी कुछ नहीं कर सके। सुना नेहरू और सुभाष कुछ करने का सोच रहे हैं।"—त्रिभुवन दास पण्डा ने पहली बार गहराई की समीक्षा की।

"सुभाष जेल के सींकचों मे बन्द हैं। अंगरेज उन्हें युद्ध के अन्त तक कदापि नहीं छोड़ेगा। नेहरू वही करेंगे जो गाँधी कहेंगे।"—घुण्टे मेहरा अपने जोश में बोले।

कालिका राय ने पते की बात कही,—"गाँधी महात्मा चुप बैठने वाले नहीं।"

कालिका राय की उक्ति पर सुकवि विदीर्ण का दर्प जागा। उन्होंने कहा, "मित्र राष्ट्रों का साथ न देना हिन्दुस्तान के लिए खतरनाक साबित होगा? हम अपने यहाँ तानाशाही कभी नहीं चाहेंगे।"

कालिका राय ने उपेक्षा की दृष्टि से विदीर्ण को देखते हुए उसी से कहा,—"अरे विदीर्ण, तेरी तो चाँदी है। तुम तो ऐसा कहोगे ही।"

"मैं सच कह रहा हूँ, राय साहब। मित्र राष्ट्र अगर हारे और हिन्दुस्तान में जापानी घुस आये तो हम अगले डेढ़ सौ साल के लिए और दब जायेंगे। जापानी कितने बर्बर होते हैं, उसे तो आपने सुना ही होगा।"—[illegible] के स्वर में सच्चाई थी।

"अंगरेज, युद्ध के बाद ही सही, हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता का वादा क्यों नहीं कर देते? उचित तो यह होगा कि हिन्दुस्तानियों का विश्वास जीतने के लिए वह अभी वाइसराय की कार्य कारिणी समिति को हिन्दुस्तानी राष्ट्रीय [illegible] कर दें।"—प्रोफेसर राजीव शाह बोले। वे कभी कदा भूले भटके [illegible] में आ जाया करते थे।

विदीर्ण प्रोफेसर शाह की गम्भीर विवेचना पर चकित हुआ। उसने कहा,—"बातें चल रही हैं। क्रिप्स मिशन कुछ ऐसा ही प्रस्ताव लाया था। जिन्ना साहब उसमें भारी रोड़ा बने।"

"जिन्ना अंगरेजों की हथेली पर नाचते हैं। [illegible] में उनकी साठ-गाँठ है।"

विदीर्ण ने बात काट कर जोश में कहा,—"मित्र राष्ट्र हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता पर सहानुभूति से विचार करेंगे। अमेरिका इसके पक्ष में है। लड़ाई का [illegible] दार अमेरिका पर ही है।"

"अंगरेज क्या हार गये?"—किसी ने व्यंग बाण छोड़ा।

"हारे ही समझो।"—कइयों के मुँह से एक साथ ही निकला।

बहस अनायास ही गम्भीर होती जा रही थी। [illegible] ने प्रसंग को [illegible] किया,—"[illegible] ज्योतिषी [illegible] कहा था कि अंगरेजों के दिन पूरे हो गये। भविष्य पुराण में उनके बाद यहाँ मौन राज का उल्लेख है।"

मौन कौन है, कहाँ के हैं, यह [illegible] को भी नहीं मालूम था। [illegible] को भी इसकी जानकारी नहीं थी। [illegible]

[illegible]

[illegible]

"कहाँ?"—कालिका राय [illegible] हुए।

"[illegible]"

आ रहे हैं।"

कालिका राय हँस कर बोला,—"अरे विदीर्ण, यह अपनी सेना थोड़े है जिसमें भर्ती होना गौरव की बात हो।"

"राय साहब, आपकी मदद चाहिए।"

"क्या मदद करूँ?"

"मैं भर्ती बढ़ाने के लिए एक चाल चल रहा हूँ। किसी पढ़ी लिखी युवती को अपना सहयोगी बनाना चाहता हूँ। उसे मेरे साथ दौरा करना पड़ेगा।"

कालिका राय ठिठक गया। उसका तेज दिमाग दौड़ रहा था। उसने पूछा,—"वेतन क्या होगा?"

"युवती बी० ए० पास हो तो ढाई सौ रुपया महीना, यात्रा भत्ता आदि। ऊपर से फौज की गाड़ी और शक्ति की सुविधा।"

"तेरी उस इलाहाबाद वाली अध्यापिका का क्या हुआ?"—कालिका राय ने उत्सुकता दिखायी।

"वह तो आपकी थी, राय साहब।"

"जो सबकी होती है वह किसी की नहीं।"

"गोली मारिए उसको,"—विदीर्ण ने निराशा के स्वर में कहा।

कालिका राय ने सुझाव दिया,—"चल शर्मा के यहाँ। शायद वह किसी को बताये।"

शर्मा का नेपाली पोखरा पर एक 'प्राइवेट हाउस' था। उसमें शिक्षित, उच्च-स्तरीय, विधवा, विवाहित, अविवाहित महिलायें और युवतियाँ तारों की आँखों से छिप कर धंधा कमाने आया करती थीं। हिन्दुस्तान में अनादिकाल से ही गंधर्व महिलाओं का प्रचलन चला आया है। नारी शक्ति और माँ होकर भी यहाँ हमेशा प्रताड़ित रही है। पुरुष ने उसे भोग की वस्तु हमेशा माना। इस क्रम में वह भोग्या ही नहीं नगर वधू तक बनी। अंगरेजों के पहले भी उसकी दशा चरम अधोगति की थी। अंगरेजों का राज जमने के बाद शोषण की जो नीति चली उसमें रुपये का मोल बढ़ गया। रुपया कमाने की एक नयी सभ्यता चल निकली। उसी रुपैया के लिए शरीर का व्यापार स्थान विशेष के अतिरिक्त मोहल्लों में भी चलने लगा। बनारस शहर उसका अपवाद क्या होता? शर्मा का प्राइवेट हाउस उच्चस्तरीय माना जाता था। शर्मा प्रकट रूप से हाउस के धंधे से अपने को दूर रखता था। उसके संचालक थे एक श्री दीक्षित जो अपना अच्छा व्यापार छोड़ कर इस धंधे से दुगुना चौगुना धन कमा रहे थे। शर्मा उनका भागीदार था।

विदीर्ण का मन्तव्य जान कर शर्मा ने यह कहकर अपनी जान छुड़ाई कि शरीर बेचने वाली भी अंगरेजों की फौज में नाचने गाने के लिए भी नहीं जाना चाहतीं।

कालिका राय ने तब उससे पूछा,—"तू किसी मालती सिमली को जानता है?"

"वह लायल की लड़की ? नम्बरी है। पति ने लात मार कर घर से निकाल दिया। अब लायल भी उसे अपने घर में नहीं रहने देता। कहीं अलग कमरा लेकर रह रही है। वह पूरी स्वतंत्र है, ऊँचा खेलती है। कहां मिलेगी, यह मैं नहीं जानता।"

"उसको ढूंढना जरूरी है।"

कालिका राय की बात को शर्मा अमान्य नहीं करना चाहता था। बोला,—"चलिए, एक जगह पता लगाता हूँ।"

गोदौलिया से दशाश्वमेध वाली सड़क पर एक बनारस लाज हाल ही में खुला था। उसके नीचे काठ की छोटी चौकी पर पोथी पत्रा लिए, त्रिपुण्ड धारण किये, लम्बे छहरते काले बाल और लम्बी मूछ वाले एक पंडित जी बैठा करते थे। वे साइत, शुभ अशुभ समय आदि का दो-दो आना लेकर विचार बताया करते थे। शर्मा उनसे मिला। वे मुस्कुराये। शर्मा ने जब दो आना निकाल कर उन्हें दिया तब उन्होंने कहा,—"बंगाली महाल चले जाओ। भेंट होगी।"

बंगाली महाल होटल के मैनेजर सिसुअर बाबू थे। ऊँचे-ऊँचे अधिकारियों, महाजनों का उनके यहाँ आना जाना था। शर्मा सिसुअर बाबू से मिला। कालिका राय को सिसुअर बाबू ने एक कमरे में ले जाकर बैठाया। वहाँ भीतर के दरवाजे का पर्दा उठाते हुई श्रीमती मालती सिमली आई।

सिसुअर बाबू ने कालिका राय का मालती सिमली से परिचय कराते हुए कहा,—"यहाँ के बड़े रईस और जौहरी।" मालती सिमली का परिचय कराते हुए उन्होंने कहा,—"मालती सिमली बी० ए०।"

परिचय करा कर सिसुअर बाबू अपना मैनेजर का दायित्व निभाने चले गये।

कालिका राय मौका महल जानने वाला पंछी था। उसने अत्यन्त शिष्टता से कहा,—"आपसे मिल कर दिल की कली खिल गयी।"

मालती सिमली बी० ए० का अन्दाज उससे भी ऊँचा था। जवाब में उन्होंने आँखें नचाते हुए कहा,—"कली तो कब का फूल बन चुकी।"

कालिका राय की सहज बुद्धि और विनोद प्रियता की दाद देनी पड़ती है। पढ़ा लिखा नहीं होते हुए भी उसने मालती सिमली बी० ए० की आँखों में झाँकते हुए कहा,—"फूल क्या कम मोहते हैं ?"

इतने मोटे आसामी से जिसमें बुद्धि की कमी न हो मालती सिमली खुश हुई। वे कालिका राय से एक दम सटने लगी।

कालिका राय ने तब तक पूछा,—"नौकरी करेंगी ?" सिर हिला कर मालती सिमली ने बताया—हाँ।

"क्या तनख्वाह लेंगी ?"

"जो दे दोगे।"

"मैं अपने लिए नहीं पूछ रहा हूँ। फौज में इन कवि जी की तरह भर्ती का प्रचार करने के लिए एक महिला सम्पर्क अधिकारी की जरूरत है। वेतन ढाई सौ रुपया होगा, भत्ता-गाड़ी ऊपर से।"

कवि जी कुछ बोलने को उद्यत हुए। उसके पहले ही मालती सिमली बी० ए० ने कहा,—"मैं ईसाई जरूर हूँ। पर हिन्दुओं की नस्ल की हूँ। अंगरेजों की फौज की नौकरी से जो करती हूँ वही अच्छा है।"

सुकवि विदीर्ण को मानो किसी ने तमाचा जड़ दिया। कालिका राय भौचक रह गया। वहाँ से चल देना चाहता था। इतनी देर की बातचीत की वह क्या कीमत चुकाये, यह वह मन ही मन सोच रहा था। मालती सिमली बी० ए० ने उसकी परेशानी को दूर कर दिया। वह मंद मुस्कुराती जिस पर्दे के पीछे से आयी थीं उसी के पीछे चली गयीं।

वे भी उठे। बंगाली महाल होटल से बाहर आये। बाहर कालिका राय ने शर्मा से पूछा,—"क्यों रे शर्मा, क्या समझा ?"

शर्मा ने न कुछ समझा था न उसने जवाब दिया। कालिका राय ही बोल उठा,—"वे दिन हवा हुए जब पसीना गुलाब था।"

सांस लेकर उसने आगे कहा,—"अब साली रंडियां भी अंगरेजों की कोई नौकरी करने को तैयार नहीं। हरकोर्ट बटलर अपनी कब्र में तड़प रहा होगा।"

कालिका राय सुकवि विदीर्ण और शर्मा को अचानक छोड़ कर तेज क़दमों से चलने लगा। उसे सहसा याद आया कि उसने बीवी नम्बर दो को कर्ण घंटा की झांकी दिखाने का वादा किया था।

बनारस में सुकवि विदीर्ण को कोई पढ़ी लिखी युवती सम्पर्क और प्रचार अधिकारी बनने योग्य नहीं मिली। वे हार मान गये। हार कर चुप बैठने के पहले उन्होंने इलाहाबाद का चक्कर लगाना जरूरी समझा। वहाँ कमलेश थी। कवि जी का मन उसके ध्यान से ही बैठने लगा। आशा टूटती कब है ? कवि जी इलाहाबाद आये।

इलाहाबाद में कवि जी कमलेश का पता लगाते-लगाते उससे मिले। कमलेश पुरुष जाति से बदला चुकाते चुकाते उसकी बुरी तरह शिकार बन चुकी थी। स्कूल की नौकरी से वह निकाल दी गयी थी। लाख कोशिश करने पर भी उसे दूसरी नौकरी नहीं मिली। कुंवर साहब सुहागगढ़ी और उनकी प्रेमिका पन्ना ने उसकी थोड़ी बहुत सहायता की। उन्हीं के कारण पिछले दो महीने से वह एक प्राइवेट प्राइमरी पाठशाला में स्थानापन्न अध्यापिका का काम कर रही थी। नगरपालिका के शिक्षा कमेटी के अध्यक्ष हरपू बाबू ने कुंवर साहब सुहागगढ़ी की शिपारिस पर उसे वह जगह दिलायी थी। यही नहीं, हरपू बाबू ने उसे अपने नौकरखाने में रहने के लिए एक कोठरी भी दिया था। कोठरी में रहने के बदले में वह हरपू बाबू के बच्चों को पढ़ाया करती थी। यहाँ तक तो ग़नीमत था। धूप-छांह हर आदमी के

जीवन में आते है। कमलेश हरपू बाबू की आँखों से बुरी तरह डर गयी थी। हरपू बाबू इधर बहुत दयालु हो गये थे। प्रायः वे नौकरखाने में आकर नौकरों का हाल-चाल, सुख-सुविधा, पूछ जाते थे। कमलेश की कोठरी पर उनकी विशेष कृपा थी। कुशल-क्षेम पूछ, हँस-बोल कर या तो चले जाते थे या कमलेश उन्हे जाने पर विवश कर देती थी। एक दिन रात को वह आये, कोठरी में जम गये। टलने का उन्होंने नाम नही लिया। उन्होंने कमलेश से साफ-साफ कहा,—"आज या तो तुम्हें पाऊँगा या अपने को उडा दूँगा।" यह कह कर उन्होंने जेब से भरी पिस्तौल निकाल कर स्टूल पर रख दिया और कमलेश को जबरदस्ती चारपायी पर खींच लिया। कमलेश उलझी, उसने झगडा किया, शोर मचाया। हरपू बाबू को उस दिन जाने कहाँ का बल मिल गया था कि उन्होंने तावडतोड दो चार चाँटे कमलेश पर चला दिए। उसका मुँह बन्द कर दिया और कहा,—"चुप रहो। जरा भी चीं चापड़ की तो इसी पिस्तौल से तुम्हारा और अपना काम तमाम कर दूँगा।" उनकी आँखो में हिंसा का लाल खून तैर रहा था। कमलेश ने सिसकते बिलखते किसी तरह कहा,—"मुझे अपने घर मे रख लो। फिर चाहे मेरी बोटी-बोटी चबा डालो।"

हरपू बाबू बिना बुद्धि के शिक्षा कमेटी के अध्यक्ष नही बने थे। बोले,—"तुम्हे पक्की नौकरी दे दूँगा। एक अच्छा कमरा किराये पर सजा दूँगा। जब चाहे आया करूँगा। तुम स्वतंत्र रहोगी। चाहे कुँवर साहब की रातो को गुलजार करो या जिस किसी की। मेरी ओर से कोई रुकावट नही होगी।"

कमलेश पीपल के पत्ते की तरह काँप गयी। हरपू बाबू ने उसे घिनौनी वेश्या समझ रखा था। इसलिए उन्होंने कुँवर साहब का नाम लिया। वह रोने लगी। हरपू बाबू ने उसे झकझोर झपट प्रायः विवस्त्र कर डाला। कमलेश उनकी जाल मे बुरी तरह जकड गयी। बिलकुल निरीह बन वह होश खोने ही वाली थी कि कोठरी के दरवाजे पर खटखट हुई। दरवाजा भिड़ा ही रह गया था। वह खुल गया। कमरे के भीतर हरपू बाबू की धर्मपत्नी आ खडी हुई। हरपू बाबू के जोश को लकवा मार गया। वे काटो तो खून नही बन गये, उनकी साँसें बैठने लगी। कमलेश त्रस्त हो अपने वस्त्रो को समेट खडी हो गयी।

हरपू बाबू की धर्मपत्नी एक शब्द नही बोली। जैसे आयी थी वैसे ही नि-शब्द वह कोठरी से बाहर निकल गयी। उनके पीछे-पीछे मुर्दा की तरह हरपू बाबू भी चले गये। कमलेश धरती से मनाती रही कि वह फट जाय जिससे वह उसमे समा जाय।

मनुष्य की हर चाह पूरी नही होती। धरती फटी नही। कमलेश का वहाँ रहना रौरव नरक-कुण्ड में जलना बन गया। वह वहाँ से भाग भी नही सकी। उसके हाथ पाँव ने साथ छोड़ दिया। वह सारी रात कोठरी के एक कोने मे दुबकी बैठी रही। वह बैठी ही रहती अगर सबेरा होते ही हरपू बाबू के घर की नौकरानी आकर न कहती,—"बहू जी ने हुक्म दिया है कि तुम कमरा छोड कर अभी यहाँ से

जाओ। फिर कभी अपना काला मुँह यहाँ मत दिखाना।"

कमलेश कहाँ जाती? कुँवर साहब और पन्ना के यहाँ शायद शरण मिल जाय—यह सोच कर वह अपनी चीज़-वस्तु संभालने लगी। कमरे में किसी के आने की आहट आई। कमलेश ने पूरी कोशिश से आँखें जो उठायीं तो महाकवि विदीर्ण सामने खड़े दिखायी पड़े।

कमलेश का बाँध अब टूटा। वह फफक-फफक कर रोने लगी। महाकवि मुसीबत में पड़े। उन्होंने कमलेश को ढाढ़स बँधाने की कोशिश की, उसके आँसुओं को अपनी रूमाल से पोंछा, उसके दु:ख का कारण जानना चाहा। कमलेश का रोना रुका नहीं। बहुत देर के बाद जब उसके कलेजे के सारे आँसू बह गये तब वह बोली,—"कवि जी आप भगवान की तरह आ पहुँचे। मुझे यहाँ से अभी ले चलें, शरण दें।"

सुकवि विदीर्ण का प्रचारक दर्प जागा। बोले,—"मैं आपको बनारस लिवा चलने के लिए ही आया हूँ। ढाई सौ रुपये महीने की नौकरी ठीक हो गयी है।"

रिक्शा बुलाया गया। कमलेश अपनी गठरी मोटरी ले कवि जी के संग रिक्शे पर आ बैठी।

राम बाग़ स्टेशन पर कवि जी ने बड़े आग्रह से उसे एक प्याला चाय पिलाया। फिर पूछा,—"क्या मैं आपके इस भीषण दु:ख का कारण जान सकता हूँ?"

"कवि जी, मैं भूल गयी थी कि मैं नारी हूँ, वह भी मुसीबत की मारी। सामन्ती दुनिया नारी का हाड़ चाम चबाना ही अपना धर्म समझती है। पैग़म्बरों ने नारी को खेती जो कहा है।"

सुकवि कमलेश के शब्दों और भाव से घबराये। साहस बटोर कर झिझकते हुए संकोच के साथ बोले,—"आपका दासानुदास विदीर्ण ग़रीब है।"

कमलेश बनारस में सुकवि विदीर्ण के साथ उनके घर पहुँची। पहले वह अपनी दूरदराज़ की किसी मौसी के पास ठहरा करती थी। सुकवि को कमलेश को अपने घर लाने में एक ही आपत्ति थी। घर के नाम पर उनके पास एक भड़भूजे की दुकान के ऊपर छोटी कोठरी थी। भाड़ रात में बन्द नहीं रहता होता तो वैशाख जेठ के तपते महीने में वे सो भी कहाँ पाते!

कोठरी में बाँस की एक खटिया थी। वह मेहमान के योग्य कहाँ थी। कवि जी को अपनी दीन दशा पर तरस आई। कमलेश को वे अपनी कठोरी में उल्लास से ही लाये। कवि थे, कल्पना का बल कुछ न कुछ उनके पास था ही। रात का अंधेरा फैलने लगा था।

कवि जी ने आतिथ्य निवाहन में कमी नहीं की। मोहल्ले के पूड़ी की दुकान से वे पूड़ी मिठाई लाये। स्वयं खाये, कमलेश को खिलाये। सोने के लिए वह नीचे जाने लगे। बोले,—"मैं दुकान के सामने पड़े भड़भूजे के तख्त पर सो लूँगा।"

"क्यों ?"—कमलेश ने चौंक कर पूछा ।

"आप नीचे सड़क पर थोड़े सोयेंगी ।"

"मैं यहीं फर्श पर सोऊँगी । आप चारपायी पर सोयें ।"

कवि जी के आश्चर्य का अन्त नहीं रहा । उनकी कल्पना साकार हो उठी । अपने जोश की तरंग मे उन्होंने कमलेश का हाथ अपने होठों तक ले जाकर उसे प्रेम से चूम लिया । कमलेश ने जो किया वह कवि जी की कल्पना के बहुत ऊपर की बात थी । उसने कवि जी के पास आ उनके अधरों पर अपने अधर रख दिए । कवि जी भर आये, उनके आँसू मचल आये । उन्हे जीवन में पहली बार प्रेम का प्रतिदान मिला । क्या वह इसके योग्य थे—उन्होंने सच्चाई से अपने से पूछा ।

कमलेश ने फर्श पर अपनी दरी बिछायी । कवि जी बोले,—"मैं पुरुष हूँ । फर्श पर मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी ।"

कमलेश बोली,—"मुझे होगी । आप चारपायी पर सोयें ।"

कमलेश मन हारे, थकी माँदी, दरी पर लेट गयी । उसे नींद जल्दी आ गयी । कवि जी चारपायी पर करवटें बदलते रहे । रात भर उनकी सोते-जागते के बीच की दशा रही । सवेरे आँख लग गयी ।

जब जगे तब आठ बज रहे थे । कमलेश कोठरी के एक कोने को साफ-सुथरा कर, लीप-पोत, दो ईंटों का चूल्हा जलाकर खाना पका रही थी ।

कवि जी को जगा देख बोली, –"जल्दी नहा धो लें । खाना तैयार है ।"

"मुँह-सुबह भड़भूजे का लड़का कुल्हड़ मे चाय दे जाता था ।"

आज भी लाया था । मैंने लौटा दिया । उठते ही चाय पीना पाचन-शक्ति को क्षीण करता है ।"

कवि जी चुप रह गये । वे उठे, नीचे सीढ़ी के बगल मे सडास मे गये । वहीं लगा हुआ सड़क पर नगरपालिका का नल था । उस पर नहा कर ऊपर आये ।

खाने के लिए पुरानी चटाई का एक आसन बिछा था । कवि जी दफ्तर जाने की पोशाक, पैंट कमीज मे चटायी पर आ बैठे । एक ही थाली देख कर उन्होंने पूछा,—"आप नहीं खायेंगी ?"

"बाद मे खाऊँगी । रोटियाँ सेंक रही हूँ ।"

सुकवि को पहली बार उस घर में ताजी सिकी रोटियाँ खाने को मिलीं । अब तक सवेरे वे बगल के मारवाडी बासा मे खाते थे । रात को जहाँ कहीं मिल जाय या न मिले । वैसे अंगरेजों की नकल कर वे खाने से कहीं अधिक पीने पर जोर देते थे ।

सुकवि विदीर्ण उस दिन भावाकुल रहे । दफ्तर मे भी कमलेश के बारे मे सोचते रहे । कमलेश का कल से आज तक का व्यवहार क्षणिक आवेश का नहीं था । न वह खेल का था । तब ? उन्हें कुछ साफ नहीं समझ मे आ रहा था । सुकवि

विदीर्ण भौरों की तरह आज तक कलि कुसुमों पर मंडराते रहे थे। आज उन्हें लग रहा था कि वे किसी क्रोड़ में बन्द हो जायेंगे। यह अच्छा होगा या नहीं? वे मेजर टामस से मिले। उससे उन्होंने रम का एक अध्धा माँगा और उससे कहा,—"एक ऊँची जाति की बी० ए० पास युवती को महिला सम्पर्क अधिकारी के पद के लिए चुन लिया है।"

टामस हँसा बोला,—"तभी आज चमक रहे हो।" उसने रम का अध्धा दिया। एक रूप पत्र भी दिया जिसे युवती से भरा लाने को कहा।

विदीर्ण शाम को कुछ देर से घर पहुँचे।

"दफ्तर कै बजे बन्द होता है?"—कमलेश ने पूछा।

महाकवि शंकित हुए। मान न मान मैं तेरा मेहमान! क्या मेहमान के अनुशासन में रहना पड़ेगा? सुकवि ने कहीं सुना था कि कवि अनुशासन का विद्रोही होता है। वह कवि थे, बड़े न सही, छोटे ही सही यद्यपि उनके मत में उन जैसा कवित्त गुलाब कवि भी नहीं लिख पाते थे।

कमलेश ने एक गिलास में चाय और कटोरी में नमक-तेल-प्याज़-मिर्च का चना चावल सामने रख दिया।

नाश्ता करते-करते कवि जी ने कमलेश के प्रश्न का जवाब दिया। उन्होंने कहा,—"प्रचार का काम है। देर अबेर हो ही जाती है। दफ्तर से सीधे चला आ रहा हूँ।"

उन्होंने आग्रह से आगे कहा,—"आप भी लें।"

कमलेश ने उनका साथ दिया। कुछ देर के बाद वे हवाखोरी के लिए नारद घाट पर गये। वहाँ से लौटते समय बंगाली साधू की दुकान पड़ी। वह भोग में चढ़ाये गोस्त का कबाब बेचा करता था। कवि जी ने कमलेश से पूछा,—"कबाब लेते चलें।"

"अपने लिए चाहें ले लें। मैं निरामिष हूँ।"

कमलेश के स्वर का प्रभाव—कवि जी ने कबाब नहीं खरीदा।

घर पहुँच, नहा धो, कमलेश रोटियाँ सेकने बैठी। सब्जी सवेरे ही बना कर रख दिया था।

कवि जी के चेहरे पर गम्भीर चिन्तन की रेखायें झलक रही थीं। सोच समझ कर उन्होंने अपनी पैंट की जेब से अध्धा निकाला। गिलास में ढालने के लिए वह बोतल की काग खोलने लगे।

कमलेश ने यह देखते ही कहा,—"छिः, छिः, आप शराब पीते हैं? कैसे हिन्दू हैं?"

"ऋषियों का पेय सोम था। वेदों में सोम को देवत्व प्रदान किया गया है।" —कवि जी ने शंकित होते हुए भी रसिकता के उल्लास से कहा।

"मुझे स्टेशन छोड़ आयें।"—कमलेश ने रसोई से हाथ खींच लिया।

सुकवि विदीर्ण हैरान हो गये : ले—"क्या कह रही हैं?"

"आपने मुझे शरण दी । उसकी मुझे बड़ी जरूरत थी । बरसों के अनुभव से मुझे यह भी लगा था कि आपने मुझे मांस का लोथड़ा कभी नहीं समझा । जहाँ शराब चलती है वहाँ मैं रहती नहीं । आपकी आदतें हैं । आप अपने देवत्व को क्यों छोड़ेंगे ? मुझे स्टेशन छोड़ आयें ।"—वह उठने को उद्यत हुई ।

विदीर्ण ने बोतल का काग नहीं खोला । उसे उन्होंने ताक पर रख दिया । वे चुपचाप खाने पर बैठे ।

बिना पिये उन्होंने बहुत दिनों पर उस रात खाना खाया ! खाने के बाद कवि जी ने पूछा,—"एक सिगरेट पी सकता हूँ ?"

"उसकी मनाही नहीं है यद्यपि सिगरेट से कैन्सर रोग होता है ।"

कवि जी ने एक सिगरेट जलाया । कमलेश चूल्हा उठा, उसका और खाने का स्थान परिष्कृत कर, फर्श पर आ लेटी ।

थोड़ी देर में सुकवि भी फर्श पर आ बैठे, बोले,—"मैं भी यहीं लेटूँगा ।"

कमलेश मौन रही । कवि जी उसके बगल में लेट उसके बालों से खेलने लगे । कुछ देर बाद पूछे,—"आपको मेरा छूना बुरा लग रहा है ?"

कमलेश चुप रही । कवि जी ने फिर पूछा,—"क्या हम आप एक नहीं बन सकते ?"

कमलेश का सिर हिला यह कहने के लिए कि क्यों नहीं ?

"कैसे ? कब ?"—कवि जी ने उल्लसित होकर पूछा ।

"हिन्दुओं में इसका एक पवित्र विधान है ।"

अब विदीर्ण के मौन होने की पारी आई । उनके मौन को कमलेश ने ही भंग किया, कहा,—"कोई जल्दी नहीं । आप सोच समझ लें । जहाँ तक मैंने सुना है आप अविवाहित हैं । वैसे जीवन के छल-छंदों से कौन ग्रसित नहीं होता । हमेशा उसे मन पर लाद कर तो चला नहीं जा सकता ।"

कवि जी बड़ी रात तक सुन्न रहे । कमलेश खर्राटे भर रही थी ।

दूसरे दिन कमलेश कोई युद्ध का समाचार पढ़ अंगरेजों को दुत्कारने लगी । कवि जी को उसे रूपपत्र देने का साहस ही नहीं हुआ ।

●

६

बंगलोर में फौजी अफसरों के प्रशिक्षण के लिए देहरादून के फौजी कालेज की तरह नया स्कूल खोला गया था। वहाँ विलायत और हिन्दुस्तान दोनों देशों के युवक इंग्लैंड के बादशाह द्वारा नियुक्त हो कर ऊँचे सैनिक अधिकारी बनने आते थे। उन्हें 'कींग्स कमीशन्ड आफिसर' कहा जाता था। उनकी पद मर्यादा गौरवपूर्ण मानी जाती थी।

स्कूल का निदेशक अंग्रेज ब्रिगेडियर होता था। शिक्षक भी अंगरेज अफसर होते थे। पूँजीवादी परम्परा में अफसर और नीचे के पदों में इतना भेद होता है कि उससे अकारण का असन्तोष पैदा होता है। अंगरेजों में भी यह कम नहीं था यद्यपि विश्व युद्ध के संकट से वे एका प्रदर्शित करने की हर चेष्टा किया करते थे। हिन्दुस्तानियों के बारे में उनके एका में कोई ढील नहीं थी। वे सभी, ऊँचे या नीचे के गोरे सैनिक, हृदय से हिन्दुस्तानियों से घृणा करते थे। वे कुछ कह नहीं पाते थे। युद्ध की विभीषिका ने उन्हें हिन्दुस्तानी युवकों को अफसर बनाने के लिए विवश कर दिया था। लेकिन खान-पान, कपड़े, रहन-सहन में वे उन्हें जानबूझ कर नक्काल गुलाम बना कर रखते थे। मानसिक गुलामी पुराने संस्कारों को मिटा कर गुलामी की जड़ें गहरी करती है। विद्रोह की भावना इस तरह पनप ही नहीं पाती।

प्रशिक्षण के लिए प्रतापगढ़ से आये 'केडेट' मुरारी ठाकुर ताला के गद्दार जमीन्दारी के किसान परिवार से आए थे। उनके परिवार पर सत्तावन की क्रान्ति के समय से ही अंगरेजी शासन और जमीन्दार ने बड़े जुल्म किए थे। ठाकुर युद्ध न होता तो कभी भी फौजी अफसर बनने के लिए चुना ही नहीं जाता। वह बी० ए० पास था और अंगरेजी धाराप्रवाह बोलता था। उसकी अंगरेजी ने चुनाव समिति के अध्यक्ष लखनऊ के जेनरल को उसके पक्ष में कर दिया। जेनरल शायद उच्च शिक्षित था। मुरारी ठाकुर चुन लिया गया और प्रशिक्षण के लिए बंगलोर स्कूल में आया।

ठाकुर प्रतिभाशाली विद्यार्थी था और राष्ट्रीय भावनाओं की ओज से भरा रहता था। वह फौजी अफसर बना इससे उसके कितने साथियों को बड़ी हैरानी हुई। फौजी अफसर में भी ठाकुर की प्रतिभा ने उसका खूब साथ दिया। वह कवायद और हथियारों की सिखलायी में जल्दी ही पहली पंक्ति का प्रशिक्षार्थी माना जाने लगा। जमीन पर युद्ध नीति के आक्रमण और बचाव के अभ्यासों में उसके कम सानी थे।

वह प्रशिक्षण देने वालो अधिकारियो का जल्दी ही विश्वास भाजन बना। शाम को मेस मे शोर मचाने, पीने पिलाने मे भी वह खूब चमका। उसे देख कर कौन सोच सकता था कि बगलोर के स्कूल मे आने के पहले इसने शराब देखा भी नही था। उसी तरह बाल नृत्य मे भी वह जल्दी ही दक्ष बन गया। सैनिक अफसर की सफलता को और क्या चाहिए सिवा काम मे और खेल मे दक्षता के।

बाल नृत्य मे तब भी अंगरेज और ऐंग्लो इडियन युवतियो की भरमार रहा करती थी। कुछ ऊँचे गुलाम हिन्दुस्तानी आई० सी० एस० की पत्नियाँ और पुत्रियाँ या केरल की ओर की परिचारिकाएँ (नर्स) ही ऐसी हिन्दुस्तानी युवतियाँ थीं जो नृत्य क्लबो या समारोहो मे खुलकर आया जाया करती थी। वह भी अपवाद स्वरूप ही समझिए।

ठाकुर का मेल जोल रेलवे के अवकाश प्राप्त गार्ड मिस्टर क्राउडन की दो पुत्रियों मे बड़ा—मौली और रौली क्राउडन। ठाकुर के सग वे रेस्टरा, सिनेमा, घुड दौड आदि मनोरंजन की जगहो मे उछलती कूदती जाती थी। ठाकुर रौली की ओर विशेष झुका था। रौली अपनी बडी बहन मौली को अपना ढाल बना कर साथ ही रखा करती थीं। एक दिन ठाकुर ने रौली को वेस्ट एण्ड होटल मे रात के खाने की दावत दी। वेस्ट एण्ड तब बंगलोर ही नही मद्रास नगर को छोड दक्षिण भारत का सर्वश्रेष्ठ अंगरेजी होटल था। रौली वेस्ट एण्ड मे खाने के निमत्रण पर खुश हुई। उसने पर वहाँ जाने से इन्कार कर दिया। कारण पूछने पर उसने अपनी सादगी में ठाकुर को बताया,—"वेस्ट एण्ड मे अंगरेज और ऐंग्लो इडियन ही जुटते हैं। मुझे हिन्दुस्तानी के संग देख कर वे क्या सोचेंगे ?"

यह छोटी घटना ठाकुर को आइना दिखा गयी। उसे अपने पर दुख हुआ, अपने देशवासियों पर दुख हुआ, स्वदेश की गुलामी पर दुख हुआ। उसने बाहर आना जाना कम कर दिया। वह पीने में अधिक समय बिताने लगा।

बंगलोर मे साउथ परेड के विस्तृत मैदान मे अगरेजो ने एक हालिवुड नगर बसा रखा था। फूस और टिन के हालो और झोपडियो मे वहाँ छोटे जुआ से लेकर बडे-बडे नृत्य, शराब घर आदि का भरपूर जमाव था। यह नगर भी हिन्दुस्तानियो की संस्कृति और संस्कार को मटियामेट करने की अगरेजो की योजना की एक कडी था। इस नगर मे पंजाब की ओर से आयी बडी आकर्षक प्रौढ युवती मिस अतिया दास ने एक स्केटिंग रिंग और नृत्य क्लब खोल रखा था। हिन्दुस्तानी केडटो की यहाँ अधिक भीड रहती थी। ठाकुर यहाँ आने जाने लगा। धीरे-धीरे वह मिस अतिया दास के रूमानी आकर्षण मे पड गया।

मिस दास के साथ उसने कई बार नृत्य किया। अपने आकर्षण के भावों को उसने कभी प्रकट नही किया। वह अक्सर अकेले बार मे बैठ कर पीता, बार-बार पीता और तब तक पीता जब तक वह बेहोश नही हो जाता।

एक दिन मिस दास के नृत्य हाल मे ठाकुर पी कर बेहोश हो रहा था कि हॉल मे शोर गुल मचने लगा। एक गोरे सार्जेन्ट ने एक मालाबारी नर्स के साथ डाम

की परिक्रमा में अभद्र व्यवहार कर दिया था। कतिपय नर्सों ने मिस दास से उस सार्जेन्ट की शिकायत की। मिस दास ने सार्जेन्ट को हाल से बाहर चले जाने का अनुरोध किया। सार्जेन्ट इस पर मिस दास से झगड़ा करने लगा। मिस दास के साथ सार्जेन्ट की ऊँची आवाज़ में झगड़ने की बातें सुन कर ठाकुर वहाँ आया। सार्जेन्ट उसकी मशीनगन और मार्टर तोपों का प्रशिक्षक था। ठाकुर ने सार्जेन्ट को हाल छोड़ कर चले जाने को कहा। सार्जेन्ट एक केडेट को मिस दास का पक्ष लेते देख कर आपे से बाहर हो कर बोला,—"चुप रहो, ओ काला निगर।"

ठाकुर का गुस्सा फूट आया। उसने दे दनादन दो चार नहीं दर्जनों सार्जेन्ट को रशीद कर उसे लहूलुहान कर दिया।

घटना अप्रत्याशित घट गयी। बड़ा तहलका मच गया। फौजी पुलिस आ पहुँची। सार्जेन्ट को प्राथमिक चिकित्सा के लिए फौजी अस्पताल ले जाया गया। केडेट ठाकुर को लाइन कैद कर दिया गया। ऐसा कभी हुआ नहीं था। सारा बंगलोर घटना से सुन्न रह गया।

ऊपर से सब चुप थे। अन्दर-अन्दर केडेटों, अंगरेज प्रशिक्षकों और अधिकारियों में घटना से बड़ा संघर्ष और क्षोभ पैदा हो गया। ठाकुर को स्कूल से निकाल देने की सम्भावना प्रायः निश्चित हो गयी। ऐसा हुआ नहीं। रोमेल मिश्र के मैदान में अंगरेजी फौजों को रौंद रहा था। जापान मलाया के बाद बर्मा में बढ़ रहा था। ऊपर से आदेश आया। केडेट ठाकुर को महीने भर की लाइन कैद की सजा मिली। सार्जेन्ट को इन्दौर के पास मऊ की अकेडेमी में बदल दिया गया। मिस दास के नृत्य घर में प्रशिक्षण के सार्जेंटों का जाना रोक दिया गया।

महीने भर की लाइन कैद का मतलब यह था कि ठाकुर स्कूल के प्रांगण के बाहर कहीं भी आ जा नहीं सकता था। इससे उसे मानसिक कष्ट मिला। वह मिस दास के बार और नृत्य हाल का आदी हो चुका था। उसे स्कूल में और मेस में ही अधिक से अधिक समय काटना पड़ा। समय मुश्किल से कटा मगर कटा। एक लाभ जरूर हुआ। वह मिस दास का विश्वासभाजन बना। साथ ही उसकी राष्ट्रीय विचारधारा अभिनव रूप से उसके शरीर और मस्तिष्क के स्नायुओं को तरंगित करने लगी।

एक दिन, महीने भर की अवधि समाप्त हो जाने के बाद, केडेट रज़ी ने सहानुभूति दिखाते हुए उससे कहा,—"इस लड़ाई में जान देना बेवकूफी होगी। अंगरेजों के दिन लद गये।"

"नहीं लदे तो हमें फौजी प्रशिक्षण में दक्षता प्राप्त कर लादना पड़ेगा।"

रज़ी विस्फारित नेत्रों से ठाकुर को—शराबी ठाकुर को—देखता रह गया। रज़ी और ठाकुर विश्वविद्यालय में एक समय में ही थे। दोनों के विषय अलग-अलग थे। रज़ी पढ़ने लिखने में उतना बुद्धू नहीं था जितना वह आलसी था। उसने

बी० ए० कई साल मे पास किया। हाकी वह जरूर अच्छा खेलता था और अपने छात्रावास की टीम मे था। रज्जी ठाकुर के राष्ट्रीय विचारो से परिचित था। विद्यार्थी अवस्था में सभी विचारों मे उग्रवादी होते है। बाद के जीवन मे यथार्थ का लेखा जोखा घर दबाता है। ठाकुर की उग्रवादी राष्ट्रीय विचारधारा अभी मिटी या नही वह यह समझना चाहता था। उसने कहा,—"अंगरेजों की धर्तता मशहूर है। वे इंग्लैण्ड को हार कर भी हिन्दुस्तान को हाथ से नही जाने देंगे।"

"हिन्दुस्तान को खोकर जैसे वे एक छोटे द्वीप के वासी थे वैसे ही फिर हो जायेंगे। उनका ऐश, भोग, वैभव, शक्ति सब मिट जायेंगे। घड़ी की सुई बहुत आगे बढ़ गयी है। वे जीते तब भी हारेंगे। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होगा।"

केडेट रणजीत बैनर्जी और केडेट श्रीनिवासन आ गये। वे दोनो मानो किसी बहस की रौ से तमतमाये आ रहे थे। केडेट बैनर्जी ने ठाकुर और रज्जी से कहा,—"हमे अब अक्ल से काम लेना है।"

"अक्ल भी आ जाय तो हमारे पास साधन क्या है?"—रज्जी ने पूछा।

"इरादा दृढ हो और लक्ष्य साफ हो तो क्या नही किया जा सकता? पिछले युद्ध के बाद बिना हथियार के महात्मा गांधी ने आजादी का शंख घर-घर फूंक दिया।"—ठाकुर भी जोश मे था।

केडेट रणजीत बैनर्जी ने स्वर को बिलकुल धीमा बना कर कहा,— "सुभाष बाबू नजरबन्दी से फरार हो गये।"

जीवंत बिजली जैसे छू जाय वैसे सब चौंक उठे। रणजीत बैनर्जी ने आगे बताया,—"बर्लिन रेडियो ने यह खबर प्रसारित की है। भारत की अंगरेजी सरकार ने खबर को बहुत गुप्त रखा है। सुभाष बाबू को जीवित या मुर्दा पकड़ने के लिए हिन्दुस्तान के कोने-कोने मे गहरी सतर्कता शुरू हो गयी है।"

केडेट ठाकुर और श्री निवासन् ने एक साथ ही कहा,—"सुभाष बाबू का फरार होना रंग लायेगा।"

इंग्लैंड और भारत की सरकारों ने एक दूसरी खबर को बहुत गुप्त रखा था। अमरीकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और चीन के प्रधान जेनरलिस्सिमो च्यांग काई शेक हिन्दुस्तान को तत्काल स्वतन्त्र करने पर जोर दे रहे थे। चर्चिल इस सुझाव के घोर विरोधी थे।

उस दिन ठाकुर शाम को मिस दास के साथ क्लब मे पहुँचा। मिस अनिता दास ने उसे बाँहो मे सवार कर अपने से चिपटा लिया। ठाकुर के मन का महीने भर का क्लेश मिस दास के प्रेम पुलक में मिट गया। उसने ह्विस्की पिया और मिस दास के साथ ललक में लयमान हो नृत्य करने लगा। मिस दास ने डांस की परिक्रमा मे उससे बताया,—"चर्चिल जापानियो के बर्मा मे इतनी तेजी से आगे बढ़ने पर घबड़ा गये हैं। उन्होंने क्रिप्स मिशन भेजा है। मिशन वाइसराय की कार्य समिति मे हिन्दुस्तानी नेताओ को शामिल कर हिन्दुस्तानियों को बेवकूफ बनाना

चाहता है। राष्ट्रीय कांग्रेस ने मिशन की योजना को अस्वी
ने साथ ही एक दूसरी कूटनीतिक बदमाशी की शुरुआत
लीग को राष्ट्रीय कांग्रेस के समानान्तर खड़ा कर दिया है।

ठाकुर इतिहास का विद्यार्थी रह चुका था। अतिया
"अंगरेजों ने सर सैयद अहमद से ही हिन्दू मुसलिम वि
था। लार्ड कर्जन ने बंगाल को पूर्वी और पश्चिमी सूबों में
को शक्तिशाली बनाने की सफल कोशिश की।"

मिस अतिया दास ठाकुर के शरीर से एक होते हुए
करना है।" "जरूर।"—ठाकुर आज उत्साह और प्रेम
रहा था।

मिस दास ने आज ठाकुर को पूरा-पूरा जीत लि
धड़कनों का जीवन विचारों के उत्कर्ष से कहीं अधिक सुखदा
दिन से कौल बना। दोनों एक दूसरे के शरीरों की धड़कनों
अधिक सुनने जानने की कोशिश करते।

अंगरेज केडेटों में हिन्दू मुसलिम विभेद बढ़ाने की
ही करते थे। अब उन्होंने इसे तेजतर कर दिया।

झेलम के मोहम्मद सर्वर राजपूत मुसलमान थे। वे रि
के लिए चुने गये थे। उनके तीन पुश्तों से अंगरेजों की फौज
थी। अंगरेजों के प्रति मोहम्मद सर्वर के परिवार की राजभ
वह उन्हें माँ बाप समझता था। उसने एक दिन मेस में
ाकिस्तान की मांग मान ले तो हिन्दुस्तान आज आजाद हो ज
पठान था—केडेट असलम। उसने कहा,—"एक राष्ट्र का
पर होगा ? और बँट कर क्या हम कमजोर नहीं हो जायेंगे ?"
रटाया जवाब दिया,—"हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं ?"

"क्या आप राजपूत नहीं ?"—असलम ने नैश से प

"हूँ, मगर मुसलमान राजपूत। पहले
हैं।"

"राष्ट्र क्या धर्म से बनता है ? क्या अ
अरेबिया एक राष्ट्र हैं ?

"उनमें देश काल का भौगोलिक वि
अलग-अलग राष्ट्र हैं। मुसलिम लीग की यही
मुसलमान गायिका थीं। वह एक हिन्दू
रजी के पिता थे। उसी पिता ने रजी का
था। माँ ने सामाजिक सुरक्षा के लिए
रताम में इस्लाम को मानने वाले अ

हिन्दी पढते हैं। अंगरेजों ने नयी चाल चली उन्हें अलग राष्ट्रीयता का पाठ पढाया। हिन्दू मुसलिम खाई को अभेद्य बनाने में इस पाठ ने कमाल किया।

कैडेट रणजीत बैनर्जी गरमा गरम खबर लेकर आ पहुँचा। उसने बताया,—"सुभाष बाबू जर्मनी पहुँच गये हैं। वहाँ उन्होंने 'फ्री इंडिया लेजान' नाम से प्रवासी भारतीयों की एक सेना खडी की है जो हिन्दुस्तान की आजादी के लिए अंगरेजों से लडेगी। उसमे हिन्दू, मुसलिम, ईसाई—सभी प्रवासी शामिल हैं।"

खबर पर सर्वर और रजी भी रीझ उठे। सर्वर ही बोल उठा,—"भाई, आजादी सबसे बडी नियामत है। उसके लिए हमें कभी न कभी बन्दूक उठाना ही पडेगा।"

अतिया दास ने उसी रात ठाकुर की भेंट दीदी से करायी। सौम्य मुखमण्डल, प्रखर बुद्धि, पैनी दृष्टि दीदी वयस्क किन्तु चुम्बक सी आकर्षण वाली गम्भीर महिला थी। अतिया दास ने ठाकुर को बताया—"वह स्वदेश की स्वतंत्रता संग्राम की तैयारी मे प्राणपण से जुटी हैं। हम उनका साथ देंगे।"

'मैं तो इन साँसों की सुगन्ध का माता हूँ। जहाँ यह है वहाँ मैं"—कह कर ठाकुर ने अतिया दास को बाँहों मे भर उनके अधरों पर अपने अधर रख दिए थे। संयोग वहाँ कुछ क्षण को एकान्त था।

अतिया दास ने अपना कर्तव्य निभाया। उन्होंने अधरों का प्रतिदान वैसे ही दिया। विनोद से बोली,—"मैं तुमसे उम्र मे कई साल बडी हूँ।"

'मतलब क्या है ?"

'मेरी बात मान कर चलनी पडेगी।'

आज ही से उसका वादा करता हूँ। आज रात '' ।"

'पागल हो क्या ? दीदी का कहना है कि स्वदेश की आजादी तक हमे लोहा बन कर रहना पडेगा।'

ठाकुर निराश नहीं हुआ। घण्टे भर वह अतिया दास के साथ एकान्त में दीन-दुनिया का गम्भीर परामर्श करता रहा और आधी रात तक नृत्य में उनकी साँसों की उष्मा का संगीत सुनता रहा।

अंगरेजी शासन जितना अपनी हार से उतना ही सुभाष बाबू के फ्री लेजान' से घबडाया। सुभाष बाबू महात्मा गाँधी के अनुयायी होकर भी स्वदेश को स्वतंत्र कराने के लिए अंगरेजों को मार भगाने के पक्ष मे थे। वह सुधारवादी नहीं थे। महात्मा जी को जैसे हिन्दू धर्म और संस्कृति से सम्बद्ध दिखाया जा सकता था वैसे सुभाष बाबू को नहीं। उनका नाम हिन्दू मुसलिम विभेद को उखाडने वाला साबित हो रहा था। अंगरेज साफ समझ रहे थे कि कैडेटों मे जो दखिला हासिल करने की होड है वह अंगरेजी साम्राज्य की सुरक्षा के लिए नहीं हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र कराने के लिए है। वे अब कर ही क्या सकते थे ? हिन्दुस्तानी अफसरों के बिना लडाई लडी नहीं जा सकती थी। अंगरेज युवक सर्द

कम हो चले थे। उन्हें हिन्दुस्तानियों को अफसर बनाने का खतरा उठाना पड़ा। उनका, वे समझ रहे थे, हिन्दुस्तान पर चाँद सूरज तक आधिपत्य बनाये रखने का सपना जल्दी ही मिट जायेगा। आशा मगर मिटती नहीं। वे अपने हथकण्डे साध रहे थे। महाकाल उन पर मन ही मन अट्टहास कर रहा था।

केडेट रणजीत बैनर्जी को मिस आइरिश बहुत चाहती थीं। मिस आइरिश विवाहित महिला थीं। उनके पति स्टैनले जोन्स् आयरलैण्ड के उस भाग के रहने वाले थे जो अंगरेजों के अधीन था। पति-पत्नी दोनों जबरिया स्कीम में आये थे। मिस्टर स्टैनले जोन्स एल आमीन की लड़ाई में जर्मनों द्वारा गिरफ्तार कर युद्धबन्दी बना दिए गये थे। पत्नी मिस आइरिश बंगलोर में अंगरेज महिला परिचारिका सेवा की अध्यक्ष थीं। मिस आइरिश नारी स्वातंत्र्य की कट्टर पक्षपाती थीं। वे कभी श्रीमती जोन्स कहलाना पसन्द नहीं करती थीं। इसे वे बहुत बुरा मानती थीं क्योंकि इस प्रक्रिया में पुरुष ने नारी को अपने अधीन बिठा रखा था। नारी और नर एक ही धुरी पर चलने वाले दो पहिए हैं जिनमें दोनों एक दूसरे के बराबर हैं—यह इनका अडिग विश्वास था।

वे दोनों आयरलैंड के साथ-साथ संसार के सभी पराधीन राष्ट्रों की आजादी के समर्थक थे। मित्र राष्ट्रों के पक्ष में वे पूरी ईमानदारी से थे क्योंकि उनके आदर्श देश रूस को धुरी राष्ट्रों से खतरा उत्पन्न हो गया था।

साम्यवादी विचारधारा के केडेट रणजीत बैनर्जी से मिस आइरिश का सामंजस्य केवल रूस के कारण नहीं था। किसी नृत्य समारोह में मिस आइरिश केडेट रणजीत बैनर्जी के शरीर की उष्मा से पिघल गयी थीं। वह उसकी ओर झुकीं। मिस आइरिश शारीरिक प्रेम को मानव का स्वाभाविक गुण मानती थीं। सिद्धान्त रूप में इसे बुरा कदापि नहीं माना जा सकता था। संयम की वह जरूर पक्षपाती थीं। वासना जनित प्रेम पशु प्रवृत्ति का द्योतक न होकर मानवोचित हो, यह उनका विचार था। इस तरह यह नारी पुरुष सबके लिए कल्याणकारी होगा।

हिन्दुस्तान की हृदयद्रावक गरीबी और उससे उत्पन्न अनैतिकता को देखकर मिस आइरिश अंगरेजों को बुरी तरह कोसा करती थीं। उनका कहना था कि दो सौ साल में जब अंगरेज यहाँ की हालत को इतना बुरा बना दिए तो उन्हें एक दिन भी यहाँ टिकने का नैतिक अधिकार नहीं। शासन का ध्येय लोक कल्याण की सर्वांगीण व्यवस्था है। अपने झण्डे को ऊँचा फहराते रहना या कुर्सी से देश की प्रतिष्ठा को बेंच कर चिपके रहने का नाम सरकार नहीं। उन्होंने बातचीत में रणजीत से कहा था,—"जुल्म की भी सीमा होती है। हिन्दुस्तानियों के दिन फिरेंगे। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होगा, महान होगा।"

रणजीत बैनर्जी का मिस आइरिश से सम्पर्क प्रधान रूप से मनोरंजन के लिए ही था। उनके नारी स्वातन्त्र्य विषयक विचारों की वह प्रशंसा भी करता था। वह रौली क्राउडेन की ओर झुका था। रौली क्राउडेन द्वारा ठाकुर का मन अपने

वश मे करना चाहती थी ।

उनका राजनैतिक, सामाजिक, युद्ध जनित वाद-विवाद प्रेम के त्रिकोण के इर्द-गिर्द-उभरता था। वाद विवाद शारीरिक आकर्षण की उष्मा को शान्त करने की मात्र सीढी था। केडेट असलम और सुन्दरी पत्रिकर संघर्ष के ऊपर थे। असलम अपनी भूख मिटाने के लिए सुन्दरी को मूल्य चुकाता था। उसने सुन्दरी को इस्लाम के मुताह विवाह पद्धति को समझाया था। वह विवाह कुछ घण्टों, रात भर या किसी निर्धारित समय के लिए हो सकता था। इस तरह शरीर का भोग अनैतिक न होकर धर्मसम्मत हो जाता है।

सुन्दरी ने हस कर असलम से कहा,—"जैसे हमारे मत का गधर्व विवाह।"

अगरेजो की नीति हिन्दुस्तानी केडेटों को इतना बेफिक्र और मनोरजन का अभ्यस्त बना देने की थी कि उन्हे सोचने समझने का अवसर ही न मिले या कम से कम मिले। लेकिन उच्चशिक्षित केडेटो को हिन्दुस्तान की आजादी का सवाल सर्वोपरि महत्व का था। अगर स्वदेश आजाद नही होता तो मित्र और धुरी राष्ट्रों के बीच अन्तर ही क्या माना जाय ? अगरेज हिन्दुस्तान की आजादी के विरुद्ध थे। इसे चर्चिल ने बिलकुल साफ कर दिया था। आगे के लिए वे कोई वचन देना नही चाहते थे न उनके वचनों का विश्वास किया जा सकता था। पहले विश्व युद्ध मे भी तो उन्होने वचन दिया था। युद्ध की समाप्ति पर उसे कितनी आसानी से भूल गये।

कुमारी अतिया दास ने केडेट ठाकुर से कहा था,—"इस बार हमे धोखा नही खाना है।" आगे कहा था,—"जयचंद और मीर जाफर भी हमी मे से होते हैं।"

"क्या मतलब ?"—ठाकुर ने अचकचा कर पूछा था।

"रजी के रंगढंग दोगलो के से हैं।"

ठाकुर को यह हैरानी थी कि अतिया दास को रजी के दोगला होने की खबर कैसे लगी ? उसके मन का असमंजस समझ कर अतिया दास ने कहा,—"रजी के बारे मे दीदी सब कुछ बता गयी। हमें सावधानी बर्तनी चाहिए।"

ठाकुर सावधानी के पक्ष मे था। हैरानी उसे इसकी थी कि रजी ही नही हिन्दू जाति से धर्म-परिवर्तन कर आये हुए सभी मुसलमान हिन्दुओ से खार खाते हैं। क्या ऐसा अगरेजो की कूटनीति के कारण सम्भव हुआ या इसका कोई दूसरा कारण है ?

अतिया दास ने उसके मन के भावों को फिर सूंघ लिया। उन्होंने कहा,—"जिन्ना का दादा हिन्दू था। उसकी बीवी पारसी थी। वह स्वयं बड़ा भारी देशभक्त था। जाने कैसे इतना बदला ? अब वह हिन्दू और मुसलमानो को दो राष्ट्र बताता है। क्या पारसी भी अलग राष्ट्र हैं ?"

ठाकुर विद्यार्थी जीवन से ही उग्र राष्ट्रवादी था। एक दिन नृत्य में रजी सुन्दरी पत्रिकर के साथ मिल गया। उसने सुन्दरी का परिचय कराते हुए कहा,—

मैं आज इनसे रात भर के लिए मुताह करने वाला हूँ।"

"मुताह नहीं, गंधर्व विवाह।"—सुन्दरी पन्निकर ने हँस कर कहा।

ठाकुर का मन रो उठा। उसने सुन्दरी से कहा,—"सुदूर पूरब के आकाश से हिन्दुस्तान के आजादी की दुंदुभि बजने लगी है।"

रज़ी ने अब हैरानी को बिना छिपाये पूछा,—"क्या मतलब ?"

"हम स्वतंत्र होकर चाहे मुताह करें या गंधर्व विवाह। पहले स्वतंत्र होना है। उसकी हमको, आपको, सबको, जम कर तैयारी करनी है।"

मिस अतिया दास के नाच घर में आज विदायी की दावत थी। ठाकुर और उसके साथियों का प्रशिक्षण समाप्त हो गया था। उन्हें सेकंड लेफ्टिनेंट का एक तारा प्रदान कर दिया गया था। वे इस तरह इंगलैण्ड के बादशाह द्वारा सीधे नियुक्त अफसर बन गये थे।

मिस अतिया ठाकुर के वियोग को सोच कर दुःखी थीं। उन्होंने शानदार पार्टी दी। उस पार्टी में रणजीत बैनर्जी मिस आयरिश के साथ आया, रज़ी अपनी किसी युवती नाचवाली मित्र को लाया, असलम सुन्दरी को न लाकर रौली के संग आया और मोहम्मद सर्वर मौली के संग। शराब के दौर भरपूर चले, अच्छा से अच्छा मुगलिया डिनर खाया गया और विशेष पंजाबी धुनों पर बाल नृत्य हुआ।

रौली को देख कर ठाकुर के दिल में कोई भाव नहीं जागे। वह अतिया दास के प्रत्याशित वियोग की कल्पना से भरा था। नृत्य जब जवानी पर आया तब मिस अतिया दास और ठाकुर एक सुरक्षित कक्ष में चले गये। वहाँ से वे दूसरे सबेरे ही बाहर निकले। दूसरे नये अफसर भी आधीरात तक डांस हाल छोड़ अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के संग उनके निवास या होटल के सुरक्षित कमरों में बंगलोर की अपनी अन्तिम रात बिताने चले गये। डांस हाल में भी रतजगा रहा और सुरक्षित कक्षों में भी।

नये अफसरों को अपनी पल्टन में कार्य भार संभालने के पहले एक महीने की छुट्टी मिलती थी। मिस अतिया दास की सलाह पर ठाकुर ने सीधे अपनी पल्टन में योगदान करने का निश्चय किया। बंगलोर के अपने स्केटिंग रिंक और नाच घर को छोड़ना मिस दास के लिए आसान नहीं था। वह अपने मैनेजर गुंडापा वासुदेवन को अपना कार्य भार सौंप ठाकुर को उसके गन्तव्य तक पहुँचाने आयीं।

अनबँटे हिन्दुस्तान में रेलवे लाइन मारी इंडस के स्टेशन पर सिन्ध नदी का चौड़ा पाट पार करती थी। उसके बाद लाइन बन्नू तक गयी थी। बन्नू रेल का उस क्षेत्र में आखिरी स्टेशन था। बन्नू भारी छावनी थी। अधिकतर फौजें वहाँ कबीले इलाके में जाती थीं या उधर से आती थीं। लेफ्टिनेंट ठाकुर की पल्टन रजमक छावनी में थी। उसे वहीं पहुँच कर अपनी पल्टन में योगदान करना था।

कुमारी अतिया दास और ठाकुर दो शायिकाओ के सुरक्षित कूपे मे ऐस [illegible] किये जैसे मधुचन्द्रिका मनाने वाले हंसो के जोड़े दृश्य जगत से बिलकुल अनभिज्ञ एक दूसरे में लीन रहते है। प्रेम और विवाह पर उनमे सामंजस्य स्थापित हो चुका था। दीदी की सीख को मान स्वदेश के स्वतंत्र होने तक उन्हे विवाह के बन्धन मे नही पडना था। प्रेम की भूख मिटाने से, जब तक वह किसी प्रकार का भार न बन जाय, उन्हें कोई विरोध नही था। यह जीवन का एक प्रबल आकर्षण था। उसे अस्वीकार किया ही नही जा सकता था।

ठाकुर ने जाने क्यो एक रात कुमारी दास से पूछा,—"प्रेम क्या स्थायी नही होता ?"

"इस संसार मे स्थायी क्या है ? बन्धन का यत्नणापूर्ण स्थायित्व तो [illegible] हो ही नही सकता।"

दार्शनिकता के पुट से भरा उत्तर ठाकुर पूरी तरह समझ नही सका। इतना उसने जरूर समझा कि प्रेम की भावना विशेष जब तक जागरूक है तब तक उसका पूरा-पूरा सदुपयोग किया जाय। निस्सन्देह सुरक्षित कूपे मे अपने समय का उन्होंने पूरा पूरा सदुपयोग किया। दुनिया की ईर्षालु नजरे उन पर उठे नही इसलिए [illegible] यात्रा में अपने डब्बे की खिडकियों को उन्होने बन्द ही रखा।

मारी इडम पर बन्नू के रेल मे दो शायिकाओ वाला [illegible] एक सहयात्री उनके डब्बे मे आ चढा। मिस दास ने उनका परिचय कराया — ये बन्नू के केवल सहगल है। रजमक मे इनका प्रेम है। ये हमारे [illegible] हैं

ठाकुर ने केवल सहगल पर अब सहृदयता से ध्यान दिया।

बन्नू मे ठाकुर ने फौजी मेस मे सामान रखा। [illegible] के बंगले मे। वह रात ठाकुर और कुमारी अतिया दास के लिए [illegible] वहाँ गन्धमादन प्रवहमान था। दूसरे दिन कुमारी दास जब ठाकुर से विदाई का आलिंगन कर बंगलोर की वापसी यात्रा पर रवाना हुई [illegible] वैसी ही ऐश्वर्य गरिमा मे उसी दिन ठाकुर फौजी [illegible] के लिए रवाना हुआ।

बन्नू से सूखी—हरियाली विहीन—[illegible] पर्वतो की चोटियो पर सुरक्षा चौकियों की [illegible] (चौकी) [illegible] गमन के लिए खुलता था। [illegible] फौजी रसद, माल, हर्बा हथियारों की आपूर्ति और [illegible] का ही आना जाना होता था। [illegible] कभी लागू ही नहीं हो सका। अंग्रेजों ने वहाँ [illegible] एजेन्सियाँ स्थापित की। वे राजनैतिक [illegible] घनिष्ट सम्बन्ध होता था। [illegible]

धनराशि एक प्रकार के घूस में दिया करते थे। कबीलों से सम्पर्क का उनका जरिया ख़ासेदारों के द्वारा था जो अंगरेजी सरकार से काफी मोटी तनख्वाह पाते थे।

कुमारी अतिया दास ने 'जार्ज' नामक ख़ासेदार का ठाकुर से जिक्र किया था और कहा था,—"एक महत्वपूर्ण काम में जार्ज सहयोग करेगा।"

रजमक सही सलामत पहुँचकर ठाकुर ने अपनी पल्टन में रिपोर्ट किया। उसकी पल्टन का कमांडिंग अफसर डिम्सी नाम का एक अंगरेज था। उसने ठाकुर को पहली ही भेंट में बताया,—"कबीलों के संग सावधानी जरूरी है। वे हम लोगों को इस क्षेत्र में रहने नहीं देना चाहते हैं। मौका पाते ही हम पर आक्रमण करते हैं। उनसे मिलना जुलना भी खतरनाक है। वैसे वे अतिथि सत्कार जानते हैं और बात के धनी हैं।"

रजमक गज़नी से कौवे की उड़ान के रास्ते से पहाड़ों के ऊपर-ऊपर तीस मील से कम दूरी पर था। भारतीय इतिहास में गजनी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ठाकुर कितना चाहता था कि उन कबीलों से जिनका छोर गजनी तक फैला था वह मिले-जुले, उनसे परिचय प्रेम बढ़ाये। सत्तावन की क्रान्ति के बाद से ही अंगरेज वहाँ डर कर रहते थे। नागरिकों से उनका परस्पर और सामाजिक व्यवहार नहीं के बराबर हो गया था। रजमक में भी छावनी की चहार दीवारी के बाहर कोई न घूमने जा सकता था न घुड़सवारी के लिए। बाहर जाना अस्त्र-शस्त्रों से लैस फौजी सुरक्षा में सामूहिक रूप से ही सम्भव था। ठाकुर इसलिए चिन्तित था कि अतिया दास ने एक गोपनीय काम उसे सौंपा था। उसे करने का कोई उपाय नहीं दिखायी पड़ रहा था। वह उस काम को जानता भी कहाँ था ?

कैप्टन धवन उसकी पल्टन में थे। वह बन्नू के रहने वाले थे और केवल सहगल के करीबी रिश्तेदार थे। एक दिन केवल सहगल ने आठ दस दुकानों की बहुत छोटी छावनी बाजार में स्थित अपने प्रेस में कैप्टन धवन के साथ ठाकुर को हिन्दुस्तानी खाने पर निमंत्रण किया। फौज के अफसरों के मेस में आदेश होने पर भी हिन्दुस्तानी खाना अपवाद स्वरूप ही पकता था। वह सुस्वादु कदापि नहीं होता था।

ठाकुर दावत में गया। वहाँ उसकी भेंट ख़ासेदार जार्ज से हुई। जार्ज का असली नाम अरबाब गुलज़ार खाँ था। अंगरेज उसकी अलमस्ती पसन्द करते थे और मित्र भाव से उसे जार्ज कह कर पुकारते थे।

ठाकुर का परिचय पाते ही जार्ज ने पूछा,—"आप छुट्टी जाने वाले हैं ?"

ठाकुर आश्चर्य से भर आया। अपनी पल्टन में योगदान की रिपोर्ट कर के ही वह महीने भर की छुट्टी पर जो उसे देय थी, जाना चाहता था। कुमारी अतिया ने यही योजना बनायी थी। जार्ज से ठाकुर ने कहा,—"जल्दी से जल्दी जाना चाहता हूँ।"

अगले महीने की तेरह तारीख को रास्ता खुलेगा। उस दिन बन्नू तक मैं भी चलूंगा। अगर आप उस दिन जायं तो मैं अपने सामान के साथ आपकी ट्रक में ही चलूंगा।" ठाकुर समझ कर हंसा और बोला,—"ठीक।"

तेरह तारीख को उसकी पल्टन के दस बारह जवान छुट्टी जा रहे थे। ठाकुर को पल्टन की ही ट्रक मिल गयी। जार्ज छावनी की [illegible] सामान के बक्सों के साथ खड़ा था। ट्रक में सामान लादा गया। जार्ज भी बैठा। ट्रक बन्नू की ओर रवाना हुई।

रजमक से पहला पड़ाव दमदेल पड़ता था। वहां से कुछ [illegible] ट्रकों पर पहाड़ों की चोटियों से पठानों ने [illegible] सब लोग बचाव के लिए पत्थरों की आड़ में [illegible] उधर जिधर से पठान गोलाबारी कर रहे थे [illegible] कर दिया। पास ही पठानों का एक [illegible] घरों का गांव जिसके निवासी [illegible] करते थे। उन पर दो हवाई जहाज [illegible] जहाजों ने गांव पर गोले बरसाये। [illegible] मान में दिखायी पड़ने लगीं।

ठाकुर भर आया। [illegible] जार्ज ने उसका भाव समझ कर कहा,—"[illegible] सर्व साधारण को अपना विरोधी बनाते हैं।"

"छुट्टी पर जाने वाले सैनिकों पर भी [illegible] नहीं ?"—ठाकुर ने पूछ लिया।

"आज गोलियों की वरषा इसलिए हुई कि [illegible] के जवान और अफसर जा रहे थे। [illegible] कर पाता।"

ठाकुर ने जार्ज की ओर गर्व से देखा। [illegible] ठाकुर के ट्रक के लोगों या सामान पर [illegible] चला कि चार फिरंगी सैनिक मर गये थे और [illegible]

काफिला को बन्नू पहुंचने में फिर किसी विरोध का [illegible] बन्नू मेस में जार्ज ने ठाकुर का हाथ अपने हाथ में लेकर [illegible] कहने की कोशिश की। ठाकुर उस इशारे को समझता नहीं था। [illegible] —"परसों लाहौर स्टेशन पर मैं मिलूंगा। वहीं से मुझे [illegible] भेजना है जो मुगल सराय से आते हैं।"

जार्ज उसके ट्रक से कहीं चला गया।

ठाकुर के पास अचानक कहीं से टेलीफोन आया,—"आपकी [illegible] में आज की तारीख के लिए सुरक्षित है।"

ठाकुर ने दूसरे दिन के लिए शायिका की माँग की थी। वह बहुत हैरान नहीं हुआ। वह उसी रात बन्नू से लाहौर के लिए रवाना हो गया।

लाहौर में जार्ज और ठाकुर मिले। जार्ज ने बताया,—"सामान रवाना हो गया। मैं वापस जा रहा हूँ। स्तरीमाशे–आपकी सेहत अच्छी रहे।"

"ख़ारमाशे"—आपकी भी सेहत बहुत अच्छी रहे—" कहते हुए ठाकुर ने हार्दिकता के स्नेह पुलक से जार्ज का हाथ हिलाया।

छुट्टी मनाने के लिए लाहौर जैसी सुन्दर जगह दूसरी कम थीं। ठाकुर लाहौर की रंगीनी को देखना भी चाहता था। वह रुक नहीं सका। उसी शाम वह दिल्ली के लिए चल पड़ा। दिल्ली से तीसरी शाम इलाहाबाद।

संगम से सरस्वती के लुप्त हो जाने पर भी इलाहाबाद शान्ति प्रिय नगर ही रहा। माघ के महीने में सूर्य के मकर राशि में आने पर यहाँ तीर्थयात्रियों की भीड़ का कोलाहल जरूर सुनायी पड़ता है। वह कोलाहल भी अशान्ति का प्रतीक नहीं होता। अशान्ति इस बात से भी नहीं मचती कि आधुनिक काल में श्वेत धारा प्रायः छिछली हो गयी है और श्याम गहरी। शायद श्याम धारा की गहराई उन गद्दारों की प्रतीक है जो स्वदेश के विरुद्ध अंगरेजों की मदद करके आज तीन चौथाई इलाहाबाद के मालिक हैं और चाँदी के बल पर समाज का शिरमौर होने का दावा करते हैं। ऐसे ही एक चमक-दमक वाले युवक से ठाकुर की दिल्ली से इलाहाबाद की यात्रा में भेंट हो गयी। वह युवक वकालत का पेशा करते थे और अंगरेजी खान पान, रीति रिवाज़ के इतने आदी थे कि रेल की सफर में उन्होंने ठाकुर से कई बार कहा,—"लेफ्टिनेंट, यह मुल्क रहने के योग्य नहीं। यहाँ कितनी धूल है।"

"हिन्दुस्तान गरम देश है।"

"मैं ईश्वर को मुझे यहाँ पैदा करने के लिए क्षमा नहीं कर सकता। मेरे संस्कार विलायती हैं। वहीं मैं जाकर बसूंगा। मैं इस देश से, यहाँ के लोगों से, हृदय से घृणा करता हूँ।"

ऐसा जन्तु ठाकुर ने पहले कहीं नहीं देखा था। इसे तो अजायब घर में रखना चाहिए—सोचते हुए उसने छिपी आँखों से उसके चेहरे मोहरे को देखा। छोटा कद, गोरा रंग, चेहरे पर छोटी जनखों की सी पेशानी, किंचित भूरी आँखें, कुटिल मुस्कान वाले होठों में सिगार—युवक का व्यक्तित्व उसके विचारों के अनुरूप ही गद्दार का-सा था।

ठाकुर को क्षण भर के लिए उसके प्रति घोर घृणा उमड़ी। तब तक उसने कहा,—"लेफ्टिनेंट, कल रात का खाना आप मेरे साथ खायें। शुद्ध अंगरेजी खाना, स्काटलैंड की ह्विस्की और मनमोहक सुन्दरियों का साथ। इलाहाबाद में किसी दूसरी जगह यह नहीं मिल सकता।"

युवक ने ठाकुर को अपना कार्ड दिया,—"जी० मल, बी० ए०; एल० एल० बी०।"

नाम के जी० को पढ़कर ठाकुर ने दावत में आना स्वीकार कर लिया। मन

ही मन वह हंसता रहा कि मां बाप ने कितना सही नाम रखा गोबर मल।

इलाहाबाद स्टेशन पर विदा लेने के पहले मिस्टर मल ने पूछा,—"आप यहाँ कहाँ ठहरेंगे ?"

"डीन्स होटल मे।"

"यहाँ का सबसे अच्छा अंगरेजी होटल है। मैं आपसे मिलने आऊँगा। क्या मिस डीनूस से मेरी भेंट करा सकेंगे।"

"उस बुढिया से मिल कर आप क्या करेंगे।"—ठाकुर ने अचरज से पूछा।

"ऐसा नही कहते। वह शासकों की जाति है।"

ठाकुर आगे रुक नही सका। वह चलता बना। मिस्टर जी० मल को [illegible] लगा कि उनसे कोई भूल हो गयी है। भूल क्या हुई, यह वह नही समझ सके।

होटल मे ठाकुर अपने एक परिचित से कह रहा था,—'श्री गोबर मल इतना बडा चमन चू० है कि उसकी दावत मे जाने से महीने भर तक दूसरे [illegible] मनोरंजन की जरूरत ही नही पडेगी।"

वह दावत मे आया। डिनर जैकेट और बो में मिस्टर मल [illegible] उन्होने लेफ्टिनेंट ठाकुर का ऐसा पुरजोर स्वागत किया जैसे उन्हें [illegible] मिल गये हैं। बाद मे ठाकुर को पता चला कि वह पहला लेफ्टिनेंट [illegible] दावत में शामिल हुआ। अतिथियो मे एक थी दर्मा दे जो [illegible] मछली और अंडा पहुँचाने के ठेकेदार थे। एक श्रीमती बैनर्जी [illegible] एक शिष्ट, सयत सुन्दर युवती थी।

सफेद चमकती अचकन पर जरीदार बेल्ट और [illegible] मिस्टर मल के कोयले से काले बैरे ने अतिथियों को ह्विस्की [illegible] सुन्दर युवती के अतिरिक्त सबने ह्विस्की लिया।

मिस्टर मल ने पहली चुस्की के बाद कहा,—'[illegible] इस्लाम की कट्टर पाबन्द हैं। वह पर्दा करती हैं। [illegible] करायें।"

मिस्टर जी० मल ने कुछ इस अन्दाज मे कहा कि ठाकुर [illegible] साथ चलने के सिवा दूसरा चारा न रहा। भीतर के एक कमरे में [illegible] मुस्लिम मित्र बनी ठनी ठाकुर का इन्तजार कर रही थी। [illegible] साफ ही पेशेवर थी। ठाकुर वितृष्णा मे भर आया। [illegible] पर उसने दाद देने की औपचारिकता जरूर निभायी।

वह बाहर चला आया। मिस्टर मल कुछ देर के [illegible] आये। ह्विस्की का दौर सुरूर पर था। बातचीत [illegible] ने कहा—"गांधी का हर आन्दोलन जैसे फेल हुआ [illegible] होंगे। अंगरेज वह शक्ति है जिसके राज में सूरज नहीं डूबता [illegible] डूबेगा। वह न हिन्दुस्तान छोड़ेगा, न उसे छोड़ना चाहिए।"

वर्मा ने चुहल किया,—"क्यों नहीं ?"

"उनका खाना देखिए, पहनावा देखिये, रहना देखिये । वे हमें सदियों जीना सिखायेंगे ।"

"वह सब जगह हार पर हार खा रहे हैं ।"—श्रीमती बैनर्जी ने कहा । वह भी विलायत हो आयी थीं जहाँ से वह नारी स्वातंत्र्य के गुण सीख आयी थीं । खुल कर शराब, सिगरेट पीती थीं, खुलकर छोटे बड़े शिकार करती थीं ।

श्री वर्मा ने बात मोड़ी,—' नेहरू ऐसा कुछ नहीं करना चाहते जिससे मित्र राष्ट्र कमजोर पड़ें ।"

ठाकुर सावधान था । उसने फिर भी पूछा,—"इंग्लैण्ड, लड़ाई के बाद भी, भारत की स्वतंत्रता स्वीकार क्यों नहीं कर लेता ?"

मिस्टर जी० मल चिल्ला कर बोल पड़े,–"नहीं-नहीं लेफ्टिनेंट, हिन्दुस्तान स्वतंत्र होने के योग्य नहीं और न सदियों तक होगा । हम बाल डांस भी करना नहीं जानते ।'

"जापान आगे बढ़ रहा है, भाई साहब"—श्रीमती बैनर्जी ने नशे की झोंक में याद दिलाया ।

"अंगरेज हिन्दुस्तान कभी नहीं खोयेगा । जापानियों को वह ऐसा सबक सिखायेगा जिसे वह कभी भूलेंगे नहीं ।"

मिस्टर वर्मा तमक कर बोले,—"हम जापानियों की गुलामी से अंगरेजों की गुलामी कहीं अच्छी मानते हैं । महात्मा गाँधी अगर पाकिस्तान की माँग मान लेते तो कांग्रेस और लीग मिल कर हिन्दुस्तान की सरकार चलाते ।"

"अंगरेज फिर नया रोड़ा अटकाते ।"—ठाकुर ने और कुछ नहीं कहा । वह सोच रहा था कि संयुक्त प्रदेश के मुसलमान जिन्ना के दो राष्ट्र के जाल में फँस गये हैं । क्या बनेगा इस देश का ? तब तक मिस्टर मल के बेयरे ने आकर एलान किया,—"सूप मेज पर है ।"

सब गिलास की ह्विस्की समाप्त कर खाने की मेज पर आये । पास ही हाथ धोने का बेसिन था । ठाकुर हाथ धो रहा था कि श्रीमती बैनर्जी के संग आयी युवती ने पास आकर धीरे से कहा,—"कल सवेरे दस बजे प्लाजा में दीदी आपका इन्तजार करेंगी ।"

ठाकुर का नशा हिरन हो गया । उसे अपना दायित्व याद आया । सन्देश पर वह चकित कम और प्रसन्न अधिक हुआ । उस शिष्ट सुन्दरी को वह रह-रह कर देखता रहा ।

खाना उत्तम था, ह्विस्की के सुरूर में प्रेम से खाया गया । खाने का आखिरी 'कोर्स' जब खत्म हो गया तब मिस्टर मल के बेयरे ने सबकी गिलासों में शेरी भरा । मिस्टर मल ने बादशाह सलामत के सेहत का जाम पीने का (टोस्ट) प्रस्ताव किया । सब ने शुभकामना का जाम खड़े होकर पिया । अब धूम्रपान हो सकता था । मिस्टर मल ने ठाकुर को एक बर्मीज चुरुट देना चाहा । उसने सधन्यवाद

अस्वीकार कर दिया।

लेफ्टिनेंट ठाकुर उस रात प्रेम से सोया। सोने के पहले वह यह सोचता रहा कि अंगरेजों ने हिन्दुस्तान मे गद्दारो के जरिए विष की वेलि को जीवन के हर भाग मे कितनी व्यापकता से फैला रखा है। निजी जीवन मे भी गद्दार अंगरेजों की नकल कर अंगरेज ही बनने की कोशिश करते है—काला अंगरेज या एंग्लो इंडियन क्योंकि अपना वर्ण वे बदल नही सकते। पराधीन देश की ऊँची संस्कृति इसी तरह मटियामेट की जाती है।

सवेरे ख्वाजा मे दीदी मिली। उन्होने बताया,—"सामान मिर्जा मुराद सुरक्षित पहुँच गया। सामान की माँग बहुत बढ़ गयी है फकीर इपी मे अधिकाधिक सामान जल्दी प्राप्त करने की कोशिश हो रही है। वह मिलेगा मगर उसे सही सलामत पहुँचना आप लोगों का काम है।"

"सामान मे किसी प्रकार का नुकसान तो नही हुआ।"—ठाकुर ने ऐसे ही पूछ लिया।

"एकाध स्टेन गनो पर दाव पड गया है। अधिक मरम्मत नही करनी पड़ेगी। गोलियाँ कम थी। बहुत अधिक चाहिए।"

हाल खुल गया। वे अन्दर प्रवेश किए। दीदी कहीं अलग बैठी। ठाकुर और सुन्दरी साथ बैठकर सिनेमा देखे। उस सुन्दरी ने मध्यान्तर मे जी० मल की चर्चा पर बताया,—"उनका परिवार गद्दारो का वह परिवार है जिसने जेनरल किड की फौजो को हर रसद पहुँचाया, औरत भी। उसी जेनरल किड के नाम पर किडगंज मुहल्ला बसा जो अब कीटगंज कहलाता है।

उस दिन ठाकुर के मन मे देश की आजादी के संघर्ष का नक्शा साफ-साफ उतर आया। देश के अन्दर गांधी जी का जन-जागरण, क्रान्तिकारियों की सरगर्मियाँ, बाहर से आजाद हिन्द फौज की चुनौती—गद्दार मिट जायेंगे, स्वदेश आजाद होगा। बाहर भीतर की कड़ी कौन बनेगा? ठाकुर के मन मे यह सवाल उठा। सवाल का जवाब नहीं मिला। वह बीयर पीने होटल के लाउज मे पहुँचा। वहाँ किसी पत्रिका मे जे० पी० की तस्वीर छपी थी—भाव प्रवण, प्रशस्त ललाट, चश्मे के भीतर बड़ी-बड़ी विचाराकुल आँखें। क्या जे० पी० वह कड़ी बनेंगे? वह बीयर मंगा कर पीता रहा और सोचता रहा।

ठाकुर को उसके होटल मे शिप्ट सुन्दरी आकर अपने घर लिवा गयी। वहाँ दीदी आई। रात के खाने पर उसकी दीदी से गम्भीर मंत्रणा हुई। उस मंत्रणा से उसकी आँखो मे नयी किरण फूटी।

●

१०

जापानियों के वर्मा में घुसते ही अंगरेजी शासन ने हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक निवासियों को वर्मा छोड़ जाने को विवश किया। वे मलाया की पुनरावृत्ति, जहाँ सभी हिन्दुस्तानी आज़ाद हिन्द फौज में सम्मिलित हो गये थे, बचाना चाहते थे। हिन्दुस्तानी मरते खपते, जंगल पहाड़ लांघते, जल थल मार्ग से भारतभूमि की ओर भागे। अंगरेजी फौजें भी पीछे हटने लगीं। हिन्दुस्तान के पूर्वी महानगर कलकत्ता में इससे खलवली मची। पूँजीपति वनिये कलकत्ता छोड़कर अपने व्यापार समेत भागने लगे। अप्रत्याशित रूप से जापान ने इसमें मदद कर दी। जापान का एक टोह लेने वाला हवाई जहाज कलकत्ता के आसमान में उड़ता दिखायी पड़ा। उसी दिन कलकत्ता मारवाड़ियों से खाली हो गया। अपनी-अपनी वड़ी-वड़ी कोठियों में ताला चाभी बन्द कर, भोजपुरिये दरवानों का वहाँ पहरा बिठा वे अपनी पितृभूमि राजस्थान की ओर दौड़े। कितनों ने राजस्थान देखा नहीं था। कितनों की वहाँ कोई विसात नहीं थी। मगर जान से ही जहान है।

वड़े-वड़े वंगाली और दूसरे पूँजीपति भी उत्तर भारत की ओर भाग रहे थे। अंगरेज व्यापारियों ने बम्बई और करांची का रास्ता पकड़ा। आसाम पहले से ही त्रस्त था। बंगाल का प्रभाव विहार पर भी बुरी तरह पड़ रहा था।

अंगरेजी सरकार हिन्दुस्तान में जम कर मोर्चा लेगी, यह अव विलकुल साफ था। चर्चिल अमेरिका को सक्रिय रूप से युद्ध में घसीट रहे थे। हिन्दुस्तान को बचाये रखने को वह अमेरिका को इंग्लैण्ड दे देने को तैयार थे।

अंगरेजी शासन भी बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो चला था। चोर बाजारी, तस्करी, लूट आदि के कारण मंहगायी आसमान छूने लग गयी थी। नेहरू जन साधारण की विपन्न दशा से घवड़ा उठे थे। उन्होंने एक वक्तव्य में यह कहा कि स्वतंत्र भारत में चोर वाजारिये और तस्कर सड़क के खम्भों से फाँसी पर लटकाये जायेंगे। (स्वतंत्र होने पर नेहरू के प्रधान मंत्रित्व काल में कितने तस्कर फाँसी पर लटकाये गये, यह इस कहानी का विषय नहीं !)

अंगरेजों को हिन्दुस्तानियों के सुख-दुःख से उनके राज के प्रारम्भ से ही कम वास्ता था। उन्हें ब्रिटिश झण्डे की सुरक्षा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता नहीं थी। हिन्दुस्तान के घरेलू कुटीर उद्योगों को नष्ट कर वे लंकाशायर और मैनचेस्टर के मिलों को वड़ा वना ही चुके थे। आज युद्ध के विकराल राक्षस के सुरसा-मुख से उन्हें

साम्राज्य को बचाने की पड़ी थी। उन्होने एक ओर अमेरिका को अपना आका स्वीकार कर उन्हे युद्ध का नेतृत्व सौपने की चाल चली दूसरी ओर दुभिक्ष पीड़ित भारत मे फौज की भर्ती तेज की।

लेफ्टिनेंट रज़ी अपने जन्मजात संस्कारो के कारण विशेष प्रतिभा सम्पन्न थे। उनसे अधिक कुशल सम्पर्क अधिकारी अंगरेजो को कहाँ मिलता। वे बगलोर से लखनऊ कमाड मे नियुक्त हुए और अपने क्षेत्र संयुक्त प्रदेश के पूर्वी इलाके में भर्ती को तेजतम कराने का उनको दायित्व मिला।

गंगा के कटाव के कारण भोजपुरिया क्षेत्र की दारुण गरीबी इतिहास मे प्रसिद्ध रही है। बनारस और दीनापुर क्षेत्र में दुर्भिक्ष के बाद भी भर्ती अच्छी नही चल रही थी। लेफ्टिनेंट रज़ी इस सवाल का हल ढूढने बनारस आये।

बनारस मे वह फौजी ठिकानो या अंगरेजी होटल मे न ठहर कर ग्रान्ड होटल मे ठहरे। यह होटल तब उनकी मा की किसी सहेली की सम्पत्ति था। वहाँ के मैनेजर उनके पिता के खानदान के थे।

बनारस मे टामस ने उनसे विदीर्ण का परिचय कराया और कहा,—"कवि जी के मेदे मे घाम भरा है। कब से किसी महिला प्रचारक अधिकारी को ढूंढ रहे है। वह इन्हे मिल ही नही रही है।"

"मिल जायगी।"—रज़ी ने सुकवि के नेहरे मोहरे पर उड़ती निगाह डालते हुए विश्वासपूर्वक कहा।

उस शाम लेफ्टिनेंट रज़ी सादे सूट मे ग्राड मे बाहर जाने को निकले। ग्राड होटल के मैनेजर *नरायण राय ने अगर रज़ी को कभी ऐरा गैरा समझा भी हो तो* अब वैसा सोचना सम्भव नही था। उन्होने उसे रोक कर कहा,—"म्या रज़ी, अब तो पूरे गोरे अफसर लगते हो। एक प्याला चाय पीने जाओ।"

"धन्यवाद, चाय कभी पी लूंगा।"—कहते हुए वह बाहर जाने को सीढियाँ उतरने लगा।

लेफ्टिनेंट रज़ी मण्डी की ओर न मुडकर सीधे चलते गये। ज्ञानवापी पर सीढियाँ उतर वे पूरब की एक सकरी अंधेरी गली मे घुसे।

गली के मुक्कड पर एक जनखे से आदमी ने बड़े अदब से उन्हे सलाम किया। रज़ी ने डाट कर उससे कहा,—"जाओ, अपना रास्ता नापो।"

उसने झुक कर दुबारा सलाम किया। बोला,—"सरकार लोगो से ही परवरिश है।"

रज़ी अपने ध्यान मे थे। सुनी अनसुनी कर वे चलते रहे। जनखा भी कुछ दूर पर उनके पीछे-पीछे चलता रहा।

गली अंधेरे में सांय-साय कर रही थी कि सामने ऊँचायी की सीढ़िया आ गयी। रज़ी अभ्यस्त की तरह सीढिया चढने लगा। ऊपर सीढी पर दो मुस्तंड साड

बेफिक्री से पसरे जुगाली भर रहे थे। जनखा तेज चल कर आगे आया और उसने रज़ी को आगाह किया,—"संभल कर, हुज़ूर।"

"अभी दफ़न नहीं हुआ। मैं बनारस को जानता हूँ।"

"सरकार, पेशावर से एक नयी बिजली चमकी है।"

"भाग जा।"—रज़ी ने गुस्से से उसे डांटा और एक गेरुआधारी साधू बाबा से टकराते-टकराते बचा।

दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गयी। बनारस गलियों से ऊपर नहीं उठ सका,—सोचते हुए वह एक हवेली के पुराने मटमैले फाटक के सामने आकर खड़ा हुआ और उस पर दस्तक दी।

जनखा 'नवाब की ड्योढ़ी' बुदबुदाता हुआ भाग निकला।

दस्तक पर फाटक अंधेरे में खुला। सहन पार कर रज़ी एक बरामदे में पहुँचा जहाँ रौशनी जल रही थी। सामने ही जगमगाता कमरा था जिसमें एक अधेड़ उम्र की सम्भ्रान्त महिला हाथ में सुमिरिनी फेरते एक मौलवी साहब से उपदेश सुन रही थीं। मौलवी साहब बता रहे थे,—"हिन्दू और मुसलमान एक हो ही नहीं सकते। हमने हज़ार साल यहाँ राज किया है। ठीक है कि हमारे पूर्वज हिन्दू थे। उन्होंने जिस कारण भी हो इस्लाम अंगीकार किया। तबसे हम उसी के हैं। हम पाकिस्तान लेकर रहेंगे और उसके बाद भी हिन्दू काफिरों को चैन से नहीं रहने देंगे।"

"यह क्या बात हुई?"—अधेड़ महिला ने हैरानी से मौलवी साहब से पूछा।

लेफ्टिनेंट रज़ी ने भी मौलवी साहब की बात सुनी थी। वे मुसलिम लीग के कट्टर समर्थक थे। इतने आगे की उन्हें भी नहीं सूझी थी। वे हक्का-बक्का थे।

आहट पा वृद्ध महिला ने रज़ी की ओर देखा। रज़ी ने सलाम कर पूछा,—"मैं हाज़िर हो सकता हूँ।"

अधेड़ बेगम रज़ी को पहचान कर प्रसन्न हुई। बोलीं,—"जीते रहो, साहबज़ादे। आओ, यह मौलवी साहब हैं।" उन्होंने मौलवी साहब से रज़ी का परिचय कराया।

मौलवी साहब चौंक उठे थे। रज़ी के परिचय से आश्वस्त हुए। बोले,—"आप नौजवानों पर इस्लाम को इस महादेश में बनाये रखने की बड़ी जिम्मेदारी है। हमें पाकिस्तान लेकर रहना है। हिन्दुओं के बहुमत के अधीन रहने से नरक के अग्निकुंड में जल जाना बेहतर होगा।"

रज़ी ने पाकिस्तान कि यह कल्पना नहीं की थी। वह हिन्दू मुसलिम विभेदों का यह उग्र रूप समझ नहीं पाता था। उसने कहीं पढ़ा था कि कई देशों में पिता कोई धर्म मानता है, माता दूसरा और पुत्र तीसरा। धर्म व्यक्ति के अन्तरंग की बात है।

सामूहिक रूप मे सबका धर्म देश है—उसकी सुरक्षा, उसका सर्वांगीण विकास। मुसलमानो के समय में भी ऐसा ही रहा। अकबर का सेनापति हिन्दू था। शिवा जी का सेनापति मुसलमान था। पाकिस्तान बनेगा तो क्या हिन्दू वहाँ से निकाल दिये जायेंगे या जबरन मुसलमान बना लिए जायेंगे। तब हिन्दुस्तान मे क्या होगा ?

अधेड़ बेगम को भी मौलवी साहब की बात अच्छी नही लगी। उन्होंने मौलवी साहब से मुँह फेर कर रज़ी से पूछा,—"सुना, अफसर हो गये हो।"

रज़ी मुस्कुराया। बेगम ने मौलवी साहब से कहा,—"आप बगीचे के रास्ते से तशरीफ ले चलें। मैं खबर करूँगी।"

मौलवी साहब बेगम का मुह ताकते रह गये। पीछे के रास्ते से चले जाने के सिवा वे कर क्या सकते थे ?

मौलवी साहब ने शायद बेगम का बहुत समय बरबाद किया था। उनके जाते ही बेगम बोली,—"सुनो इनकी बातें। कहते हैं कि पाकिस्तान न बना तो पानीपत की चौथी लड़ाई यहीं के हिन्दू मुसलमानो के बीच होगी।"

"एक लडाई तो हो ही रही है। उसी मे नाचने गाने वालियो का दल तैयार करने के लिए मै यहां आया हूँ। यह सास्कृतिक दल होगा जो नाच, गान, नाटक से फौजियों का देश मे और सीमात पर मनोरंजन करेगा।"

"लड़ाई में औरतें कैसे जायेंगी"!—बेगम रज़ी की बात को समझ नही पा रही थी।

रज़ी ने बेतुके सवाल का जवाब न देकर दूसरी बात पूछी,—"नज्मा कहाँ है ?"

"नज्मा जिस स्कूल मे पढाती थी उसी के पडोस मे एक दर्जी मास्टर की दुकान है। दर्जी मास्टर अच्छा भला कमासुत नौजवान है। नज्मा ने तौबा कर उसी से निकाह कर लिया है।"

"मुझे एक वैसी ही पढ़ी-लिखी युवती चाहिए जो फौज म मनोरजन के लिए लडकियों के दल का सगठन कर सके।"

'फौज के नाम से हिन्दू तो चिढते ही है, मुसलमान भी नाक-भौं सिकोड़ते हैं। मुसलमानी बादशाहत को गोरो की फौज ही ने तो गारत किया।"

रज़ी ने नीति से काम लिया। एकाध सुशिक्षित वयस्क युवतियो से मिलाने का आग्रह किया। बेगम सोचती रही। उन्होंने आवाज लगायी,—"ओ बे चित-कबरा।"

एक मसखरा सा ऊल जलूल नौकर आ खडा हुआ। बेगम ने उससे कहा,—"बंगाल महाल होटल मे जा। उस दिन वाली सिमनी मिस साहब वहाँ होगी। उनसे कहना कि मैंने अभी बुलाया है।

चितकबरा चला गया। मालती सिमली नाम रज़ी के कानों में गूंजता रहा। वह अपना दिमाग कुरेद रहा था कि उसने यह नाम कहाँ सुना था?

बेगम को अब अतिथि सत्कार की याद आई। वे चाय पकौड़ी तैयार करने के लिए अन्दर ख़ानम से कह आईं। रज़ी से उन्होंने पूछा,—"आप तो बहुत पढ़े थे। आपने फौज की नौकरी क्यों की?"

बेगम अपने सवाल पर कुपित हुई। तब तक रज़ी ने जवाब दिया,—"आदमी का दाना पानी उसे जहाँ ले जाय?"

चाय आयी। सत्कार के निर्वाह के लिए रज़ी ने एक प्याला चाय लिया। चाय की चुश्की में वह सोच रहा था कि बेगम के 'हाउस का धंधा' ऊँचा है। कोई उसे भांप नहीं सकता। बनारस क्या दूर-दूर तक ऐसा ऊँचा 'हाउस' नहीं।

बेगम को शायद उसके मनोभावों का पता चल गया। बोलीं,—"अब जीवन बदल गया। मुन्ने मियां हैं, वह भी उम्र पूरा कर रहे हैं। उनके साथ ताल मेल बैठ गया है। अगले साल हज करने को कह रहे हैं।"

रज़ी को इससे सरोकार नहीं था कि बेगम क्या करती हैं। वह बदल जरूर गयी थीं। आदमी कितना जल्दी बदल जाता है।

चितकबरा लौटा। उसने कहा,—"वहीं बुलाया है।" बेगम उदास हुईं। रज़ी उठ खड़ा हुआ। चितकबरा उसे बंगाल महाल होटल पहुँचाने ले चला।

होटल के एक कमरे में लेफ्टिनेंट रज़ी और मालती सिमली की भेंट हुई। पहली दृष्टि का आकर्षण जिसे कहते है कुछ वैसा हुआ। मालती सिमली रज़ी को देखती रही, रज़ी मालती सिमली को। खानदानी तेवर ने खानदानी तेवर को पहचाना। रज़ी बोला,—"मैं ग्रैण्ड में ठहरा हूँ।"

मालती सिमली मैनेजर से बात करने गयीं। वहाँ से झटपट लौट कर रज़ी से बोलीं,—"चलिए, आपके होटल चलें।"

ग्रैण्ड के अपने कमरे में रज़ी ने मेज पर स्काच की बोतल और सोडा सजाया। स्काच तब भी बनारस में मिस क्लार्क के होटल में ही मिलती थी। मालती सिमली झूम उठीं। उन्होंने अपने रतनार नयनों से आभार प्रकट किया। पेशे से आये रज़ी ने पूछ लेना मुनासिब समझा,—"उजरत वुजरत की बात बेमानी है।"

"जी नहीं, जरूरी है।'—मालती सिमली ने अपने रतनार डोरों को नचाते हुए कहा।

"आसमान कितना ऊँचा है।"

"बहुत ऊँचा," मालती सिमली ने उठकर रज़ी को अपनी बाँहों में भरते हुए कहा,—"जीवन भर का सौदा है।"

रज़ी खुश हुआ। लौण्डिया कितनी भी चालाक हो उसकी बात मानेगी।

उसने मालती मिमली का दीर्घ चुम्बन लिया ।

ह्विस्की प्रेमोन्माद से पी गयी । उत्तम मुगलिया खाना खाया गया । कमरे में दूसरे पलंग की भी जरूरत नहीं पड़ी । रज़ी और मालती मिमली दोनों रात भर एक दूसरे में लीन रहे । दोनों अपने अपने ढंग से इसी जीवन के आदी थे ।

सवेरे देर से उठे । मालती मिमली पंजेगत अनुभव से मनुहार का जाल बिछा रही थी । रज़ी भी उन तौर तरीकों को जानता था । बोला,—"आज शाम फिर मिलेंगे ।"

'हम एक दूसरे के रहेंगे ।'—मालती मिमली ने सच्चाई से कहा ।

"आपने मेरी जबान छीन ली । मैं आपको फौज का अफसर बना कर साथ रखूगा ।"

मालती सिमली झिझकी । उनके मुह से निकला,— अगरेजो की फौज ।"

"यही फौज अपनी हो जायगी । हमें भी तो फौज की जरूरत पड़ेगी ।"

"सच ?"—जाने क्या समझ कर मालती मिमली बोल पड़ी ।

"सच ।"

समझौता हो गया । रज़ी मालती मिमली को पहुँचाने आया । उनके पुर्वैट पर छोड़ते समय उनसे कहा,—"आज तीन बजे फौजी दफ्तर चलेंगे ।"

मालती सिमली कुछ बोली नहीं । उनका जीवन ऊँचा व्यक्तित्व माजा करता था । रज़ो सा ऊचा व्यक्तित्व उन्हे अब तक कहा मिला था ? उनके अनुभव, तेवर और जीवन-स्तर पर वह अपना मन हार आयी थीं ।

ईसाई होकर भी उनका मन स्वदेश के खिलाफ अगरेजो की फौज में नौकरी करना उचित नही मान रहा था । वह दिन भर इसी उधेड़बुन मे पड़ी रही । ठीक पौने तीन बजे रज़ो आ पहुँचा । मालती मिमली तैयार होकर उसके साथ बिना कोई अनाकानी किए फौजी दफ्तर के लिए निकल पड़ी ।

मैजर टामस के कार्यालय मे उन्होंने आवेदनपत्र भरा, मेजर से साक्षात्कार किया और अपना नियुक्ति पत्र प्राप्त कर लिया ।

सुकवि विदीर्ण मालती मिमली को देखते रह गये । मिमली को वे जानते थे । उन्होने पहली बार अपने मन मे कहा,—"धंग्रेजियों मे अंगरेजो का क्या बनेगा ?"

मन ने कहा—'कवि जी, अंगूर खट्टे हैं ।"

सुकवि ने कुछ नही कहा । एक संतोष की सास ली कि कमलेश इस पचड़े मे पड़ते-पड़ते बच निकली ।

मालती मिमली के नये काम की सिखलायी के लिए रज़ी उन्हे एक सप्ताह तक पूर्वी जिलों के दौरे पर ले गया । वहाँ से लौटा तो टामस की सहमति से उन्हे लखनऊ लिवा गया । लखनऊ में रज़ी ने युद्ध की समाप्ति पर उनसे विवाह करने का

वादा किया ।

मालती सिमली एक विवाह का फल भुगत चुकी थीं । रज्जो के भविष्य के वादे पर उन्हें कोई खुशी नहीं हुई । वे जानती थीं कि उनके समाज ने उन्हें निरंतर बहने वाली लहर बना दिया था जो किसी भी घाट पर रुक नहीं पायेगी । रज्जो का अन्तर्मन अपने वादे पर अट्टहास कर रहा था । उस अट्टहास की एक क्षीण मौन आवाज मालती सिमली को सुनायी पड़ गयी [illegible] लती सिमली जीवन को भोग की वस्तु मानती थीं खोने की नहीं । इसलि [illegible] पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा ।

नीलिमा अधिकारी उर्फ दीदी क्रान्तिकारी होने के साथ-साथ सौर मण्डल के नक्षत्रों का गहरा ज्ञान रखती थी। हिन्दुस्तान और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर उसकी बड़ी पैनी दृष्टि थी। इस समय उनका पूरा ध्यान अस्त्र-शस्त्र संग्रह करने में लगा था। उनके दल का उत्तर तथा उत्तर पूर्वी भारत के कई कबीले सरदारों से सम्पर्क था। दल पूर्वी सीमान्त के फौजी संस्थानों में काफी संख्या में घुस गया था। उनका दृढ़ विश्वास था कि अंगरेजों को यहाँ से मार भगाने का अनमोल अवसर आ गया है। यह मौका चूके तो चूके।

अस्त्र-शस्त्र तो गोरों से भी मिल जाते थे। कठिनाई उसमें मूल्य चुकाने की थी। दल को धन की बहुत जरूरत थी। दीदी कुंवर साहब सुहागगढ़ी के पास आयी थी। कुंवर साहब की ऐशो इशरत सदा पन्ना देवी, उनकी प्रेयसि, तक ही सीमित रही। उनका राष्ट्र-प्रेम उसी तरह एकांगी होते हुए भी तीव्र था। राजपूत थे, पराधीनता को उन्होंने हमेशा कोसा था। हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता उनसे अधिक कौन चाहता था। उनका तो दावा था कि कभी बुन्देले राजपूत ही अंगरेजों को मार भगायेंगे।

दीदी बाई के बाग जब पहुंची तो पन्ना देवी भी कुंवर साहब के पास बैठी थी। कुंवर साहब ने उनका स्वागत किया और पूछा,—"दिल्ली अभी कितनी दूर है?"

"दूरी बहुत कम हो गयी है। अंगरेज योरोप को खोने के बाद मध्य एशिया को खो रहे हैं। पूरब में वर्मा भी खोया ही समझिए। हिन्दुस्तान में डंटने का उनका इरादा है। यहाँ जब तक आसमान में सूरज चाद हैं तब तक वे बने रहना चाहते हैं।"

"महात्मा जी के अहिंसा का क्या होगा?"—कुंवर साहब ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"वह क्रिप्स मिशन और व्यक्तिगत सत्याग्रह की तरह ही फेल होगा।"

"गांधी जी चुप नहीं बैठेंगे।"—कुंवर साहब ने तर्क आगे बढ़ाया।

तब तक फालसा का ठंडा शरबत आ गया। कुंवर साहब ने एक गिलास दीदी को साग्रह भेंट किया।

दीदी गिलास से एक घूंट पी कर बोलीं,—"मई के 'हरिजन' में उन्होंने अग्रलेख में ब्रिटिश सरकार से हिन्दुस्तान को उसके भाग्य पर छोड़ कर यहाँ से चले जाने को कहा है।"

कुंवर साहब आश्चर्य से भौंचक रह गये। दीदी आगे बता रही थीं,—"सुभाष बाबू जर्मनी से ललकार रहे हैं। मलाया में आज़ाद हिन्द फौज लैस हो रही है। जे० पी० हज़ारी बाग जेल के सींकचों में बन्द हैं। हम आप बाहर रह कर क्या हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे?"

पन्ना देवी अब बोलीं,—"दीदी, हम क्या कर सकते हैं?"

"आप दो किश्तों में एक लाख रुपये का आजादी के यज्ञ में दान दे सकती हैं।"

कुंवर साहब ने दीदी के आने के कारण को अब समझा। धनराशि पर उन्हें अचरज होना स्वाभाविक था।

ज्ञान और कर्म की दृढ़ता से निखरी अपनी ललित किन्तु ओजस्वी वाणी में दीदी ने कुंवर साहब से दुबारा कहा,—"हफ्ते भर में धन मिल जाता तो दिल्ली की दूरी बहुत कम रह जाती।"

पन्ना देशप्रेम से उबल कर बोली,—"आपकी मांग हम पूरी करेंगे।"

दीदी सातवें दिन आने को कह कर चलने के लिए खड़ी हो गयीं। चलने से पहले उन्होंने पन्ना देवी से कहा,—"उस्ताद शिवलाल पूर्वी सीमान्त पर सैनिकों के मनोरंजन के लिए दो-तीन सांस्कृतिक दल तैयार कर रहे हैं। उसमें आपकी मदद जरूरी है।"

"मैं मदद करूँगी।"

दीदी के जाने के बाद कुंवर साहब ने पन्ना से पूछा,—"हाँ तो आसानी से कर दिया। धन आयेगा कहाँ से?"

"मेरे गहने जेवर कब काम आयेंगे?" उसी रौ में पन्ना देवी ने आगे ?,—"पुखराज अपना लक्ष्य पा गयी। मुझे भी स्वदेश के लिये सामर्थ्य भर तो जरूर करना है, करना चाहिए......।"

कुंवर साहब ने बात काटी,—"तुम्हें अभी लक्ष्य नहीं मिला? क्यों?"

"लक्ष्य मिला। वही पाकर अपना कर्तव्य निभाना चाहती हूँ।"

कुंवर साहब चुप हो गये। वह मन ही मन कुमारी नीलिमा अधिकारी की प्रतिभा को सराह रहे थे। उन पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था। न जानते हुए भी उनके काम का कुंवर साहब को सही अनुमान था। धन कम नहीं देना था। उसको देने की व्यवस्था करनी ही पड़ी।

पन्ना ने उस्ताद शिवलाल को बुला कर उनसे सांस्कृतिक दल के बारे में बातचीत की। उनके बीच गोपनीय विचार विमर्श हुआ। उसी दिन पन्ना देवी ने प्रफुल्ल ओझा को कमलेश के पास बनारस भेजा।

प्रफुल्ल को उस दिन जरूरी काम से अपने गाँव सिगरा, ज़िला प्रतापगढ़, जाना था। वहाँ से तीसरे दिन वह कमलेश के पास पहुँचा।

कमलेश अकेली थी। सुकवि विदीर्ण प्रचार दौरे पर बाहर गये थे।

प्रफुल्ल ने पन्ना देवी की चिट्ठी कमलेश को दी और कहा,—"दीदी ने कहा था कि चिट्ठी पढ कर जला दें।"

कमलेश ने चिट्ठी को दुबारा पढा और उसमे दियासलाई लगा दिया।

"पंडित जी कैसे है?"—कमलेश ने पूछा।

"वे फैजाबाद जेल मे नजरबन्द है।"

"अंगरेज कौम हमेशा से धूर्त और मक्कार रही। भगवान उनका बेड़ा जल्दी गर्क करें।"—कमलेश विह्वल हो उठी थी। उसने सांस लेकर कहा,—"जब पंडित जी से मिलने जायं तो उनसे हमारा प्रणाम भी कह देंगे।"

प्रफुल्ल जल्दी जाना चाहता था। उसने कमलेश से पूछा,—"दीदी से क्या कहूगा?"

"मैं अगले हफ्ते इलाहाबाद जरूर आऊँगी।"

सुकवि जब दौरे से लौटे तब कुछ दु:खी थे। कमलेश से उन्होने उसास भर कर बताया कि मालती सिमली ने महिला प्रचारक की जगह ले ली। उसके साथ काम करने को जी नही चाहता।

कमलेश ने अपनी बात कही,—"मैं दो चार दिन मे इलाहाबाद जाऊँगी।"

कविवर को जैसे सांप सूंघ गया। किसी तरह बोले,—"मुझसे क्या अपराध बन पडा है?"

"अपराध की बात नही?"

"हमारे आपके बीच यह दरार क्यो? आप चाहेंगी तो मैं यह नौकरी भी छोड कर आपके चरणो मे पडा रहूँगा।"

"नौकरी छोडने की बात ही नही। मैं स्वय कुछ करने की सोच रही हूँ।"

"मैं आपके लिए रूपपत्र लाया था। कहाँ का लेफ्टिनेंट रजो आया। उस जगह पर मालती सिमली जैसी पति परित्यक्ता सोसायटी गर्ल को रखा गया। खैर, वह न हुआ तो अच्छा ही हुआ। यह खाई कैसे खुद गयी।"—सुकवि के स्वर दु:ख से सने थे।

कमलेश ने सुकवि को आश्वस्त करने के लिए अपनी बाहो की माला उनके गले मे डाल दिया और कहा,—"मैं तय करके आयी थी कि आपने शरण दी है तो जैसे भी रखेंगे वैसे रहूँगी, जो खाने को देंगे वह खाऊँगी, जो पहनायेंगे वह पहनूँगी। हमारे आपके बीच कोई खाई नही खुद सकती। पन्ना देवी ने इलाहाबाद बुलाया है। यहाँ की तरह वहाँ भी सास्कृतिक दल संगठित किए जा रहे है। मुझे मदद के लिए बुलाया है। प्रफुल्ल आये थे। मैंने जाने का वादा कर दिया है।"

"प्रफुल्ल कौन?"

"पंडित छैल विहारी ओझा का नाम आपने सुना होगा। किसान आन्दोलन के बड़े प्रतिभाशाली नेता थे। फैजाबाद जेल मे नजरबन्द हैं। प्रफुल्ल उनके ज्येष्ठ पुत्र है। किसी कालेज मे अध्यापक हैं। वे भी फौज मे जाने की कोशिश मे हैं।"

सुकवि कुछ सोचते रहे। पूछे,—"कब तक लौटेंगी ?

"जल्दी ही। आप व्यर्थ की चिन्ता में न पड़ें।—"कहकर कमलेश कवि जी के पार्श्व में लेट गयी।

सुकवि का असमंजस अभी मिटा नहीं था। बोल उठे,—"अगर आप पलंग पर सोना चाहती हैं तो मैं नीचे फर्श पर सो जाऊँगा।

"हम भारतीय हैं। हमारे अपने संस्कार हैं।"—कमलेश ने कवि जी को थपकियाँ देकर सुलाने की कोशिश की। थोड़ी देर बाद वह नीचे शीतलपाटी पर जाकर सो गयी।

इलाहाबाद में पन्ना देवी ने कमलेश से कहा,—"हम और कुछ नहीं कर सकते तो क्या हिन्दुस्तानी सैनिकों की देशभक्ति को नहीं उभाड़ सकते ? शिवलाल उग्र राष्ट्रवादी विचारों का है। उसका सांस्कृतिक दल बहुत ठोंक बजा कर बनाया जा रहा है। फिर भी दल के निदेशन पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। इसीलिए तुम्हें बुलाया है। मैं भी जहाँ जरूरी होगा चलूँगी।"

"तुम कैसे कहीं जा सकती हो ?" कुंवर साहब ने गुस्से के भाव से पूछा।

पन्ना के चेहरे पर लाज की लालिमा आ छायी। कमलेश ने अब लक्ष्य किया कि पन्ना मातृत्व बोझ से लदी थीं।

कमलेश ने अपने मन की शंका व्यक्त किया,—"सांस्कृतिक दलों में पेशे की भी लड़कियां होंगी। उनसे भेद खुल जाय या वे शरीर के भोग के लालच में आ जायं, तब ?"

"उनकी लगाम कड़ाई से अपने हाथ में रखनी है। भोग स्वाभाविक वृत्ति है। भोग में अगर अपना उद्देश्य अडिग रखें तो उसमें भी कोई अड़चन नहीं।"

कमलेश चुप हो गयी। सोचती रही। बलराज मास्टर का तर्क था कि उद्देश्य शुभ होना चाहिए। उसकी प्राप्ति किसी साधन से की जा सकती है।

उस्ताद शिवलाल के एक दल का छावनी में ब्रिगेड कमांडर के सामने प्रदर्शन था। कमलेश ने उसको देखा। कार्यक्रम हिन्दुस्तान के प्राचीन-अर्वाचीन गौरवगाथा पर आधारित था। अंगरेज सम्राट के जिक्र में भी भारत-भूमि की जयगाथा थी। कार्यक्रम समझदार सैनिक के हृदय में राष्ट्रीयता भर सकने में समर्थ था, मनोरंजन तो उससे न समझने वाले गोरे सैनिकों का भी होता था। कार्यक्रम कमलेश को बहुत पसन्द आया। उसने उस्ताद शिवलाल को उसके लिए बधाई दी।

उसने पन्ना देवी से कहा,—"मैं काम करूँगी। मैं इसके लिए पारिश्रमिक भी नहीं लूँगी।"

"पारिश्रमिक जरूरी खर्च से अधिक मिलेगा कहां ? अपरिग्रह ही सच्ची सेवा है।"

"मैं अधिकाधिक बनारस में रह कर ही काम करना चाहूँगी।"

पन्ना ने कमलेश के मर्म को समझा। विनोद भाव से कहा,—"अहेरी का

बात बँध ही गया।" दूसरी सांस में कहा,—"सुकवि को भी मोड़ना है।"

"वह कवि है। वह भी छायावादी जो जल्दी समझ में न आये और जो गहराई छू भी न पाये। फिर भी मैं कोशिश करूँगी।"

इलाहाबाद छोड़ने के पहले कमलेश दीदी से मिली। दीदी ने कहा,—"ऊँचे नीचे वेतन से अच्छा बुरे काम की ही प्रेरणा मिल पायेगी। देश प्रेम ही अच्छे काम की सही प्रेरणा दे सकता है। हर हिन्दुस्तानी में हमें वही भरना है। अगले महीने इम्फाल क्षेत्र जाना है। शायद मैं भी वहाँ पहुँचूँ।"

पुखराज के बाद दीदी ही एक नारी थी जिसका प्रभाव कमलेश के मन ने स्वीकार किया था। उसे नया दृष्टिकोण और उत्साह मिला। वह उनसे जब भी मिलती थी ऐसा ही होता था। वह क्रान्ति की लपकती लपट थीं।

बनारस में सुकवि विदीर्ण को यह जान कर कि कमलेश भी फौजी सांस्कृतिक दलों का निदेशन करेगी प्रसन्नता हुई। कमलेश ने उन्हें बताया कि उसका उद्देश्य केवल उनके साथ रहने का है।

यह सुन कर कवि जी मानो उछल पड़े और सहसा उसके अधरामृत का पान कर लिए। उस रात दोनों जोश में थे। वे एक ही पलंग पर सोये। दुधारि तलवार बीच में जरूर रही। विवाह का कर्मकाण्ड नारी की पवित्रता का सौष्ठव है। कमलेश यह मानने लगी थी।

सबेरे कवि जी के कल्पना की उड़ान देखने लायक थी। अपने निजी देवासुर संग्राम में अमृतघट पा लेने पर उन्होंने एक नयी कविता लिखी। उसे इतने जोर जोर से पढ़ते रहे कि कमलेश उसे सुन ले। कवि जी अपनी विजय वाहिनी रसधारा बहाते ही रहते अगर दस बजे उन्हें दफ्तर न जाना होता।

दिन और रात का संयोग वैसा ही होता है जैसे धूप और छाया का। सुकवि के जीवन में इतनी सनसनाहट पहले कभी नहीं मिली थी। वह पान चाभे, प्रसन्नता से उतान गहरेवाज इक्के पर दफ्तर की ओर उड़ते चले जा रहे थे कि गोदौलिया के चौराहे पर कालिका राय मिल गया। कालिका राय ने कवि जी को रोका, इक्के से उतार कर मिश्रा जी को पान की दुकान पर लाकर कहा,—"अरे विदीर्ण, सोनचिरैया को घर में पाल कर हमें भूल गया।"

"नहीं राय साहब,"—प्रसन्नता की किलकारी छोड़ते हुए विदीर्ण बोला,—"मैं नयी मुसीबत में फस गया हूँ।"

"वह क्या ?"

"विवाह पर जोर दे रही हैं।"

"वह छिनाल कितने विवाह करेगी ?"

"क्या मतलब ?" —विदीर्ण ने भौंचक होकर पूछा।

"उसने मुझसे विवाह करने का वचन दिया था। एक प्रकार ने हमारा विवाह हो गया ही समझो। मेरा हजारों खर्च हुआ।"

विदीर्ण का कलेजा गले में निकलने के लिए आ अटका। कालिका राय की

बात गूढ़ थी। उन जैसे कवि हृदय प्राणी का क्या ऐसे से विवाह करना श्रेयस्कर होगा ? विवाह खेल नहीं पवित्र बन्धन है। उसने छिपी आँखों से कालिका राय के चेहरे के भावों को देखा। कालिका राय के चेहरे पर खुशी थी। उसने कमलेश से अपना बदला चुका लिया।

कालिका राय ने आज एक रुपया बीड़ा वाला पान विदीर्ण को खिलाया और कहा,—"अरे विदीर्ण, मौज कर, धता बता। नीचे-खाले फंस मत जाना।"

विदीर्ण इक्के पर बैठ रहा था तब कालिका राय ने धीरे से कहा,—"जिस दिन रतजगा करना चाहे मेरी ओर से दस रुपये वाला बीड़ा खाना।"

विदीर्ण को मालूम था कि दस रुपये वाले पान में कोकीन की मात्रा रहती है। यह उक्ति भी उसे काट खा गयी। वह दिन उसका काल सा दुःखदायी बना। शाम को घर लौट कर वह चारपायी पर गिर गया।

कमलेश ने कवि जी का उतरा हुआ मुँह देख कर ही समझ लिया था कि कोई न कोई विशेष बात हुई है। कवि जी ने न नाश्ता किया न प्रेमालाप। सैर करने को चलने के लिए भी उन्होंने नहीं कहा। कमलेश ने उनसे कहा,—"नाश्ता कर लें।"

"तबियत ठीक नहीं।"—कह कर कवि जी ने करवट बदल लिया।

कमलेश कवि जी का सिर दबाने बढ़ी। कवि जी ने सिर से उसका हाथ हटा दिया और कहा,—"मुझे अकेले छोड़ दें।"

कमलेश वहाँ से हट गयी। नीचे उतरने की सीढ़ी की ओर जाकर खड़ी हो गयी। उसकी आँखें बह निकलीं। बड़ी देर के बाद वह रसोई के कोने में आयी। बैठ गयी। वह वहाँ बैठी ही रहती अगर सड़क की घड़ी ने दस का घण्टा नहीं बजाया होता। उसने रसोई उठा दी, सफाई कर लिया और दूसरी कोई जगह न होने के कारण शीतल पाटी पर लेट गयी। एक बार उसने कवि जी से कहा,—"चाहें तो गरम दूध ले लें।"

सुकवि आँखें मूंदे मूंदे बोले,—"कष्ट न करें।"

"आपको मेरे कारण कष्ट पहुँचा। मैं कल सवेरे की गाड़ी से चली जाऊँगी। आपने मुझे आड़े वक्त में शरण दिया, यह मैं कभी नहीं भूलूंगी।"

कवि जी कुछ नहीं बोले। कमलेश भी चुपचाप रही। बड़ी रात को बत्ती बुझा वह सोने की कोशिश में लगी।

सवेरे कवि जी ने नित्य क्रिया और स्नान किया। उससे उनके मन की जलन कुछ कम हुई पर मिटी नहीं। वह गंगा तट पर सैर के लिए चले गये। गंगा तट की ठण्डी बयार में उनका मन सोच रहा था कि कितनी साधना के बाद नीड़ के निर्माण की एक आशा बंधी। अचानक बाज ने झपट कर खर-तिनकों का विध्वंस करना शुरू किया। विधाता ने उनकी क्या किस्मत रची। सहसा वायु के एक ठण्डे झोंके में संदेश आया—कालिका राय झूठ भी तो बोल सकता है ? क्यों वह झूठ बोलेगा।

कमलेश का उससे मिलना-जुलना था। वे दोनों दिल्ली तक साथ आये गये थे। की बदली जवानी नयी जरूर होगी। हर जवानी तपती है। अच्छा हुआ वह डूबने से पहले ही सावधान हो गया।

दफ्तर जाने के समय पर वह घर लौटा। कमलेश अपना बोरिया बिस्तर बाँधे जाने को तैयार थी। कवि जी का हृदय एक बार मचला। वे कमलेश को रोकना चाहते थे। जीभ ने उनका साथ नहीं दिया।

नीचे रिक्शा आ गया। कमलेश सामान हाथ में उठा चली। पाँव ठिठके। वह रुकी नहीं। कवि जी को किंचित शीश नवा वह रिक्शे पर जा बैठी।

स्टेशन पर गाड़ी समय से आयी। कमलेश अपने डब्बे में जा बैठी। गार्ड ने सीटी बजायी, हरी झण्डी दिखायी। सहसा कवि जी स्टेशन पर भागते दिखायी पड़े। ट्रेन चली और तेज रफ्तार में हो गयी। कमलेश कवि जी को प्लेटफार्म पर दौड़ते छोड़ आयी।

इलाहाबाद पहुँच कर कमलेश को लगा कि उसने जल्दी की। उसका मन उदास था जब वह बाई के बाग में पन्ना देवी के पास पहुँची।

कमलेश ने अपनी पूरी बात पन्ना को बताया। पन्ना क्रोधित हुई। कुंवर साहब ने लाख रुपये की बात कही,—"कवि जी पेट के लिए अगरेज का प्रचार करते हैं। उन्हें मोड़ कर अपनी ओर खींच लाना है। उनका भ्रम मिट जायेगा।"

कुंवर साहब की बात से कमलेश चकित हुई। पहली बार उसने मन हारा था। उस हार को जीत में बदलना ही पड़ेगा नहीं तो ...... ।

कुछ दिनों में ही उस्ताद शिवलाल के सांस्कृतिक दल को आसाम और मनीपुर जाने का सन्देश मिला। दीदी आयीं। उन्होंने कमलेश से कहा,—"विदीर्ण की बदली इम्फाल क्षेत्र को हो गयी है। उनका मन मोड़ कर अपनी ओर करना जरूरी है।"

कमलेश को रत्ती भर भी शक नहीं रहा कि दीदी ने सुकवि को इम्फाल क्षेत्र में अपने प्रयत्नों से भिजवाया है। दीदी का शताक्षी रूप कमलेश ने आज दूसरी बार देखा।

त्रिभुवन दास पण्डा राय साहब रूपचंद के साथ दिल्ली से लौटे थे। राय रूपचंद बनारास के उन रईसों में से थे जिनकी जमींन्दारी चेत सिंह का बशज होने पर भी अगरेजो ने छीनी नहीं थी। अपनी जमीन्दारी की सुरक्षा के लिए परिवार के बुजुर्ग रोज काशी क्षेत्र की पंचकोसी परिक्रमा करते आये थे। राय साहब भी उस परिपाटी को निभा रहे थे। उनकी पंचकोसी सवेरे-सवेरे कलक्टर के बंगले से उसके स्वास्थ्य की शुभ कामना से शुरू होती थी। पड़ोस में ही कमिश्नर (आयुक्त) का निवास था। कलक्टर के यहाँ से वह वहाँ पहुंचते थे। उसके बाद अतिरिक्त

जिला मैजिस्ट्रेट, नगर मैजिस्ट्रेट और पुलिस के अधीक्षक के पास जाते थे। यही उनकी पंचकोसी थी। इससे उच्च अधिकारियों से उनका मेल जोल रहता था और उनके अधीनस्थों से उनका काम-काज सिरता था। वही राय साहब आज त्रिभुवन दास पण्डा के साथ मुंशी बाबू की चौकड़ी में आये थे। उन्होंने बड़े विश्वास से भेद की बात बताते हुए चौकड़ी को सूचित किया,—"वाइस राय की परम गोपनीय बैठक में हिन्दू मुसलिम आग भड़काने का फैसला हाल ही में हुआ है।"

"उससे युद्ध के प्रयत्नों पर शायद प्रतिकूल असर पड़े।"—किसी ने विचार व्यक्त किया।

"लड़ाई से भी बड़ा संकट आज़ाद हिन्द फौज का संगठन बन गया है। सुनने में आया है कि मुसलमान आज़ाद हिन्द फौज में सबसे आगे हैं।"—राय साहब रूपचंद ने अपनी सफाचट मूँछों पर ताव दिया।

"सभी हिन्दुस्तानी आज़ाद फौज में शामिल हो गये हैं। कोई सरदार मोहन सिंह उसके कमांडर हैं। वे हिन्दुस्तानी जो स्वेच्छा से फौज में शामिल नहीं होना चाहते उनकी शिविर अलग खोली गयी है। इसका नतीजा यह हुआ है कि दस मे नौ फौजी आज़ाद फौज में भर्ती हो गये हैं।"—मुंशी बाबू ने बताया।

राय रूपचंद मुंशी बाबू के भाव के विरोध में बोले,—"चाहे जो हो, अंगरेज हिन्दुस्तान कभी नहीं छोड़ेगा। वाइसराय ने फैसला किया है कि आज़ादी की लहर को उसी तरह दबाया जाय जैसे सत्तावन में गाँव के गाँव, जिले के जिले विस्मार कर दिये गये थे। जलियान वाला बाग की तरह चारों ओर से घेर कर आम जनता को भून डालने की भी नीति है।"

कालिका राय तमतमा कर बोल उठा,—"अब लड़ाई अंगरेजों के वश से ऊपर की है। अमेरिका की फौजें हिन्दुस्तान आयेंगी। अमेरिका प्रशान्त महासागर के कारण जापान को पनपने नहीं देगा।"

कालिका राय की बात चौंकाने वाली थी। राय साहब रूपचंद ने उसे अन-सुनी कर आगे बताया,—"वाइसराय ने खुफिया आदेश जारी किया है कि सारी हिन्दुस्तानी फौजों को आज़ाद हिन्द फौज की बात बता दी जाय और उनके युद्ध-बन्दी होने की दशा में उसमें शामिल हो जाने को कहा जाय। वह आज़ाद फौज को अन्दर से फोड़ना चाहते हैं।"

"अब धोखा और छलावा बहुत दिन नहीं चलेगा। देश को स्वतंत्र कराना सर्वोपरि धर्म है। अब अंगरेज को भूलिए। आगे की सोचिए।"—मुंशी बाबू ने बड़े गम्भीर स्वर में कहा।

राय साहब रूपचंद अपनी कुटिल मुस्कान के साथ बोले,—"आगे आगे देखिए होता है क्या ?"

ठण्ढाई आ गयी। दूधिया छनी, बीड़े चाभे गये और चौकड़ी 'जय बाबा विश्वनाथ' कह विसर्जित हुई।

सब के चले जाने पर त्रिभुवन दास पण्डा ने मुंशी बाबू के कान में कहा, —"चिन्दवीन के इधर दुर्गम जंगल पहाड़ काट कर रास्ते बनाये जा रहे हैं। मनीपुर रोड और तिनसुखिया स्टेशनों से बर्मा के सीमान्त तक फौजें ही फौजें हैं। अपना लफंगा वह विदीर्ण भी वहीं कहीं बदल गया है।"

"क्या अंगरेज बर्मा छोड़ आये हैं?" – कालिका राय ने पूछा। फौजी ठीकेदार होते हुए भी उसने इस बारे में कुछ सुना नहीं था।

त्रिभुवन दास पण्डा अपनी भौंहों पर बल देते हुए बोले,—"छोड़ा ही समझिए। अब रणक्षेत्र चिन्दवीन पर आ पहुँचा है। उधर अराकान के पार अक्याब में।"

कमलेश उस्ताद शिवलाल के सांस्कृतिक दल के साथ इम्फाल पहुँची। इम्फाल जाने के नाम पर सैनिक भी सशंकित हो जाते थे नागरिकों की तो बात ही क्या? इम्फाल में प्रकट रूप में शान्ति थी। वहाँ फौजियों की बड़ी विश्राम शिविर बनायी गयी थी। उस क्षेत्र से आने जाने वाले फौजियों की वहाँ भारी आबादी थी। इम्फाल की रक्षा की पल्टनें इम्फाल के प्राचीर के बाहर फौजी महत्व के स्थानों पर तैनात थीं।

फौजों का ऐसा जमाव कमलेश ने सारे भारत में कहीं नहीं देखा था। चप्पे चप्पे पर फौज की चौकियाँ थीं। इससे वह निर्विवाद हो जाता था कि अंगरेज मोर्चा लेने की पूरी तैयारी कर रहा था।

बर्मा से अंगरेज भाग आये थे। इसकी जानकारी हो गयी थी। यह नहीं मालूम था कि अंगरेज बर्मा की सरहद छोड़ कर इस पार हिन्दुस्तान के सीमान्त के अन्तर्गत आ डटे हैं। अंगरेजों का प्रचार और युद्ध का समाचार का नियंत्रण इतना सुनियोजित था कि सही जानकारी सर्वसाधारण पर प्रकट नहीं हो पाती थी। सैनिकों में भी किस स्तर तक कितनी जानकारी थी, यह कहा नहीं जा सकता था। अंगरेजों ने सरहद में लगे उस क्षेत्र में हिन्दुस्तानी सैनिकों का मनोबल बनाये रखने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसका विशेष महत्व था।

उस्ताद शिवलाल के दल का पहला प्रदर्शन इम्फाल में हुआ। इम्फाल मनीपुरी संस्कृति और ललित कलाओं का केन्द्र रहा था। वहाँ चालू कार्यक्रम चल जाता, उसकी तारीफ नहीं होती। कमलेश ने कार्यक्रम में राधाकृष्ण नृत्य का अभिनय रखा। उस कार्यक्रम की जानकार नागरिक अधिकारियों ने भी बड़ी तारीफ की। जवान समझे या नहीं उस कार्यक्रम पर झूम उठे। महाराना प्रताप पर एक नृत्य नाटिका का एकाकी भी तैयारी के साथ खेला गया। वह और अधिक पसन्द किया गया। गीतों और गजलों का कार्यक्रम हुआ। गीत देशभक्ति की भावना से भरे थे। "बुला रही हैं दूर से हिमालया की चोटियाँ : बढ़े चलो बढ़े चलो बिरादराने नौजवां।" पर जवान नाच उठे। गजलों का चयन भी मार्मिक था। और अन्त में 'सारे जहाँ से अच्छा' वाला इकबाल का तराना था।

जवान, अधिकारी, नागरिक अफसर कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा किये। अंगरेज फौजी अधिकारियों ने भी कार्यक्रम को पसन्द किया। यही वे भी कहते नहीं थकते थे कि जापानी हूणों से अपने देश की रक्षा करो।

एक अमेरिकन सम्पर्क अधिकारी भी आया था। उसका परिचय कमलेश से कराया गया। वह कमलेश के इर्द गिर्द ही मंडराता रहा। कार्यक्रम की सफलता से जवानों में जोश देख कर उसने कमलेश का हाथ अपने हाथ में लेकर दवाया। कमलेश रस्सी को ढीला कर पुरुष को कुएँ में ढकेलने वाली नारी थी। उस अमेरिकन अधिकारी को उस दिन उसने इसलिए नहीं डुबोया कि उसे कविवर विदीर्ण की याद हो आयी। चलते समय सुकवि से वह मिल भी नहीं पायी थी। आज वह विदीर्ण को ढूंढ़ रही थी।

रात को सोते समय भी उसकी आँखों में सुकवि का चेहरा छाया रहा। सवेरे नाश्ते पर शिवलाल ने बताया,—"कवि जी आ पहुँचे हैं।"

"कौन ?"—अचकचा कर कमलेश ने पूछा।

"अपने विदीर्ण जी। उनकी बदली यहीं हो गयी है।"

कमलेश ने प्रसन्नता प्रकट की। कवि जी उससे शाम ढलने के बाद ही मिलने आये।

सुकवि आकर भी खिचे खिचे थे। कमलेश उनसे दौड़ कर लिपट जाना चाहती थी। उसने ऐसा किया नहीं, अपना ब्रह्मास्त्र साधा। वह तनी रही यद्यपि आदर सत्कार और हार्दिकता में उसने कमी नहीं आने दी।

दो ऋण मिल कर एक धन हो जाते हैं। कवि जी ने ही कहा,—"मैं आप का आभारी रहा हूँ यद्यपि हमारे रास्ते अलग-अलग हो चुके हैं।"

"रास्ते एक हो कर जब अलग होते हैं तब एक दूसरे की छाया लिए रहते हैं। अलग होने का कोई कारण भी होना चाहिए।"

सजी-सधी-तनी बोली, कवि जी भौंचक रह गये। बात उनके मस्तिष्क को छू कर निकल जाने वाली थी।

कमलेश ब्रह्मास्त्र साधे हुए होते हुए भी कवि जी के हाथ को अपने हाथ में ले उन्हें अपने कमरे में ले गयी। वहाँ कवि जी को आदर से बैठा कर उसने कहा,—"जो रास्ते एक बने वे एक रहेंगे।"

सुकवि अचानक पूछ बैठे,—"आप सच बता सकेंगी ?"

"सोलह आना सच। कोई भी बात क्यों न हो ?"

"क्या कालिका राय से आप विवाह करने वाली थीं ?"

कमलेश की चौंकने की पारी अब आई। उसका तनाव जाता रहा। उसने वितृष्णा के स्वर में सुकवि से जवाब में पूछा,—"क्या उस शोहदे ने आपसे ऐसा बताया ? वह टुकड़खोर इसी बात का पेशा करता है। मुझे तो आप बहुत पहले से जानते हैं ?"

मुकवि निहायत घोंचू नहीं थे। उन्हें अपने पर हैरानी हो रही थी कि कैसे कालिका राय की लगी पगी बात को वह सच मान बैठे।

कमलेश ने तब उन्हें कालिका राय की राई रत्ती बात बताया कि कैसे उसने दिल्ली की यात्रा मे, रेल के कूपे मे, उसका शील भंग करने की कुचेष्टा की और कैसे उसने अपनी रक्षा कर उसे डब्बे से बाहर चले जाने को मजबूर किया।

अक्षर अक्षर पर कवि जी को विश्वास हो आया। उन्होंने कमलेश से अपने बनारस के व्यवहार को माफ कर देने के लिए उसका पाँव पकड लिया। कमलेश ने कवि जी को बाँहो में भर लिया। अधर अधर पर जकड गये। तन के मिलने वाले मन गये। कमलेश ने स्नेह से आर्द्र स्वर मे कहा,—"हमको आपको अब स्वदेश के काम में जुट जाना चाहिए।"

"वह कैसे ?"—कवि जी आश्चर्य से भर आये।

"आप देशभक्ति के गाने लिखें। हम उसे गायेंगे। जवानो पर हिन्दुस्तान की गौरव गरिमा प्रकट होनी चाहिए। हमे भी स्वतंत्र होना है। तब से वीर सैनिक स्वदेश की आन पर कट मरेंगे।"

"जोखिम का काम है।"

"क्रान्ति का हर काम जोखिम भरा होता है। हम बहुत कुछ नही कर सकते। जितना कर सकते है उतना जरूर करे।"

कवि जी के देशप्रेम ने जोर पकडा। नीच से नीच गद्दार मे भी उसके स्वार्थ की परिधि के बाहर देशप्रेम की भावना होती है।

कवि जी ने उसी रात एक नया प्रचार-गीत लिखा

'टोजो, हिटलर, मसोलिनी या कोई तानाशाह'

हिन्दी वीरों से टकरा कर चूर चूर हो जायेगा।

कमलेश ने गाने का रियाज कराया। कागलाग स्थान पर जो पलटन से बहुत आगे तामू के पास था यह गाना उनके दल ने जवानो के सामने गाया। जवान इतने खुश हुए कि अपने पाँवो को वे आसमान पर तानने लगे। कविवर ने भी कार्यक्रम देखा। अब तक का उनका कोई भी गाना इतना सराहा नहीं गया था।

कागलाग में कैप्टन रमण ने कवि जी से दो बर्मा के भगोडो का परिचय कराया। नंदराम और बरियार खाँ अपने को बर्मा सुरक्षा दल का सदस्य बताते थे। इनकी पलटन को सिंगापुर के जापानियो द्वारा कत्ल के समय बर्मा-मलाया सरहद पर जापानियो ने गिरफ्तार कर युद्ध बन्दी बना लिया था। ये किसी तरह भाग कर रंगून पहुँचे। उसी दिन जापानियो ने रंगून पर अधिकार कर लिया। वहाँ, इनके अनुसार, जापानियो ने नृशंस अत्याचार किया। ये वहाँ से भी निकल भागे। मरते खपते ये जंगलों पहाड़ो मे छिपते छिपते यहाँ आने मे सफल हो गये।

कैप्टन रमण के सहयोगी सूबेदार यादराम गूजर के अनुसार इनके बयान पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था। फिर भी इन्हें पूछताछ के लिए कोहिमा

में कमांड के पास भेजा जा रहा है। इनका आचरण और व्यवहार प्रशंसनीय पाया गया है। यही नहीं तामू में इन्होंने अंगरेजों की एक दुर्घटना में मदद भी की। बात यह हुई कि जिस दिन ये चिन्दवीन पार कर तामू पहुँचे उसी दिन वहाँ की गोरखा पल्टन ने प्राय: विद्रोह कर दिया। विद्रोह का नेता सूबेदार भीमदेव थापा था। थापा ने गोरखा जवानों की ओर से केवल यह माँग की थी कि उन्हें महीने भर से हरी शाक-भाजी नहीं मिली है जब कि गोरी पल्टनों को हर तीसरे दिन हरी शाक-भाजी दी जा रही है। अंगरेज अफसर इस घटना से परम चकित हुए। ऐसा कभी नहीं हुआ था जब गोरखा जवानों ने अंगरेजों की बराबरी का दावा किया हो। नंदराम और बरियार खाँ ने अंगरेज अफसरों से पास की गोरी पल्टनों से थोड़ा बहुत हरी तरकारी लाकर गोरखों को देने के लिए तैयार कर लिया। तब मामला शान्त हुआ।

विवरण सुन कर सूबेदार यादराम गूजर ने कहा था,—"अंगरेजों का भेद-भाव उन्हें खा डालेगा।"

कैप्टन रमण कहना चाहते थे,—"अंगरेजों के दिन अब लद गये।" जानबूझ कर वे शब्दों को बोले नहीं।

नंदराम और बरियार खाँ को ठीक हिरासत में नहीं क्वार्टर गार्ड के पहरे में एक सुरक्षित कोठरी में आराम से रखा गया था।

क्वार्टर गार्ड की देख रेख की परिधि में ही कमलेश और उसके दल के सदस्यों के ठहरने का बाँस के बासों (झोपड़ी) में इन्तज़ाम था। कमलेश अपनी झोपड़ी में सुकवि विदीर्ण से कह रही थीं,—"यहाँ के हर हिन्दुस्तानी अफसर और जवान के दिलों में अंगरेजों से घृणा और स्वदेश की आज़ादी की ललक भरी हुई है।"

"तब भी किया क्या जा सकता है?'—कवि जी कमलेश के नये विचारों को ठीक-ठीक अब तक समझ नहीं पा रहे थे।

"मलाया में आजाद हिन्द फौज़ बन गयी है। जापानियों ने मदद करने का वादा किया है। आजाद हिन्द फौज उनकी मदद से हिन्दुस्तान को स्वतंत्र करायेगी।"

कवि जी ने उड़ते फुड़ते यह तर्क कहीं और भी सुना था। उनके दिमाग में यह बात नहीं धंस रही थी कि जापानी यहाँ आकर हिन्दुस्तान को स्वतंत्र क्यों करायेंगे? अगर वे अंगरेजों की जगह ले लें तब?

कमलेश उनका असमंजस समझ कर बोली,—"जापान से केवल मदद माँगी जा रही है। हिन्दुस्तानी फौज ही भारत भूमि को स्वतंत्र करायेगी। इसकी विधिवत लिखा पढ़ी भी करायी जा रही है।"

"कौन लिखा पढ़ी करा रहा है?"— कवि जी ने साग्रह पूछा।

"सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस। वे सुना अस्थायी आजाद हिन्द सरकार बनाने वाले हैं।"

सुकवि ने मुस्करा कर अंगरेजों की सिखायी घिसी-पिटी बात दोहरायी,—"रासबिहारी बोस भाग कर जापान गये। वहाँ एक जापानी महिला से विवाह कर वहीं के हो रहे। वे जापानी नागरिक हैं।"

"इतना बड़ा क्रान्तिकारी गद्दार हो ही नहीं सकता।"

कमलेश का निश्चयात्मक निर्णय सुन कर सुकवि ने पूछा,—"हम मगर कर क्या सकते हैं?"

'हम क्या नहीं कर सकते? हम जवानों में स्वदेश का शंख फूकेंगे। आज़ाद हिन्द फौज जब यहाँ पहुँचेगी तो यही जवान उसमें मिल कर अपनी संगीनों का निशाना फिरंगियों को बनायेंगे—अपने देशवासियों के साथ किए गये अपमान अत्याचार का गिन-गिन कर बदला चुकायेंगे"—कमलेश जोश में थी।

सुकवि घबड़ा कर बोले,—"ऐसी बात न करें। दीवालों के भी कान होते हैं।"

सुकवि वहाँ एक क्षण भी अधिक नहीं रुक सके। अपने बासे को जाते हुए उन्हें भूषण के कवित्तों की याद आई। वीर रस के उन्हीं कवित्तों को पढ़ कर वे कवि बने थे। कमलेश की जोश भरी उक्तियों ने उनके रग रग में अभिनव हलचल मचा दी। उस रात वे वीर रस से भरा कोई कवित्त गुनगुनाते रहे।

कवि जी के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद उस्ताद शिवलाल एक फौजी जवान के संग बासा में घुसे। जवान ने एक बन्द लिफाफा दिया और कहा,—"दीदी अभी नहीं आ सकी है। क्वार्टर गार्ड में पार के अपने आदमी हैं।"

जवान उस्ताद शिवलाल के साथ चला गया। कमलेश ने बन्द लिफाफा खोला। लिफाफे के अन्दर एक बन्द लिफाफा और कुछ दूसरे दस्तावेज़ थे। संकेत में यह लिखा था कि दस्तावेजों को सुरक्षित पार भेजा जाय।

कमलेश ने खतरा मोल लिया। वह अंधेरे में छिपती उस बासे में गयी जहाँ नदराम और उसका साथी कड़ी सतर्कता में रखे गये थे। नदराम जग रहा था। उसे उन्होंने वे दस्तावेज दिए। नदराम की खुशी का ठिकाना नहीं रहा।

कमलेश अपने बासे में लौट आई। किसी को उसके जाने आने की भनक ही मिली न।

सबेरे पूरे कालगाम में तहलका मच गया। नदराम और उसका साथी क्वार्टर गार्ड के सुरक्षित बासा में लापता थे। दूर-दूर तक जंगलों में, पहाड़ी की ऊँची चोटियों पर, यातायात की चौकियों पर, उनकी खोज करायी गयी। उनका सुराग नहीं मिला।

उस दिन पड़ोस के दूसरे फौजी केन्द्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम था। उसे स्थगित करना पड़ा क्योंकि एक दूसरी खतरनाक घटना घट गयी। सांस्कृतिक दल की निगार वानो हाव भाव में पूरी कस्बिन थी। गजल की उनकी लय और लोच मनमोहक थी। कालगाम स्थित किसी इंजीनीयरिंग पल्टन का कमांडर मेजर टेगर्ट

निगार बानो की लय, लोच और भाव-भंगिमा पर रीझ उठा। उसका पिता कलकत्ता में पुलिस का ऊँचा अधिकारी रह चुका था। हिन्दुस्तानियों को वह बचपन से ही कीड़ा मकोड़ा समझता था। उसने निगार बानो को फुसला कर अपने बासा मे बुलवाया। निगार बानो की इतनी असावधानी जरूर हुई कि वह बिना किसी को बताये उसके बासे के पास जा खड़ी हुई। वे अन्दर नहीं जाना चाहती थीं। टेगर्ट ने उन्हें भीतर खींच लिया और उनके साथ बलात्कार की कुचेष्टा करने लगा। निगार बानो खालिस कस्विन थी। उसने टेगर्ट को दाँतों से बड़ी जोर से काट लिया। शोर मच गया। आस-पास के जवान आ गये। एक हिन्दुस्तानी महिला की चाहे वह कोई क्यों न हो बेइज्जती देख कर जवान टेगर्ट पर झपटे और उसे लात-घूसों से अधमरा कर के छोड़े। टेगर्ट को अस्पताल ले जाना पड़ा। अंगरेज अधिकारियों ने यह मशहूर किया कि कोई विषैली शराब पीकर टेगर्ट अपना संतुलन खो बैठा और कटीली झाड़ी पर गिर गया। जो जानते थे वे चुप रहे। कई अफवाहें फैलीं। अनहोनी होने से बच गयी।

कमलेश क्रोध से काँप आयी। उसने अपना संतुलन नहीं खोया। वह टेगर्ट को देखने अस्पताल गयी। टेगर्ट ने शर्म से अपनी आँखें नहीं खोलीं।

उस क्षेत्र के सर्वोच्च सैनिक अधिकारी ने घटना पर उच्चतम कमांड को रिपोर्ट भेजी। उसमें उसने यह लिखा कि सांस्कृतिक दलों में एंग्लो इंडियन और ईसाई लड़कियाँ भी रखी जाँय जो अंगरेज अधिकारियों और सैनिकों का मनोरंजन कर सकें। हिन्दू और मुसलमान लड़कियाँ धर्म के नाम पर अंगरेजों को घास भी नहीं डालतीं।

बाद में यह सुना गया कि उसी रिपोर्ट पर कमलेश और उस्ताद शिवलाल के दल को आगे के क्षेत्र से बहुत पीछे भेज दिया गया। सुकवि विदीर्ण भी बदले गये। उनके स्थान पर नये सम्पर्क अधिकारी आये जयचंद सहाय जो बंगाल में क्रान्तिकारी आन्दोलन में अंगरेजों के लिए महत्वपूर्ण काम किये थे। उनके गाँव के बच्चे उन्हें टोडी बच्चा कह कर चिढ़ाया करते थे, बड़े बूढ़े उन्हें खुफिया पुलिस बताया करते थे। सीमान्त पर सैनिकों की सही गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए उनकी जरूरत पड़ गयी थी।

सुकवि विदीर्ण की बदली राची क्षेत्र मे हुई। वे मनीपुर आसाम मे मरने खपने पाण्डुघाट आये। तब ब्रह्मपुत्र पर पुल नही था। पाण्डुघाट मे घुवड़ी और आगे ग्वालन्दो घाट तक यात्रियो को स्टीमर ले आया जाया करता था। फौजी स्टीमर अलग थे। कवि जी को दो तीन दिन की प्रतीक्षा के बाद ही उसमे जगह मिल गयी। पूरे दो दिन की यात्रा पर वे ग्वालन्दो उतरे। वहाँ से रेल पकडे और अपनी सासो को सुरक्षित रखे वे कलकत्ता के सियाल्दह स्टेशन पर उतरे। यहाँ भारी गोलमाल था। गडबडी पार्वतीपुर स्टेशन मे ही शुरू हो गयी थी। जन जीवन जैसे बिल्कुल छिन्न-भिन्न हो गया हो। क्यो यह सुकवि को कोई बता नही सका। कवि जी स्वय अपनी हृदयेश्वरी कमलेश के वियोग मे लू की जलन बन कर रह गये थे। उन्होने कारण जानने की खोजबीन भी नही की।

सियाल्दह स्टेशन पर जब उन्हे कुली भी न ही मिला न ही कोई सवारी गाडी मिली तब उनका माथा ठनका। उन्हे तुलापट्टी मे अपने काव्य-गुरु श्री प्रकाश जी के यहाँ जाना था।

चारो ओर से निराश होकर वे स्टेशन पर फौजियो की रेल यात्रा की सुविधा इत्यादि के लिए तैनात फौजी अधिकारी से मिले। फिरंगी सार्जेन्ट ने विदीर्ण की ओर घृणा की दृष्टि डाली। उनके गिडगिडाने पर उसने चार बजे शाम को आकर मिलने के लिए कहा। अभी सवेरे के नौ बज रहे थे। विदीर्ण का हृदय सचमुच फट गया।

मरता क्या न करता ! पावों की इच्छा के खिलाफ कवि जी दूर-दूर तक रिक्शा, घोडा गाडी या टैक्सी ढूंढ आये। कुछ नही मिला। उनकी दैन्य दशा का अनुमान कर एक बगाली सज्जन ने उन पर दया की। उन्होने कहा,—"परसो से कलकत्ता मे पूरी हडताल है। कब यह खत्म होगी, कोई नही जानता।"

"कारण क्या है ?"—कवि जी ने मर्माहत होकर पूछा।

"आपने अखबार नही पढा। परसों महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी नेता गिरफ्तार कर बम्बई से किसी अज्ञातस्थान मे कैद कर दिए गये है।"

कवि जी दौड कर हिन्दी का विश्वमित्र ले आये। उसमे 'भारत छोडो' प्रस्ताव का उल्लेख था और गाँधी जी तथा दूसरे नेताओ की गिरफ्तारी की सूक्ष्म चर्चा थी। समाचार सरकार द्वारा संशोधित—कटा छटा—था।

बंगाली सज्जन से कवि जी ने जाने क्यो पूछा,—"अब क्या होगा ?"

"अंगरेज हिन्दुस्तान नहीं छोड़ेगा। वह हर हिन्दुस्तानी की बोटी-बोटी चबा डालेगा।"

उन्होंने आगे कहा,—"महात्मा ने भी उन्हें मजा चखा दिया। मित्र राष्ट्र तानाशाहों की पराधीनता से यूरोपीय देशों को स्वतंत्र करने के लिए लड़ने का दम्भ भरते हैं। इंगलैण्ड हिन्दुस्तान को लड़ाई के बाद भी स्वतंत्र घोषित करने के लिए तैयार नहीं है। आखिर हिन्दुस्तानी किसलिए युद्ध के मोर्चों पर बलि के बकरा बने हैं। अंगरेजों की गुलामी के बंधन को और मजबूत करने के लिए क्या? गांधी जी के 'भारत छोड़ो' का दुनिया पर और हिन्दुस्तानी फौजों पर क्या असर पड़ेगा?"

बंगाली सज्जन अपने जोश में जाने और क्या क्या कह रहे थे, यह कवि जी ने सुना ही नहीं। 'भारत छोड़ो' की खबर पढ़ कर ही उनकी बुद्धि चरने चली गयी थी और उनकी जबान को लकवा मार गया था।

कवि जी पस्त हो स्टेशन की एक बेंच पर बैठ गये। बड़ी देर के बाद जब उनके दिमाग की नसें संतुलित हुईं तब उन्हें पता चला कि रेलों की यातायात पर 'भारत छोड़ो' आन्दोन का भारी प्रभाव पड़ा है। मिदनापुर, बाँकुरा, वर्द्धवान में रेल की पटरियाँ क्रान्तिकारियों ने उखाड़ दी हैं। स्टेशन फूंके जा रहे हैं, थाने और कचहरियाँ लूटी जा रही हैं। संयुक्त प्रदेश और बिहार में जिला का जिला अंगरेजी राज के विरुद्ध खड़ा हो रहा है। रेल, तार, यातायात को ठप्प कर फौजों के और उसके सामान के आने-जाने में लोग भारी रुकावट पैदा कर रहे हैं।

सुकवि की हालत परम विपन्न थी। उनकी इतनी भी शक्ति नहीं रह गयी थी कि वह अपना सामान अपने पीठ पर लाद कर ही कहीं ले जा सकें।

कवि जी बेंच पर बैठे-बैठे ऊँघ गये। जब झंपकी खुली तब दिन के बारह बज रहे थे। कवि जी ने सामने के नल में मुँह हाथ धो बिस्कुट का एक छोटा पैकट खोला। एक बिस्कुट मुँह में डाला ही था कि जाने कहाँ से चार पाँच पूर्णनग्न बच्चे उनके चारों ओर आकर खड़े हो गये और निरीह आँखों से बिस्कुट के पैकट को देखने लगे। उन बच्चों ने न कुछ कहा न ही बिस्कुट लेने के लिए हाथ फैलाया। कवि जी की आँखें उनके सूखे शरीर की ठठरी देख कर ही झुक गयीं और उनका बिस्कुट खाना बन्द हो गया। कवि जी ने बिस्कुट का पैकेट फेंक दिया। बच्चे चील की तरह उस पर झपटे।

कवि जी ने भूख मिटाने का विचार छोड़ दिया। वे कैसे यहाँ से भाग कर तुलापट्टी पहुँचे, इस खयाल से उलझे। उनके सवेरे वाले बंगाली सज्जन ने ही उनकी मदद की। उन्होंने कहा,—"दो मछली का डब्बा देने पर मैं एक मोटिए का बन्दो-बस्त कर सकता हूँ।"—"बंगाली सज्जन कवि जी के झोले से झाँकते टिनों को लालच से देख रहे थे।

कवि जी को उन टिनों का मूल्य जिन्हें वह बेकार का भार समझते थे, अब

मालूम पडा। उन्होने मछली का दो टिन दिया। सज्जन भाग कर चले गये। वे बात के धनी निकले। जब लौटे तब उनके साथ एक भोजपुरिया मोट ढोने वाला झांपा लिए आया।

झांपा मे ट्रंक बिस्तर और फौजी किट रख, उसे मोटिए के सिर पर उठा कवि जी पैदल ही तुलापट्टी के लिए चल पड़े।

तुलापट्टी के किसी मारवाडी की कोठी के निचले तल्ले की एक अधेरी कोठरी मे कविवरेण्य प्रकाश जी रहते थे। उस मकान तक पहुँचने मे ही सुकवि के छक्के छूट गये। वे थक कर पसीने से लथपथ थे। वहाँ कविवरेण्य प्रकाश की कोठरी मे ताला लटका देख कर वे अलस्त हो गिर पड़े।

बगल की कोठरी से एक बुढिया मजदूरिन ने आकर उनके मुँह पर पानी के छींटे मारा। कवि जी आराम पाकर स्वस्थ हुए। बुढिया ने सुकवि को अब बताया कि प्रकाश गुरु अपनी जन्मभूमि प्रतापगढ भाग गये। दूसरी सांस मे उसने सुकवि को ध्यान से देखते हुए पूछा,—"क्या तुम भी प्रकाश गुरु की तरह निठल्लू लोग हो ?"

सुकवि चौंक उठे। बुढिया ने ही तब तक कहा,—"कहाँ जाओगे। गोरे कत्लेआम कर रहे है। रेल, मोटर, घोडा गाडी, रिक्शा सब बन्द हैं। स्टेशन फूंके जा रहे हैं। तार तोडे जा रहे है। सब भाग रहे हैं। जो भाग नही सकते वे तहखानो में छिप रहे हैं। तुम पछाह के हो। दो चार दिन यही छिपे रहो। यह मकान किस तहखाना से कम है।"

मोटिया भुगतान के लिए शोर मचा रहा था। सुकवि ने उसे पांच रूपये चुकाये। वह आठ से कम लेने को तैयार नही था। किसी तरह [illegible] राजी हुआ।

सामने नल था। कवि जी कई दिन से नहाये नहीं थे। [illegible] धो वे तैयार हुए। बुढ़िया ने उन्हे चना चावल और गुड दिया। [illegible] ने उसे चाव से खाया।

बुढिया ने आवाज लगायी, —"लवंगी, घडे मे पानी ले आ"

लवंगी पानी लेकर आयी। तेरह चौदह की उम्र [illegible] आम की फांक सी आंखें, भोला मुखडा कवि जी उसको [illegible] रहे। उन्हें अपने भाव पर क्षोभ आया। बुढिया [illegible] —[illegible] तो तुम्हारे झोले से एक टिन काट कर मछली [illegible]।'

"तुम दो-तीन टिन रख लो। शाम को [illegible]

बुढिया ने टिन निकाले। उन्हें [illegible] गुरु ने हमारे साथ जैसा छल किया [illegible] थी—गोरी चिट्टी, खूब सुन्दर। उसको [illegible]

में फंसा, एक कलमुँहे को दो सौ रुपल्ली में बेंच कर भाग गये। गोरों का तो बहाना है। वे अपनी आत्मा से डरे।

"लवंगी की बहन क्यों चली गयी?"

"प्रकाश गुरु ने विवाह का ढोंग रचाया। मैं नासमझ उनकी बात में आ गयी। अब सुना कमरहट्टी में वह माटीलेवा मेरी बेटी का कमाया खाता है।"

सुकवि अपने काव्य गुरु की इस हरकत पर दुःख के भर आये। बुढ़िया कहती गयी,—"हमारे कुल में ऐसा कभी नहीं हुआ। हम गया जी के कहार हैं। हम खट कर खाते हैं। जाँगर से हमारा जहान है।"

बुढ़िया धाड़ें मार कर रोने लगी। सुकवि ने उसे ढाढ़स बंधाते हुए कहा,—"मैं जल्दी ही तुम लोगों को बनारस ले चलने का प्रबन्ध करूँगा। काशी अविनाशी है, भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी है। वहाँ सबको गति मिलती है।"

बुढ़िया सहमी। उसने कवि जी को ध्यान से देखा। बोली,—"हमारी गति गया जो में है। वहाँ निर्वाण मिलता है। बनारस जाने के लिए इस कोठी के सेठ भी कह रहे थे। मैं उनका चौका बासन करती थी।"

विदीर्ण का नाश्ता या खाना समाप्त हो गया। बुढ़िया ने अब उनसे पूछा,—"भइया, करते क्या हो?"

विदीर्ण साँसत में पड़े। वह बुढ़िया को यह नहीं बताना चाहते थे कि उनका फौज से सम्पर्क है। बुढ़िया ने उन्हें यह कह कर उबारा,—"टिन के इतने डब्बे तो फौजी लोगों के पास होते हैं।"

"मैं फौजी लोगों को उपदेश देता हूँ, पढ़ाता लिखाता हूँ।"

"फिरंगियों की फौज है, भइया। पिछली लड़ाई में वह भी गया था, उसे पेंशन भी नहीं मिली। कोई अच्छा काम भी नहीं मिला। इसी दुःख में वह वहाँ चला गया। हम रह गये तन पेट साथ चलाने को। भगवान फिरंगियों को माफ नहीं करेगा। सुना नेता जी उनको मार भगाने के लिए ताल ठोंक कर खड़े हो गये हैं।"

बुढ़िया की अपने दिवंगत पति की याद से आँखें गीली थीं। सुकवि विदीर्ण पहली बार अपनी नौकरी पर शर्म से गड़ने लगे।

कवि जी उठ खड़े हो बोले,—"मैं सामान छोड़े जाता हूं। रात को देर से लौटूंगा।" वे चलते बने। बुढ़िया उन्हें टुकुर-टुकुर ताकती रह गयी।

विदीर्ण पैदल चलकर चौरंगी में फौज के यातायात नियंत्रक अधिकारी के दफ्तर में पहुंचे। वहाँ पता चला कि इधर बर्दवान और उधर खड़गपुर बाँकुरा में रेल की पटरी उखाड़ दी गयी हैं। अतः रेलों का आना जाना बन्द है। राँची फौजी गाड़ियों से ही पहुँचा जा सकता है। उसका इन्तजाम बारकपुर के कार्यालय से होगा।

बारकपुर कलकत्ता से बीस मील की दूरी पर था। समस्या यह बनी कि कवि जी वहाँ कैसे पहुंचे। कवि जी को चाय पीने की तबियत हुई। दूर-दूर तक उन्हें

चाय की कोई दुकान खुली नही दिखायी पड़ी। वड़े होटल खुले थे। वे सबके लिए नही थे। पूंजीपति या फौजी अफसर उनमे जा सकते थे। कवि जी हिम्मत हार कर मैदान मे एक पेड़ के नीचे बैठ गये। थोडी देर के बाद लेट गये। आँखें बहने लगी। बहते-बहते आँखें लग गयी।

सुकवि घण्टे डेढ घण्टे पस्त पड़े रहे। जब उठे तो गर्दन मोडते ही थोडी दूर पर एक चाँपाकल दिखायी पड़ा। वहाँ जाकर उन्होने मुँह हाथ धोया, पानी पिया और अपनी विपन्न दशा पर कुढते हुए पैदल ही लाल बाजार की ओर चल पड़े।

लाल बाजार का मोड उन्होंने पार ही किया था कि एक फौजी गाडी उनकी बगल मे आकर रुकी।

"क्यो रे विदीर्ण, कहाँ आवारों की तरह डोल रहा है ?"—कालिका राय ने बैठे ही बैठे कहा और गाडी का फाटक खोल दिया।

कवि जी गाडी मे चढ आये। गाडी आगे चल पडी। कुछ दूर चल कर कालिका राय ने कहा,—"अभी बारकपुर से लौट आयेंगे। वहाँ एक ड्राफ्ट भुनाना है। रुपयों की जरूरत आ पडी है।"

कुछ देर के बाद कालिका राय ने आगे कहा,—"वह भी तो आसाम की ओर गयी है। भेंट हुई या नही ?"

कालिका राय के बेहूदा ढंग से दाँत निपोरने पर कवि जी के मन मे आया कि वह कालिका राय को दो चार ताबड़तोड़ जमा दे। उसके शरीर के बल का अन्दाजा कर उनके हाथ हिले नही। केवल कहने भर के लिए उन्होने कालिका राय से कहा, —"मुझे मछुआ बाजार के मोड पर छोड दे।"

"वहाँ क्या कर रहा है ?"—कालिका राय ने हैरानी से पूछा।

"राँची जा रहा हूँ। वहाँ से छुट्टी लेकर बनारस जाऊँगा।"

"राँची पहुँचने मे महीनो लग जायेंगे। 'भारत छोडो' आन्दोलन मे संताली कूद पड़े हैं। रेल का यातायात ठप्प है। क्रान्तिकारियों ने अगरेज को आटे दाल का भाव बता दिया है।"

थोडी देर बाद उसने कहा,—"मैं जल्दी ही तुम्हे राँची भेजूँगा। आज 'गोल्डेन ट्री' की बहार लूटेंगे।"

"गोल्डेन ट्री क्या ?"

"निरा कवि रहा। कभी सोनागाछी का नाम नही सुना ? मुगलो के मीना बाजार से बढ चढ कर है।"

कविवर ने नाम सुना था। वे अब प्रेम मे पड चुके थे। ऐसी वैसी जगहों का उन्हें नाम भी नही लेना चाहिए, यह सोच कर वह कालिका राय के प्रति घृणा से भर आये। गाडी तब तक शामबाजार पार कर खुले चौड़े रास्ते मे बैरकपुर की ओर दौड रही थी।

कालिका राय ने अपने बैग मे एक चेक निकाला। उसे विदीर्ण को दि-

हुए कहा,—"पूरे लाख का है। इसको पाने के लिए इसका एक चौथायी फिरंगी इंजीनीयर को पहले ही दे देना पड़ा।"

'वह क्यों ?"

"तुम साले हिजड़े के हिजड़े रहे। लोहे की सप्लाई का ठेका था। लोहा नदारद है। कागजों में आपूर्ति की भरपायी दिखा दी गयी। उसके लिए एक बटे आठ दफ्तर और ओयरसियर को भी खिलाना पड़ा। बाकी साठ पूरा अपना। इसे कहते हैं व्यापार। वाणिज्ये वसति लक्ष्मी। तेरी तरह दो सौ रुपल्ली पर जान नहीं देना है।"

सुकवि की आंखें कोटरों से बाहर निकल आईं। न माल, न सौदा, न सप्लाई इंजीनियर और ठीकेदार ठन-ठन रुपया गिने जा रहे है। इसे कहते हैं चाँदी काटना। क्लाइव, हेस्टिंग्स आदि ने ऐसे ही अगाध धन कमाया था। अब भी अदना से अदना अंगरेज वहाँ से महुए की तरह अशर्फियाँ बीन कर ले जाता है और अपने देश में पूंजीपति बन ऊँचा व्यापार करता है, ज़मीन्दारियाँ खरीदता है।

गाड़ी बैरकपुर के सरकारी बैंक में पहुँची। कालिका राय बैग संभाल अन्दर चला गया। ट्रक का वर्दीधारी चालक विदीर्ण से अब बोला,—"एक प्याला गरम चाय चलेगी ?"

वह चाय की दुकान पर चला गया। वहाँ से प्याले में चाय और बंगाली निमकी लाया, विदीर्ण को दिया। कवि जी भूख से तड़प रहे थे। उन्होंने निमकी खाया, चाय पिया और ड्राइवर को धन्यवाद दिया।

कालिका राय लौटा तब बहुत खुश था। गाड़ी तेजी से कलकत्ता की ओर भाग पड़ी। दक्षिणेश्वर से पहले एक छोटे से मकान के सामने एक युवती ने गाड़ी को रोकने के लिए हाथ का इशारा किया। ड्राइवर धीरे पड़ा। कालिका राय उससे चिल्ला कर बोला,—"जवान, तेजी से चलते चलो। ज़माना खराब है।"

ड्राइवर ने तब तक ब्रेक लगा कर गाड़ी रोक दिया। युवती ने आँखें नचाकर कालिका राय से निहोरा किया,—"मुझे सोनागाँछी के पास छोड़ देने की कृपा करेंगे ?"

शराबी के सूखे गले को दारू के अलावे क्या चाहिए ? कालिका राय ने युवती को अपने पास बैठा लिया। गाड़ी चली तब उसने उससे पूछा,—"छम्मो का क्या नाम है ?"

"चमेली ?"

"गोल्डेन ट्री की चमेली। वहाँ बाड़ी है या भाड़े का कमरा ?"

"भाड़े का कमरा है। खूब अच्छा, आज चलिए—वहीं आराम कीजियेगा।"

कालिका राय को मुँहमांगी मुराद मिली। उसने विदीर्ण से कहा,—"अरे कवि, कोई मस्ताना रसिया सुना।"

बिदीर्ण की हैरानी से बोलती बन्द थी। गाड़ी बड़ी तेज रफ्तार से भागी जा रही थी। शाम बाजार अभी दिखायी नहीं पड़ रहा था। इलाका सुनसान था। कालिका राय चमेली को छेड़ने की चेष्टा कर रहा था कि ड्राइवर ने गाड़ी बायें करके रोक ली।

"क्या बात है ?"—कालिका राय ने पूछा।

"शायद पेट्रोल जाम हो गया है।"—कह कर ड्राइवर बोनेट खोल कर गाड़ी की मशीनरी देखने लगा। कालिका राय ने चमेली से सट कर उतरना चाहा। चमेली उसका बैग हाथ में ले पहले उतरी और एक झुरमुट की ओर भागी। कालिका राय ने पलक मारते उसका पीछा किया। ड्राइवर की उसे लंगड़ी लगी। वह औंधे मुंह गिर पड़ा। ड्राइवर बोनेट बन्द कर, कविवर बिदीर्ण को बाहर ढकेल, गाड़ी लेकर बडी तेजी से शाम बाजार की ओर भागा।

कालिका राय साठ हजार रुपयो के लुट जाने से कही अधिक अपने सौदे को पूरा न कर पाने से चिन्तित था। उसने रुपये किसी तस्करी के धंधे के लिए निकाला था —वह चमेली नाम की सुन्दरी उसे धता बता से उड़ी।

पीछे से फौजी गाडिया आ रही थी। सुकवि और कालिका राय ने उन्हें रुकने का इशारा किया। पहली गाडी रुकी। उसमे कोई सूबेदार बैठा था। उससे कालिका राय ने कहा, —"एक फौजी ट्रक आगे भागी है—उसे पकड़ना है। उसका ड्राइवर लुटेरो से मिला है।"

सूबेदार ने उन्हे अपनी गाडी मे बैठा लिया। रास्ते को दोनों ओर दूर तक देखते हुए एक स्थान पर वे तेजी से रुके। बायी सडक पर फौजी ट्रक खड़ी थी। उसमें न कोई ड्राइवर था, न क्लीनर।

"यही है।"—कालिका राय चिल्ला पडा।

"ड्राइवर कहा गया ?"—बिदीर्ण ने पूछा।

"उसका पता ठिकाना मिल जायगा।"—सूबेदार ने कहा। उसने एक जवान को उस गाडी को पीछे-पीछे से आने को तैनात किया। गाड़ियों के चलते ही उधर से दो देहाती युवतियां निकली। सुकवि को एक युवती का चेहरा फौजी ड्राइवर का सा लगा। यह असम्भव है, सोच कर उसने किसी से कुछ कहा नहीं। उनकी गाड़िया उस ट्रक के साथ फोर्ट विलियम पहुँच कर ही रुकी।

फौजी अधिकारियो ने कालिका राय के रुपये लुटे जाने की रिपोर्ट लिख कर किले की पुलिस चौकी मे दी। पुलिस ने अपराधियो को ढूंढ निकालने का आश्वासन दिया। पुलिस कमिश्नर ने सुना, बाद मे कहा,—"यह फौजी ट्रक [illegible] बारिकपुर भेजा ही नही गया था। उसका ड्राइवर दिन भर दूसरे [illegible] था। वारदात शायद किसी क्रान्तिकारी संगठन ने किया। [illegible] गांठी में दर्जनों युवतियां हैं। फिर भी सही चमेली को ढूंढने की कोशिश [illegible] है।"

८

कलिका राय ने धंधा नहीं छोड़ा । उसने रुपयों का जोगाड़ कर लिया । किले के अधिकारियों का इस घटना से होश फिर आया । उनकी ट्रक ही नहीं चोरी गयी थी ट्रक के पास के कोत से कई मशीन गनें और पिस्तौल गायब थे । कोत का कमांडर कर्नल विलिकन्सन उस दिन अपने अधिकारी ब्रिगेडियर जांडिस से कह रहा था,—"हिन्दुस्तानी सैनिकों पर अब विश्वास नहीं किया जा सकता ।"

सुकवि को उस दिन कालिका राय की एक टैक्सी से मछुआ बाजार के चौराहे पर उतार कर चमेली नाम की युवती की खोज में दुर्गाचरण मित्र स्ट्रीट चला गया । कवि जी जब तुलापट्टी में बुढ़िया की कोठरी पर पहुंचे तो उन्होंने बुढ़िया के पास एक सुन्दरी युवती को बैठे पाया । बुढ़िया ने बताया,—"ये प्रकाश गुरु की चेलिन हैं ।"

युवती ने कहा ,—"मैं शिष्या नहीं उनकी वागदत्ता हूँ । आपको यहाँ से ले चलने आयी हूँ । मेरा नाम विभावरी है ।"

कवि जी का सिर बसरा की नर्तकी की तरह अनगिनत चक्कर काट गया । सुस्थिर होकर उन्होंने विभावरी देवी को गौर से देखा और पूछा,—"आप कहाँ रहती हैं ?"

"आपको आम खाने से काम है न कि पेड़ गिनने से । चलिए, अम्मां ने आपको बुला भेजा है ।"

सुकवि भूल भुलैया में पूरी तरह पड़ कर होश खो बैठे । बुढ़िया से विभावरी देवी को उन्होंने कहते सुना,—"काकी, तुम घबड़ाओ नहीं । मैं उस मुच्छंडे प्रकाश गुरु को कच्चा चबा डालूंगी । बड़ा सवैया लिखता है । इसे लेकर जा रही हूँ । इससे कुछ काम है । "

विदीर्ण से विभावरी देवी ने कहा,—"बाहर मोटिया खड़ा है । अपनी चीज वस्तु उसके झांपे में उठवा कर चुपचाप चले चलो ।"

कविवर के होश काफूर थे । उन्होंने अपना सामान झापें में रखवाया, उसे मोटिये के सिर पर उठाया । बुढ़िया को दोनों हाथ जोड़ नमस्कार कर वह विभावरी देवी के साथ चल पड़े ।

बहुत दूर नहीं चलना पड़ा । मछुआ बाजार से आगे सेन्ट्रल एमेन्यू पार कर मार्क्विस स्कायर से ठनठनियां बाजार जाने वाली सड़क की बायीं पटरी की एक तीन मंजिली कोठी के दूसरे तल्ले पर श्रीमती सुप्रभा दीक्षित रहती थीं । वे अधेड़ वय पार कर चुकी थीं और मारवाड़ियों के किसी बालिका विद्यालय की प्रधान अध्यापिका थीं । उनके दो पुत्र घुड़दौड़ में घोड़ों की सवारी करते थे और कुशल 'जाकी' कहलाते थे । पुत्री विभावरी देवी पढ़ लिख कर कवि ही बन सकीं । कवि बनने के कारण बने प्रकाश गुरु जिन्होंने अपने कवित्त सवैयों से विभावरी देवी का मन मोह कर उनसे गंधर्व सम्बन्ध स्थापित कर लिया । उन्होंने विधिवत विवाह करने की सौगन्ध भी खाई थी । पहले भी वह

कई रमणियों के घनिष्ट सानिध्य में रह चुके थे। इधर बुढ़िया की बड़ी पुत्री.को लेकर चम्पत हो गये थे। उसका तूफान उठने पर उसे बेचकर जाने कहाँ अदृश्य हो गये थे। विभावरी देवी प्रतापगढ़ जिले के गाव मे भी हो आयी थीं। वह वहाँ नहीं मिले।

विभावरी देवी के कान मे किसी ने कहा कि सुकवि प्रकाश कलकत्ता मे ही कहीं छिपे हैं। तब विभावरी देवी कलकत्ता के हर गली कूचे को छानने लगी। कही उनके कवि गुरु और गधर्व प्रेमी का पता नही चला। अपनी इसी भाग दौड़ में वह एक ऐसे दल मे जा फसी जिसने इन्हे हिन्दुस्तान की आजादी के लिए अपना सर्वस्व—तन, धन और मन—अर्पित कर देने की प्रेरणा दी। धन इनके पास था नहीं, मन कईयों ने पहले हर लिया था, अब प्रकाश गुरु के पास गिरवी था। तन उनका अपना था। उसके उपयोग से वह दल को अस्त्र-शस्त्र और धन जुटाने मे सहयोग देने लगीं। बढ़ते-बढ़ते उनका कार्य क्षेत्र राची पहुँच गया। वहाँ के फिरंगी कमिश्नर मिस्टर हैलेट से स्वीकृत पत्र प्राप्त कर कुछ पेटियों को फौजी ट्रको मे बाँकुरा पहुँचाना था। दल ने उन्हे विदीर्ण के बारे में बताया। क्या सयोग था कि राची जाने की प्रतीक्षा मे विदीर्ण वही ठहरा था जहाँ सिद्ध कवि प्रकाश रहा करते थे।

विभावरी देवी को आदेश मिला, वह गईं और विदीर्ण को अपने घर ले आयी।

विदीर्ण को उस रात प्रेम से सुस्वादु का भोजन करा उसे छत पर खुली हवा मे सुलाया गया। विभावरी देवी ने छत पर उनका विस्तरा दिखाते हुए कहा,—"हमारे पास एक ही कमरा है। छत पर कोई दूसरा आता नही। आपको डर तो नही लगेगा ?"

"नहीं जी डर कैसा ? यहाँ बड़ी ठण्डी हवा है—मैं खूब सोऊगा।"

"आप मेरे गुरु भाई भी हैं। मैं मौका मिलते ही देख जाऊगी।"

कवि जी प्रसन्न ही रहे। कलकत्ता के छतो पर गंगा की ठण्डी हवा मिलती है। कवि जी को जल्दी ही नीद आ गयी।

विभावरी देवी ने अपने गुरु भाई से अपना वादा पूरा किया। वह आधी रात की प्रगाढ़ नीरवता मे सबके सो जाने के बाद छत पर आईं और तारो से छिपने के लिए कवि जी की बाँहो मे अपने को छिपाने लगी। कवि जी छिप-छिपा कर अब भी पीते थे नशे मे थे। फिर भी वह जग गये।

विभावरी देवी का भाव समझ वह साहस बटोर कर बोले,—"मैं कहीं प्रेम मे पड गया हूँ।"

"और मे न बोलें। मैं क्या प्रेम में नहीं जकड़ी हूँ ? प्रेम वासना नहीं। हम एक ही गुरु के शिष्य हैं। हम अपने गुरु का गधर्व छन्द जगायें।"

सुकवि ऐसी विपत्ति में कभी नही पड़े थे उनकी बुद्धि को किन्तु

मार गया। विभावरी देवी ने मनमानी किया। रात के अन्तिम पहर में जब वह नीचे जाने लगीं तब प्रेम पुलक से बोलीं,—"तुम मेरे पति हो, मैं तुम्हारी पत्नी।"

कविवर सुन्न हो गये। विभावरी देवी ही उन्हें दिन चढ़ने के बाद आकर नीचे लिवा गयीं। किसी तरह कवि जी तैयार हुए। विभावरी देवी दस बजे सज बज कर कवि जी के सँग घर से निकलीं। वे अलीपुर में महिला विभाग के सम्पर्क अधिकारी के कार्यालय में पहुँचे। वहाँ कैप्टन की वर्दी में मालती सिमली विराजमान थीं। सुकवि उन्हें देख कर हैरान हुए। कैप्टन सिमली को भी विदीर्ण को देख कर आश्चर्य हुआ। उनके आश्चर्य का निवारण करने के लिए विभावरी देवी ने उनसे कहा,—"मेरे पति हैं। इनकी बदली रांची हो गयी है। हम पहली गाड़ी, ट्रक या हवाई जहाज से रांची पहुँचना चाहते हैं।"

"यहाँ की गर्मी से इतनी ऊब गयी हैं।"—मालती सिमली ने मुस्कुराते हुए आगे पूछा,—"विदीर्ण से मुताह किया या गंधर्व ?"

विभावरी देवी हँसती रहीं। खग ही खग की भाषा जानता है। कैप्टन सिमली ने दूसरे ही दिन रांची जाने वाली ट्रकों में उन्हें जगह दे दी।

तीन दिन लगे उन्हें रांची पहुँचने में। रास्ते में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के कारण काफिले को काफी कठिनाइयां हुई। विभावरी देवी के कारण उनके ट्रक को किसी ने जलाने की कोशिश नहीं की।

रांची में कवि जी फौजी शिविर में गये। विभावरी देवी अपनी किसी सहेली के साथ ठहरीं। जाने के पहले वे विदीर्ण से कह गयीं,—"अब हमारा गंधर्व समाप्त। यहाँ का कमिश्नर तबियतदार है। वह मेरा काम कर देगा।"

कविवर निरर्थक बंधन से मुक्त होकर खुश ही हुए। लेकिन वह टोह लेते रहे। विभावरी देवी कमिश्नर हैलेट की तीन चार दिन में अच्छी मित्र बन गयीं। हैलेट ने उन्हें वांछित स्वीकृति-पत्र (परमिट) रामगढ़ के जंगलात विभाग के निरीक्षण भवन में दिया। उस रात विभावरी देवी वहाँ हैलेंट के निमंत्रण पर गयीं। उसी के साथ उन्होंने खाना खाया। खाने के बाद हैलेट बेहोश हो गया। विभावरी देवी फिरंगी से बच गयीं। सवेरे ही वह स्वीकृति पत्र के आधार पर भारी मात्रा में फौजी अस्त्र--शस्त्र गोला बारूद लकर बांकुरा पहुँची। वहाँ से उसी रात वह कलकत्ता आ गयीं। दूसरे दिन सवेरे किसी ने उनसे कहा,—"कल बांकुरा के केसका कैम्प पर क्रान्तिकारियों ने धावा बोला। चार अंगरेज अफसर मारे गये और उनका शस्त्रागार लूट लिया गया।"

विभावरी देवी कुछ दिनों के लिए कलकत्ता छोड़ कर जगन्नाथ पुरी तीर्थ करने चली गयीं।

१३

जापानी सैनिक संसार के उत्तम कोटि के सैनिकों में से होते हैं जैसे गोरखा और सिख। सैनिक मुठभेड के सिद्धान्तों में उनके 'हाराकरी' का सिद्धान्त संसार के इतिहास में अपूर्व है। दुश्मन से लड़ाई में घायल होकर पकड़े जाने की दशा में अपने जीवन का अपने आप अन्त करने को हाराकारी कहते हैं। इससे दुश्मन पूछ-ताछ से उसके पक्ष की जानकारी नहीं प्राप्त कर सकेगा। जीवन से देश की प्रतिष्ठा कहीं अधिक श्रेयस्कर है, यह इस सिद्धान्त का मूल है। इस उच्चतम सैनिक आदर्श के विपरीत जापानी सैनिक विषयभोग के उतने ही बड़े प्रेमी हैं। शायद उच्चतम में निम्नतम का मिश्रण प्रकृति जनित स्वाभाविक प्रक्रिया है। नेपोलियन और अता-तुर्क कमालपाशा इस सिद्धान्त के ज्वलन्त उदाहरण हैं।

जापानी सैनिकों की अपनी महिला सहायक सेना थी। हिन्दुस्तानी महिला सहायक सेना की युवतियों पर उनकी तब भी विशेष नजर रहती थी। उन्हें यह नहीं पता चला था कि आजाद हिन्द फौज के निदेशन में महिला सहायक सेना का उद्देश नैतिकता और सेवा सुश्रूषा ही गया था। पुखराज देवी ने इस दिशा में अथक प्रयत्न कर महिला सहायक सेना को अंगरेजी की विलासिता के वातावरण से बहुत दूर कर दिया था। यह सेना अब खेल कूद, नृत्य, संगीत आदि मनोरंजन के श्रेष्ठ कार्यक्रमों में भाग लेती थी। कुछ स्वतंत्रता प्रेमी इसाई परिचारिकायें पुरानी अंगरेजी परम्पराओं को बिलकुल नहीं छोड़ पायी थीं। वे भी समूची सेना के साथ भारतीय ललनाओं के आदर्शों पर चलती थीं।

जापानी इस परिवर्तन को देखकर भी समझ नहीं पाये थे। कैप्टन इसोनावा की दुर्घटना के बाद वैसी कोई बात जरूर नहीं हुई थी। पर जापानी अपनी चाल से बाज नहीं आते थे। हिन्दुस्तानी युवतियाँ जितना ही उनसे कटती थीं उतना ही वे उनकी ओर झुकते थे। वे मित्रता और भाईचारा का ढोंग रचाते थे। एक जापानी कमाण्डर सेयूका ने कुमारी उषा पैट्रिक से दोस्ती बढ़ायी।

सेयूका उच्च पदस्थ अधिकारी था। उषा पैट्रिक ने उससे मेल-जोल को अन्यथा नहीं समझा। एक दिन सेयूका ने मिस पैट्रिक से कहा,—"आपकी हम जल्दी ही पदोन्नति करायेंगे।"

"आप से मेरी पदोन्नति का क्या सम्बन्ध ?"—मिस पैट्रिक ने आश्चर्य से पूछा।

"आखिर हिन्दुस्तानी सेना हमारे साथ ही तो है।"

उसका भाव समझकर कुमारी पैट्रिक ने बिना किसी हिचक के कहा,—"हम अपने देश को स्वतन्त्र कराने के संघर्ष में आपकी महत्वपूर्ण सहायता के लिए आभारी हैं। अब हम किसी के अधीन नहीं होंगे। बैंकाक सम्मेलन के प्रस्तावों में इसे साफ-साफ बता दिया गया है।"

कमाण्डर सेयूका जोर से हँसा। उसने मिस पैट्रिक की आँखों में आँखें डालने की कोशिश करते हुए कहा,—"कल मेजर गिल गिरफ्तार कर लिया गया है। वह अग्रिम टुकड़ियों के संग बर्मा भेजा गया था। वहाँ उसने जापानी कमांडर का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।"

मिस पैट्रिक ने यह खबर उड़ती फुड़ती सुनी थी। उन्होंने यह भी सुना था कि इस गिरफ्तारी की प्रतिक्रिया यह हुई कि आज़ाद हिन्द फौज के सेनापति मोहन सिंह ने किसी भी हिन्दुस्तानी टुकड़ी या फौजी दल को जापानी सेना की अधीनता में रखने से साफ मनाही एक विशेप आदेश द्वारा कर दिया है। मिस पैट्रिक ने येसूका से गर्व से फिर कहा,—"आज़ाद हिन्द फौज़ किसी की अधीनता नहीं स्वीकार करेगी। सहयोग दूसरी चीज़ है।"

उस रात महिला सहायक सेना के अफसरों के मेस मे यही चर्चा चल रही थी। मेजर रत्नाम्मा महारानी झाँसी रेजिमेंट से आयी थीं। उन्होंने बताया कि कार्यकारी अध्यक्ष रास बिहारी बोस ने जेनरल मोहन सिंह को कल इसी सम्बन्ध में बुलाया है। जेनरल किसी तरह ऐसा सहयोग नहीं करना चाहते हैं जिसमें प्रकारान्तर से भी अधीनता प्रकट होती हो। जेनरल ने कार्यकारी अध्यक्ष को अपना त्याग पत्र भी भेज दिया है। शायद वे कार्यकारी अध्यक्ष से मिलने भी न जांय।

"यह विकट परिस्थिति होगी।"—किसी प्लटून कमांडर ने कहा।

"इससे आज़ाद हिन्द फौज भंग हो जायेगी।"—मेजर रत्नाम्मा ने गम्भीर भाव से बताया,—"कोई भी हिन्दुस्तानी जापानियों के अधीन होकर काम नहीं करना चाहता। मगर कोई भी आजाद हिन्द फौज़ को भंग करने के पक्ष में नहीं है।"

मेस के अधिकांश अफसरों का यही मत था कि मेजर गिल वाली घटना अच्छी हो गयी। शुरू से ही जापानी कमांडर को यह बताना जरूरी है कि आज़ाद फौज़ उसके अधीन नहीं होगी। लड़ाई में सहयोग भी वह स्वतन्त्र सेना के रूप में ही कर सकेगी।

एक-दो दिन अफवाहों का बाजार सिंगापुर में ही नहीं पूरे मलाया में गर्म रहा। एकाएक कार्यकारी अध्यक्ष ने अप्रत्याशित कदम उठा लिया। जेनरल मोहन सिंह ने जब उनसे मिलने से इन्कार कर दिया तब उन्होंने जेनरल को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया। जापानी कमांडरों ने आदेश का पालन किया। लेकिन गिरफ्तार होते ही जेनरल मोहन सिंह ने कार्यकारी समिति की सलाह से आज़ाद हिन्द फौज़ को भंग करने का एलान कर दिया।

हिन्दुस्तानी अफसर और जापानी अधिकारी घटना की इस मोड़ से

बहुत चिन्तित हो उठे। एकाध वरिष्ठ जेनरलों ने कहा,—"उधर देश में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छिड़ गया है, इधर हम अपने उद्देश्य को तिलांजलि दे रहे हैं। लक्ष्य कैसे मिलेगा ?"

जापानियों के मलाया कमांड के प्रधान सेनापति जेनरल इवाकुको ने हिन्दुस्तानी जेनरलों, कमाण्डरों और अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के मौजूद सदस्यों की एक गोपनीय बैठक बुलायी। हिन्दुस्तानी जेनरलों में एक भी नहीं चाहता था कि *आजाद हिन्द फौज भंग हो। उन्होंने कहा,—"हमने स्वदेश को आजाद कराने* की शपथ खायी है। हम जापान की मदद के बिना लड ही नहीं सकते। लेकिन हम उसके अधीन होकर नहीं लड़ेंगे।"

जवाब में जेनरल इवाकुको ने कहा,—"जापान के प्रधान मन्त्री जेनरल टोजो ने साफ-साफ घोषणा की है कि जापान सरकार हिन्दुस्तान के एक इंच को भी अपने अधीन नहीं करेगी। जापान हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र कराने में सहयोगी रहेगा।"

प्रशिक्षण केन्द्र का कमांडर श्यामसिंह जोश से बोला,—"बैंकाक सम्मेलन के प्रस्तावों को जापान ने अभी तक स्वीकार क्यों नहीं किया ?"

"प्रधान मन्त्री ने उन प्रस्तावों के अनुसार ही दोस्ती का हाथ बढाया है।"

जेनरल इवाकुको की साफ बात सुनकर आजाद हिन्द फौज के जेनरल शाहनवाज खां खड़े होकर बोले,—"हम में से कोई आजाद हिन्द फौज को भंग करने के पक्ष में नहीं है। हमारी एक मांग है। वह यह है कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को हमारा नेतृत्व करने के लिये जर्मनी से यहाँ बुलाया जाय।"

बैठक जिस भवन में हो रही थी उसकी छत तालियों की विपुल गडगडाहट से फटने को आयी। जापानी जेनरल का मुखमण्डल भी आजाद हिन्द फौजियों की तरह खुशी से भर कर लाल हो गया। उसने कहा,—"*हमें यह स्वीकार है। नेता जी के* आने तक कर्नल एम० जेड० कियानी को आजाद हिन्द फौज का प्रधान सेनापति और कर्नल भोंसले को उसका निदेशक मनोनीत किया जाता है। दोनों आजाद हिन्द *फौज के वरिष्ठतम बड़े अफसर हैं।*"

तालियों की पूर्ववत् गडगडाहट से हाल गूंज उठा। सुझाव सबने प्रसन्न मन से स्वीकार किया।

उपर्युक्त प्रस्ताव दिसम्बर बयालीस में हुआ था। चार जुलाई तंतालीस को नेताजी जान पर खेलकर पन-डुब्बियाँ बदल-बदल कर जर्मनी से जापान होते हुए हवाई जहाज द्वारा सिंगापुर पहुँचे। श्री रासबिहारी बोस ने उसी दिन आजाद सरकार और फौज का अध्यक्ष पद तथा सर्वोच्च कमांड नेता जी को सौंप दिया।

नये सर्वोच्च कमांडर ने आजाद हिन्द फौज को उसी दिन नया नारा दिया,—"दिल्ली चलो।" आपस में अभिवादन का भी नया रूप मिला,—'जय हिन्द।'

प्रिय विषय था। वह मन ही मन सोच रही थी कि गांधी जी के 'ट्रस्टीशिप' में अधिकतम पर रोक है। न्यूनतम का क्या होगा? पांचों उंगलियों को पहले उंगली तो बनाया जाय। थोड़ा बहुत अन्तर गुणविशेष के कारण रहेगा ही। खाने, पीने, पहनने, रहने, की सुविधाओं में अगर विषमता रही तो स्वराज्य सुखदायक कैसे बनेगा?

नरेन्द्र ने पुखराज की गम्भीर मुद्रा को लक्ष्य कर कहा,—"पूँजीवाद और साम्यवाद के बीच की खाई गांधी जी के 'ट्रस्टीशिप' से पट सकेगी।"

"साम्यवाद में व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती। उसमें भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असन्तोष आदि दुर्गुण छूमंतर हो जाते हैं। समाज में सभी मन और मस्तिष्क में सुखी हो जाते हैं।"

"यह आदर्श है। रूस भी उसे अब तक कहाँ पा सका? स्वतंत्र हिन्दुस्तान में जिस तरह भी हो सबको बराबर करना सुख सृजन की पहली सीढ़ी होगी।"

"जाने.........।" पुखराज का हृदय स्वदेश में व्याप्त गरीबी, अनैतिकता, असन्तोष की प्रवृत्तियों का ध्यान कर भर आया। नरेन्द्र सोच रहा था,—"पराधीनता की बेड़ियां काटना पहला कर्त्तव्य है। स्वदेश में व्याप्त अंधेरा उसी से मिटेगा।"

नेता जी बोस के आते ही एक नयी बिजली जली जिसकी जगमगाहट से मलाया ही नहीं सारे सुदूर पूरब के हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक चमक उठे। स्वदेश को स्वतंत्र कराने का दिव्य अलोक चारो ओर प्रकाश भरने लगा। सारा शक-सुबहा मिट चला, नयी लगन और अदम्य साहस से आजाद हिन्द फौज की तैयारियां चलने लगीं।

बरियार खां और नायक नंदराय की रिपोर्ट सर्वोच्च कमाण्ड के लिए बहुत लाभकारी साबित हुई। वे मनीपुर क्षेत्र की पूरी जानकारी नक्शों समेत लाये थे। कहां-कहां अंगरेजी पल्टनें हैं, हवाई अड्डे कहां हैं, शस्त्र और रसद की आपूर्ति के केन्द्रीय डिपो कहां हैं, हिन्दुस्तानी पल्टनों का क्या मनोबल-रुख है आदि की सही जानकारी उनसे मिली। बरियार खां ने श्याम सिंह से बताया,—"पार की हिन्दुस्तानी फौज भी जोश से भरी है। वह हमारे पहुँचते ही हमारे साथ हो जायगी।"

"और क्या देखा सुना?"—श्याम सिंह ने अनजान भावों में बह कर पूछा था।

वहां की नाचने गाने वालियाँ भी देशभक्ति की ओज से भरी हैं। स्वदेश की प्रशस्ति का गाना सुनाती हैं, नृत्य दिखाती हैं। इससे सिपाहियों का स्वदेश के लिए मनोबल उभड़ता है।" दूसरी सांस में उसने कहा,—"शरीर बेचने वालियां भी फिरंगीयों को घास नहीं डालतीं। वे जानकारी के लिए बहुत ही लाभप्रद साबित हो रही हैं।"

कमांडर श्याम सिंह मनीपुर क्षेत्र से बहुत दूर बनारस से आगे लोहता गांव के अपने घर के आंगन में अपलक नयनों से उसका बाट जोहती अपनी नयी नवेली

प्रिय विषय था। वह मन ही मन सोच रही थी कि गांधी जी के 'ट्रस्टीशिप' में अधिकतम पर रोक है। न्यूनतम का क्या होगा? पांचों उंगलियों को पहले उंगली तो बनाया जाय। थोड़ा बहुत अन्तर गुणविशेष के कारण रहेगा ही। खाने, पीने, पहनने, रहने, की सुविधाओं में अगर विषमता रही तो स्वराज्य सुखदायक कैसे बनेगा?

नरेन्द्र ने पुखराज की गम्भीर मुद्रा को लक्ष्य कर कहा,—"पूँजीवाद और साम्यवाद के बीच की खाई गांधी जी के 'ट्रस्टीशिप' से पट सकेगी।"

"साम्यवाद में व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती। उसमें भ्रष्टाचार, अनैतिकता, असन्तोष आदि दुर्गुण छूमंतर हो जाते हैं। समाज में सभी मन और मस्तिष्क से सुखी हो जाते हैं।"

"यह आदर्श है। रूस भी उसे अब तक कहां पा सका? स्वतंत्र हिन्दुस्तान में जिस तरह भी हो सबको बराबर करना सुख सृजन की पहली सीढ़ी होगी।"

"जाने.........।" पुखराज का हृदय स्वदेश में *व्याप्त गरीबी, अनैतिकता,* असन्तोष की प्रवृत्तियों का ध्यान कर भर आया। नरेन्द्र सोच रहा था,—"पराधीनता की बेड़ियां काटना पहला कर्त्तव्य है। स्वदेश में व्याप्त अंधेरा उसी से मिटेगा।"

नेता जी बोस के आते ही एक नयी बिजली जली जिसकी जगमगाहट से मलाया ही नहीं सारे सुदूर पूरब के हिन्दुस्तानी और हिन्दुस्तानी मूलक चमक उठे। स्वदेश को स्वतंत्र कराने का दिव्य आलोक चारों ओर प्रकाश भरने लगा। सारा शक-सुबहा मिट चला, नयी लगन और अदम्य साहस से आजाद हिन्द फौज की तैयारियां चलने लगीं।

बरियार खां और नायक नंदराय की रिपोर्ट सर्वोच्च कमाण्ड के लिए बहुत लाभकारी साबित हुई। वे मनीपुर क्षेत्र की पूरी जानकारी नक्शों समेत लाये थे। कहां-कहां अंगरेजी पल्टनें हैं, हवाई अड्डे कहां हैं, शस्त्र और रसद की आपूर्ति के केन्द्रीय डिपो कहां हैं, हिन्दुस्तानी पल्टनों का क्या मनोबल-रुख है आदि की सही जानकारी उनसे मिली। बरियार खां ने श्याम सिंह से बताया,—"पार की हिन्दुस्तानी फौज भी जोश से भरी है। वह हमारे पहुँचते ही हमारे साथ हो जायगी।"

"और क्या देखा सुना?"—श्याम सिंह ने अनजान भावों में बह कर पूछा था।

वहां की नाचने गाने वालियाँ भी देशभक्ति की ओज से भरी हैं। स्वदेश की प्रशस्ति का गाना सुनाती हैं, नृत्य दिखाती हैं। इससे सिपाहियों का स्वदेश के लिए मनोबल उभड़ता है।" दूसरी सांस में उसने कहा,—"शरीर बेचने वालियां भी फिरंगियों को घास नहीं डालतीं। वे जानकारी के लिए बहुत ही लाभप्रद साबित हो रही हैं।"

कमांडर श्याम सिंह मनीपुर क्षेत्र से बहुत दूर बनारस से आगे लौटता गांव के अपने घर के आंगन में अपलक नयनों से उसका बाट जोहती अपनी नयी नवेली

हुक्म मिला। खाने पीने का भी समय अनिश्चित रहा करता था यद्यपि हर प्रशिक्षार्थी के स्वास्थ्य की जांच सुविज्ञ डाक्टरो द्वारा प्रति सप्ताह की जाती थी।

पिनांग से कुछ दूर बर्मा की सरहद पर टाइपिंग नगर में भी प्रशिक्षण स्कूल का एक केन्द्र था। उसमें तीन महीने की ट्रेनिंग के बाद प्रशिक्षार्थियों को भेजा जाता था। वहाँ लोहे का चना चबाना पडता था।

जुनूरैन एक प्रशिक्षार्थी था। उसका विनोद मशहूर था। उसका कहना था कि अगर मेरिया न होती तो नब्बे से अधिक प्रतिशत प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण का कोर्स पूरा ही न कर पाते।

मेरिया जुनूरैन के सेक्शन मे थी। वह जुनूरैन के संग अपना अधिक समय बिताती थी। दूसरो के साथ भी उसका व्यवहार घनिष्ठ मित्रता का था। वह प्रत्येक के सुख दु ख को किसी न किसी बहाने रोज पूछा करती थी। कभी किसी को हँसाती थी तो कभी किसी को रुलाती थी।

जुनूरैन ने एक दिन विस्मृति मे उसे अपनी बाँहो में समेट लिया। मेरिया ने दुगुने उत्साह से प्रतिदान मे उसे चिपटा लिया, उसके अधरो को चूम लिया। जुनूरैन ने इसकी आशा नही की थी। जाने कैसे जुनूरैन ने कहा,—"ज्ञान सिंह यह पसन्द नही करता।"

"क्यो?"—मेरिया ने सच्चाई से पूछा।

जुनूरैन क्या कहता? मेरिया ने ही उसे असमंजस मे उबारा,—'होठो का चुम्बन एक सद्व्यवहार है, मित्रता का मानक है, प्रेम नही। ज्ञान सिंह से मुझे प्रेम है—भेदो के भेद को नापने वाला प्रेम। शरीर की सनसनाहट का भी मोल रखना है।"

अचानक हवाई आक्रमण के अभ्यास की सीटी बज गयी। मेरिया और जुनूरैन अपनी-अपनी सिखलायी में लग गये।

टाइपिंग जाने के पहले हर प्रशिक्षार्थी को एक दाव दिया गया जिससे जगल में झाड़-झंखाड़ काट कर वह रास्ता बना सके। टाइपिंग मे मेरिया ने उस दाव का प्रयोग एक जापानी कैप्टन पर कर लिया। उस जापानी कैप्टन ने मेरिया को गीशा वाला समझ उससे बलात्कार करने की कोशिश की। मेरिया ने यह कह कर कि मैं भारतीय आदर्शों की नारी हूँ अपना दाव कैप्टन के कलेजे मे खोस दिया। कैप्टन के प्राण पखेरू उड़ गये।

जापानी उच्च अधिकारियो ने मेरिया को उन्हे सुपुर्द कर देने की माँग की। टाइपिंग के निदेशक राघवन ने आजाद हिन्द फौज के कमाण्ड की सहमति से उसे जापानियों के सुपुर्द कर दिया। जापानी बैरक मे वह कडे पहरे मे रखी गयी। वहां से खबर आती थी कि उसे कत्ल के जुर्म में गोलियो से उडा दिया जायगा। वैसा किया नही जा सका क्योकि मेरिया अदृश्य हो गयी। कब और कैसे वह जापानियो की आँख मे धूल झोंक कर कहाँ चली गयी कोई नही जान सका। आजाद हिन्द कमांड ने बडी सरगर्मी से जाच की। उसका कोई नतीजा नहीं निकला।

हुक्म मिला । खाने पीने का भी समय अनिश्चित रहा करता था यद्यपि हर प्रशिक्षार्थी के स्वास्थ्य की जाँच सुविज्ञ डाक्टरो द्वारा प्रति सप्ताह की जाती थी ।

पिनांग से कुछ दूर बर्मा की सरहद पर टाइपिंग नगर में भी प्रशिक्षण स्कूल का एक केन्द्र था । उसमें तीन महीने की ट्रेनिंग के बाद प्रशिक्षार्थियों को भेजा जाता था । वहाँ लोहे का चना चबाना पडता था ।

जुनूरैन एक प्रशिक्षार्थी था । उसका विनोद मशहूर था । उसका कहना था कि अगर मेरिया न होती तो नब्बे से अधिक प्रतिशत प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण का कोर्स पूरा ही न कर पाते ।

मेरिया जुनूरैन के सेक्शन मे थी । वह जुनूरैन के संग अपना अधिक समय बिताती थी । दूसरो के साथ भी उसका व्यवहार घनिष्ठ मित्रता का था । वह प्रत्येक के सुख दुःख को किसी न किसी बहाने रोज पूछा करती थी । कभी किसी को हँसाती थी तो कभी किसी को रुलाती थी ।

जुनूरैन ने एक दिन विस्मृति मे उसे अपनी बाँहो में समेट लिया । मेरिया ने दुगुने उत्साह से प्रतिदान मे उसे चिपटा लिया, उसके अधरो को चूम लिया । जुनूरैन ने इसकी आशा नही की थी । जाने कैसे जुनूरैन ने कहा,—"ज्ञान सिंह यह पसन्द नही करता ।"

"क्यो ?"—मेरिया ने सच्चाई से पूछा ।

जुनूरैन क्या कहता ? मेरिया ने ही उसे असमजस मे उबारा,—'होंठो का चुम्बन एक सद्व्यवहार है, मित्रता का मानक है, प्रेम नहीं । ज्ञान सिंह से मुझे प्रेम है—भेदो के भेद को नापने वाला प्रेम । शरीर की सनसनाहट का भी मोल रखना है ।"

अचानक हवाई आक्रमण के अभ्यास की सीटी बज गयी । मेरिया और जुनूरैन अपनी-अपनी सिखलायी मे लग गये ।

टाइपिंग जाने के पहले हर प्रशिक्षार्थी को एक दाव दिया गया जिससे जगल में झाड-झंखाड़ काट कर वह रास्ता बना सके । टाइपिंग मे मेरिया ने उस दाव का प्रयोग एक जापानी कैप्टन पर कर लिया । उस जापानी कैप्टन ने मेरिया को गीशा वाला समझ उससे बलात्कार करने की कोशिश की । मेरिया ने यह कह कर कि मैं भारतीय आदर्शों की नारी हूँ अपना दाव कैप्टन के कलेजे मे खोंस दिया । कैप्टन के प्राण पखेरू उड़ गये ।

जापानी उच्च अधिकारियो ने मेरिया को उन्हे सुपुर्द कर देने की माँग की । टाइपिंग के निदेशक राघवन ने आजाद हिन्द फौज के कमाण्ड की सहमति से उसे जापानियों के सुपुर्द कर दिया । जापानी बैरक मे वह कडे पहरे मे रखी गयी । वहां से खबर आती थी कि उसे कत्ल के जुर्म में गोलियो से उडा दिया जायगा । वैसा किया नही जा सका क्योकि मेरिया अदृश्य हो गयी । कब और कैसे वह जापानियो की आँख मे धूल झोंक कर कहाँ चली गयी कोई नही जान सका । आजाद हिन्द कमांड ने बडी सरगर्मी से जाच की । उसका कोई नतीजा नहीं निकला ।

नहीं था। इसलिए रात के अंधेरे में नन्दराम और वरियार खां कम-से-कम जरूरी सामान अपने बदन पर समेट नदी में उतरे। चिन्दवीन की धारा तेज थी। वे तैरने लगे। अभी आधा पाट भी पूरा नहीं कर पाये थे कि उन पर दुश्मन की गोलियों के ओले पड़ने लगे। पीछे लौटना सम्भव नहीं था। आगे जाना मौत के कुएँ में छलांग लगाना था। उन्होंने डुबकी मारी और सीधी दिशा छोड़ बायीं ओर डूबे-डूबे ही प्रवाह के सहारे करीब चौथायी मील तैर गये। वहाँ वे उतराये। उधर चुप्पी थी। वहाँ न गोलियाँ बरसी न आदमी की गन्ध कहीं से आई। वे हिम्मत साधे नदी की तेज धार को काटते-काटते पार पहुँच गये। किनारों पर पानी को छूते हुए वे लेट गये। आगे बिना टोह लिए जाना बेवकूफी होती। अंधेरा प्रगाढ़ था, आँखों की सीध में हाथ भर तक भी दिखायी नहीं पड़ता था। चोर बत्ती उनके कमर के झोले में थी। रात को एक माचिस की लौ भी बहुत दूर तक दिखायी पड़ती है। इसलिए वे चुपचाप लेटे रहे और सुस्ताते रहे। एक दूसरे से वे बोल भी नहीं सकते थे। रात की नीरवता आवाज़ को दूर तक तैरा ले जाती है।

बहुत देर के बाद नन्दराम और पीछे से उसे पकड़े वरियार खां किनारे पर आगे बढ़े। वे एक बड़े पेड़ के पास आ खड़े हुए। देर तक वे साँसें रोके खड़े रहे।

शुक्र तारा के उदय होने के थोड़े ही पहले उन्होंने देखा कि वह पेड़ छतरीदार था और उसकी डालियाँ बड़ी और झुकी हुई थीं। वे एक दूसरे के सहारे करीब की डाली पर चढ़कर उससे चिपट गये। वरियार खां को लगा कि उसके तने से सटते ही कोई जानवर रेंगता और फुफकार भरता हुआ सपाट से नीचे दौड़ गया। नन्दराम को भी यही अनुभव हुआ। उसने मन ही मन अपने गाँव की सती माई की प्रार्थना की और प्रसाद चढ़ाने की मनौती मानी।

सती माई की उन पर कृपा जरूर हुई। सूरज की पहली किरणों के साथ उन्होंने देखा कि पेड़ की हर डाली से भयावने विषधर चिपके और लटके थे। उनमें काले करैत और भुजग भी थे। भय से वे पेड़ से कूदने ही जा रहे थे कि नीचे किनारों की ओर से चलने की आहट आयी। पाँच-छः अंग्रेज सैनिकों का एक सुरक्षा दल किनारों की चौकसी करता उधर से आ रहा था। उनके हाथ में टामी गन थी। उनकी इन पर नजर भी पड़ती तो एक फायर में ही उनकी धज्जियाँ उड़ जातीं। उन्होंने संयोगवश इधर देखा ही नहीं। वे चौकसी की मात्रा पूर्ति कर रहे थे। किनारे-किनारे वे अपना रास्ता नापते निकल गये।

पेड़ के जिस तने से नन्दराम और वरियार खां चिपके पड़े थे वहाँ से उतरना भी आसान नहीं था। विषधर उनके चारों ओर ऊँघ रहे थे या इन्हीं की तरह साँसें रोके पड़े थे। जरा-सी हरकत पर वे इनकी ओर अपनी चमकदार आँखें गड़ा देते थे। वे भय से सिहर जाते थे। आदमी के अलावे शायद हिंसक से हिंसक कोई जीव-जन्तु अकारण किसी पर प्रहार नहीं करते हैं। प्रकाश फैल चुका था। वे चुपके-चुपके उतरने के लिए रेंगने लगे। किसी ने उन पर आक्रमण नहीं किया। वे नीचे उतर

नहीं था। इसलिए रात के अंधेरे में नन्दराम और बरियार खां कम-से-कम जरूरी सामान अपने बदन पर समेट नदी में उतरे। चिन्दवीन की धारा तेज थी। वे तैरने लगे। अभी आधा पाट भी पूरा नहीं कर पाये थे कि उन पर दुश्मन की गोलियों के ओले पड़ने लगे। पीछे लौटना सम्भव नहीं था। आगे जाना मौत के कुएँ में छलांग लगाना था। उन्होंने डुबकी मारी और सीधी दिशा छोड़ बायीं ओर डूबे-डूबे ही प्रवाह के सहारे करीब चौथायी मील तैर गये। वहाँ वे उतराये। उधर चुप्पी थी। वहाँ न गोलियाँ बरसी न आदमी की गन्ध कहीं से आई। वे हिम्मत साधे नदी की तेज धार को काटते-काटते पार पहुँच गये। किनारों पर पानी को छूते हुए वे लेट गये। आगे बिना टोह लिए जाना बेवकूफी होती। अँधेरा प्रगाढ़ था, आँखों की सीध में हाथ भर तक भी दिखायी नहीं पड़ता था। चोर बत्ती उनके कमर के झोले में थी। रात को एक माचिस की लौ भी बहुत दूर तक दिखायी पड़ती है। इसलिए वे चुपचाप लेटे रहे और सुस्ताते रहे। एक दूसरे से वे बोल भी नहीं सकते थे। रात की नीरवता आवाज को दूर तक तैरा ले जाती है।

बहुत देर के बाद नन्दराम और पीछे से उसे पकड़े बरियार खां किनारों पर आगे बढ़े। वे एक बड़े पेड़ के पास आ खड़े हुए। देर तक वे साँसें रोके खड़े रहे।

शुक्र तारा के उदय होने के थोड़े ही पहले उन्होंने देखा कि वह पेड़ छतरीदार था और उसकी डालियां बड़ी और झुकी हुई थीं। वे एक दूसरे के सहारे करीब की डाली पर चढ़कर उसमें चिपट गये। बरियार खां को लगा कि उसके तने से सटते ही कोई जानवर रेंगता और फुफकार भरता हुआ सपाट से नीचे दौड़ गया। नन्दराम को भी यही अनुभव हुआ। उसने मन ही मन अपने गाँव की सती माई की प्रार्थना की और प्रसाद चढ़ाने की मनौती मानी।

सती माई की उन पर कृपा जरूर हुई। सूरज की पहली किरणों के साथ उन्होंने देखा कि पेड़ की हर डाली से भयावने विषधर चिपके और लटके थे। उनमें काले करैत और भुजंग भी थे। भय से वे पेड़ से कूदने ही जा रहे थे कि नीचे किनारों की ओर से चलने की आहट आयी। पाँच-छः अंगरेज सैनिकों का एक सुरक्षा दल किनारों की चौकसी करता उधर से आ रहा था। उनके हाथ में टामी गन थी। उनकी इन पर नजर भी पड़ती तो एक फायर में ही इनकी धज्जियाँ उड़ जातीं। उन्होंने संयोगवश इधर देखा ही नहीं। वे चौकसी की मात्रा पूर्ति कर रहे थे। किनारे-किनारे वे अपना रास्ता नापते निकल गये।

पेड़ के जिस तने से नन्दराम और बरियार खां चिपके पड़े थे वहाँ से उतरना भी आसान नहीं था। विषधर उनके चारों ओर ऊँघ रहे थे या इन्हीं की तरह साँसें रोके पड़े थे। जरा-सी हरकत पर वे इनकी ओर अपनी चमकदार आँखें गड़ा देते थे। वे भय से सिहर जाते थे। आदमी के अलावे शायद हिंसक से हिंसक कोई जीव-जन्तु अकारण किसी पर प्रहार नहीं करते हैं। प्रकाश फैल चुका था। वे चुपके-चुपके उतरने के लिए रेंगने लगे। किसी ने उन पर आक्रमण नहीं किया। वे नीचे उतर

आता दिखायी पड़ा। उसने पास आकर इन दोनो पर आँखें गडा दीं। अच्छी तरह परख कर वह इन्हे झुरमुटो के पार की एक झोपड़ी मे लिवा गया। झोपड़ी में इन्हे फर्श पर बैठा वह अन्दर के कमरे में गया और किसी अंगरेज की एक मटमैली तस्वीर निकाल लाया। उसने उस तस्वीर पर अपना मुक्का साध उसे मारने की हरकत की। बरियार खाँ ने दुगुने उत्साह से वैसा ही किया। तब वह नागा महात्मा गांधी की तस्वीर ले आया। इन दोनो के चेहरे पर प्रसन्नता की लालिमा खिली देख कर वह तीसरी तस्वीर ले आया। वह किसी नागा सरदार की थी। तस्वीर का चेहरा दीप्तमान था। चेहरे पर अध्यात्म भाव की शान्ति थी। उसके गले में शंख, कौडियों, मूंगा और रंग-बिरंगी पत्थरो की कई मालायें थी। चौडा ललाट, नागाओं के छँटे बाल और बडी बँधी शिखा से तस्वीर का व्यक्ति नागाओ का गुरू या श्रेष्ठ सरदार प्रकट होता था। नंदराम और बरियार खाँ ने उसे प्रणाम करने को अपने हाथ जोड लिए। इस पर नागा ने उन्हे गले लगा लिया। मैत्री स्थापित हो गयी।

पास की झोपडियों से कई दूसरे नागा आ गये। दो नौजवान लडके मिट्टी का एक बड़ा घडा लाये। उसमें चावल से ताज़ी बनी कच्ची शराब लबालब भरी थी। उसका नाम 'जूब' बताया गया। उपस्थित सभी नागा उक्त घडे के चारो ओर प्रसन्नता से खड़े हुए। बाँस की गिलासो मे जूब भरा गया। एक-एक गिलास नदराम और बरियार खाँ को भी मिली। दूसरो ने भी लिया। एक प्रकार की स्वम्ति उच्चारण कर जो शायद किसी प्रकार का जयघोष था सब जूब पीने लगे। इन्होने भी पिया – ललक से पिया।

एक दूसरा नागा बाँस की टोकरी मे मास के भुने टुकडे रख गया। नदराम और बरियार खाँ भूखे थे। उन्होने मास को हाथ नही लगाया। वे जानते थे कि नागा लोग गाय का मांस खाते हैं। बरियार खाँ भी, राजपूत होने के कारण, गाय का मास वर्जित मानता था। एक बूढा नागा उनका असमंजस ताड़ कर एक झोपडी से सूखी मछलियाँ ले आया। दोनो ने आह्लाद से मछलियाँ खायी यद्यपि मछलियो मे नमक नही मिला था। नागा बडे बूढो ने नमक न होने के लिए अपनी भाषा मे बडा अफसोस प्रकट किया।

एक नवयुवक नागा के दिमाग मे जैसे बिजली कौंध गयी। वह दौडा-दौडा गया और किसी बर्मी अखबार में छपी नेता जी की तस्वीर लाकर दिखाया। नंदराम और बरियार खाँ ने अपनी-अपनी गिलासो को रख कर नेता जी को सावधान हो फौजी सलाम कर लिया। उपस्थित नागाओं ने भी चित्र को सलाम किया और दोनों को बारी-बारी से गले लगा लिया। नये आग्रह से उन्हे और जूब पिलाया, मछली खिलाया।

दोनो जूब से उत्फुल्ल हो रात भर सुख की नींद सोये। सबेरे ताजो चिड़िया का गोश्त, उबले कंद-मूल और 'जूब' पर 'जूब' उन्हें पीने को मिला। नंदराम ने उस नागा साधू के बारे में इशारों से पूछा। एक बूढे नागा ने बडे उत्साह से उसके

आता दिखायी पड़ा। उसने पास आकर इन दोनो पर आँखें गडा दी। अच्छी तरह परख कर वह इन्हे झुरमुटो के पार की एक झोपड़ी मे लिवा गया। झोपड़ी में इन्हे फर्श पर बैठा वह अन्दर के कमरे में गया और किसी अंगरेज की एक मटमैली तस्वीर निकाल लाया। उसने उस तस्वीर पर अपना मुक्का साध उसे मारने की हरकत की। वरियार खाँ ने दुगुने उत्साह से वैसा ही किया। तब वह नागा महात्मा गांधी की तस्वीर ले आया। इन दोनो के चेहरे पर प्रसन्नता की लालिमा खिली देख कर वह तीसरी तस्वीर ले आया। वह किसी नागा सरदार की थी। तस्वीर का चेहरा दीप्तमान था। चेहरे पर अध्यात्म भाव की शान्ति थी। उसके गले मे शंख, कौडियों, मूँगा और रंग-बिरंगी पत्थरो की कई मालायें थी। चौडा ललाट, नागाओं के छँटे बाल और बडी बँधी शिखा से तस्वीर का व्यक्ति नागाओ का गुरू या श्रेष्ठ सरदार प्रकट होता था। नंदराम और वरियार खाँ ने उसे प्रणाम करने को अपने हाथ जोड लिए। इस पर नागा ने उन्हे गले लगा लिया। मैत्री स्थापित हो गयी।

पास की झोपडियों से कई दूसरे नागा आ गये। दो नौजवान लडके मिट्टी का एक बड़ा घडा लाये। उसमें चावल से ताज़ी बनी कच्ची शराब लबालब भरी थी। उसका नाम 'जूब' बताया गया। उपस्थित सभी नागा उक्त घडे के चारो ओर प्रसन्नता से खड़े हुए। बाँस की गिलासो मे जूब भरा गया। एक-एक गिलास नदराम और वरियार खाँ को भी मिली। दूसरो ने भी लिया। एक प्रकार की स्वस्ति उच्चारण कर जो शायद किसी प्रकार का जयघोष था सब जूब पीने लगे। इन्होने भी पिया – ललक से पिया।

एक दूसरा नागा बाँस की टोकरी मे मास के भुने टुकडे रख गया। नदराम और वरियार खाँ भूखे थे। उन्होने मास को हाथ नही लगाया। वे जानते थे कि नागा लोग गाय का मांस खाते हैं। वरियार खाँ भी, राजपूत होने के कारण, गाय का मास वर्जित मानता था। एक बूढा नागा उनका असमंजस ताड़ कर एक झोपडी से सूखी मछलियाँ ले आया। दोनो ने आह्लाद से मछलियाँ खायी यद्यपि मछलियो मे नमक नही मिला था। नागा बडे बूढो ने नमक न होने के लिए अपनी भाषा मे बडा अफसोस प्रकट किया।

एक नवयुवक नागा के दिमाग मे जैसे बिजली कौंध गयी। वह दौडा-दौडा गया और किसी वर्मी अखबार में छपी नेता जी की तस्वीर लाकर दिखाया। नंदराम और वरियार खाँ ने अपनी-अपनी गिलासो को रख कर नेता जी को सावधान हो फौजी सलाम कर लिया। उपस्थित नागाओं ने भी चित्र को सलाम किया और दोनों को बारी-बारी से गले लगा लिया। नये आग्रह से उन्हें और जूब पिलाया, मछली खिलाया।

दोनो जूब से उत्फुल्ल हो रात भर सुख की नींद सोये। सबेरे ताजी चिडिया का गोश्त, उबले कंद-मूल और 'जूब' पर 'जूब' उन्हें पीने को मिला। नंदराम ने उस नागा साधू के बारे में इशारों से पूछा। एक बूढे नागा ने बडे उत्साह से उसके

श्याम सिंह के दल को उसी दिन कोहिमा दीमापुर क्षेत्र के लिये प्रस्थान करने का आदेश मिला था। नंदराम और वरियार खाँ के सही सलामत लौट आने के कारण यह प्रस्थान दो दिन के लिए रोक दिया गया। नयी जानकारी की विधिवत विवेचन कर, जापानी उच्च कमांड से परामर्श कर, निर्धारित समय पर कमांडर श्याम सिंह की पूरी प्लटून ने तीन हिस्सों में चिन्दवीन पार किया।

फौज का यह अकाट्य नियम है कि जाने हुए रास्ते को छोड कर अनजान रास्ते से भरसक नहीं चला जाय। श्याम सिंह के दल को नंदराम और वरियार खा के परखे हुए रास्ते से चल कर जेलियाग नागाओं की बस्ती मे पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं हुई। जेलियांग नागाओ का सहयोग उन्हें चाहिए था, वह मिला। वे तेजी से सप्ताह भर मे ही मनीपुर के पास जेसामी गाव की पहाडियो पर पहुँच गये। वहाँ घनघोर जंगल मे उन्होने अपना केन्द्र स्थापित किया। यहाँ से विभिन्न भेष और रूपों में उन्होंने अपने काम की सरगर्मियाँ शुरू की। पहली सफलता जेसामी से पलेल जाने वाली सडक पर, पलेल की घाटी से लगभग सात मील पहले, एक महत्वपूर्ण पुल को उडा देने की मिली। उस क्षेत्र मे अंगरेजी फौज का यातायात इससे हफ्तो के लिए ठप्प हो गया। अंगरेज भी उतने बेखबर नहीं थे जितने आलसी। भारत जैसे महान देश पर शासन करते-करते गुलाम हिन्दुस्तानियो से काम लेने की उनकी आदत बन गयी थी। अब हिन्दुस्तानी अनुचरों पर भी उनका अविश्वास बढ गया था। पुल उड जाने मे वे बहुत सतर्क हुए। उन्हे उसके सही कारणों का कोई पता नहीं चला।

पलेल के पुल वाली घटना मे सक्रिय भाग लेने वाला एक अलमस्त सिख नौजवान था। उसका नाम था हरि सिंह। उधर पटियाला रियासत की एक सिख पल्टन तैनात थी। हरि सिंह ने कही से उस पल्टन की वर्दी-पगडी लाकर अपने को उनके रूप मे संवार लिया था। यद्यपि वह बहुत सीधा सादा था और लोग उसकी सिधाई का मजाक उड़ाते थे उसकी प्रतिभा कमाडो के काम मे बहुत चमकी। वह हीर तन्मय होकर गाया करता था। एक दिन अपनी सिधाई मे वह इम्फाल बाजार से सौदा-सुलुफ खरीदने के लिए निकल पडा। रास्ते में गोरो की चौकसी की एक चौकी (पिकेट) मिली। गोरे पाँव पसारे अपना सिर धुन रहे थे। गोरों को देखते ही हरि सिंह का खून खौलने लगा। उसने आव देखा न ताव, एक हथगोला चौकी के बीचो बीच निशाना साध कर फेंका। गोला फटा। चौकी के साथ-साथ तीन गोरों की हड्डी पसली उड गयी। तीन गोरे घायल होकर भागे। हरि सिंह ने उनमे से एक की टामी गन छीन कर तीनो को गोलियों से धाराशायी कर दिया। तीन दूसरे गोरे घायल होकर अभी जीवित थे। उन्होंने अपनी बन्दूकें फेंक कर अपने दोनों हाथ आत्मसमर्पण के लिए ऊपर उठा लिए। हरि सिंह आकस्मिक सफलता की तरंग मे था। वह चाहता तो उन तीनो को भी भून डालता। उसने ऐसा किया नहीं। उनसे कड़क कर केवल यह कहा,—"रेंगते-रेंगते भाग जाओ। सीधे लंदन पहुँच

श्याम सिंह के दल को उसी दिन कोहिमा दीमापुर क्षेत्र के लिये प्रस्थान करने का आदेश मिला था। नंदराम और बरियार खाँ के सही सलामत लौट आने के कारण यह प्रस्थान दो दिन के लिए रोक दिया गया। नयी जानकारी की विधिवत विवेचन कर, जापानी उच्च कमांड से परामर्श कर, निर्धारित समय पर कमांडर श्याम सिंह की पूरी प्लटून ने तीन हिस्सों में चिन्दवीन पार किया।

फौज का यह अकाट्य नियम है कि जाने हुए रास्ते को छोड कर अनजान रास्ते से भरसक नहीं चला जाय। श्याम सिंह के दल को नंदराम और बरियार खा के परखे हुए रास्ते से चल कर जेलियाग नागाओं की बस्ती में पहुँचने में कोई कठिनाई नहीं हुई। जेलियांग नागाओं का सहयोग उन्हें चाहिए था, वह मिला। वे तेजी से सप्ताह भर में ही मनीपुर के पास जेसामी गाव की पहाड़ियों पर पहुँच गये। वहाँ घनघोर जंगल में उन्होंने अपना केन्द्र स्थापित किया। यहाँ से विभिन्न भेप और रूपों में उन्होंने अपने काम की सरगर्मियाँ शुरू की। पहली सफलता जेसामी से पलेल जाने वाली सडक पर, पलेल की घाटी से लगभग सात मील पहले, एक महत्वपूर्ण पुल को उडा देने की मिली। उस क्षेत्र में अंगरेजी फौज का यातायात इससे हफ्तों के लिए ठप्प हो गया। अंगरेज भी उतने बेखबर नहीं थे जितने आलसी। भारत जैसे महान देश पर शासन करते-करते गुलाम हिन्दुस्तानियों से काम लेने की उनकी आदत बन गयी थी। अब हिन्दुस्तानी अनुचरो पर भी उनका अविश्वास बढ गया था। पुल उड जाने से वे बहुत सतर्क हुए। उन्हें उसके सही कारणों का कोई पता नहीं चला।

पलेल के पुल वाली घटना में सक्रिय भाग लेने वाला एक अलमस्त सिख नौजवान था। उसका नाम था हरि सिंह। उधर पटियाला रियासत की एक सिख पल्टन तैनात थी। हरि सिंह ने कहीं से उस पल्टन की वर्दी-पगडी लाकर अपने को उनके रूप में संवार लिया था। यद्यपि वह बहुत सीधा सादा था और लोग उसकी सिधाई का मजाक उड़ाते थे उसकी प्रतिभा कमांडो के काम में बहुत चमकी। वह हीर तन्मय होकर गाया करता था। एक दिन अपनी सिधाई में वह इम्फाल बाजार से सौदा-सुलुफ खरीदने के लिए निकल पडा। रास्ते में गोरों की चौकसी की एक चौकी (पिकेट) मिली। गोरे पाँव पसारे अपना सिर धुन रहे थे। गोरों को देखते ही हरि सिंह का खून खौलने लगा। उसने आव देखा न ताव, एक हथगोला चौकी के बीचो बीच निशाना साध कर फेंका। गोला फटा। चौकी के साथ-साथ तीन गोरों की हड्डी पसली उड गयी। तीन गोरे घायल होकर भागे। हरि सिंह ने उनमें से एक की टामी गन छीन कर तीनो को गोलियों से धाराशायी कर दिया। तीन दूसरे गोरे घायल होकर अभी जीवित थे। उन्होंने अपनी बन्दूकें फेंक कर अपने दोनों हाथ आत्मसमर्पण के लिए ऊपर उठा दिए। हरि सिंह आकस्मिक सफलता की तरंग में था। वह चाहता तो उन तीनो को भी भून डालता। उसने ऐसा किया नहीं। उनसे कड़क कर केवल यह कहा,—"रेंगते-रेंगते भाग जाओ। सीधे लंदन पहुँच

खींचा। वे दोनों दूसरों से अलग टैंक की ओर बढ़े। टैंक के चालकों ने पास आने पर उन्हें देखा। उन्होंने उन्हें मित्र समझा। हरि सिंह ने भी उन्हें मुस्कुरा कर देखा। उसका हाथ पैंट की जेब में गया। तब तक सुखोई अंगामी ने एक ग्रेनेड बम्ब टैंक के मुँह में फेंक दिया। वह फूटा। उसके बाद ही दूसरे बम्ब के फूटने की आवाज़ आयी जिसे हरि सिंह ने टैंक की पिटारी पर सीधे मारा था। टैंक की सब आवाज़ बन्द हो गयी और उससे आग की लपटें निकलने लगी। चारो ओर से सुरक्षा सैनिक और नागा नागरिक दौड पडे। उसी रेले-पेले मे हरि सिंह और सुखोयी अंगामी भी हिल-मिल कर खो गये।

टैंक बचाया नही जा सका। उसके चालक स्वाहा हो गये। टैंक वहीं लुढ़क कर एक ओर गिर पडा। आज भी वह टैंक कोहिमा के 'सिमेट्री पर्वत' पर उसी तरह पड़ा है। अंगरेजो ने सच्चाई को छिपाने के उद्देश्य से या अज्ञान से वहा बोर्ड पर लिखा है कि किसी जापानी सैनिक ने उस टैंक को नष्ट किया।

इस घटना से अंगरेजो की सतर्कता नागाओ पर भी तेज़ हो चली। कमांडर श्याम सिंह को अगरेजो की घनघोर तैयारी कि वह हिन्दुस्तान के एक-एक इंच के लिए लड़ेंगे विश्वास हो चला।

श्याम सिंह एक रात बरियार खा से कह रहा था,—"अंगरेजो ने यहाँ पूरे सात डिविजन, लगा रखे हैं। वे बर्मा पर दुबारा चढाई की तैयारी कर रहे है। आक्रमण ही सच्चा बचाव होता है। हिन्दुस्तान को हाथ मे रखने के लिए बर्मा पर दुबारा कब्ज़ा करना अंगरेजो के लिए जरूरी है?"

"हमारा लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा?"—बरियार खां ने आतुर उत्सुकता से पूछा।

"अगर जापानियो ने बरसात के पहले इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया तो अंगरेज ब्रह्मपुत्र के पार दिखायी पड़ेंगे। यहाँ की पूरी हिन्दुस्तानी सेना आज़ाद हिन्द सेना मे जरूर शामिल हो जायेगी। हम दिल्ली चलेंगे।"

"कल महादत्ता को दीमापुर मे मेरिया मिली थी।"—बरियार खा ने चुपके से कहा।

"क्या?"—आश्चर्य से श्याम सिंह भर आया।

"महादत्ता कह रहा था कि वह किसी अग्रेज के सग थी। स्टेशन पर एक मिनट को उसने अलग से उससे 'जय हिन्द' कहा और कहा,—"दिल्ली चलो।"

महादत्ता नेपाली नस्ल का था। उसका परिवार गोहाटी मे कई पीढियो से आ बसा था। वह गुरखा पलटन से कमाडो दल मे चुना गया था। उसकी टुकडी जाफू में अलग से अपना काम कर रही थी।

कमाडर श्याम सिंह ने उस रात के बीतने के पहले दीमापुर के लिए कूच का हुक्म दिया। टुकडियो मे, अलग-अलग, जगल, पहाड, आम रास्तो मे, सब दीमापुर के लिए चल पड़े।

खींचा। वे दोनों दूसरों से अलग टैंक की ओर बढ़े। टैंक के चालकों ने पास आने पर उन्हें देखा। उन्होंने उन्हें मित्र समझा। हरि सिंह ने भी उन्हें मुस्कुरा कर देखा। उसका हाथ पैंट की जेब में गया। तब तक सुखोई अंगामी ने एक ग्रनेड बम्ब टैंक के मुँह में फेंक दिया। वह फूटा। उसके बाद ही दूसरे बम्ब के फूटने की आवाज़ आयी जिसे हरि सिंह ने टैंक की पिटारी पर सीधे मारा था। टैंक की सब आवाज़ बन्द हो गयी और उससे आग की लपटें निकलने लगीं। चारों ओर से सुरक्षा सैनिक और नागा नागरिक दौड़ पड़े। उसी रेले-पेले में हरि सिंह और सुखोयी अंगामी भी हिल-मिल कर खो गये।

टैंक बचाया नहीं जा सका। उसके चालक स्वाहा हो गये। टैंक वहीं लुढ़क कर एक ओर गिर पड़ा। आज भी वह टैंक कोहिमा के 'सिमेट्री पर्वत' पर उसी तरह पड़ा है। अंगरेजों ने सच्चाई को छिपाने के उद्देश्य से या अज्ञान से वहां बोर्ड पर लिखा है कि किसी जापानी सैनिक ने उस टैंक को नष्ट किया।

इस घटना से अंगरेजों की सतर्कता नागाओं पर भी तेज़ हो चली। कमांडर श्याम सिंह को अंगरेजों की घनघोर तैयारी कि वह हिन्दुस्तान के एक-एक इंच के लिए लड़ेंगे विश्वास हो चला।

श्याम सिंह एक रात बरियार खां से कह रहा था,—"अंगरेजों ने यहाँ पूरे सात डिविजन, लगा रखे हैं। वे बर्मा पर दुबारा चढ़ाई की तैयारी कर रहे हैं। आक्रमण ही सच्चा बचाव होता है। हिन्दुस्तान को हाथ में रखने के लिए बर्मा पर दुबारा कब्ज़ा करना अंगरेजों के लिए जरूरी है?"

"हमारा लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा?"—बरियार खां ने आतुर उत्सुकता से पूछा।

"अगर जापानियों ने बरसात के पहले इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया तो अंगरेज ब्रह्मपुत्र के पार दिखायी पड़ेंगे। यहाँ की पूरी हिन्दुस्तानी सेना आज़ाद हिन्द सेना में जरूर शामिल हो जायेगी। हम दिल्ली चलेंगे।"

"कल महादत्ता को दीमापुर में मेरिया मिली थी।"—बरियार खां ने चुपके से कहा।

"क्या?"—आश्चर्य से श्याम सिंह भर आया।

"महादत्ता कह रहा था कि वह किसी अंग्रेज के संग थी। स्टेशन पर एक मिनट को उसने अलग से उससे 'जय हिन्द' कहा और कहा,—"दिल्ली चलो।"

महादत्ता नेपाली नस्ल का था। उसका परिवार गोहाटी में कई पीढ़ियों से आ बसा था। वह गुरखा पलटन से कमांडो दल में चुना गया था। उसकी टुकड़ी जाफू में अलग से अपना काम कर रही थी।

कमांडर श्याम सिंह ने उस रात के बीतने के पहले दीमापुर के लिए कूच का हुक्म दिया। टुकड़ियों में, अलग-अलग, जंगल, पहाड़, आम रास्तों में, सब दीमापुर के लिए चल पड़े।

अंगरेजी फौजों की रणनीति और सुरक्षा पर सीमांत के इतने अन्दर यह सबसे कड़ा प्रहार था। अंगरेजों ने श्याम सिंह के दल को घेरने के लिए सरगर्मी से उनका पीछा किया। श्याम सिंह का दल नागाओं के सहयोग से जंगल पहाडो के छिपे रास्तों से चिन्दवीन पार कर गया। उनका बाल भी बाका नही हुआ। उनके दल ने जानकारी इकट्ठा करने में आदर्श काम किया। ज्ञान जीवन के क्षेत्र की तरह युद्ध में भी सफलता की कुंजी है। इसीलिए ज्ञान को सभी विचारकों ने शक्ति का पर्याय बताया है।

•

अंगरेजी फौजों की रणनीति और सुरक्षा पर सीमात के इतने अन्दर यह सबसे कड़ा प्रहार था। अंगरेजों ने श्याम सिंह के दल को घेरने के लिए सरगर्मी से उनका पीछा किया। श्याम सिंह का दल नागाओं के सहयोग से जंगल पहाडो के छिपे रास्तो से चिन्दवीन पार कर गया। उनका वाल भी वाका नही हुआ। उनके दल ने जानकारी इकट्ठा करने में आदर्श काम किया। ज्ञान जीवन के क्षेत्र की तरह युद्ध में भी सफलता की कुंजी है। इसीलिए ज्ञान को सभी विचारकों ने शक्ति का पर्याय बताया है।

●

बताया।

सुकवि विदीर्ण से भी एक दिन जेनरल ने स्वयं कहा,—"यह कमलेश कहीं क्रान्तिकारियों की गुप्तचर तो नहीं ? तुम सही-सही पता लगा कर जल्दी बताओ।"

सुकवि ने इसका प्रतिरोध किया, इस सन्देह को बे बुनियाद बताया और जोश में कहा, —"मैं सच-झूठ का पता लगा कर रहूँगा।"

हार्थोर्न यही चाहता था। विदीर्ण को वह पूरा बुद्धिहीन समझता था। उसका काम, उसकी बोल-चाल, उसका आचरण, साधारण बुद्धिहीन जैसा भी उसे कभी नहीं लगा था। लड़ाई अगर इतनी भीषण न होती तो वह ऐसे आदमी को सेना में एक क्षण भी नहीं टिकने देता। उसने विदीर्ण से गम्भीर स्वर में कहा, —"जल्दी से जल्दी पता लगाओ और सबूत प्रस्तुत करो। अगर असफल रहे तो नतीजा कल्पनातीत होगा।"

विदीर्ण काँप उठा—पता लगाने की बात से नहीं, असफलता के नतीजे का अनुमान कर। वह कमलेश के प्रेम में पड़ चुका था। उसके साथ अपना घर-संसार बसाना चाहता था। उसने पहली ही भेंट में कमलेश को बाँहों में भर आँखों से नीर बहाते हुए कहा, —"यह हार्थोर्न बबूल का पक्का काँटा है। नाक में दम किये रहता है ?"

"क्या हुआ ?" —कमलेश ने कवि जी को दुलराते हुए पूछा।

"उसका ख्याल है कि मैं संसार का सबसे बड़ा जासूस हूँ। हमेशा नयी खबरों को जानना चाहता है। सुभाष बाबू के सम्पर्की, समर्थकों का मुझसे पता पूछता है। सब पर, मुझ पर, तुम पर, सन्देह की दृष्टि रखता है। ऐसे कब तक चलेगा ?"

कमलेश कविवर की आखिरी उक्ति पर सोच रही थी। अंगरेजों का सन्देह न उभड़ता तभी आश्चर्य होता। वह सन्देह किस हद तक उभड़ा है, यह जानना जरूरी था। कमलेश ने कवि जी की आँखों में आँखें डालकर कहा,—"क्या हार्थोर्न के बच्चे को यह नहीं मालूम कि सारा देश सुभाष बाबू का सम्पर्क है ?"

"अंगरेज बड़ी मक्कार कौम है। वह क्या जानती है क्या नहीं, इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। वह तो अब अंगरेज भर्ती के लिए शेष नहीं रहे इस-लिए हिन्दुस्तानियों की भर्ती हो रही है।"

"हिन्दुस्तानी दनादन फौज में भर्ती किए जा रहे हैं ?"

"अब बहुत ठोक बजाकर लिए जा रहे हैं। हिन्दुस्तानी जरूर भर्ती के लिए लाइनों में भीड़ लगाये रहते हैं। बंगाल का अकाल उन्हें खा गया। जो बचे हैं उन्हें अंगरेज खा जायेगा।"

कवि जी ने सहसा अपनी जीभ को मरोड़ लिया। वे जाने क्या कह बैठें ? दीवालों के भी कान होते हैं।

कमलेश की जीभ नहीं ऐंठी। उसने कहा,—"हिन्दुस्तानी खून अंगरेजों के पेट से रक्तबीज बन कर निकलेंगे। उनको चबा डालेंगे।"

बताया।

सुकवि विदीर्ण से भी एक दिन जेनरल ने स्वयं कहा,—"यह कमलेश कहीं क्रान्तिकारियों की गुप्तचर तो नहीं ? तुम सही-सही पता लगा कर जल्दी बताओ।"

सुकवि ने इसका प्रतिरोध किया, इस सन्देह को वे बुनियाद बताया और जोश में कहा, —"मैं सच-झूठ का पता लगा कर रहूँगा।"

हाथौर्न यही चाहता था। विदीर्ण को वह पूरा बुद्धिहीन समझता था। उसका काम, उसकी बोल-चाल, उसका आचरण, साधारण बुद्धिहीन जैसा भी उसे कभी नहीं लगा था। लड़ाई अगर इतनी भीषण न होती तो वह ऐसे आदमी को सेना में एक क्षण भी नहीं टिकने देता। उसने विदीर्ण से गम्भीर स्वर में कहा, —"जल्दी से जल्दी पता लगाओ और सबूत प्रस्तुत करो। अगर असफल रहे तो नतीजा कल्पनातीत होगा।"

विदीर्ण कॉप उठा—पता लगाने की बात से नहीं, असफलता के नतीजे का अनुमान कर। वह कमलेश के प्रेम में पड़ चुका था। उसके साथ अपना घर-संसार बसाना चाहता था। उसने पहली ही भेंट में कमलेश को बाँहों में भर आँखों से नीर बहाते हुए कहा,—"यह हाथौर्न बबूल का पक्का काँटा है। नाक में दम किये रहता है ?"

"क्या हुआ ?"—कमलेश ने कवि जी को दुलराते हुए पूछा।

"उसका ख्याल है कि मैं संसार का सबसे बड़ा जासूस हूँ। हमेशा नयी खबरों को जानना चाहता है। सुभाष बाबू के सम्पर्कों, समर्थकों का मुझसे पता पूछता है। सब पर, मुझ पर, तुम पर, सन्देह की दृष्टि रखता है। ऐसे कब तक चलेगा ?"

कमलेश कविवर की आखिरी उक्ति पर सोच रही थी। अंगरेजों का सन्देह न उभड़ता तभी आश्चर्य होता। वह सन्देह किस हद तक उभड़ा है, यह जानना जरूरी था। कमलेश ने कवि जी की आँखों में आँखें डालकर कहा,—"क्या हाथौर्न के बच्चे को यह नहीं मालूम कि सारा देश सुभाष बाबू का सम्पर्क है ?"

"अंगरेज बड़ी मक्कार कौम है। वह क्या जानती है क्या नहीं, इस बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। वह तो अब अंगरेज भर्ती के लिए शेष नहीं रहे इसलिए हिन्दुस्तानियों की भर्ती हो रही है।"

"हिन्दुस्तानी दनादन फौज में भर्ती किए जा रहे हैं ?"

"अब बहुत ठोक बजाकर लिए जा रहे हैं। हिन्दुस्तानी जरूर भर्ती के लिए लाइनों में भीड़ लगाये रहते हैं। बंगाल का अकाल उन्हें खा गया। जो बचे हैं उन्हें अंगरेज खा जायेगा।"

कवि जी ने सहसा अपनी जीभ को मरोड़ लिया। वे जाने क्या कह बैठें ? दीवालों के भी कान होते हैं।

कमलेश की जीभ नहीं ऐंठी। उसने कहा,—"हिन्दुस्तानी खून अंगरेजों के पेट से रक्तबीज बन कर निकलेंगे। उनको चबा डालेंगे।"

—"इस बांगड़ से कैसे लस गयीं।"

"जीवन की धारा है। जाने किस घाट लग जाय।" कमलेश गम्भीर थी।

कुमारी सिमली चकित हुई। बोली,—"आप जैसी अनुभवी और दूरदर्शी नारी का प्रवाह घाटों को पार कर कल-कल करता रहना चाहिए। इस क्षण भंगुर जीवन में एक घाट पर रुक जाने का कोई मोल नही।"

"भारतीय ललनायें देवी होती हैं।"

"पुरुष की यह चाल है। हमे देवी बनाकर उसने हमारा मुंह सी दिया है। वह देवता क्यो नही बनता? अपने को बड़ा तीसमार खा लगता है। मैं उससे इक्कीस नही तो उन्नीस क्यों रहूँ? तुम्हारे विदीर्ण जी कलकत्ता मे अपनी किसी गंधर्व सम्बन्ध की पत्नी के साथ मुझसे मिले थे।"

कमलेश चौंकी। तब तक मेजर सिंह आ गये। गौर वर्ण देदीप्यमान चेहरा, राजपुरुषों-सा प्रस्फुटित व्यक्तित्व, नंगे पाँव, लाल पीताम्बर और उसी रंग के अंग वस्त्र मे भव्य लग रहे थे। उन्होंने हाथ मे लाये पूजा के फूलों को सिमली पर छिड़का और कोई मन्त्रोच्चार किया।

कमलेश कुमारी सिमली को नमस्कार कर सुकवि के पास आयी। सुकवि के चेहरे पर उसने छिपी आँखें गड़ायी। सुकवि पर वह मन हार बैठी थी। दूसरा कौन उससे गंधर्व या कोर्ट विवाह करेगा? वह मन ही मन मुस्कुरायी कि सुकवि को किसी ने जाने किस लिए उल्लू बनाया। सुकवि को इस विराट संसार मे कोई भी नारी फूटी आँखों से भी नही देख सकेगी।

उस रात सुकवि कमलेश के निवास पर ही रहे। कमलेश दल के साथ पाण्डु घाट सांस्कृतिक आयोजन मे चली गयी। कवि जी का मन भारी था। वह पास के सैनिक कैन्टीन में गये। वहां से रम का पौवा खरीद लाये। मन को हल्का करने के लिए रम मे जुटे। रम का पहला ही घूंट पेट मे पहुँचा था कि बिजली गुल हो गयी। वह मोमबत्ती ढूंढने लगे। ढूंढते-ढूंढते उनका हाथ अचानक कमलेश की अटैची को खोल बैठा। उसमे कपड़ो के तह के नीचे एक भारी लिफाफे पर उनका हाथ पड़ा। शायद कमलेश के प्रेम-पत्र हो सोच कर उन्होने लिफाफा निकाल लिया। बिजली जैसे गयी थी वैसे ही आ गयी। कवि जी लिफाफा को खोल पत्रो को पढने लगे।

चिट्ठियां संकेत लिपि में थी। उन पर नक्शे सी टेढी-मेढी लकीरें बनी थी। क्या कमलेश को किसी गुप्त खजाने का कोई पुराना बीजक मिल गया है? एक साधारण चिट्ठी थी। वह उसे पढ़ सके। उसमे कुशल क्षेम के अलावा कुछ नहीं था। उन चिट्ठियों से यह भी नही प्रकट होता था कि किसने उन्हे किसको भेजी। कवि जी को एकाएक नयी सूझ आ गयी। उन चिट्ठियो मे बीजक नहीं क्रान्तिकारी विद्रोहियो के संकेत भाषा मे सन्देश हैं। हार्यौने का चेहरा उनकी आँखो मे आ समाया। वह चेहरा मुस्कुरा कर कह रहा था कमलेश का क्रान्तिकारी विद्रोहियों से

—"इस बांगड़ू से कैसे लस गयीं।"

"जीवन की धारा है। जाने किस घाट लग जाय।" कमलेश गम्भीर थी।

कुमारी सिमली चकित हुई। बोली,—"आप जैसी अनुभवी और दूरदर्शी नारी का प्रवाह घाटों को पार कर कल-कल करता रहना चाहिए। इस क्षण भंगुर जीवन में एक घाट पर रुक जाने का कोई मोल नहीं।"

"भारतीय ललनायें देवी होती हैं।"

"पुरुष की यह चाल है। हमें देवी बनाकर उसने हमारा मुंह सी दिया है। वह देवता क्यों नहीं बनता? अपने को बड़ा तीसमार खां लगता है। मैं उससे इक्कीस नहीं तो उन्नीस क्यों रहूँ? तुम्हारे विदीर्ण जी कलकत्ता में अपनी किसी गंधर्व सम्बन्ध की पत्नी के साथ मुझसे मिले थे।"

कमलेश चौंकी। तब तक मेजर सिंह आ गये। गौर वर्ण देदीप्यमान चेहरा, राजपुरुषों-सा प्रस्फुटित व्यक्तित्व, नंगे पाँव, लाल पीताम्बर और उसी रंग के अंग वस्त्र में भव्य लग रहे थे। उन्होंने हाथ में लाये पूजा के फूलों को सिमली पर छिड़का और कोई मन्त्रोच्चार किया।

कमलेश कुमारी सिमली को नमस्कार कर सुकवि के पास आयी। सुकवि के चेहरे पर उसने छिपी आँखें गड़ायीं। सुकवि पर वह मन हार बैठी थी। दूसरा कौन उससे गंधर्व या कोर्ट विवाह करेगा? वह मन ही मन मुस्कुरायी कि सुकवि को किसी ने जाने किस लिए उल्लू बनाया। सुकवि को इस विराट संसार में कोई भी नारी फूटी आँखों से भी नहीं देख सकेगी।

उस रात सुकवि कमलेश के निवास पर ही रहे। कमलेश दल के साथ पाण्डु घाट सांस्कृतिक आयोजन में चली गयी। कवि जी का मन भारी था। वह पास के सैनिक कैन्टीन में गये। वहां से रम का पौवा खरीद लाये। मन को हल्का करने के लिए रम में जुटे। रम का पहला ही घूंट पेट में पहुँचा था कि बिजली गुल हो गयी। वह मोमबत्ती ढूँढने लगे। ढूंढते-ढूंढते उनका हाथ अचानक कमलेश की अटैची को खोल बैठा। उसमें कपड़ों के तह के नीचे एक भारी लिफाफे पर उनका हाथ पड़ा। शायद कमलेश के प्रेम-पत्र हों सोच कर उन्होंने लिफाफा निकाल लिया। बिजली जैसे गयी थी वैसे ही आ गयी। कवि जी लिफाफा को खोल पत्रों को पढ़ने लगे।

चिट्ठियां संकेत लिपि में थीं। उन पर नक्शे सी टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें बनी थीं। क्या कमलेश को किसी गुप्त खजाने का कोई पुराना बीजक मिल गया है? एक साधारण चिट्ठी थी। वह उसे पढ़ सके। उसमें कुशल क्षेम के अलावा कुछ नहीं था। उन चिट्ठियों से यह भी नहीं प्रकट होता था कि किसने उन्हें किसको भेजी। कवि जी को एकाएक नयी सूझ आ गयी। उन चिट्ठियों में बीजक नहीं क्रान्तिकारी विद्रोहियों के संकेत भाषा में सन्देश हैं। हायौनें का चेहरा उनकी आँखों में आ समाया। वह चेहरा मुस्कुरा कर कह रहा था कमलेश का क्रान्तिकारी विद्रोहियों से

के साथ उन्हें रंगिया जाने का हुक्म मिला। वे कमलेश से मिल आये, राजरानी बनाने का वादा कर आये और सीधे रंगिया की लारी में बैठ रवाना हो गये।

कमलेश के दल के दीसपुर और शिलांग मे प्रदर्शन करने का जब कार्यक्रम बना तब उसे दीदी के पत्र की याद आई। उसने एटैची मे पुलिन्दे को जांचा। उसका दिल धक् हो गया—पुलिन्दा अटैची से गायब था। सहसा उसे सुकवि के राजरानी बनाने का ध्यान आया। हो न हो उसी ने उस पुलिन्दे को चुराया है। क्या विदीर्ण इतना अधम हो सकता है ? उसका हृदय विदीर्ण के प्रति पहली बार उत्कट घृणा से भर आया।

वह पहली बस से शिलांग गयी। वहाँ उसने सुहृद बाबू के शोध संस्थान को ढूंढ निकाला। सुहृद बाबू से उसने सारी बात और अपनी शका बतायी। सुहृद बाबू ने उसे आश्वस्त कराते हुए कहा,—"पत्र मे जो कुछ था वह दूसरे साधन द्वारा सही गन्तव्य पर पहुँचा दिया गया है। हमे उस गद्दार नराधम को ऐसा सबक सिखाना चाहिए जो दूसरों के लिए उदाहरण बने। गद्दार ही देश को ले डूबते हैं। वे गिरगिट हैं, उन पर कोई दया नही करनी चाहिए।"

सुकवि सूखे पत्ते की तरह कमलेश के मन से पहले ही गिर चुके थे। उसने अपना दाहिना हाथ छाती पर रख कर मन ही मन गद्दार नराधम को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा की।

सुहृद बाबू के विद्यार्थी सारे उत्तर पूर्वी भारत मे ही नही दूर-दूर तक बिखरे थे। उनके विद्यार्थियो मे बडे-बडे क्रान्तिकारी, प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी भी थे। उन्ही के एक विद्यार्थी ने बम बना कर चटगाँव का शस्त्रागार लूटा था। पूर्वी बगाल मे उन्होने अनुशीलन पार्टी का पुनरुद्धार कर क्रान्तिकारियों का सुदृढ़ संगठन तैयार किया था जो अगरेजो की खुफिया विभाग पर काल की तरह छाया था।

दीमापुर का सुग्रीव चोपड़ा उनका विद्यार्थी रह चुका था। सुग्रीव चोपड़ा के पिता पंजाब के किसी गाँव से आकर दीमापुर मे लकडी का कारबार शुरू किये। अब वहाँ उनका बडा कारखाना था और वे दीमापुर के सुप्रसिद्ध रईस व्यवसायी थे। सुदर्शन सन् पैंतीस में सुहृद बाबू की सिपारिस से ऊँची शिक्षा के लिए लीडस्, इंगलैंड, चला गया था। वहाँ उसकी शिक्षा समाप्त ही हुई थी कि लड़ाई छिड़ गयी। अपने साथियो के सग वह इंजीनीयरिंग फौज मे भर्ती हो गया। अपनी पल्टन के संग वह मलाया मे था जब अंगरेजो ने मलाया में बिना लड़े आत्म-समर्पण कर दिया। उसके बाद बहुत दिनो तक वह अपनी गोरी पल्टन के साथ युद्ध बन्दी शिविर मे रहा। आज वह शिलाग क्लब की रंगीन भीड़ मे वारंट आफिसर की पोशाक दिखायी पड़ा।

के साथ उन्हें रंगिया जाने का हुक्म मिला। वे कमलेश से मिल आये, राजरानी बनाने का वादा कर आये और सीधे रंगिया की लारी में बैठ रवाना हो गये।

कमलेश के दल के दीमपुर और शिलांग मे प्रदर्शन करने का जब कार्यक्रम बना तब उसे दीदी के पत्र की याद आई। उसने एटैची मे पुलिन्दे को जांचा। उसका दिल धक् हो गया—पुलिन्दा अटैची से गायब था। सहसा उसे सुकवि के राजरानी बनाने का ध्यान आया। हो न हो उसी ने उस पुलिन्दे को चुराया है। क्या विदीर्ण इतना अधम हो सकता है? उसका हृदय विदीर्ण के प्रति पहली बार उत्कट घृणा से भर आया।

वह पहली बस से शिलांग गयी। वहाँ उसने सुहृद बाबू के शोध संस्थान को ढूंढ निकाला। सुहृद बाबू से उसने सारी बात और अपनी शंका बतायी। सुहृद बाबू ने उसे आश्वस्त कराते हुए कहा,—"पत्र मे जो कुछ था वह दूसरे साधन द्वारा सही गन्तव्य पर पहुँचा दिया गया है। हमे उस गद्दार नराधम को ऐसा सबक सिखाना चाहिए जो दूसरों के लिए उदाहरण बने। गद्दार ही देश को ले डूबते हैं। वे गिरगिट हैं, उन पर कोई दया नही करनी चाहिए।"

सुकवि सूखे पत्ते की तरह कमलेश के मन से पहले ही गिर चुके थे। उसने अपना दाहिना हाथ छाती पर रख कर मन ही मन गद्दार नराधम को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा की।

सुहृद बाबू के विद्यार्थी सारे उत्तर पूर्वी भारत मे ही नही दूर-दूर तक बिखरे थे। उनके विद्यार्थियो मे बडे-बडे क्रान्तिकारी, प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी भी थे। उन्ही के एक विद्यार्थी ने बम बना कर चटगाँव का शस्त्रागार लूटा था। पूर्वी बंगाल मे उन्होने अनुशीलन पार्टी का पुनरुद्धार कर क्रान्तिकारियों का सुदृढ़ संगठन तैयार किया था जो अंगरेजो की खुफिया विभाग पर काल की तरह छाया था।

दीमापुर का सुग्रीव चोपड़ा उनका विद्यार्थी रह चुका था। सुग्रीव चोपड़ा के पिता पंजाब के किसी गाँव से आकर दीमापुर मे लकडी का कारबार शुरू किये। अब वहाँ उनका बडा कारखाना था और वे दीमापुर के सुप्रसिद्ध रईस व्यवसायी थे। सुदर्शन सन् पैंतीस में सुहृद बाबू की सिफारिस से ऊँची शिक्षा के लिए लीड्स, इंगलैंड, चला गया था। वहाँ उसकी शिक्षा समाप्त ही हुई थी कि लड़ाई छिड़ गयी। अपने साथियो के संग वह इंजीनीयरिंग फौज मे भर्ती हो गया। अपनी पल्टन के संग वह मलाया मे था जब अंगरेजो ने मलाया में बिना लड़े आत्म-समर्पण कर दिया। उसके बाद बहुत दिनो तक वह अपनी गोरी पल्टन के साथ युद्ध बन्दी शिविर मे रहा। आज वह शिलांग क्लब की रंगीन भीड़ मे वारंट आफिसर की पोश दिखायी पड़ा।

ताश वाले कमरे मे 'ब्रिज' खेलने चले गये।

दूसरे दिन सवेरे-सवेरे चोपड़ा सुहृद बाबू के घर पहुँचा। वह अपने चमन में टहल रहे थे। चोपड़ा आसामी रेशम की कमीज और धोती मे था। उसने कल के व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और कहा,—"स्लिम की फौजो का केन्द्रीय सप्लाई डिपो मैं जान नहीं पाया।"

"मुख्य डिपो कटिहार से पन्द्रह मील उत्तर शालवन मे है। वह जमीन के नीचे नये निर्मित पत्थर के तहखानों मे है। उसकी सुरक्षा बहुत ही कडी है। वह ब्रह्मपुत्र के उस ओर है। इस पार का डिपो तिनसुखिया के पास मरियांव में है।"

"अब तो स्लिम पर ही दारमदार है ?" चोपड़ा ने पूछा।

"हाँ—अंगरेज अमेरिकनो को हिन्दुस्तान की सुरक्षा सौप चुके हैं।"

"परसो नेपाल जाना जरूरी है। घर समाचार भेज दीजियेगा।"

सुहृद बाबू ने उसे प्रेम से चाय पिलायां, नास्ता कराया। चाय पर सुहृद बाबू ने पूछा,—"तुम क्या इंगलैंड से सीधे यही आये ?"

"मैं पनडुब्बी मे पिनाग से मद्रास पहुँचा। अब पुरानी इंजीनीयरिंग पल्टन का हो गया हूँ।" सुहृद बाबू मुस्कुराये नही, गम्भीर भाव से उन्होने पूछा,—"कैसा लगा ?"

"अमेरिकन फौजो से संघर्ष कडा होगा। ब्रह्मपुत्र तक आने मे फिर भी आजाद हिन्द फौज सफल होगी। यहाँ की सेना साथ देगी। स्वदेश के लिए इससे बड़ा अवसर फिर कभी हाथ नही आयेगा।"

"जापानियो से तो खतरा नही ?"—सुहृद बाबू ने पूछा।

"सर्, आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च कमांडर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस हैं। उनसे जापानी प्रधान मंत्री भी दबा रहता है।"

चाय समाप्त हो रही थी। सुहृद बाबू ने आखिरी सवाल पूछा,—"सुना कि राघवन ने जर्मनी से आकर कमाण्डो दल को प्रशिक्षित किया है।"

"आपकी छाया मे क्रान्ति का हथियार बनाना सीखा, उनसे दुश्मन के पीछे जाकर उन्हें नष्ट करना सीखा है। इसी काम मे दल क्या सभी लगे है। विगेट का हम कही पता नही चलने देंगे।"

चोपडा उठ खडा हुआ। सच्ची श्रद्धा मे उसने सुहृद बाबू को प्रणाम किया और चलता बना।

उसका नेपाल जाना नही हो सका। उसे चटगाँव के लिए तत्काल रवाना होना पडा। आजाद हिन्द फौज के अग्रिम दस्ते को अराकान की पहाडियो मे अंगरेजों को हार पर हार खिलाने मे अभूतपूर्व सफलता मिली थी। अराकान क्षेत्र पर पीछे से भी आक्रमण कराना था। अंगरेज फौजें सीमान्त छोड आयी थी। पीछे भागने का उनका रास्ता काटना था।

ताश वाले कमरे में 'ब्रिज' खेलने चले गये।

दूसरे दिन सवेरे-सवेरे चोपड़ा सुहृद बाबू के घर पहुँचा। वह अपने चमन में टहल रहे थे। चोपड़ा आसामी रेशम की कमीज और धोती में था। उसने कल के व्यवहार के लिए क्षमा माँगी और कहा,—"स्लिम की फौजों का केन्द्रीय सप्लाई डिपो मैं जान नहीं पाया।"

"मुख्य डिपो कटिहार से पन्द्रह मील उत्तर शालवन में है। वह जमीन के नीचे नये निर्मित पत्थर के तहखानों में है। उसकी सुरक्षा बहुत ही कड़ी है। वह ब्रह्मपुत्र के उस ओर है। इस पार का डिपो तिनसुखिया के पास मरियांव में है।"

"अब तो स्लिम पर ही दारमदार है?" चोपड़ा ने पूछा।

"हाँ—अंगरेज अमेरिकनों को हिन्दुस्तान की सुरक्षा सौंप चुके हैं।"

"परसों नेपाल जाना जरूरी है। घर समाचार भेज दीजियेगा।"

सुहृद बाबू ने उसे प्रेम से चाय पिलायी, नाश्ता कराया। चाय पर सुहृद बाबू ने पूछा,—"तुम क्या इंगलैंड से सीधे यहीं आये?"

"मैं पनडुब्बी में पिनांग से मद्रास पहुँचा। अब पुरानी इंजीनीयरिंग पल्टन का हो गया हूँ।" सुहृद बाबू मुस्कुराये नहीं, गम्भीर भाव से उन्होंने पूछा,—"कैसा लगा?"

"अमेरिकन फौजों से संघर्ष कड़ा होगा। ब्रह्मपुत्र तक आने में फिर भी आजाद हिन्द फौज सफल होगी। यहाँ की सेना साथ देगी। स्वदेश के लिए इससे बड़ा अवसर फिर कभी हाथ नहीं आयेगा।"

"जापानियों से तो खतरा नहीं?"—सुहृद बाबू ने पूछा।

"सर, आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च कमांडर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस हैं। उनसे जापानी प्रधान मंत्री भी दबा रहता है।"

चाय समाप्त हो रही थी। सुहृद बाबू ने आखिरी सवाल पूछा,—"सुना कि राघवन ने जर्मनी से आकर कमाण्डो दल को प्रशिक्षित किया है।"

"आपकी छाया में क्रान्ति का हथियार बनाना सीखा, उनसे दुश्मन के पीछे जाकर उन्हें नष्ट करना सीखा है। इसी काम में दल क्या सभी लगे हैं। विंगेट का हम कहीं पता नहीं चलने देंगे।"

चोपड़ा उठ खड़ा हुआ। सच्ची श्रद्धा से उसने सुहृद बाबू को प्रणाम किया और चलता बना।

उसका नेपाल जाना नहीं हो सका। उसे चटगाँव के लिए तत्काल रवाना होना पड़ा। आजाद हिन्द फौज के अग्रिम दस्ते को अराकान की पहाड़ियों में अंगरेजों को हार पर हार खिलाने में अभूतपूर्व सफलता मिली थी। अराकान क्षेत्र पर पीछे से भी आक्रमण कराना था। अंगरेज फौजें सीमान्त छोड़ आयी थीं। पीछे भागने का उनका रास्ता काटना था।

चकला चल रहा है और आप लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं ?"

"सभी देख रहे हैं, हमीं क्या ?"—कह कर वह बड़े बेहूदे ढंग से मुस्कुराया। चोपड़ा की आँखों में खून तैर आया। ऐसे अधम रक्षक या अधीक्षक को इंग्लैंड आदि देशों में जन साधारण स्वयं ब्रह्मपुत्र में डुबो देता या रेल की पटरी पर चलते इंजिन के नीचे डाल देता। यहाँ सब गोरे-देशी, अच्छे-बुरे—तमाशा देख रहे थे। वह अकेले कर ही क्या सकता था ?

पास ही अधेड़ उम्र के कोई भद्र सज्जन मन मारे खड़े थे। उन्होंने चोपड़ा को लक्ष्य कर कहा,—"यहाँ सुहरावर्दी की लीगी सरकार है। वह मुसलमानों के लिए है, हिन्दू काफिरों के लिए नहीं।"

चोपड़ा मूक हो गया। हिन्दू-मुसलिम भेद-भाव का विष अंगरेजों ने देश में ऐसे फैलाया है। मगर सूबाई सरकार निष्क्रिय है तो केन्द्र को क्या हुआ है ? क्या अंगरेज अपने देश में इसका शतांश भी सह पाते ? क्या अकाल भी उनकी रणनीति है ?

चोपड़ा रेलवे स्टेशन पर पहुँचा। प्लेट फार्म के दायें-बायें दूर तक मुर्दों की कतारें पड़ी थीं जिनकी साँसें चल रही थीं। कितनों के बदन पर घाव सड़ रहे थे। उन पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। कोई उन्हें पूछने वाला नहीं था। कहीं उनके लिए शरण नहीं थी। ऐसे लोमहर्षक दृश्य में उसकी आँखें खुली नहीं रह सकीं। वह सामने खड़ी रेल के एक डब्बे में चढ़ गया। अभी बैठा ही था कि एक आदमी ने आकर कहा,—"घाट के पास जो भद्र सज्जन आपसे बात कर रहे थे उनकी कमल सी कोमल बड़ी-बड़ी आँखों वाली लड़की है। दो सौ में उसे बेचना चाहते हैं।"

चोपड़ा के दिमाग को लकवा मार गया। तब तक उस आदमी ने आगे कहा,—"आप भले लोग हैं। आप सौ ही दे दें। वह आपकी दासी रहेगी। उसे न बचाया गया तो पुलिस वाले उसे किसी कसाई के हाथ जिबह के लिए दे देंगे।"

चोपड़ा का कलेजा गले से बाहर आ निकला। पूरे जोर से फौजी लहजे में वह चिल्लाया,—"भाग जाओ।" कड़कती आवाज पर वह आदमी भागा। चोपड़ा मुँह ढँक कर अधलेटा हो गया। वह मन ही मन बिलखने लगा।

कब ट्रेन धुबड़ी से रवाना हुई यह उसे पता ही नहीं चला। सारे दिन चोपड़ा ने किसी स्टेशन पर अपनी आँखें नहीं खोलीं। सब जगह वैसे ही वीभत्स दृश्य थे। किन्हीं-किन्हीं स्टेशनों पर अभद्रता की हद थी। गोरे और देशी सैनिक भी युवतियों के अधनंगे अंगों को छेड़-छेड़ अपनी नीचता प्रकट कर रहे थे। युवतियाँ मछली या खाने का टिन या एक-दो रुपये पर किसी पेड़ के नीचे किसी सैनिक से लिपट रही थीं।

अकाल पड़ते हैं। अंगरेजी सरकार काले बाजारिये व्यापारियों से साठ-गाँठ कर इतनी अधम जघन्यता पर तुल जायेगी—इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यह पाप पलट कर उन सरकारी और गैर सरकारी श्रीमानों को जरूर नरक

चकला चल रहा है और आप लोग खड़े तमाशा देख रहे हैं ?"

"सभी देख रहे हैं, हमीं क्या ?"—कह कर वह बड़े बेहूदे ढंग में मुस्कराया। चोपड़ा की आँखों में खून तैर आया। ऐसे अधम रक्षक या अधीक्षक को इंग्लैंड आदि देशों में जन साधारण स्वयं ब्रह्मपुत्र में डुबो देता या रेल की पटरी पर चलते इंजिन के नीचे डाल देता। यहाँ सब गोरे-देशी, अच्छे-बुरे—तमाशा देख रहे थे। वह अकेले कर ही क्या सकता था ?

पास ही अधेड़ उम्र के कोई भद्र सज्जन मन मारे खड़े थे। उन्होंने चोपड़ा को लक्ष्य कर कहा,—"यहाँ सुहरावर्दी की लीगी सरकार है। वह मुसलमानों के लिए है, हिन्दू काफिरों के लिए नहीं।"

चोपड़ा मुग्ध हो गया। हिन्दू-मुसलिम भेद-भाव का विष अंगरेजों ने देश में ऐसे फैलाया है। मगर सूबाई सरकार निष्क्रिय है तो केन्द्र को क्या हुआ है ? क्या अंगरेज अपने देश में इसका शतांश भी सह पाते ? क्या अकाल भी उनकी रणनीति है ?

चोपड़ा रेलवे स्टेशन पर पहुँचा। प्लेट फार्म के दायें-बायें दूर तक मुर्दों की कतारें पड़ी थीं जिनकी साँसें चल रही थीं। कितनों के बदन पर घाव सड़ रहे थे। उन पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। कोई उन्हें पूछने वाला नहीं था। कहीं उनके लिए शरण नहीं थी। ऐसे लोमहर्षक दृश्य में उसकी आँखें खुली नहीं रह सकीं। वह सामने खड़ी रेल के एक डब्बे में चढ़ गया। अभी बैठा ही था कि एक आदमी ने आकर कहा,—"घाट के पास जो भद्र सज्जन आपसे बात कर रहे थे उनकी कमल सी कोमल बड़ी-बड़ी आँखों वाली लड़की है। दो सौ में उसे बेचना चाहते हैं।"

चोपड़ा के दिमाग को लकवा मार गया। तब तक उस आदमी ने आगे कहा,—"आप भले लोग हैं। आप सौ ही दे दें। वह आपकी दासी रहेगी। उसे न बचाया गया तो पुलिस वाले उसे किसी कसाई के हाथ जिबह के लिए दे देंगे।"

चोपड़ा का कलेजा गले से बाहर आ निकला। पूरे जोर से फौजी लहजे में वह चिल्लाया,—"भाग जाओ।" कड़कती आवाज पर वह आदमी भागा। चोपड़ा मुँह ढँक कर अधलेटा हो गया। वह मन ही मन बिलखने लगा।

कब ट्रेन धुबड़ी से रवाना हुई यह उसे पता ही नहीं चला। सारे दिन चोपड़ा ने किसी स्टेशन पर अपनी आँखें नहीं खोलीं। सब जगह वैसे ही वीभत्स दृश्य थे। किन्हीं-किन्हीं स्टेशनों पर अभद्रता की हद थी। गोरे और देशी सैनिक भी युवतियों के अधनंगे अंगों को छेड़-छेड़ अपनी नीचता प्रकट कर रहे थे। युवतियाँ मछली या खाने का टिन या एक-दो रुपये पर किसी पेड़ के नीचे किसी सैनिक से लिपट रही थीं।

अकाल पड़ते हैं। अंगरेजी सरकार काले बाजारिये व्यापारियों से साठ-गाँठ कर इतनी अधम जघन्यता पर तुल जायेगी—इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। यह पाप पलट कर उन सरकारी और गैर सरकारी श्रीमानों को जरूर नरक

महिलाओ से मिल-जुल तो लेते हैं।"

चोपड़ा ने तय किया कि वह भोंड़े अधिकारियो की दावत मे नही जायेगा। वह शाम होते ही चौरंगी पर सैर करने के लिए निकल गया। कुछ ही दूर पर एक टैक्सी वाले ने आवाज दिया,—"टैक्सी साहब। कडाया रोड पर जन्नत की परी ऐंग्लो इंडियन है।" चोपड़ा अनसुनी कर आगे बढ़ा। मोड़ पर एक बग्गीवाला पीछे पड़ गया,—"ऐंग्लो फ्रेन्च, साहब। पास के 'बार' मे देख सकते है।" चोपड़ा ने उसे डाट दिया। दो-चार क़दम आगे एक रिक्शावाला रिक्शे पर घण्टी से टन-टन बजाते हुए बोला,—"चोखा माल, दाम कम।"

चोपडा की साँसें फूलने लगी। सडक पार कर वह ताजी हवा के लिए मैदान मे आया। वहाँ अकाल पीडित भिखमंगो का, युवतियो का, वेश्याओ का, सस्ती लडकियो का मेला लगा था। चारो ओर क्रय-विक्रय का नगा नाच हो रहा था। अकाल के मारे लोग यहाँ स्टेशनो से कही अधिक भिन्ना रहे थे। मछली बाजार मे वैसा शोर नही होता होगा जैसा यहाँ था। चोपडा तेज़ भागा। होटल के अपने कमरे मे पहुँच कर ही उसने दम लिया।

अपने मानसिक तनाव से अभी वह उबरा ही था कि कुकेती आ गया। चोपडा ने उसके आग्रह को अमान्य नही किया। वह प्राइवेट दावत मे उसके संग आया।

दावत के इन्तज़ामकर्ता कोई रायबहादुर अजय दत्त थे। वे रेलवे के बडे ठीकेदार थे और अपने नगर के जाने माने रईस थे। उन्होने ठीका से अगाध धन कमाया था। ठीका लेने और उसके भुगतान का गुर उन्हे मालूम था। अंगरेज खाता-पीता था—ऊँचे तौर पर। वह अपनी वाल भी रखता था। अब हिन्दुस्तानी अधिकारी युद्ध के कारण ऊँचे पदो पर तैनात किये जा रहे थे। उनमे अगरेजो वाला गुण सहज ही नही आ सकता था। अंगरेज को अपने पद की मर्यादा और अपने पर विश्वास था। ऊँचा से ऊँचा हिन्दुस्तानी भी परमुखापेक्षी था। केवल हिन्दुस्तानी अंगरेजो को नकल मे मात करते थे। अंगरेज उन्हे ऊँचा गुलाम मानता था। वे अपने को मालिक समझते थे।

कई अगरेज़ अफसर थे। हिन्दुस्तानियो मे सबसे ऊँचे आई० सी० एस० के मिस्टर घोप थे। घोप बंगाल सरकार के सचिव थे। चोपडा उन्हे केम्ब्रिज से जानता था। चोपड़ा से मिस्टर घोप बहुत औपचारिक ढग से मिले। केवल इतना पूछा, —"यहाँ कैसे ?"

"लडाई जो है।"—चोपड़ा के जवाब से मिस्टर घोप आगे कुछ नही बोले।

कई मेहमान आ गये। बातचीत का जोर बन्द हो गया। स्काच की बोतलें खुलने लगी। स्काच तब चालीस रुपये की हो गयी थी। कलकत्ता के बडे-बडे पूंजीपतियो का पार्टी में जमाव था। हर मिनट मे एक बोतल स्काच खुल रही थी। आश्चर्य यह था कि उतनी ही देर मे वह गट भी कर ली जाती थी। हिन्दुस्तानी अधिकारियो

महिलाओ से मिल-जुल तो लेते हैं।"

चोपड़ा ने तय किया कि वह भोंड़े अधिकारियो की दावत मे नही जायेगा। वह शाम होते ही चौरंगी पर सैर करने के लिए निकल गया। कुछ ही दूर पर एक टैक्सी वाले ने आवाज दिया,—"टैक्सी साहब। कडाया रोड पर जन्नत की परी ऐंग्लो इंडियन है।" चोपड़ा अनसुनी कर आगे बढ़ा। मोड़ पर एक बग्गीवाला पीछे पड़ गया,—"ऐंग्लो फ्रेन्च, साहब। पास के 'बार' मे देख सकते है।" चोपड़ा ने उसे डाट दिया। दो-चार क़दम आगे एक रिक्शावाला रिक्शे पर घण्टी से टन-टन बजाते हुए बोला,—"चोखा माल, दाम कम।"

चोपडा की साँसें फूलने लगी। सडक पार कर वह ताजी हवा के लिए मैदान मे आया। वहाँ अकाल पीडित भिखमंगो का, युवतियो का, वेश्याओ का, सस्ती लडकियो का मेला लगा था। चारो ओर क्रय-विक्रय का नगा नाच हो रहा था। अकाल के मारे लोग यहाँ स्टेशनो से कही अधिक भिन्ना रहे थे। मछली बाजार मे वैसा शोर नही होता होगा जैसा यहाँ था। चोपडा तेज भागा। होटल के अपने कमरे मे पहुँच कर ही उसने दम लिया।

अपने मानसिक तनाव से अभी वह उबरा ही था कि कुकेती आ गया। चोपडा ने उसके आग्रह को अमान्य नही किया। वह प्राइवेट दावत मे उसके संग आया।

दावत के इन्तज़ामकर्ता कोई रायबहादुर अजय दत्त थे। वे रेलवे के बडे ठीकेदार थे और अपने नगर के जाने माने रईस थे। उन्होने ठीका से अगाध धन कमाया था। ठीका लेने और उसके भुगतान का गुर उन्हे मालूम था। अंगरेज खाता-पीता था—ऊँचे तौर पर। वह अपनी बाल भी रखता था। अब हिन्दुस्तानी अधिकारी युद्ध के कारण ऊँचे पदो पर तैनात किये जा रहे थे। उनमे अगरेजो वाला गुण सहज ही नही आ सकता था। अंगरेज को अपने पद की मर्यादा और अपने पर विश्वास था। ऊँचा से ऊँचा हिन्दुस्तानी भी परमुखापेक्षी था। केवल हिन्दुस्तानी अंगरेजो की नकल मे मात करते थे। अंगरेज उन्हे ऊँचा गुलाम मानता था। वे अपने को मालिक समझते थे।

कई अगरेज अफसर थे। हिन्दुस्तानियो मे सबसे ऊँचे आई० सी० एस० के मिस्टर घोष थे। घोष बंगाल सरकार के सचिव थे। चोपडा उन्हे केम्ब्रिज से जानता था। चोपड़ा से मिस्टर घोष बहुत औपचारिक ढग से मिले। केवल इतना पूछा,—"यहाँ कैसे ?"

"लडाई जो है।"—चोपड़ा के जवाब से मिस्टर घोष आगे कुछ नही बोले।

कई मेहमान आ गये। बातचीत का जोर बन्द हो गया। स्काच की बोतलें खुलने लगी। स्काच तब चालीस रुपये की हो गयी थी। कलकत्ता के बडे-बडे पूंजी-पतियो का पार्टी में जमाव था। हर मिनट मे एक बोतल स्काच खुल रही थी। आश्चर्य यह था कि उतनी ही देर मे वह गट भी कर ली जाती थी। हिन्दुस्तानी अधिकारियो

आ रहे हैं। कलकत्ता पर जापानियों को उन्होंने [illegible]

"जापानी अंगरेजों से कम मक्कार नहीं। [illegible]
आवाज में कहा। वे नशे से धुत्त् हो रहे थे और मि[illegible]
देख रहे थे।

"जापानियों ने इंडोनेशिया, मलाया को स्वतंत्र [illegible]
चाहते हुए भी बोला।

"वर्मा को क्यों नहीं स्वतंत्र किया ?"—मिस्टर घोष [illegible]।
अब वे बेलगाम पी रहे थे।

"सरहद की स्थिति सभलते ही वहाँ भी जेनरल आगसेन स्वतंत्र सरकार बनायेंगे—यह घोषणा की जा चुकी है।"

चोपड़ा के जवाब मे मिस्टर घोष ने सावधान हो कर कहा,—"आगसेन सपना देख रहे हैं। वर्मा पर दुबारा चढाई की तैयारी पूरी हो चुकी है। कलकत्ते का आकाश अमरीकन हवाई जहाजो से हर क्षण भरा रहता है।"

"अमेरिका इग्लैण्ड का नया राज्य बन गया है।"—

मिस्टर घोष ने क्रूर आँखो से चोपडा को देखा। चोपडा की बात गलत नही थी। मिस्टर घोष आई० सी० एस० बन कर काला अंगरेज बन गये थे। उन्हे अपनी बात का काले आदमी से विरोध सुनने की आदत नही थी।

मिस्टर घोष उठ खडे हुए। मिसेज गागुली से उन्होने कहा,—'चलिए।'
मिसेज गागुली मिस्टर घोष के सग चली गयी।

पार्टी कुछ ही देर मे समाप्त हो गयी। चोपडा विलायत मे रहते-रहते बाल नृत्य का अकथ प्रेमी बन गया था। नीचे हाल मे डास चल रहा था। उसने मिसेज सिह से कहा,—'क्या नीचे हाल में मैं आपके साथ डास करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता हूँ।"

"क्यो नही ?"—मिसेज सिह उसके हाँथो मे हाथ डाल चल पडी।

डास की परिक्रमा मे उसने कहा,—"आपसे मिल कर [illegible] हुई [illegible]
आपने भेष खूब बदला है।"

"मैं जानती थी कि तुम पहचान जाओगे। मैं [illegible]

चोपडा ने अपूर्व उत्साह से मिसेज सिह के [illegible]
बताया कि वह भेष बदल कर कपूरथला के [illegible]
यहाँ आजाद हिन्द फ़ौज का काम कर रही है [illegible]
'ज्ञान सिह से कहना कि मैं उनकी हूँ। [illegible]
मिलूँगी।"

"वह मिसेज गागुली कौन थी [illegible]

"निहायत बदजात औरत [illegible]
है, बच्चे हैं। वह खुब [illegible] है। [illegible]

"मैं ग्वालंदो पहुँचना चाहता हूँ। आप मिसेज़ लालसिंह से मिले या नहीं ?"

"मिला था। वह मिस्टर सिंह के साथ देहरादून जाने वाली हैं।" ठाकुर ने कोमिल्ला के एकाग्र मित्रों का पता ठिकाना दिया।

ठाकुर ने चलने के पहले हाल में एक दूर टेबुल पर बैठे सज्जन को दिखा कर कहा,—"वह एस० एन० सिंह हैं, जे० पी० के घनिष्ठ मित्र। यहाँ सुकुमार डे के नाम से ठहरे हैं। वह बर्मा में नेता जी से सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। उनके साथ मूँछोंवाले कैप्टन भागलपुर के ज़मीन्दार है। बर्मा में उनका हाथियों का व्यापार था। वह भी रंगून जाना चाहते हैं।"

चोपड़ा ने ठाकुर के कान मे चुपके से कहा,—'अलिफ, लाम, मीम।' उसने दुबारा ध्यान से एस० एन० सिंह और उनके साथी ज़मीन्दार को देखा।

पहली ट्रेन से चोपड़ा ग्वालंदो के लिए रवाना हो गया। ग्वालंदो से जहाज पर एक मेजर कनिंग ने, जो ब्रिज में उसके साथी थे, कहा—"कल एकदम और फोर्ट विलियम में क्रान्तिकारियों और फौज में जम कर गोलाबारी और लड़ाई हुई। दोनों जगह फौज के रसद के डिपो थे। वे स्वाहा हो गये। उसने आगे कहा,—'क्रान्तिकारी युद्ध के प्रयत्नों मे बड़ी रुकावट पैदा कर रहे हैं। हिन्दुस्तानी जनमत वैसे ही हमारे विरुद्ध है। मैं तो मजदूर दल का समर्थक हूँ। अब मैं भी हिंदुस्तानियों को कम से कम युद्ध के बीच स्वायत्तता देने के पक्ष मे नहीं हूँ।"

चोपड़ा को उसने साफ ही अंगरेज समझा था। चोपड़ा चुपचाप आसमान में तैरते वैशाखी बादलों के दल को देखता रहा। बादलों के ऊपर कोई आसमान का कोना रक्तवर्ण होता जा रहा था।

●

"मैं ग्वालंदो पहुँचना चाहता हूँ। आप मिसेज लालसिंह से मिले या नहीं ?"

"मिला था। वह मिस्टर सिंह के साथ देहरादून जाने वाली हैं।" ठाकुर ने कोमिल्ला के एकाग्र मित्रों का पता ठिकाना दिया।

ठाकुर ने चलने के पहले हाल में एक दूर टेबुल पर बैठे सज्जन को दिखा कर कहा,—"वह एस० एन० सिंह हैं, जे० पी० के घनिष्ठ मित्र। यहाँ सुकुमार डे के नाम से ठहरे हैं। वह बर्मा में नेता जी से सम्पर्क स्थापित करना चाहते हैं। उनके साथ मूँछोंवाले कैप्टन भागलपुर के ज़मीन्दार है। बर्मा में उनका हाथियों का व्यापार था। वह भी रंगून जाना चाहते हैं।"

चोपड़ा ने ठाकुर के कान मे चुपके से कहा,—'अलिफ, लाम, मीम।' उसने दुबारा ध्यान से एस० एन० सिंह और उनके साथी ज़मीन्दार को देखा।

पहली ट्रेन से चोपड़ा ग्वालंदो के लिए रवाना हो गया। ग्वालंदों से जहाज पर एक मेजर कनिंग ने, जो ब्रिज में उसके साथी थे, कहा—"कल एकदम और फोर्ट विलियम में क्रान्तिकारियों और फौज में जम कर गोलाबारी और लड़ाई हुई। दोनों जगह फौज के रसद के डिपो थे। वे स्वाहा हो गये। उसने आगे कहा,—'क्रान्तिकारी युद्ध के प्रयत्नो मे बड़ी रुकावट पैदा कर रहे हैं। हिन्दुस्तानी जनमत वैसे ही हमारे विरुद्ध है। मैं तो मजदूर दल का समर्थक हूँ। अब मैं भी हिन्दुस्तानियों को कम से कम युद्ध के बीच स्वायत्तता देने के पक्ष मे नहीं हूँ।"

चोपड़ा को उसने साफ ही अंगरेज समझा था। चोपड़ा चुपचाप आसमान में तैरते वैशाखी बादलों के दल को देखता रहा। बादलों के ऊपर कोई आसमान का कोना रक्तवर्ण होता जा रहा था।

●

था । उसने गम्भीर भाव से कहा,—"स्वतन्त्रता का मोल मुझसे अधिक कौन जानता है ? लेकिन तानाशाही नही, कदापि नही । सावधानी जरूर बरतना ।"

"एक बात और" उसने दूसरी साँस मे कहा,—"काँटा-काँटा से निकालना ही श्रेयष्कर होता है ।"

गसी कर्जन ने ठीक-ठीक समझा या नही वह बड़े जोश-खरोश से बनारस मे चला । उसके नक्शे पर कार्यवाही के लिए पहला गाँव कैंथी था । गाँव राजपूतो का था । उसमें फौज और प्रशासन के सरकारी नौकर बहुत थे । एकाध लोगो ने गांधी जी के सत्याग्रह मे भी भाग लिया था । 'भारत छोडो' आन्दोलन मे औड़िहार स्टेशन पर आग लगाने वाली भीड़ मे उस गाँव के नौजवानों का नाम लिया जाता था । गसी कर्जन ने सूबेदार राजेन्द्र पाल सिंह को गाँव को घेर लेने का हुक्म दिया । गाँव को घेरना निरर्थक साबित हुआ । फौज का आना सुनकर सारे ग्रामवासी नर-नारी, वृद्ध-बालक, गाँव छोड कर गगा पार मे कहीं जा छुपे थे । वहाँ मनुष्य जाति की चिड़िया भी नही थी ।

सूबेदार राजेन्द्र पाल सिंह ने उससे कहा,—"आगे चलें साहब, यहाँ कोई आदमी या आदमी का बच्चा नही ।"

गसी कर्जन को घोर निराशा हुई । पहले ही गाँव मे वह अपना जौहर दिखाना चाहता था ।

वे आगे बढे । कुछ ही आगे चलने पर सडक से कुछ दूर तक नाले से आदमी की आवाज आयी । गसी ने अपनी कम्पनी को फौरन आक्रमण करने को सजाया । मशीन गन वाली प्लटून जिधर से आवाज आई थी उधर का रुख कर फायरिंग के लिए तैयार हो गयी । मार्टर तोपों को उधर की झाड़ियाँ दिखा कर उस पर निशाना बाँध तैयार रहने का हुक्म हुआ । एक सेक्शन पडताल के लिए भेजा गया । उसने आकर रिपोर्ट की,—"नाले के अन्दर कुछ लोग छिपे हुए है ।"

"कितने होंगे ?"

"अधिक नही । दो या तीन आवाजें सुनायी पडी ।"

गसी कर्जन एक प्लटून को अर्ध चन्द्राकार स्थिति मे फैला कर हिरण चाल से आगे बढा । जहाँ से आवाज आ रही थी वहाँ दो आदमी छिपे दिखायी पडे । साँस रोके गसी कर्जन अपनी सुरक्षा प्लटून के साथ आगे बढा और चिल्लाया,—"हथियार जमीन पर फेंक कर, दोनो हाथ ऊपर किए आगे बढो ।"

न हथियार फेंकने की आवाज आई न ही कोई आगे बढा । उसने इशारे से चार्ज करने का हुक्म दिया । दनादन गोलियाँ चलीं, सैनिक किरचें खोंसे नाले मे कूदे । एक दो तेज चीखें निकली । उसके बाद श्मशान की चुप्पी छा गयी । किरचो से जवानों ने दो आदमी के पुतलो पर आक्रमण किया । उन पुतलों से प्राण कभी अलग हो चुके थे । किरचों मे मांस के लोथड़े लिपट कर निकल आये । गसी अपने पागलपन पर दहल उठा । दो पुतले एक बुड्ढे और एक बुढ़िया के थे । दोनो टुकड़े-टुकड़े

था। उसने गम्भीर भाव से कहा,—"स्वतन्त्रता का मोल मुझसे अधिक कौन जानता है ? लेकिन तानाशाही नहीं, कदापि नहीं। सावधानी जरूर बरतना।"

"एक बात और" उसने दूसरी सांस में कहा,—"कांटा-कांटा से निकालना ही श्रेयष्कर होता है।"

गसी कर्जन ने ठीक-ठीक समझा या नहीं वह बड़े जोश-खरोश से बनारस में चला। उसके नक्शे पर कार्यवाही के लिए पहला गांव कैथी था। गांव राजपूतों का था। उसमें फौज और प्रशासन के सरकारी नौकर बहुत थे। एकाध लोगों ने गांधी जी के सत्याग्रह में भी भाग लिया था। 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में औड़िहार स्टेशन पर आग लगाने वाली भीड़ में उस गांव के नौजवानों का नाम लिया जाता था। गसी कर्जन ने सूबेदार राजेन्द्र पाल सिंह को गांव को घेर लेने का हुक्म दिया। गांव को घेरना निरर्थक साबित हुआ। फौज का आना सुनकर सारे ग्रामवासी नर-नारी, वृद्ध-बालक, गांव छोड़ कर गंगा पार में कहीं जा छुपे थे। वहां मनुष्य जाति की चिड़िया भी नहीं थी।

सूबेदार राजेन्द्र पाल सिंह ने उससे कहा,—"आगे चलें साहब, यहां कोई आदमी या आदमी का बच्चा नहीं।"

गसी कर्जन को घोर निराशा हुई। पहले ही गांव में वह अपना जौहर दिखाना चाहता था।

वे आगे बढ़े। कुछ ही आगे चलने पर सड़क से कुछ दूर तक नाले से आदमी की आवाज आयी। गसी ने अपनी कम्पनी को फौरन आक्रमण करने को सजाया। मशीन गन वाली प्लटून जिधर से आवाज आई थी उधर का रुख कर फायरिंग के लिए तैयार हो गयी। मार्टर तोपों को उधर की झाड़ियां दिखा कर उस पर निशाना बांध तैयार रहने का हुक्म हुआ। एक सेक्शन पड़ताल के लिए भेजा गया। उसने आकर रिपोर्ट की,—"नाले के अन्दर कुछ लोग छिपे हुए हैं।"

"कितने होंगे ?"

"अधिक नहीं। दो या तीन आवाजें सुनायी पड़ीं।"

गसी कर्जन एक प्लटून को अर्ध चन्द्राकार स्थिति में फैला कर हिरण चाल से आगे बढ़ा। जहां से आवाज आ रही थी वहां दो आदमी छिपे दिखायी पड़े। सांस रोके गसी कर्जन अपनी सुरक्षा प्लटून के साथ आगे बढ़ा और चिल्लाया,—"हथियार जमीन पर फेंक कर, दोनों हाथ ऊपर किए आगे बढ़ो।"

न हथियार फेंकने की आवाज आई न ही कोई आगे बढ़ा। उसने इशारे से चार्ज करने का हुक्म दिया। दनादन गोलियां चलीं, सैनिक किरचें खोंसे नाले में कूदे। एक दो तेज चीखें निकलीं। उसके बाद श्मशान की चुप्पी छा गयी। किरचों से जवानों ने दो आदमी के पुतलों पर आक्रमण किया। उन पुतलों से प्राण कभी अलग हो चुके थे। किरचों में मांस के लोथड़े लिपट कर निकल आये। गसी अपने पागलपन पर दहल उठा। दो पुतले एक बुड्ढे और एक बुढ़िया के थे। दोनों टुकड़े-टुकड़े

हो वह रेंगते-रेंगते आगे आये। कोई धोखा न हो। तुम्हारा यह फूस और माटी का चेचक के फफोलों सा उभरा गाँव फिर दिखायी नही पड़ेगा।"

सूरज नरायण राय क्या करते? सब लेट गये। राय अपने तग़में, प्रमाण-पत्र पेन्शन आदि के कागज टेंट में खोंस रेंगते-रेंगते अकेले आगे बढ़े। जब दस-पन्द्रह हाथ चल आये तब गसी कर्जन की ईर्षाग्नि शान्त हुई। उसने राय से कहा, —"दोनों हाथ ऊपर कर खड़े हो आगे आओ।"

राय ने वैसा ही किया। लेफ्टिनेंट कर्जन के पास पहुँच कर वे साष्टांग लम्बे पड़ गये और गाँव वालों के सामने हुए अपने अपमान से सिसकते हुए बोले, —"हुजूर माई-बाप, मैं खुफिया पुलिस में नामवर इंस्पेक्टर था।"

"प्रमाण?"

राय हाथ जोड़े उठे। एक अंगरेज के सामने जाते हुए वह ऐसे काँप रहे थे जैसे तेज बयार में पीपल के पत्ते। उन्होंने अपने प्रमाण-पत्र, तग़मे आदि टेंट से निकाल कर गसी कर्जन को दिखाये। अपनी पहचान का फोटो भी उन्होंने दिखाया। गसी कर्जन को उनकी बात में शक नहीं रहा। उसने पूछा,—"इस गाँव ने बगावत क्यो की?"

"गाँव ने बगावत नहीं की, माई-बाप। एकाध सिरफिरे हिन्दू यूनिवर्सिटी के लड़को ने तहसील का खजाना लूटा।"

"उन्हें पेश करो।"

"उनमें दो पुलिस की गोली से मारे गये, दो बनारस के बड़े अस्पताल मे दम तोड रहे हैं, बाकी जेल में हैं।"

लेफ्टिनेंट गसी कर्जन को मालूम था कि अकाल से बुरी तरह ग्रसित होकर भी जे० पी० के आन्दोलन के कारण अच्छी जाति के युवक फौजी भर्ती में नही आ रहे हैं। उसने इंस्पेक्टर राय से कहा,—"आज रात हम यहीं ठहरेंगे। कल सूरज की पहली किरण के साथ अगर तुम सौ अच्छे नौजवान फौज की भर्ती के लिए हाजिर करो तो हम तुम्हारे गाँव को माफ कर देंगे।"

सूरज नरायण राय की घिग्घी बँध गयी। किसी तरह गला खंखार कर बोले, —"इतने तो यहाँ लोग नहीं होंगे?"

"तुम कितने ला सकते हो?"

"दर्जन भी मिल जायँ तो गनीमत होगी।"

"तुम अधिक से अधिक ले आओ। बाकी के लिए सौ रुपये फी आदमी चन्दा ले आओ।"

गसी कर्जन ने आगे कुछ भी सुनने से मना कर दिया। इंस्पेक्टर राय हाथ जोड़े बड़ी देर तक विनती करने के लिए खड़े रहे। गसी की कड़क की आवाज सुनाई पड़ी,—"जाओ। शर्त पूरी करो। कोई चाल मत करना।"

खुफिया इंस्पेक्टर माई-बाप की गोहार लगाते हुए और मन के भीतर रोते

हो वह रेंगते-रेंगते आगे आये । कोई धोखा न हो । तुम्हारा यह फूस और माटी का चेचक के फफोलों सा उभरा गाँव फिर दिखायी नही पड़ेगा ।"

सूरज नरायण राय क्या करते ? सब लेट गये । राय अपने तग़में, प्रमाण-पत्र पेन्शन आदि के कागज टेंट में खोंस रेंगते-रेंगते अकेले आगे बढ़े । जब दस-पन्द्रह हाथ चल आये तब गसी कर्जन की ईर्वाग्नि शान्त हुई । उसने राय से कहा, —"दोनों हाथ ऊपर कर खड़े हो आगे आओ ।"

राय ने वैसा ही किया । लेफ्टिनेंट कर्जन के पास पहुँच कर वे साष्टांग लम्बे पड गये और गाँव वालों के सामने हुए अपने अपमान से सिसकते हुए बोले, —"हुजूर माई-बाप, मैं खुफिया पुलिस में नामवर इंस्पेक्टर था ।"

"प्रमाण ?"

राय हाथ जोड़े उठे । एक अंगरेज के सामने जाते हुए वह ऐसे कांप रहे थे जैसे तेज बयार में पीपल के पत्ते । उन्होंने अपने प्रमाण-पत्र, तगमे आदि टेंट से निकाल कर गसी कर्जन को दिखाये । अपनी पहचान का फोटो भी उन्होने दिखाया । गसी कर्जन को उनकी बात में शक नहीं रहा । उसने पूछा,—"इस गाँव ने बगावत क्यों की ?"

"गाँव ने बगावत नहीं की, माई-बाप । एकाध सिरफिरे हिन्दू युनिवर्सिटी के लड़को ने तहसील का खज़ाना लूटा ।"

"उन्हें पेश करो ।"

"उनमें दो पुलिस की गोली से मारे गये, दो बनारस के बड़े अस्पताल मे दम तोड रहे हैं, बाकी जेल में हैं ।"

लेफ्टिनेंट गसी कर्जन को मालूम था कि अकाल से बुरी तरह ग्रसित होकर भी जे० पी० के आन्दोलन के कारण अच्छी जाति के युवक फौजी भर्ती में नही आ रहे हैं । उसने इंस्पेक्टर राय से कहा,—"आज रात हम यहीं ठहरेंगे । कल सूरज की पहली किरण के साथ अगर तुम सौ अच्छे नौजवान फौज की भर्ती के लिए हाजिर करो तो हम तुम्हारे गाँव को माफ कर देंगे ।"

सूरज नरायण राय की घिग्घी बँध गयी । किसी तरह गला खंखार कर बोले, —"इतने तो यहां लोग नहीं होंगे ?"

"तुम कितने ला सकते हो ?"

"दर्जन भी मिल जायँ तो गनीमत होगी ।"

"तुम अधिक से अधिक ले आओ । बाकी के लिए सौ रुपये फी आदमी चन्दा ले आओ ।"

गसी कर्जन ने आगे कुछ भी सुनने से मना कर दिया । इंस्पेक्टर राय हाथ जोड़े बड़ी देर तक विनती करने के लिए खड़े रहे । गसी की कड़क की आवाज सुनाई पड़ी,—"जाओ । शर्त पूरी करो । कोई चाल मत करना ।"

खुफिया इंस्पेक्टर माई-बाप की गोहार लगाते हुए और मन के भीतर रोते

जलते मकानों में राख होने के लिए फेंक दिया गया।

बलिया मे आतंक की पराकाष्ठा थी। कम्पनी के साथ-साथ दूसरे रास्ते से नेदरसोल कार द्वारा बलिया पहुँचा। वहाँ की स्वतंत्र सरकार के स्थान पर अंगरेजी अमला आसानी से पदासीन कर दिया गया। कलक्टर निगम को मोअत्तल कर सेवा से निकाल दिया गया। उसके स्थान पर एक अंगरेज फौजी कलक्टर लाया गया। नेदरसोल ने लखनऊ ,और दिल्ली की सरकारो को तार दिया;—"बलिया पुन. जीत लिया गया।"

दिल्ली और लखनऊ से उसके पास बेतार से जो हुक्म आया वह बधाई का नही था। उसमें यह आदेश था कि लेफ्टिनेंट गसी कर्जन को बलिया के दूसरे गावों मे न भेजा जाय।

नेदरसोल से अधिक गसी कर्जन इस आदेश से निराश हुआ। वह अब सिताब दियरा जा भी नही सकता था। नेदरसोल ने फिर भी अपनी जिम्मेदारी पर स्वतंत्र बलिया के निदेशक चित्तू पाण्डेय के गांव को जमीन के बराबर करा दिया। सत्तावन के सेनानी मंगल पाण्डेय के गांव का उन्हें पता नही चला। अंगरेज हर पाण्डेय को विद्रोही मानते चले आ रहे थे। नेदरसोल और गसी ऊपर के आदेश से विवश थे। अंगरेज जो कुछ करता है या नही करता है वह आदेश और सिद्धान्त की माला में पिरोया होता है। उन सिद्धान्तो और आदेशों को वह अपने स्वार्थपूर्ति के लिए स्वयं गढ़ता है।

उस दिन बलिया क्लब मे शराब का सागर उड़ेलते हुए नेदरसोल गसी से कह रहा था,—"दिल्ली में दूरदर्शी दृष्टि है ही नही। जे० पी० चकमा-देकर नेपाल से निकल भागा। पहले बिहार मे सुनायी पड़ा। अब यही कही है। अगर जे० पी और बोस मिल गये तब अंगरेजी साम्राज्य शीघ्र से पहले यहा से खत्म हो जायगा।"

गसी कर्जन नशे के झोंक में सोच रहा था, —'पिछली लड़ाई के बाद रौलट एक्ट और जलियान वाला बाग हुआ। उससे गांधी हिन्दुस्तान के कोने-कोने मे छा गया। 'भारत छोड़ो' ने जय प्रकाश को प्रस्फुटित किया। सीमा पार सुभाष बोस प्रलय मचाये हुए हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, पारसी, ईसाई—सबके सब क्रान्ति के शोले बन गये हैं। गसी की झंपकती पलकों मे उसके जाने अनजाने सभी हिन्दुस्तानी चेहरे लपकती लपटो से उठने लगे। ये लपटें जब तक वह नीद मे डूब नही गया। बराबर उभरती रहीं।

जलते मकानों में राख होने के लिए फेंक दिया गया।

बलिया मे आतंक की पराकाष्ठा थी। कम्पनी के साथ-साथ दूसरे रास्ते से नेदरसोल कार द्वारा बलिया पहुँचा। वहाँ की स्वतंत्र सरकार के स्थान पर अंगरेजी अमला आसानी से पदासीन कर दिया गया। कलक्टर निगम को मोअत्तल कर सेवा से निकाल दिया गया। उसके स्थान पर एक अंगरेज फौजी कलक्टर लाया गया। नेदरसोल ने लखनऊ ,और दिल्ली की सरकारो को तार दिया;—"बलिया पुन. जीत लिया गया।"

दिल्ली और लखनऊ से उसके पास बेतार से जो हुक्म आया वह बधाई का नही था। उसमें यह आदेश था कि लेफ्टिनेंट गसी कर्जन को बलिया के दूसरे गावों मे न भेजा जाय।

नेदरसोल से अधिक गसी कर्जन इस आदेश से निराश हुआ। वह अब सिताब दियरा जा भी नही सकता था। नेदरसोल ने फिर भी अपनी जिम्मेदारी पर स्वतंत्र बलिया के निदेशक चित्तू पाण्डेय के गांव को जमीन के बराबर करा दिया। सत्तावन के सेनानी मंगल पाण्डेय के गांव का उन्हें पता नही चला। अंगरेज हर पाण्डेय को विद्रोही मानते चले आ रहे थे। नेदरसोल और गसी ऊपर के आदेश से विवश थे। अंगरेज जो कुछ करता है या नही करता है वह आदेश और सिद्धान्त की माला में पिरोया होता है। उन सिद्धान्तो और आदेशों को वह अपने स्वार्थपूर्ति के लिए स्वयं गढ़ता है।

उस दिन बलिया क्लब मे शराब का सागर उडेलते हुए नेदरसोल गसी से कह रहा था,—"दिल्ली में दूरदर्शी दृष्टि है ही नही। जे० पी० चकमा देकर नेपाल से निकल भागा। पहले बिहार मे सुनायी पड़ा। अब यही कही है। अगर जे० पी और बोस मिल गये तब अंगरेजी साम्राज्य शीघ्र से पहले यहा से खत्म हो जायगा।"

गसी कर्जन नशे के झोंक में सोच रहा था,—'पिछली लडाई के बाद रौलट एक्ट और जलियान वाला बाग हुआ। उससे गांधी हिन्दुस्तान के कोने-कोने मे छा गया। 'भारत छोड़ो' ने जय प्रकाश को प्रस्फुटित किया। सीमा पार सुभाष बोस प्रलय मचाये हुए हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, पारसी, ईसाई—सबके सब क्रान्ति के शोले बन गये हैं। गसी की झंपकती पलकों मे उसके जाने अनजाने सभी हिन्दुस्तानी चेहरे लपकती लपटो से उठने लगे। ये लपटें जब तक वह नीद मे डूब नही गया। बराबर उभरती रहीं।

पहाड़ों में था, दल नीचे तलहटी में। ऐसी दशा में गोलियाँ बरबाद करना रण-चातुर्य नही। क्रान्तिकारी सेना के लिए इसकी कडी मनाही थी। वे सांस रोके चुपचाप पड़े रहे। ऊपर से गोलियो की वर्षा लगातार हो रही थी।

दस मिनट के बाद ऊपर की ओर से आवाज आई,—"तुम लोग घिर गये हो। जो तुममें बचे हो वह दोनों हाथ ऊपर उठा कर फौरन आत्म-समर्पण कर दें।"

नन्दराम ने अपनी जगह से चिल्ला कर कहा,—"पेड़ो से भूत बन कर क्यों छिपे हो। मर्द हो तो सामने आओ। दो-दो हो जाय।"

"ठीक है। आ रहा हूँ।"—एक पेड से आवाज आई। गोलियाँ बन्द हो गयी।

वह पेड़ बहादुरी से आगे बढ़ा। वह पूरा हरा नही था। उसके तने से कही-कही गोरी चमड़ी झलकती थी' कमांडर श्याम सिह को समझते देर न लगी कि विंगेट के कमांडो दल की यह टुकडी है। उसने सुना था कि विंगेट का दल चिन को पहाड़ियो मे घुस आया है। चिन की पहाडियो मे पहले से ही एक अंगरेज, जो बड़ा बहादुर सैनिक था, बस गया था। उसने एक चिन युवती से विवाह भी कर लिया था। वह बर्मी बोली अच्छी तरह से बोल-समझ लेता था। उसका नाम था मैनिंग। बर्मा से वह भाग गया था। अब विंगेट के कमाडो दल को लेकर फिर चिन पहाडियो मे वापस आया था।

वह मैनिंग ही था। उसने यह सोच कर कि श्याम सिह के दल का सफाया हो गया है धीरे-धीरे आराम से पहाड से उतरना शुरू कर दिया। उसके पीछे कतार में दो-तीन और पेड़ जो गोरे नही लग रहे:थे उतरने लगे।

श्याम सिह के दल का एक बडा ही चुस्त और फुर्तीला जवान सिकन्दर खां गोलियो की वर्षा मे ही रेंगते-रेंगते श्याम सिह के पास आ गया था। उसने बिना श्याम सिह की अनुमति के पेडो की ओर बढना शुरू किया।

मैनिंग ने उसे देख लिया। उसके बढ़ने को उसने विश्वासघात समझा। अपनी टामी गन से उसने साध कर सिकन्दर खा पर निशाना लगाया। भगवान सिकन्दर खां के साथ था। एक भी गोली उसको छू नही सकी। उधर कमांडर श्याम सिह की टामी गन मैनिंग पर छूटी। मैनिंग एक पेड की आड़ मे लेट गया। उसके पीछे के दो पेड़ श्याम सिह की गोली से गिर कर ठण्डे हो गये।

मैनिंग ने इशारा किया। उसकी ओर से जम कर फायरिंग होने लगी। श्याम सिह ने भी इशारा किया। उसकी ओर से पेडो पर साध कर गोलिया चलने लगी। पेडों मे, दिशाओं मे, हलचल मची। लड़ाई जम कर होने लगी।

मैनिंग चीते की फुर्ती से पेड़ो के पीछे छिपता-छिपता श्याम सिह की ओर बढ़ रहा था। उसी तरह श्याम सिह की आँखें मैनिंग को काट खाने को उतावली थीं। *मैनिंग के पीछे दो-तीन अंगरेज सैनिक अब भी थे। श्याम सिह के पार्श्व मे* उसकी सहायता के लिए सिकन्दर खा था। दो-चार हाथ की दूरी शेष रहने पर

पहाड़ी में था, दल नीचे तलहटी में। ऐसी दशा में गोलियाँ बरबाद करना रण-चातुर्य नहीं। क्रान्तिकारी सेना के लिए इसकी कड़ी मनाही थी। वे सांस रोके चुपचाप पड़े रहे। ऊपर से गोलियों की वर्षा लगातार हो रही थी।

दस मिनट के बाद ऊपर की ओर से आवाज आई,—"तुम लोग घिर गये हो। जो तुममें बचे हो वह दोनों हाथ ऊपर उठा कर फौरन आत्म-समर्पण कर दें।"

नन्दराम ने अपनी जगह से चिल्ला कर कहा,—"पेड़ो से भूत बन कर क्यों छिपे हो। मर्द हो तो सामने आओ। दो-दो हो जाय।"

"ठीक है। आ रहा हूँ।"—एक पेड से आवाज आई। गोलियाँ बन्द हो गयी।

वह पेड़ बहादुरी से आगे बढ़ा। वह पूरा हरा नहीं था। उसके तने से कहीं-कहीं गोरी चमड़ी झलकती थी' कमांडर श्याम सिंह को समझते देर न लगी कि विंगेट के कमांडो दल की यह टुकडी है। उसने सुना था कि विंगेट का दल चिन की पहाड़ियो मे घुस आया है। चिन की पहाडियो मे पहले से ही एक अंगरेज, जो बड़ा बहादुर सैनिक था, बस गया था। उसने एक चिन युवती से विवाह भी कर लिया था। वह बर्मी बोली अच्छी तरह से बोल-समझ लेता था। उसका नाम था मैनिंग। बर्मा से वह भाग गया था। अब विंगेट के कमाडो दल को लेकर फिर चिन पहाडियो मे वापस आया था।

वह मैनिंग ही था। उसने यह सोच कर कि श्याम सिंह के दल का सफाया हो गया है धीरे-धीरे आराम से पहाड से उतरना शुरू कर दिया। उसके पीछे कतार में दो-तीन और पेड़ जो गोरे नही लग रहे;थे उतरने लगे।

श्याम सिंह के दल का एक बडा ही चुस्त और फुर्तीला जवान सिकन्दर खां गोलियो की वर्षा मे ही रेंगते-रेंगते श्याम सिंह के पास आ गया था। उसने बिना श्याम सिंह की अनुमति के पेडों की ओर बढना शुरू किया।

मैनिंग ने उसे देख लिया। उसके बढ़ने को उसने विश्वासघात समझा। अपनी टामी गन से उसने साध कर सिकन्दर खा पर निशाना लगाया। भगवान सिकन्दर खां के साथ था। एक भी गोली उसको छू नहीं सकी। उधर कमांडर श्याम सिंह की टामी गन मैनिंग पर छूटी। मैनिंग एक पेड की आड़ मे लेट गया। उसके पीछे के दो पेड़ श्याम सिंह की गोली से गिर कर ठण्डे हो गये।

मैनिंग ने इशारा किया। उसकी ओर से जम कर फायरिंग होने लगी। श्याम सिंह ने भी इशारा किया। उसकी ओर से पेडों पर साध कर गोलिया चलने लगी। पेडों मे, दिशाओं मे, हलचल मची। लड़ाई जम कर होने लगी।

मैनिंग चीते की फुर्ती से पेड़ो के पीछे छिपता-छिपता श्याम सिंह की ओर बढ़ रहा था। उसी तरह श्याम सिंह की आँखें मैनिंग को काट खाने को उतावली थी। मैनिंग के पीछे दो-तीन अंगरेज सैनिक अब भी थे। श्याम सिंह के पार्श्व मे उसकी सहायता के लिए सिकन्दर खा था। दो-चार हाथ की दूरी शेष रहने पर

कमांडो दल की आशातीत सफलता और बरसात के पहले ही ब्रह्मपुत्र तक की भारत-भूमि पर अधिकार कर लेने की चर्चा से आज़ाद हिन्द फौजियों का उत्साह बहुत बढ गया था। वह किसी क्षण भी चिन्दवीन पार करने के आदेश की आशा लगाये थे। कमाडों दल में इम्तियाज खा भी था। उसने पिनांक के स्कूल से जासूसी का प्रशिक्षण सर्वोत्तम अंको से पास किया था। उसने एक दिन कमाडर श्याम सिंह से कहा,—"सुना सरहद पार करने की तारीख तय हो गयी है।"

"देरी होनी नही चाहिए।"—कमांडर श्याम ने जवाब में कहा। उसने आगे कहा,—"'भारत छोडो' आन्दोलन से हिन्दुस्तान मे आज अगरेज बहुत घबराया है। अकाल से वहाँ का जन-मानस अंगरेज के विरुद्ध है। इससे अधिक सुनहला मौका फिर कब मिलेगा?"

इम्तियाज ने योगदान किया,—"ब्रह्मपुत्र तक अंगरेजों को मार भगाना कोई मुश्किल नही। पूंजीपतियो के जरिए वे भर्ती बढाने के लिए अकाल लाये। वही पांसा उनके खिलाफ पड़ा। देशवासी तो हमारा साथ देंगे ही, सारी हिन्दुस्तानी सेना हमारे साथ हो जायगी।"

इम्तियाज जितना सच्चा प्रेमी था उतना ही सच्चा देश भक्त था। कमाडों दल के प्रशिक्षण में कुमारी रीता न्यूटन ने भी अपना नाम दिया था। जब वह नही चुनी गयी तब वह बहुत दु खी हुआ था। अपने जगल के मुख्यालय से उसने रीता को आँसू भरा पत्र लिखा था,—'तुमको देखने और न देखने मे जीने और मरने का सा सुख और दु ख है। स्वदेश की आजादी की भावना ही तुम्हारे बिना मुझे जिलाये रखी है। स्वदेश आज़ाद होगा, हम सभी सुखी होंगे—इसमे मुझे जरा भी शक नही।

क्षेत्रीय डिविजनल कमाडर, जेनरल शाहनवाज खा इम्तियाज के काम से उसकी लगन से, बहुत खुश थे। वे जब भी आते उससे उसका हाल-चाल जरूर पूछा करते थे। उन्होने अपने सैनिको को समझाया था,—"हमारी सख्या कम है, हमारे पास आधुनिक हर्बा-हथियार नही, हमे टैंक और बख्तरबन्द यान्त्रिक टैंको, तोपों की आशा नही। फिर भी हम हिन्दुस्तान की सीमा मे जाने वाली पहली पंक्ति मे होंगे। स्वदेश के विजित प्रदेश पर केवल हमारा अधिकार और शासन होगा।"

सबने सुना था कि जापानी जेनरल कातुबारा और उच्च कमाड ने यह मान लिया था।

आज़ाद हिन्द फौज का मनोबल प्रत्याशित आक्रमण के लिए बहुत ऊँचा था। इम्तियाज और दूसरे जानकार सैनिक कुशल मनोवैज्ञानिक की तरह काम कर रहे थे। आज़ाद फौज के किसी भी सैनिक के मन मे यह सन्देह नही था कि जापानी उनके सहयोगी मात्र हैं और वे भारत को स्वतन्त्र कराने वाली क्रान्तिकारी सेना हैं।

फौजी रणनीति का आधार दुश्मन की आखो मे धूल झोंक कर उसको आश्चर्य से चित कर देना होता है। वही हुआ। एक रात कूच का आदेश आया।

कमांडो दल की आशातीत सफलता और बरसात के पहले ही ब्रह्मपुत्र तक की भारत-भूमि पर अधिकार कर लेने की चर्चा से आजाद हिन्द फौजियो का उत्साह बहुत बढ गया था। वह किसी क्षण भी चिन्दवीन पार करने के आदेश की आशा लगाये थे। कमाडों दल में इम्तियाज खा भी था। उसने पिनांक के स्कूल से जासूसी का प्रशिक्षण सर्वोत्तम अंको से पास किया था। उसने एक दिन कमाडर श्याम सिंह से कहा,—"सुना सरहद पार करने की तारीख तय हो गयी है।"

"देरी होनी नही चाहिए।"—कमांडर श्याम ने जवाब में कहा। उसने आगे कहा,—" 'भारत छोडो' आन्दोलन से हिन्दुस्तान मे आज अगरेज बहुत घबराया है। अकाल से वहां का जन-मानस अंगरेज के विरुद्ध है। इससे अधिक सुनहला मौका फिर कब मिलेगा?"

इम्तियाज ने योगदान किया,—"ब्रह्मपुत्र तक अंगरेजों को मार भगाना कोई मुश्किल नही। पूंजीपतियो के ज़रिए वे भर्ती बढाने के लिए अकाल लाये। वही पांसा उनके खिलाफ पड़ा। देशवासी तो हमारा साथ देंगे ही, सारी हिन्दुस्तानी सेना हमारे साथ हो जायगी।"

इम्तियाज जितना सच्चा प्रेमी था उतना ही सच्चा देश भक्त था। कमाडों दल के प्रशिक्षण में कुमारी रीता न्यूटन ने भी अपना नाम दिया था। जब वह नही चुनी गयी तब वह बहुत दुखी हुआ था। अपने जगल के मुख्यालय से उसने रीता को आंसू भरा पत्र लिखा था,—'तुमको देखने और न देखने मे जीने और मरने का सा सुख और दुख है। स्वदेश की आजादी की भावना ही तुम्हारे बिना मुझे जिलाये रखी है। स्वदेश आजाद होगा, हम सभी सुखी होगे—इसमे मुझे ज़रा भी शक नही।

क्षेत्रीय डिविजनल कमाडर, जेनरल शाहनवाज खा इम्तियाज के काम से उसकी लगन से, बहुत खुश थे। वे जब भी आते उससे उसका हाल-चाल जरूर पूछा करते थे। उन्होने अपने सैनिको को समझाया था,—"हमारी सख्या कम है, हमारे पास आधुनिक हर्वा-हथियार नही, हमे टैंक और बख्तरबन्द यान्त्रिक टैंको, तोपो की आशा नही। फिर भी हम हिन्दुस्तान की सीमा मे जाने वाली पहली पंक्ति मे होगे। स्वदेश के विजित प्रदेश पर केवल हमारा अधिकार और शासन होगा।"

सबने सुना था कि जापानी जेनरल कातुबारा और उच्च कमाड ने यह मान लिया था।

आजाद हिन्द फौज का मनोबल प्रत्याशित आक्रमण के लिए बहुत ऊँचा था। इम्तियाज और दूसरे जानकार सैनिक कुशल मनोवैज्ञानिक की तरह काम कर रहे थे। आजाद फौज के किसी भी सैनिक के मन मे यह सन्देह नही था कि जापानी उनके सहयोगी मात्र हैं और वे भारत को स्वतत्र कराने वाली क्रान्तिकारी सेना हैं।

फौजी रणनीति का आधार दुश्मन की आखो मे धूल झोंक कर उसको आश्चर्य से चित कर देना होता है। वही हुआ। एक रात कूच का आदेश आया।

में कोई आवाज न निकल सके। मुर्गे के गले की तरह मरोड़ कर इम्तियाज ने उसको जिबह कर दिया। चेतना। को इसका तब आभास मिला जब इम्तियाज के सहकारी सैनिकों ने उसे कैद में ले लिया और उसे कलेवा की ओर रेजिमेंटल केन्द्र में पूछ-ताछ के लिए भेजा।

इस क्षेत्र के जापानी और आजाद हिन्द फौजों का लक्ष्य मनीपुर पर जल्द से जल्द कब्जा करने का था। आजाद हिन्द फौज के सुभाष ब्रिगेड के एक पल्टन को पलेल के हवाई अड्डे पर कब्जा करना था। दूसरी पल्टन को मनीपुर की लड़ाई में जापानी सेना के साथ आक्रमण करना था।

इम्तियाज खाँ ने पहले ही रिपोर्ट किया था कि अंगरेजों की पाँच डिविजन सेना मनीपुर क्षेत्र में तैनात है। आजाद हिन्द फौज के उच्च कमाण्ड की यह रणनीति बनी कि इन पाँचों डिविजनों को पूरा-पूरा अधिकार में ले लिया जाय। ये सभी आजाद हिन्द फौज में मिल जायेंगे, इसका विश्वास था। इससे अंगरेजों की दूसरी हिन्दुस्तानी सेनाओं पर भी उचित प्रभाव पड़ेगा।

मनीपुर क्षेत्र के डिविजनों को घेरने के लिए मेजर मघर सिंह और मेजर अजमेर सिंह के अधीन एक पूरी बटालियन पहाड़ी-पहाड़ों कोहिमा क्षेत्र में भेजी गयी। ये सफलता से जाफू की चोटियों पर पहुँच भी गये। इस पूरी बटालियन का सफाया हो जाता अगर रानी गुडालो के दल ने इनका साथ नहीं दिया होता। हुआ यह कि मेजर अजमेर सिंह एक दिन आसाम राइफल की वर्दी पहन फौजी कैन्टीन में पहुँच गया। वह शराब पीने का बड़ा आदी था। उसने अधिक से अधिक शराब खरीदना चाहा। कैन्टीन के हवलदार को उस पर धोखा-धड़ी का शक हो गया क्योंकि उसी दिन आसाम राइफल्स का क्वार्टर मास्टर कोहिमा स्थित आसाम बटालियन का पूरा हिस्सा (कोटा) ले गया था। उसने अजमेर सिंह को गौर से देखा और अन्दर अपने अफसर को खबर करने गया।

अजमेर सिंह ने उसका भाव भाँप लिया। वह भागा। थोड़ी दूर पर एक मकान के सहन में नागा बच्चे खेल रहे थे। वह उस मकान में घुस गया। पीछा करने वाले आगे निकल गये।

अजमेर सिंह की भेंट वहाँ कोहिमा साइन्स कालेज की विद्यार्थी सिगली नंग से हुई। सिगली नंग ने उसका सही परिचय जान कर उसे बताया, —"वह रानी गुडालो के दल की है।"

आधी रात को अकेले सिगलीनंग ही नहीं युवक-युवतियों की एक पूरी टोली मेजर अजमेर सिंह को कोहिमा के प्राचीर के बाहर छोड़ आई। सिगली नंग अजमेर सिंह की घनिष्ठ मित्र बन गयी। अजमेर सिंह पकड़ा नहीं जा सका, नहीं उसका और उसकी पल्टन का भेद खुल पाया।

अंगरेजों ने इम्फ़ाल के दक्षिणी भाग की मिजो पहाड़ियों पर जो अराकान की पहाड़ियों से मिलती हैं, अफ्रिका का हब्शी ब्रिगेड सुरक्षा पर लगा रखा था। यह

मे कोई आवाज न निकल सके । मुर्गे के गले की तरह मरोड़ कर इम्तियाज ने उसको जिबह कर दिया। चेतना। को इसका तब आभास मिला जब इम्तियाज के सहकारी सैनिकों ने उसे कैद मे ले लिया और उसे कलेवा की ओर रेजिमेंटल केन्द्र में पूछ-ताछ के लिए भेजा।

इस क्षेत्र के जापानी और आजाद हिन्द फौजो का लक्ष्य मनीपुर पर जल्द से जल्द कब्जा करने का था। आजाद हिन्द फौज के सुभाष ब्रिगेड के एक पल्टन को पलेल के हवाई अड्डे पर कब्जा करना था। दूसरी पल्टन को मनीपुर की लड़ाई मे जापानी सेना के साथ आक्रमण करना था।

इम्तियाज खाँ ने पहले ही रिपोर्ट किया था कि अंगरेजों की पाँच डिविजन सेना मनीपुर क्षेत्र में तैनात है। आजाद हिन्द फौज के उच्च कमाण्ड की यह रणनीति बनी कि इन पाँचों डिविजनों को पूरा-पूरा अधिकार में ले लिया जाय। वे सभी आजाद हिन्द फौज मे मिल जायेंगे, इसका विश्वास था। इससे अंगरेजो की दूसरी हिन्दुस्तानी सेनाओं पर भी उचित प्रभाव पड़ेगा।

मनीपुर क्षेत्र के डिविजनों को घेरने के लिए मेजर मघर सिंह और मेजर अजमेर सिंह के अधीन एक पूरी बटालियन पहाड़ो-पहाड़ों कोहिमा क्षेत्र में भेजी गयी। ये सफलता से जाफू की चोटियों पर पहुँच भी गये। इस पूरी बटालियन का सफाया हो जाता अगर रानी गुइालो के दल ने इनका साथ नहीं दिया होता। हुआ यह कि मेजर अजमेर सिंह एक दिन आसाम राइफल की वर्दी पहन फौजी कैन्टीन में पहुँच गया। वह शराब पीने का बड़ा आदी था। उसने अधिक से अधिक शराब खरीदना चाहा। कैन्टीन के हवलदार को उस पर धोखा-धड़ी का शक हो गया क्योंकि उसी दिन आसाम राइफल्स का क्वार्टर मास्टर कोहिमा स्थित आसाम बटालियन का पूरा हिस्सा (कोटा) ले गया था। उसने अजमेर सिंह को गौर से देखा और अन्दर अपने अफसर को खबर करने गया।

अजमेर सिंह ने उसका भाव भाँप लिया। वह भागा। थोड़ी दूर पर एक मकान के सहन मे नागा बच्चे खेल रहे थे। वह उस मकान मे घुस गया। पीछा करने वाले आगे निकल गये।

अजमेर सिंह की भेंट वहाँ कोहिमा साइन्स कालेज की विद्यार्थी सिंगली नंग से हुई। सिंगली नंग ने उसका सही परिचय जान कर उसे बताया,—"वह रानी गुइालो के दल की है।"

आधी रात को अकेले सिंगलीनंग ही नही युवक-युवतियों की एक पूरी टोली मेजर अजमेर सिंह को कोहिमा के प्राचीर के बाहर छोड़ आई। सिंगली नंग अजमेर सिंह की घनिष्ठ मित्र बन गयी। अजमेर सिंह पकड़ा नहीं जा सका, नहीं उसका और उसकी पल्टन का भेद खुल पाया।

अंगरेजों ने इम्फाल के दक्षिणी भाग की मिजो पहाड़ियों पर जो अराकान की पहाड़ियों से मिलती हैं, अफ्रिका का हब्शी ब्रिगेड सुरक्षा पर लगा रखा था। यह

ने पड़े-पड़े ललकारा,—'नेता जी की जय' और हिम्मत से उठ खड़ा हुआ। प्लटून चोटी पर पहुँचने में सफल हो गयी। वहाँ किरचें ताने हाथापाई की घमासान युद्ध शुरू हो गयी। स्काटिश फ्यूजीलियरम् की कम्पनी ने हाथापाई की ऐसी लड़ाई देखी नहीं थी। क्रांतिकारी सैनिकों के सामने वे टिक नहीं सके। वे चौकी छोड़ भागे। बरियार खाँ की टामी गन उन्हें भूनने लगी। वे पटापट गिरने लगे। चौकी खाली हो गयी। प्लटून ने कब्जा कर लिया। लेकिन प्लटून का कमांडर बरियार खाँ ने अभूतपूर्व वीरता प्रदर्शित कर दम तोड़ दिया।

बरियार खाँ को मरणोपरात 'शेरे हिन्द' तगमा प्रदान हुआ। बरियार खाँ आजाद फौज का दूसरा वीर बाँकुरा था जिसे यह पदक, जो 'विक्टोरिया क्रास' के बराबर था, प्रदान किया गया।

प्लटून के जवानों ने उसकी कब्र खोदी, उसे दफनाया। दफनाते समय तक श्याम सिंह आ पहुँचा था। उसकी आँखें सावन-भादों की घटा सी बरस रही थीं।

इस तरह हर दिशा को सुरक्षित कर जापानी और आजाद हिन्द सेना इम्फाल पर अधिकार करने बढ़ रहे थे। इम्फाल केवल दो मील रह गया था कि मूसलाधार बारिस शुरू हुई। वह लगातार कई दिनों तक घनघोर बरसती रही। उसके रुकने के लक्षण नहीं दिखायी पड़े। फौज का बढ़ना रुक गया।

जापान की सैन्य शक्ति बड़ी थी। वे लेकिन क्रान्तिकारी सेना नहीं थे। आजाद हिन्द फौज बारिस में भी उनकी हर मदद कर रही थी। [illegible] अमेरिका ने रसद आदि पहुँचाने की मदद भी रोक दी। प्रकृति के इस कोप के साथ ही अमेरिकन हवाई जहाजों ने प्रशान्त महासागर में हमला कर दिया। जापानी हवाई जहाजों को उधर दौड़ाना पड़ा। तीसरी मुसीबत आज़ाद हिन्द फौज के सामने ही अप्रत्याशित रूप में बन गयी। कोहिमा-दीमापुर का रास्ता रोक कर इम्फाल के बाद भी अंगरेजी सेना के भागने का रास्ता बन्द था। अगरेजी सेना [illegible] नहीं लड़ी। अंगरेजों ने हवाई जहाजों का फायदा उठाया। अमेरिकन विमानों की मदद से उन्होंने ने एक नया डिविजन इस क्षेत्र में उतारा। इम्फाल बन्द होने पर भी जापानी सेना को बाढ़ के कारण रास्तों के कट जाने से इम्फाल से पीछे हटना पड़ा। कोहिमा से आज़ाद हिन्द फौज को भी विवश होकर हटना पड़ा। कोहिमा के 'मिमेट्री हिल' पर आज भी वह चेरी का पेड़ देखा जा सकता है जहाँ आज़ाद हिन्द फौज की भारत-भूमि पर सबसे आगे की चौकी थी। अंगरेजों ने बाकायदा उसे जापानी चौकी बता कर विज्ञापित किया है।

प्रकृति के आगे किसकी चल सकती है? जो हो, इम्फाल और कोहिमा से आज़ाद हिन्द फौज की वापसी भी ऐतिहासिक महत्त्व की रही। वह डंकर्क से अंगरेज़ी सेना की वापसी से कहीं अधिक रोमांचकारी है। न सेना, न रसद, न सड़क, न पुल, न कपड़ा, न लत्ता, न जूता—ऐसी हृदय विदारक स्थिति में आज़ाद फौज लड़ते खपते वापस हुई। दुश्मन ने नहीं, विकराल काल ने उनको हरा दिया। [illegible]

ने पड़े-पड़े ललकारा,—'नेता जी की जय' और हिम्मत से उठ खड़ा हुआ। प्लटून चोटी पर पहुँचने में सफल हो गयी। वहाँ किरचें ताने हाथापाई की घमासान शुरू हो गयी। स्काटिश फ्यूजीलियरम् की कम्पनी ने हाथापाई की ऐसी लड़ाई देखी नहीं थी। क्रांतिकारी सैनिकों के सामने वे टिक नहीं सके। वे चौकी छोड़ भागे। बरियार खाँ की टामी गन उन्हें भूनने लगी। वे पटापट गिरने लगे। चौकी खाली हो गयी। प्लटून ने कब्जा कर लिया। लेकिन प्लटून का कमांडर बरियार खाँ ने अभूतपूर्व वीरता प्रदर्शित कर दम तोड़ दिया।

बरियार खाँ को मरणोपरात 'शेरे हिन्द' तगमा प्रदान हुआ। बरियार खाँ आजाद फौज का दूसरा वीर बांकुरा था जिसे यह पदक, जो 'विक्टोरिया क्रास' के बराबर था, प्रदान किया गया।

प्लटून के जवानों ने उसकी कब्र खोदी, उसे दफनाया। दफनाते समय तक श्याम सिंह आ पहुँचा था। उसकी आँखें सावन-भादों की घटा सी बरस रही थी।

इस तरह हर दिशा को सुरक्षित कर जापानी और आजाद हिन्द सेना इम्फाल पर अधिकार करते बढ रहे थे। इम्फाल केवल दो मील रह गया था कि मूसलाधार बारिस शुरू हुई। वह लगातार कई दिनों तक घनघोर बरसती रही। उसके रुकने के लक्षण नहीं दिखायी पड़े। फौज का बढना रुक गया।

जापान की सैन्य शक्ति बड़ी थी। वे लेकिन क्रान्तिकारी सेना नहीं थे। आजाद हिन्द फौज बारिस में भी उनकी हर मदद कर रही थी। [illegible] ने रसद आदि पहुँचाने की मदद भी रोक दी। प्रकृति के इस कोप के साथ ही अमेरिकन हवाई जहाजों ने प्रशान्त महासागर मे हमला कर दिया। जापानी हवाई जहाजों को उधर दौडाना पडा। तीसरी मुसीबत आजाद हिन्द फौज के सामने ही अप्रत्याशित रूप में बन गयी। कोहिमा-दीमापुर का रास्ता रोक कर इम्फाल के अन्दर भी अंगरेजी सेना के भागने का रास्ता बन्द था। अंगरेजी सेना [illegible] लड़ी। अंगरेजों ने हवाई जहाजों का फायदा उठाया। अमेरिकन विमानों की मदद से उन्होंने ने एक नया डिविजन इस क्षेत्र में उतारा। [illegible] जापानी सेना को बाढ़ के कारण रास्तों के कट जाने से इम्फाल से पीछे हटना पड़ा। कोहिमा से आजाद हिन्द फौज को भी विवश होकर हटना पड़ा। कोहिमा के 'मिमेट्री हिल' पर आज भी वह चेरी का पेड़ देखा जा सकता है जहाँ आजाद हिन्द फौज की भारत-भूमि पर सबसे आगे की चौकी थी। अंगरेजों ने जानबूझ कर उसे जापानी चौकी बता कर विज्ञापित किया है।

प्रकृति के आगे किसकी चल सकती है? जो हो, इम्फाल और कोहिमा से आजाद हिन्द फौज की वापसी भी ऐतिहासिक महत्त्व की रही। वह इंफाल से अंगरेजी सेना की वापसी से कहीं अधिक रोमांचकारी है। न रेल, न मोटर, न सड़क, न पुल, न कपड़ा, न लत्ता, न जूता—ऐसी हृदय विदारक दशा में आजाद फौज भूखे खपते वापस हुई। दुश्मन ने नहीं, विकराल काल ने [illegible]। लेकिन उनके

सुदर्शन चोपड़ा को कलकत्ता में ही सन्देह हो गया था कि ब्रिटिश खुफिया उसका पीछा कर रही है। ग्वालंदो से चांदपुर और मायनामाटी पहुँचने तक कई संदिग्ध अंगरेजों और हिन्दुस्तानियों ने उससे दोस्ती बढ़ानी चाही। वह सबसे कतराता रहा। अंगरेजों को उसके बारे में यह परेशानी थी कि 'लीड्स पायनियरस' के केन्द्रीय दफ्तर में उसका नाम-पता सब सही था और वह उस पल्टन का कुशल वारंट अफसर था। लीड्स पायनियरस सिंगापुर भेजी गयी थी। रास्ते में उस जहाज पर जिस पर वह सिंगापुर की यात्रा कर रही थी जर्मन पनडुब्बियों ने आक्रमण किया था। वह जहाज डूब गया था। एक-दूसरे ब्रिटिश जहाज ने उनके बचे-खुचे दल को सिंगापुर पहुँचाया था। सुनने में यह आया था कि जहाज के डूबने पर कुछ पायनियर सैनिक मद्रास आने वाले जहाज में सवार हो गये थे। वहाँ वे 'ब्रिटिश सैपर्स' में अस्थायी रूप से जोड़ दिए गये थे। चोपड़ा वहीं से चार महीने की लम्बी छुट्टी पर हिन्दुस्तान के दर्शनीय स्थानों का भ्रमण कर रहा था। चोपड़ा मूलत दीमापुर का निवासी है और खाने-पीने वाला विनोद प्रियवक है—यह लीड्स से उसके अभिलेखों में अंकित था। उसके खिलाफ कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं मिल रहा था। वह चटगाँव क्यों जा रहा है, खुफिया पुलिस यह खोज कर रही थी।

मायनामाटी में अंगरेजी नर्सें और परिचारिकाओं का भी जमघट था। वह जिस दिन वहाँ पहुँचा उसी रात वहाँ विशेष नृत्य समारोह था। अपने दोस्तों के साथ नृत्य समारोह में वह भी गया। वह धाकड़ पीने वाला था। पीने की मेज पर ही उसकी भेंट जेन हार्डी से हुई जो अंगरेजी महिला सेना की कैप्टन थी। वह डौरसेट की रहने वाली थी और अपने को सुप्रसिद्ध उपन्यासकार टामस हार्डी का वंशज बताती थी। चोपड़ा उन्हें लीड्स के दिनों से ही जानता था। अंगरेजों से चोपड़ा ने यह गुण सीखा था कि जो युवती दो ह्विस्की पीकर नहीं खुलती उस पर तीसरी बरबाद न की जाय।

हार्डी मनमौजी थी। खुल कर भी नहीं खुलती थी और नहीं खुली होकर भी खुल जाती थी। लीड्स से ही चोपड़ा का उसका यही अनुभव था।

बैंड बजते ही चोपड़ा ने पहले डांस का निवेदन जेन से किया। जेन उसकी बाँहों में आ थिरकने लगी। चोपड़ा उसे दो ह्विस्की पिला चुका था। जेन उससे चिपट कर नृत्य कर रही थी। दोनों के शरीर सनसनाहट से गूँज रहे थे। जेन ने उससे कहा,—"वह अधेड़ कर्नल मेरा मंगेतर है। तुम तीसरी ह्विस्की मुझ पर बर-

सुदर्शन चोपड़ा को कलकत्ता मे ही सन्देह हो गया था कि ब्रिटिश खुफिया उसका पीछा कर रही है। ग्वालंदो मे चांदपुर और मायनामाटी पहुँचने तक कई संदिग्ध अंगरेजों और हिन्दुस्तानियों ने उससे दोस्ती बढ़ानी चाही। वह सबसे कतराता रहा। अंगरेजों को उसके बारे में यह परेशानी थी कि 'लीड्स पायनियरस' के केन्द्रीय दफ्तर में उसका नाम-पता सब सही था और वह उस पल्टन का कुशल वारंट अफसर था। लीड्स पायनियरस सिंगापुर भेजी गयी थी। रास्ते में उस जहाज पर जिस पर वह सिंगापुर की यात्रा कर रही थी जर्मन पनडुब्बियों ने आक्रमण किया था। वह जहाज डूब गया था। एक-दूसरे ब्रिटिश जहाज ने उनके बचे-खुचे दल को सिंगापुर पहुँचाया था। सुनने मे यह आया था कि जहाज के डूबने पर कुछ पायनियर सैनिक मद्रास आने वाले जहाज मे सवार हो गये थे। वहाँ वे 'ब्रिटिश सैपर्स' मे अस्थायी रूप मे जोड़ दिए गये थे। चोपडा वहीं से चार महीने की लम्बी छुट्टी पर हिन्दुस्तान के दर्शनीय स्थानों का भ्रमण कर रहा था। चोपडा मूलत दीमापुर का निवासी है और खाने-पीने वाला विनोद प्रिययुवक है—यह लीड्स मे उसके अभिलेखों में अंकित था। उसके खिलाफ कोई विश्वसनीय प्रमाण नही मिल रहा था। वह चटगाँव क्यों जा रहा है, खुफिया पुलिस यह खोज कर रही थी।

मायनामाटी में अंगरेजी नर्सें और परिचारिकाओ का भी जमघट था। वह जिस दिन वहाँ पहुँचा उसी रात वहाँ विशेष नृत्य समारोह था। अपने दोस्तो के साथ नृत्य समारोह में वह भी गया। वह धाकड पीने वाला था। पीने की मेज पर ही उसकी भेंट जेन हार्डी से हुई जो अंगरेजी महिला सेना की कैप्टन थी। वह डौरसेट की रहने वाली थी और अपने को सुप्रसिद्ध उपन्यासकार टामस हार्डी का वंशज बताती थी। चोपडा उन्हे लीड्स के दिनो से ही जानता था। अगरेजो से चोपडा ने यह गुण सीखा था कि जो युवती दो ह्विस्की पीकर नहीं खुलती उस पर तीसरी बरबाद न की जाय।

हार्डी मनमौजी थी। खुल कर भी नही खुलती थी और नही खुली होकर भी खुल जाती थी। लीड्स से ही चोपडा का उसका यही अनुभव था।

बैंड बजते ही चोपड़ा ने पहले डांस का निवेदन जेन से किया। जेन उसकी बाँहो मे आ थिरकने लगी। चोपडा उसे दो ह्विस्की पिला चुका था। जेन उससे चिपट कर नृत्य कर रही थी। दोनों के शरीर सनसनाहट से गूँज रहे थे। जेन ने उससे कहा,—"वह अधेड़ कर्नल मेरा मंगेतर है। तुम तीसरी ह्विस्की मुझ पर बर-

खुफिया पुलिस का जाना माना अधिकारी हूँ। मुझे आपके बचाव और सुरक्षा का आदेश कहाँ से आया यह मत पूछें। आप जहाँ यह गाड़ी छोड़ेगी वहाँ से रगून पहुँच जायेंगे। ये कागजात और नक्शे जिन्हें लेने आप चटगाँव जा रहे थे अपने पास सुरक्षित रखें।"

अनमोल चंद साहा चले गये। चोपड़ा दहल गया। अराकान में तैनात अंगरेजो की सातवीं डिविजन की आँखो मे धूल झोंकना उस जैसे अनुभवी भेदिए के लिए कठिन नही साबित हुआ। वह सकुशल अकयाब पहुँच गया। वहाँ से आजाद हिन्द फौज की लारियो से वह रगून पहुँचा।

रंगून मे उसे आजाद फौज की इम्फाल और कोहिमा से मर-खप कर वापिसी का पता चला। अजमेर सिंह की प्रेयसि ने, यही वह अपने को कहा करती थी, उससे वापिसी की अमानवीय कठिनाइयो को बताया। कैसे बाढ़ में बहते हुए मेजर अजमेर सिंगमी नंग को अपनी गर्दन पर बिठाये लथपथ चलते-चलते गिर गया, कैसे उसका शरीर प्राणहीन हो बह गया, कैसे वह एक बहते काठ के सहारे एक शिलाखण्ड से जा टकराई और मौत सा दुःख सहने के लिए बच गयी—उसने चोपड़ा को रो-रो कर सुनाया। आजादी के लिए जैसे यदुनंग ने जान दी, रानी गुडालो जंगल जंगल बिलो मे भागी-भागी फिरती है वैसे ही सिंगमी नग सघर्ष करेगी। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होगा, वह अजमेर सिंह के गाँव पटियाला जाकर उसके माँ-बाप-रिश्तेदारो को उसकी दी हुई गंधर्व परिणय की अँगूठी दिखायेगी—इसका उसे अटल विश्वास था।

आजाद हिन्द फौज के जेनरल और कमाडरो के चेहरे बुझे हुए थे। पानीपत की तीसरी लडाई के बाद मरहठो के दिलों का जो हाल हुआ होगा ठीक वही दशा जेनरलो और कमाडरो की थी। नीचे तक के सैनिक आशा खो निराशा के गर्त मे डूब रहे थे।

देशभक्ति धैर्य और कष्टसहिष्णुता की विकट परीक्षा है। क्रान्तिकारी फौज सब कुछ खो कर भी हिम्मत नही हारती। नेता जी अगली पंक्तियो के दौरों मे रंगून वापस आ गये। तुषारापात से झुलसा उपवन वसन्त की शीतल बयार पा जैसे लहलहा उठता है वैसे ही आजाद हिन्द फौज के कमाडरो और जवानों की आशा लौटने लगी। नेता जी ने जेनरलो से कहा,—"बरसात ने हमें वापस ठेला। दुश्मन के हवाई जहाज, टैंक, बख्तरबन्द गाडियाँ या अस्त्र-शस्त्रों ने नहीं। हममे स्वतन्त्रता प्राप्ति का मनोबल है, वे भागने मे थकना हैं। हम फिर सगठित होकर लक्ष्यभेद करेंगे। सफलता हमारे पाँव चूमेगी।"

जेनरल शाहनवाज बोले,—"हमारे सहयोगियों को शायद हमारे शौर्य से ईर्षा रही। उन्होने जैसा चाहिए था वैसा हमारा साथ नही दिया।"

नेता जी महान राजनीतिज्ञ थे। जेनरल के बात [illegible] ने समझा

खुफिया पुलिस का जाना माना अधिकारी हूँ। मुझे आपके बचाव और सुरक्षा का आदेश कहाँ से आया यह मत पूछें। आप जहाँ यह गाड़ी छोड़ेंगी वहाँ से रंगून पहुँच जायेंगे। ये कागजात और नक्शे जिन्हें लेने आप चटगाँव जा रहे थे अपने पास सुरक्षित रखें।"

अनमोल चंद साहा चले गये। चोपड़ा दहल गया। अराकान में तैनात अंगरेजो की सातवी डिविजन की आँखो मे धूल झोंकना उस जैसे अनुभवी भेदिए के लिए कठिन नही साबित हुआ। वह सकुशल अकयाब पहुँच गया। वहाँ से आजाद हिन्द फौज की लारियो से वह रंगून पहुँचा।

रंगून मे उसे आजाद फौज की इम्फाल और कोहिमा से मर-खप कर वापिसी का पता चला। अजमेर सिंह की प्रेयसि ने, यही वह अपने को कहा करती थी, उससे वापिसी की अमानवीय कठिनाइयो को बताया। कैसे बाढ़ में बहते हुए मेजर अजमेर सिंगमी नंग को अपनी गर्दन पर बिठाये लथपथ चलते-चलते गिर गया, कैसे उसका शरीर प्राणहीन हो बह गया, कैसे वह एक बहते काठ के सहारे एक शिलाखण्ड से जा टकराई और मौत सा दु ख सहने के लिए बच गयी—उसने चोपडा को रो-रो कर सुनाया। आजादी के लिए जैसे यदुनंग ने जान दी, रानी गुडालो जंगल जंगल बिलो मे भागी-भागी फिरती है वैसे ही सिंगमी नग सघर्ष करेगी। हिन्दुस्तान स्वतंत्र होगा, वह अजमेर सिंह के गाँव पटियाला जाकर उसके माँ-बाप-रिश्तेदारो को उसकी दी हुई गंधर्व परिणय की अँगूठी दिखायेगी—इसका उसे अटल विश्वास था।

आजाद हिन्द फौज के जेनरल और कमाडरो के चेहरे बुझे हुए थे। पानीपत की तीसरी लडाई के बाद मरहठो के दिलों का जो हाल हुआ होगा ठीक वही दशा जेनरलो और कमाडरो की थी। नीचे तक के सैनिक आशा खो निराशा के गर्त मे डूब रहे थे।

देशभक्ति धैर्य और कष्टसहिष्णुता की विकट परीक्षा है। क्रान्तिकारी फौज सब कुछ खो कर भी हिम्मत नही हारती। नेता जी अगली पंक्तियो के दौरों से रंगून वापस आ गये। तुषारापात से झुलसा उपवन वसन्त की शीतल बयार पा जैसे लहलहा उठता है वैसे ही आजाद हिन्द फौज के कमाडरो और जवानों की आशा लौटने लगी। नेता जी ने जेनरलो से कहा,—"बरसात ने हमें वापस ठेला। दुश्मन के हवाई जहाज, टैंक, बख्तरबन्द गाड़ियाँ या अस्त्र-शस्त्रो ने नहीं। हममे स्वतन्त्रता प्राप्ति का मनोबल है, वे भागने मे थकना हैं। हम फिर सगठित होकर लक्ष्यभेद करेंगे। सफलता हमारे पाँव चूमेगी।"

जेनरल शाहनवाज बोले,—"हमारे सहयोगियों को शायद हमारे शौर्य से ईर्षा रही। उन्होने जैसा चाहिए था वैसा हमारा साथ नहीं दिया।"

नेता जी महान राजनीतिज्ञ थे। जेनरल के बा[illegible] ने समझा

अधिक तेज था ।

महिला सहायक सेना घर-घर चंदा वसूल कर रही थी । नरेन्द्र ने नेता जी से नया पदक स्वीकृत कराया था—सेवके हिन्द । इस पदक का भागी वही हिन्दुस्तानी या हिन्दुस्तानी मूलक मलाया या वर्मी होता जो भामाशाह की तरह अपना सर्वस्व आजाद हिन्द कोष को दान दे देता । अल्पकाल में ही आधे दर्जन से अधिक लोगों ने यह पदक जीता ।

पुखराज मातृत्व बोझ से लदी थी । नरेन्द्र को ही उसका भी काम करना पड़ता था । कुमारी रीता न्यूटन सिंगापुर में और कुमारी मागमी नंग रंगून में पुखराज की विशेष सहायक के रूप में काम कर रही थी । मिस उषा पैट्रिक ईरावदी नदी के पास की पोपा पहाड़ियों में परिचारिका सेवा के आयोजन का भार सँभाले थी ।

रीता न्यूटन ने भी युद्ध-क्षेत्र में भेजे जाने का अनुरोध किया था । इम्तियाज अकयाब अराकान क्षेत्र में था । उसने मेडोक की हिन्दुस्तानी चौकी पर कब्जा जमाये रखने में भी अपूर्व साहस और उत्कृष्ट रण-चातुर्य का परिचय दिया । फौजी कमांड ने रीटा को रंगून बदल दिया ।

सच तो यह है कि रीटा न्यूटन से इम्तियाज ने पिछले साल सिंगापुर में विवाह का प्रस्ताव किया था । रीटा न्यूटन ने ही जवाब में कहा था,—"विवाह के पहले परख जरूरी है ।"

इम्तियाज इसका आशय समझ नहीं सका था । उसके असमंजस को मिटाने के लिए रीटा न्यूटन ने बताया था,—"व्यक्ति की असली क्रान्ति निजी जीवन को सुखी बनाने में होती है ।"

"क्या मतलब ?"—इम्तियाज ने अधीरता से पूछा था ।

"विवाह शरीरों का ही नहीं मनों के आकर्षण का पारा है । यह पारा कभी उतरे नहीं—एक दूसरे के प्रति आकर्षण के उबाल में कभी नहीं आये—तभी प्रेम स्थायी हो सकता है ।"

न समझ कर भी इम्तियाज ने कुमारी रीटा न्यूटन के मर्म को समझा था । उनका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने कहा था,—"मैं पहली दृष्टि में ही इन कमल करों का बन्दी बन गया था ।"

"बन्दी नहीं बराबर बनना है । देश की तरह व्यक्ति की स्वतन्त्रता में भी किसी की अधीनता नहीं होनी चाहिए ।"

सिंगापुर में वर्षों से रहने के कारण इम्तियाज नारी के नये रूप—नवीन जागृति—से कुछ-कुछ परिचित था । नारी की श्रमशक्ति पुरुष के बराबर कैसे हो सकती है, यह वह नहीं समझ पाता था । नारी को पैगम्बरों तक ने खेती बताया । क्यों ?

रीता न्यूटन ने इम्तियाज का सिर अपनी छाती पर लिटा कर कहा,—"प्रेम शरीर का नहीं मन का खेल है ।"

अधिक तेज था।

महिला सहायक सेना घर-घर चंदा वसूल कर रही थी। नरेन्द्र ने नेता जी से नया पदक स्वीकृत कराया था—सेवके हिन्द। इस पदक का भागी वही हिन्दुस्तानी या हिन्दुस्तानी मूलक मलाया या बर्मी होता जो भामाशाह की तरह अपना सर्वस्व आजाद हिन्द कोष को दान दे देता। अल्पकाल में ही आधे दर्जन से अधिक लोगों ने यह पदक जीता।

पुखराज मातृत्व बोझ से लदी थीं। नरेन्द्र को ही उसका भी काम करना पड़ता था। कुमारी रीता न्यूटन सिंगापुर मे और कुमारी मागमी नंग रंगून मे पुखराज की विशेष सहायक के रूप मे काम कर रही थी। मिस उषा पैट्रिक ईरावदी नदी के पास की पोपा पहाड़ियों में परिचारिका सेवा के आयोजन का भार सँभाले थीं।

रीता न्यूटन ने भी युद्ध-क्षेत्र में भेजे जाने का अनुरोध किया था। इम्तियाज अकयाब अराकान क्षेत्र मे था। उसने मेडोक की हिन्दुस्तानी चौकी पर कब्जा जमाये रखने मे भी अपूर्व साहस और उत्कृष्ट रण-चातुर्य का परिचय दिया। फौजी कमांड ने रीटा को रंगून बदल दिया।

सच तो यह है कि रीटा न्यूटन से इम्तियाज ने पिछले साल सिंगापुर मे विवाह का प्रस्ताव किया था। रीटा न्यूटन ने ही जवाब मे कहा था,—"विवाह के पहले परख जरूरी है।"

इम्तियाज इसका आशय समझ नही सका था। उसके असमंजस को मिटाने के लिए रीटा न्यूटन ने बताया था,—"व्यक्ति की असली क्रान्ति निजी जीवन को सुखी बनाने मे होती है।"

"क्या मतलब ?"—इम्तियाज ने अधीरता से पूछा था।

"विवाह शरीरो का ही नही मनो के आकर्षण का पारा है। यह पारा कभी उतरे नही—एक दूसरे के प्रति आकर्षण के उबाल मे कमी नही आये—तभी प्रेम स्थायी हो सकता है।"

न समझ कर भी इम्तियाज ने कुमारी रीटा न्यूटन के मर्म को समझा था। उनका हाथ अपने हाथ मे लेकर उसने कहा था,—"मै पहली दृष्टि मे ही इन कमल करो का बन्दी बन गया था।"

"बन्दी नहीं बराबर बनना है। देश की तरह व्यक्ति की स्वतन्त्रता मे भी किसी की अधीनता नही होनी चाहिए।"

सिंगापुर में वर्षों से रहने के कारण इम्तियाज नारी के नये रूप—नवीन जागृति—से कुछ-कुछ परिचित था। नारी की श्रमशक्ति पुरुष के बराबर कैसे हो सकती है, यह वह नहीं समझ पाता था। नारी को पैगम्बरों तक ने खेती बताया। क्यों ?

रीता न्यूटन ने इम्तियाज का सिर अपनी छाती पर लिटा कर कहा,—"प्रेम शरीर का नहीं मन का खेल है।"

नृत्य करने लगे ।

उधर शाम की उड़ान से रीटा न्यूटन रंगून आ पहुँची थी । वे महिला सहायक सेना की शिविर में ठहरीं । पास ही पुरुषों की शिविर थी । इम्तियाज का पता करने पर उन्हें मालूम हुआ कि वह सिगमी नंग की दावत में गया है ।

ईसाई मत के अनुसार नर की पसली से नारी बनायी गयी । उस पसली में क्या इतनी ईर्षा भरी थी कि दुनिया का सारा डाह स्त्रियों के हिस्से में ही आया ? रीटा न्यूटन उस रात भर जलती रही । सवेरे देर से तैयार हो कर बाहर निकली । इम्तियाज ने दौड़ कर उन्हें बाँहों में भर लिया । रीटा न्यूटन की ईर्षा इतनी धधक रही थी कि उन्होंने चीते की फुर्ती से अपने को इम्तियाज की बाँहों से अलग कर लिया ।

दाल में कुछ काला है सोचकर इम्तियाज ने कहा,—"क्या बात है ?"

"कोई बात नहीं । सिगमी नंग कह रही थी कि रात आप ने बड़ा उन्मुक्त डांस किया ।"

"क्या उसके साथ डांस करने से आप चिढ़ गयी हैं । वह भी जानून है । मैं भी उस जिम्मेदारी पर नियुक्त हूँ । उसने दावत दी । मैं चला गया । तुम आई नहीं थीं ।"

"बस इतनी ही बात ?"

"जी हाँ ।" इम्तियाज ने एक तेजधार वाला चाकू निकाल कर कहा — "यह देखिए मेरे कलेजे में...।" वह चाकू से अपना कलेजा चीर देता अगर [illegible] न्यूटन ने उसका हाथ पकड़ कर खींच न लिया होता ।

हाथ रुक गया, रीटा इम्तियाज से लिपट कर [illegible] झगड़ा आँसुओं में बह गया ।

वे दोनों सिगमी नंग से मिले । उन्हें रंगून के [illegible] नंग को छुट्टी नहीं थी । काम पहले, मनोरंजन बाद [illegible] चली गयीं ।

रीता और इम्तियाज रंगून की खूब सैर किये । वहाँ के [illegible] की हवा बह रही थी । आजाद हिन्द फौज की तैयारियाँ [illegible] रंगून के आसमान में घिर घुमड़ रही थी । पहली [illegible] नहीं देखा गया था ।

रीता इस छुट्टी में हिन्दुस्तान की पवित्र धरती को [illegible] । उसने अपने मन की बात इम्तियाज को बताया । वे [illegible] । वहीं [illegible] बंगाल की खाड़ी में अंगरेजों ने एक सुन्दर 'बीच' (समुद्र की लहरों [illegible] का एक छिछला लम्बा-चौड़ा घाट) बनाया था । जापानियों ने भी [illegible] कर रखा । जापानी सैनिकों के लिए वहाँ 'गीशा' युवतियों का शिविर [illegible] । जापानियों ने बीच का एक भाग हिन्दुस्तानी और बर्मी सैनिकों के लिए अलग [illegible] रखा था । वहाँ मोटल थे जिनमें [illegible] दाम पर कमरे मिलते थे । [illegible]

नृत्य करने लगे ।

उधर शाम की उड़ान से रीटा न्यूटन रंगून आ पहुँची थीं । वे महिला सहायक सेना की शिविर में ठहरीं । पास ही पुरुषों की शिविर थी । इम्तियाज का पता करने पर उन्हें मालूम हुआ कि वह सिगमी नंग की दावत में गया है ।

ईसाई मत के अनुसार नर की पसली से नारी बनायी गयी । उस पसली में क्या इतनी ईर्षा भरी थी कि दुनिया का सारा डाह स्त्रियों के हिस्से में ही आया? रीटा न्यूटन उस रात भर जलती रहीं । सवेरे देर से तैयार हो कर बाहर निकली । इम्तियाज ने दौड़ कर उन्हें बाँहों में भर लिया । रीटा न्यूटन की ईर्षा इतनी अधिक रही थी कि उन्होंने चीते की फुर्ती से अपने को इम्तियाज की बाँहों से अलग कर लिया ।

दाल में कुछ काला है सोचकर इम्तियाज ने कहा,—"क्या बात है ?"

"कोई बात नहीं । सिगमी नंग कह रही थी कि रात आप ने बड़ा उन्मुक्त डांस किया ।"

"क्या उसके साथ डांस करने से आप चिढ़ गयी हैं । वह भी जानती है । मैं भी उस जिम्मेदारी पर नियुक्त हूँ । उसने दावत दी । मैं चला गया । तुम आई नहीं थी ।"

"बस इतनी ही बात ?"

"जी हां ।" इम्तियाज ने एक तेजधार वाला चाकू निकाल कर कहा — यह देखिए मेरे कलेजे में···।" वह चाकू से अपना कलेजा चीर देता अगर [illegible] न्यूटन ने उसका हाथ पकड़ कर खींच न लिया होता ।

हाथ रुक गया, रीटा इम्तियाज से लिपट कर [illegible] झगड़ा आंसुओं में बह गया ।

वे दोनो सिगमी नंग से मिले । उन्हे रंगून के [illegible] सिगमी नंग को छुट्टी नहीं थी । काम पहले, मनोरंजन बाद [illegible] चली गयीं ।

रीता और इम्तियाज रंगून की खूब सैर किये । वहां के [illegible] की हवा बह रही थी । आज़ाद हिन्द फौज की तैयारियां [illegible] रंगून के आसमान में घिर घुमड़ रही थी । पहली [illegible] नहीं देखा गया था ।

रीता इस छुट्टी में हिन्दुस्तान की पवित्र धरती को [illegible] । उसने अपने मन की बात इम्तियाज को बताया । वे अकयाब आये । वहाँ [illegible] बंगाल की खाड़ी में अंगरेजो ने एक सुन्दर 'बीच' (समुद्र की लहरों [illegible] का एक छिछला लम्बा-चौड़ा घाट) बनाया था । जापानियों ने भी [illegible] कर रखा । जापानी सैनिको के लिए वहाँ 'गीशा' युवतियों का शिविर [illegible] । जापानियो ने बीच का एक भाग हिन्दुस्तानी और बर्मी सैनिकों के लिए अलग [illegible] रखा था । वहाँ मोटल थे जिनमें [illegible] दाम पर कमरे मिलते थे । [illegible]

दूसरे दिन वे अराकान क्षेत्र मे पहुँचे। वहाँ पहला हिन्दुस्तानी गाँव इन्दो था। उस पर आजाद हिन्द फौज का कब्जा था। वहाँ पहुँचते ही कुमारी रीता न्यूटन अपने पूर्वजो की तरह मातृभूमि की पवित्र धरती को चूम कर उस पर लोट-पोट हो गयी। वे मेडोक की ओर जाना चाहते थे। उन्हे वहाँ मालूम हुआ कि अंगरेजो की सातवी डिविजन सेना ने इस शान्त क्षेत्र मे प्रत्याक्रमण कर दिया है। स्थानीय कमाडरो ने उन्हे वापस लौट जाने को विवश किया।

वे अभी इन्दो गाँव मे ही थे कि अमेरिकन हवाई जहाज बहुत नीचे उड़ते हुए आये। झाडियो की एक खाई मे रीटा और इम्तियाज दौड़ कर छिप गये। हवाई जहाजों ने कुछ आगे आज़ाद हिन्द फौज के एक वटॅलियन पर बम बरसाया। उस समय पडोस की खाई से एक आदमी उन्हे घूर रहा था। इम्तियाज़ को वह अपने हाव-भाव से अगरेजों का भेदिया लगा। उसने उछल कर उसे दबोच लिया। उसने गिड़गिड़ा कर कहा,—"मैं पडोस के गाँव का हूँ। यहाँ बाजार करने आया था।"

"पडोस के गाँव में वडी बाजार है। इस बस्ती मे तो एक भी दुकान नही।"

वह आदमी अपनी जाल मे स्वय फँस गया। स्थानीय कमाडर के सामने पूछ-ताछ मे उसने स्वीकार किया कि वह नेता जी की खोज-खबर लेने आया था। नेता जी के इन्दो आने की खबर पाकर ही हवाई जहाज उन्हे मार डालने को मिनट-मिनट पर यहाँ दौडे आ रहे हैं।

नेता जी सचमुच वहाँ आने वाले थे। इम्तियाज नेता जी को यहाँ न आने देने के लिए उड कर उनके पास उसी क्षण जाना चाहता था। बेतार से सन्देश भेज दिया गया। भेदिए को गिरफ्तार कर पीछे भेजा गया।

इम्तियाज़ और रीटा भी उसी गाडी मे अकयाब लौटे। वहाँ सिगमी नग भी समुद्र-स्नान के लिए आई थी। इससे इम्तियाज़ और रीता दोनो को आश्चर्य हुआ।

इम्तियाज ने बाद मे सुना कि बेतार का सन्देश पाकर भी नेता जी उड कर इंदो गाँव पहुँचे। खतरे के सामने वे पर्वत की तरह अटल बन जाते थे। वे हर खतरे की कलाई मोड देते थे।

अराकन क्षेत्र में सातवी डिविजन का आक्रमण तूफानी था। आज़ाद हिन्द फौज और जापानी सेना को अराकान क्षेत्र छोडना पडा। कलादान की घाटी मे वे अब भी डटे थे।

उधर जेनरल स्लिम की अमिरीकी फौजो ने इरावदी पार करने के लिए उसी समय हमला किया। स्लिम का इरादा वर्मा को रौंद डालना था।

इरावदी का मोर्चा अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इम्तियाज की बदली बेतो पोपा पहाड़ियो मे हुई। सिगमी नग नागा थी। वर्मी नागा पोपा तक फैले थे।

दूसरे दिन वे अराकान क्षेत्र मे पहुँचे। वहाँ पहला हिन्दुस्तानी गाँव इन्दो था। उस पर आज़ाद हिन्द फौज का कब्ज़ा था। वहाँ पहुँचते ही कुमारी रीता न्यूटन अपने पूर्वजो की तरह मातृभूमि की पवित्र धरती को चूम कर उस पर लोट-पोट हो गयी। वे मेडौक की ओर जाना चाहते थे। उन्हे वहाँ मालूम हुआ कि अंगरेजो की सातवी डिविजन सेना ने इस शान्त क्षेत्र मे प्रत्याक्रमण कर दिया है। स्थानीय कमाडरो ने उन्हे वापस लौट जाने को विवश किया।

वे अभी इन्दो गाँव मे ही थे कि अमेरिकन हवाई जहाज बहुत नीचे उड़ते हुए आये। झाडियो की एक खाई मे रीटा और इम्तियाज़ दौड कर छिप गये। हवाई जहाजो ने कुछ आगे आज़ाद हिन्द फौज के एक बटेलियन पर बम बरसाया। उस समय पडोस की खाई से एक आदमी उन्हे घूर रहा था। इम्तियाज़ को वह अपने हाव-भाव से अगरेजों का भेदिया लगा। उसने उछल कर उसे दबोच लिया। उसने गिड़गिड़ा कर कहा,—"मैं पडोस के गाँव का हूँ। यहाँ बाजार करने आया था।"

"पडोस के गाँव में वडी बाजार है। इस बस्ती मे तो एक भी दुकान नही।"

वह आदमी अपनी जाल मे स्वय फँस गया। स्थानीय कमाडर के सामने पूछ-ताछ मे उसने स्वीकार किया कि वह नेता जी की खोज-खबर लेने आया था। नेता जी के इन्दो आने की खबर पाकर ही हवाई जहाज उन्हे मार डालने को मिनट-मिनट पर यहाँ दौडे आ रहे हैं।

नेता जी सचमुच वहाँ आने वाले थे। इम्तियाज नेता जी को यहाँ न आने देने के लिए उड कर उनके पास उसी क्षण जाना चाहता था। बेतार से सन्देश भेज दिया गया। भेदिए को गिरफ्तार कर पीछे भेजा गया।

इम्तियाज़ और रीटा भी उसी गाडी मे अकयाब लौटे। वहाँ सिगमी नग भी समुद्र-स्नान के लिए आई थी। इससे इम्तियाज़ और रीता दोनो को आश्चर्य हुआ।

इम्तियाज़ ने बाद मे सुना कि बेतार का सन्देश पाकर भी नेता जी उड कर इंदो गाँव पहुँचे। खतरे के सामने वे पर्वत की तरह अटल बन जाते थे। वे हर खतरे की कलाई मोड देते थे।

अराकन क्षेत्र में सातवी डिविजन का आक्रमण तूफानी था। आज़ाद हिन्द फौज और जापानी सेना को अराकान क्षेत्र छोड़ना पडा। कलादान की घाटी मे वे अब भी डटे थे।

उधर जेनरल स्लिम की अमिरीकी फौजो ने इरावदी पार करने के लिए उसी समय हमला किया। स्लिम का इरादा बर्मा को रौंद डालना था।

इरावदी का मोर्चा अत्यन्त महत्वपूर्ण था। इम्तियाज की बदली बेता पोपा पहाड़ियो मे हुई। सिगमी नग नागा थी। वर्मी नागा पोपा तक फैले थे।

चल पड़ा। पीछे-पीछे बख्तर बन्द गाड़ियां चली। दलदल से कुछ पहले ब्रिगेडियर ने कुछ टैंकों को बायें और कुछ को दायें से पहाड़ पर जाने का आदेश दिया। दूरबीन से पहाड़ पर उसने दुश्मन के सैनिकों को देख लिया था। दोनों बाजू से टैंक दलदल मे बढ़े और बढते ही धँस गये। उन पर श्याम सिंह के प्लटून की गोलियों की बौछार पड़ने लगी। और सिगमी नंग ने अपने जेबी रिवाल्वर से अमेरिकन ब्रिगेडियर को परलोक भेज दिया। वह जीप लेकर पीछे मुड़ी और दूर के रास्ते से पोपा पहाड़ियों मे अपने दल से जा मिली।

छतरी ब्रिगेड का कमांडर पहली ही लड़ाई मे मारा गया और उसके टैंक दलदल मे धँस गये। अमेरिकन सेना घबडा गयी। उसकी सतर्कता बढ़ चली। यह अभी लडी नही थी। अंगरेज उसे लड़ा रहे थे। वह लडने को आगे बढ़ी।

अमेरिकन फौजें यूरोप मे भी उतर गयी थी। हिटलर को रूस पर आक्रमण का मज़ा मिल रहा था। रूसी फौजें पीछा करती हुई उसे जर्मनी के भीतर धकेल रही थी। इटली ने हार मान लिया था। लडाई पलट रही थी।

प्रशान्त सागर में और वहाँ के द्वीपो मे अमेरिकन सरगर्मी तेजतम हो चली थी। जापान को अब स्वदेश की सुरक्षा की चिन्ता ग्रस रही थी। उनके हवाई जहाज बर्मा से जापान वापस किये जा रहे थे। बर्मा मे नयी कुमुक वे ला नही पा रहे थे। इधर जेनरल स्लिम की फौजें आगे बढ़ती ही जा रही थी।

पोपा की पहाडियों की लडाई सुभाष ब्रिगेड की अपनी रक्षा के लिए बहुत महत्व की थी। अमेरिकन सैन्य सज्जा के सामने क्रान्तिकारी सेना शिवा जी की रण-नीति पर ही लड सकती थी। वह दुश्मन को आश्चर्यचकित कर मारती थी और भाग कर पहाडो मे छिप जाती थी। हर लड़ाई मे आजाद हिन्द सैनिक बागडी की वीरगति का अनुसरण कर रहे थे। श्याम सिंह भूखे बाघ की तरह अंगरेजो—अमेरिकनो पर टूट पडता था। उसे मारने वाली गोली बनी नहीं थी। जेनरल शाहनवाज ने उससे कहा,—"अंगरेज कभी इस लड़ाई को हार गये। अब अमेरिकनों से निपटना है। क्रान्तिकारी सेना जब तक एक भी गोली है लड़ती है। हम 'दिल्ली चलेंगे, चलते रहेंगे जब तक वहाँ पहुँच न जायें।'

आज़ाद हिन्द फौज के हौसले बढ़े थे। उसका सेनापति बार-बार बताना नहीं भूलता था कि जैसे अंगरेज हारे हैं वैसे ही अमेरिकनो की दशा होगी।

●

चल पड़ा। पीछे-पीछे बख्तर बन्द गाड़ियां चली। दलदल से कुछ पहले ब्रिगेडियर ने कुछ टैंकों को बायें और कुछ को दायें से पहाड़ पर जाने का आदेश दिया। दूरबीन से पहाड़ पर उसने दुश्मन के सैनिकों को देख लिया था। दोनों बाजू से टैंक दलदल मे बढ़े और बढते ही धंस गये। उन पर श्याम सिंह के प्लटून की गोलियों की बौछार पड़ने लगी। और सिगमी नंग ने अपने जेबी रिवाल्वर से अमेरिकन ब्रिगेडियर को परलोक भेज दिया। वह जीप लेकर पीछे मुड़ी और दूर के रास्ते से पोपा पहाड़ियों मे अपने दल से जा मिली।

छतरी ब्रिगेड का कमांडर पहली ही लड़ाई मे मारा गया और उसके टैंक दलदल मे धंस गये। अमेरिकन सेना घबड़ा गयी। उसकी सतर्कता बढ़ चली। यह अभी लडी नही थी। अंगरेज उसे लड़ा रहे थे। वह लडने को आगे बढ़ी।

अमेरिकन फौजें यूरोप मे भी उतर गयी थी। हिटलर को रूस पर आक्रमण का मज़ा मिल रहा था। रूसी फौजें पीछा करती हुई उसे जर्मनी के भीतर धकेल रही थी। इटली ने हार मान लिया था। लड़ाई पलट रही थी।

प्रशान्त सागर में और वहाँ के द्वीपो मे अमेरिकन सरगर्मी तेजतम हो चली थी। जापान को अब स्वदेश की सुरक्षा की चिन्ता ग्रस रही थी। उनके हवाई जहाज बर्मा से जापान वापस किये जा रहे थे। बर्मा मे नयी कुमुक वे ला नही पा रहे थे। इधर जेनरल स्लिम की फौजें आगे बढ़ती ही जा रही थी।

पोपा की पहाड़ियों की लड़ाई सुभाष ब्रिगेड की अपनी रक्षा के लिए बहुत महत्व की थी। अमेरिकन सैन्य सज्जा के सामने क्रान्तिकारी सेना शिवा जी की रणनीति पर ही लड सकती थी। वह दुश्मन को आश्चर्यचकित कर मारती थी और भाग कर पहाडो मे छिप जाती थी। हर लड़ाई मे आजाद हिन्द सैनिक बागड़ी की वीरगति का अनुसरण कर रहे थे। श्याम सिंह भूखे बाघ की तरह अगरेजो—अमेरिकनो पर टूट पडता था। उसे मारने वाली गोली बनी नहीं थी। जेनरल शाहनवाज ने उससे कहा,—"अंगरेज कभी इस लड़ाई को हार गये। अब अमेरिकनों से निपटना है। क्रान्तिकारी सेना जब तक एक भी गोली है लड़ती है। हम 'दिल्ली चलेंगे, चलते रहेंगे जब तक वहाँ पहुँच न जायें।'

आज़ाद हिन्द फौज के हौसले बढ़े थे। उसका सेनापति बार-बार बताना नहीं भूलता था कि जैसे अंगरेज हारे हैं वैसे ही अमेरिकनो को दशा होगी।

"गद्दार को पहचानना बहुत कठिन काम है।"—कुँवर साहब ने कहा।

"गद्दार न होते और हिन्दुस्तानी अंगरेजों का साथ न दिये होते तो अंगरेज यहाँ कै दिन टिक पाते। आज भी हिन्दुस्तानी फौज अंगरेजों के विरुद्ध खड़ी हो जाय तो वे भाग खड़े हों।"

कुँवर साहब ने कमलेश को बड़े गौर से निहारा। कमलेश की भावना से, उसकी वर्तमान समस्या से, वह कुछ-कुछ परिचित थे। कमलेश सुकवि विदीर्ण पर मन हार कर भी उनसे दु.खी थी। असली कारण जो भी हो बाहरी कारण तो यही प्रकट होता था कि विदीर्ण अगरेजी फौज का प्रचार करता था।

कमलेश उस शाम भरी रही। उसके मन मे बार-बार यही उठता था कि वह पुरुष जाति से बदला चुकाते-चुकाते ऐसे आदमी से बिंध गयी जो देशभक्ति के नाम पर कलंक है।

खाने के बाद बड़ी रात तक वह मन के भावों के उद्वेग में रही। फिर उसने निश्चयपूर्वक अपने जीवन का पहला प्रेम-पत्र लिखना शुरू किया। पत्र सुकवि विदीर्ण की चिट्ठी के जवाब में था। सुकवि ने पूर्वी सरहद के किसी अज्ञात स्थान मे उसे लिखा था। चिट्ठी रस से परिपूर्ण थी। उसमें कवि जी ने अपना कलेजा रख कर कमलेश से प्रेम की भीख माँगी थी। अपने दारुण दु ख को असह्य बताया था और अपने स्नेह की पवित्रता की दुहाई दी थी।

अपनी भीषण परिस्थिति विशेष मे कमलेश ने कवि जी के यहाँ शरण ली थी। वह उनके प्रति श्रद्धा से भर आयी थी। उनके साथ रहते-रहते यह श्रद्धा प्रेम का रूप भी ग्रहण कर चुकी थी। उसकी भी वय.सन्धि थी। उसे सहृदय मित्र का अभाव रहा ही था। सुकवि उसके मन में भी घर कर लिए थे। दस्तावेजो की चोरी से उसका प्रेम घृणा मे बदल गया था। घृणा इतनी उत्कट थी कि वह हैरान हो कर सोचने लगी थी कि क्या प्रेम और घृणा एक द्रव के दो रूप हैं? कभी-कभी यह सोच कर कि उस जैसी नारी एक गद्दार से प्रेम कर बैठी, वह अपने पर हँसा करती थी। गद्दार से प्रेम की अपेक्षा कुत्तों से जीवित नुच कर मर जाना अच्छा था। कवि जी ने उन दस्तावेजों से जरूर ही अच्छा धन कमाया होगा—अब उनकी हालत कितनी सम्पन्न थी। उनकी तरक्की हो गयी थी और वे शान-शौकत वाले हो गये थे।

इतिहास में साम्राज्ञियों के गुलामो से प्रेम अंकित हैं। गद्दारों से प्रेम के उदाहरण कहीं नही हैं। हर विदेशी विजेता का राज विजित नागरिको के सहयोग से ही चलता है। लेकिन जब स्वदेश स्वतंत्रता के लिए कमर कस कर संघर्ष में जुटा हो उस समय स्वदेश के विरुद्ध विदेशी शासको की मदद करना घोर नारकीय अपराध है। विदीर्ण की करतूत इसी निम्नकोटि की है। अंगरेजों के अमानवीय शोषण से ही सेठ दुर्लभराय और अमीचंद से लेकर विदीर्ण क्या उससे भी नीचे तक गद्दारी के पाप पर उतर आये। विदीर्ण नराधम साबित हुआ। उसे घोर आश्चर्य हुआ कि वैसे पातकी

"गद्दार को पहचानना बहुत कठिन काम है।"—कुँवर साहब ने कहा।

"गद्दार न होते और हिन्दुस्तानी अंगरेजों का साथ न दिये होते तो अंगरेज यहाँ के दिन टिक पाते। आज भी हिन्दुस्तानी फौज अंगरेजों के विरुद्ध खड़ी हो जाय तो वे भाग खड़े हों।"

कुँवर साहब ने कमलेश को बड़े गौर से निहारा। कमलेश की भावना से, उसकी वर्तमान समस्या से, वह कुछ-कुछ परिचित थे। कमलेश सुकवि विदीर्ण पर मन हार कर भी उनसे दुःखी थी। असली कारण जो भी हो बाहरी कारण तो यही प्रकट होता था कि विदीर्ण अगरेजी फौज का प्रचार करता था।

कमलेश उस शाम भरी रही। उसके मन मे बार-बार यही उठता था कि वह पुरुष जाति से बदला चुकाते-चुकाते ऐसे आदमी से विंध गयी जो देशभक्ति के नाम पर कलंक है।

खाने के बाद बड़ी रात तक वह मन के भावों के उद्वेग में रही। फिर उसने निश्चयपूर्वक अपने जीवन का पहला प्रेम-पत्र लिखना शुरू किया। पत्र सुकवि विदीर्ण की चिट्ठी के जवाब में था। सुकवि ने पूर्वी सरहद के किसी अज्ञात स्थान से उसे लिखा था। चिट्ठी रस से परिपूर्ण थी। उसमें कवि जी ने अपना कलेजा रख कर कमलेश से प्रेम की भीख माँगी थी। अपने दारुण दुःख को असह्य बताया था और अपने स्नेह की पवित्रता की दुहाई दी थी।

अपनी भीषण परिस्थिति विशेष मे कमलेश ने कवि जी के यहाँ शरण ली थी। वह उनके प्रति श्रद्धा से भर आयी थी। उनके साथ रहते-रहते यह श्रद्धा प्रेम का रूप भी ग्रहण कर चुकी थी। उसकी भी वय.सन्धि थी। उसे सहृदय मित्र का अभाव रहा ही था। सुकवि उसके मन में भी घर कर लिए थे। दस्तावेजो की चोरी से उसका प्रेम घृणा मे बदल गया था। घृणा इतनी उत्कट थी कि वह हैरान हो कर सोचने लगी थी कि क्या प्रेम और घृणा एक द्रव के दो रूप हैं? कभी-कभी यह सोच कर कि उस जैसी नारी एक गद्दार से प्रेम कर बैठी, वह अपने पर हँसा करती थी। गद्दार से प्रेम की अपेक्षा कुत्तों से जीवित नुच कर मर जाना अच्छा था। कवि जी ने उन दस्तावेजों से जरूर ही अच्छा धन कमाया होगा—अब उनकी हालत कितनी सम्पन्न थी। उनकी तरक्की हो गयी थी और वे शान-शौकत वाले हो गये थे।

इतिहास में साम्राज्ञियों के गुलामों से प्रेम अंकित हैं। गद्दारों से प्रेम के उदाहरण कहीं नहीं हैं। हर विदेशी विजेता का राज विजित नागरिकों के सहयोग से ही चलता है। लेकिन जब स्वदेश स्वतंत्रता के लिए कमर कस कर संघर्ष में जुटा हो उस समय स्वदेश के विरुद्ध विदेशी शासकों की मदद करना घोर नारकीय अपराध है। विदीर्ण की करतूत इसी निम्नकोटि की है। अंगरेजों के अमानवीय शोषण से ही सेठ दुर्लभराय और अमीचंद से लेकर विदीर्ण क्या उससे भी नीचे तक गद्दारी के पाप पर उतर आये। विदीर्ण नराधम साबित हुआ। उसे घोर आश्चर्य हुआ कि वैसे पातकी

गीध दृष्टि उसके हाड़-चाम पर पड़ने लगी। हर छल कपट से पैसे वालों ने उसे धोखा दे बरबाद करना चाहा। पैसे वालों की सन्तान भी कैसे पैसे वाले बन जाते हैं। मेहनत करने वाले हमेशा मजबूर क्यों रहते हैं? यह ईश्वर का विधान कदापि नहीं हो सकता। यह समाज का विधान है। इसे बदलना पड़ेगा जल्दी से पहले। आदमी-आदमी बराबर क्यों न हो? सबकी प्रतिष्ठा तब बराबर होगी, सबको सब सुविधा होगी। असन्तोष का कारण नहीं होगा और सब मन से सुखी रहेंगे। सम्पत्ति क्या जघन्य बुराई की जड़ नहीं? नारी पर सम्पत्ति के बल पर, उसकी सुरक्षा का भय दिखा कर, पुरुष ने अनादि काल से ही कितना अत्याचार किया। पुरुष ने यह कब समझा कि नारी के बिना उसकी जाति मिट जायेगी। नारी माँ है, मानव मात्र की आदि शक्ति। उस नारी पर इतना अत्याचार?

कमलेश सदा ज्ञात या अज्ञात रूप में पुरुष वृत्ति के विरोध में संघर्ष करती रही। कोई भी पूँजीपति उसे लाख कोशिश कर अपने चंगुल में नहीं फँसा पाया। वह फँसी एक ऐसे से जो अपना पेट भरने के लिए देश से गद्दारी करता है। गद्दार शब्द का ध्यान आते ही वह चौंक उठी। गद्दार काफिर होता है—महाघृणित। उसको जीने का अधिकार नहीं होना चाहिए।

कमलेश रात भर अपने ताने बाने बुनती रही। सवेरे आँखें झपकीं। हावड़ा जल्दी ही आ गया।

वह होटल गयी। मुकवि अभी नहीं पहुँचे थे। दिन भर वह सोती रही। नींद में सफर की थकावट मिटी। शाम को तरो ताजा हो होटल से बाहर धर्मतल्ला की ट्राम पर आ बैठी। हावड़ा के पुल से भागीरथी के चौड़े पाट में जहाजों, अग्नि-बोटों और नौकाओं का बिखराव उसे अच्छा लगा। कलकत्ता की घनी आबादी विश्व युद्ध के कारण छोर छू रही थी। बसों, ट्रामों, मोटरों, ट्रकों, घोड़ागाड़ियों के साथ-साथ रास्तों पर पैदल चलने वालों की भीड़ का धक्कमधुक्का भयावना नहीं तो लोमहर्षक था। ट्राम चींटी की चाल में रुक-रुक कर चल रही थी। धर्मतल्ला पहुँचने में दो घण्टे लगे।

ट्राम से उतर वह चौरंगी के रेले-पेले में ह्वाइटवे लाइला वाले चौराहे के पास खड़ी सोच रही थी कि क्या करे या किधर जाय कि एक फौजी गाड़ी उसके ठीक सामने आ कर रुकी। कैप्टन सिमली थीं। उन्होंने गाड़ी का फाटक खोला। कमलेश उसमें जा बैठी।

अलीपुर के चिड़ियाखाने से ज़रा आगे आम रास्ते पर जो सड़क बायें मुड़ती है उस पर फौजी अधिकारियों के निवास थे। सिमली वहीं एक रमणीक बंगले में रहती थीं।

शाम ढल चुकी थी। बत्तियाँ जगमगा रही थीं। कैप्टन सिमली के गोल कमरे में कई जोड़े गिलासों में रंगीन पेय ढाले आमोद-प्रमोद में जुटे थे। कमलेश को लगा कि औरत-मर्द सभी शराब पी रहे हैं। क्या युद्ध जनित भीषण तनाव से शराब राहत दिलाती

गीध दृष्टि उसके हाड़-चाम पर पड़ने लगी । हर छल कपट से पैसे वालों ने उसे धोखा दे बरबाद करना चाहा । पैसे वालो की सन्तान भी कैसे पैसे वाले बन जाते हैं । मेहनत करने वाले हमेशा मजबूर क्यों रहते हैं ? यह ईश्वर का विधान कदापि नहीं हो सकता । यह समाज का विधान है । इसे बदलना पड़ेगा जल्दी से पहले । आदमी-आदमी बराबर क्यो न हों ? सबकी प्रतिष्ठा तब बराबर होगी, सबको सब सुविधा होगी । असन्तोष का कारण नहीं होगा और सब मन से सुखी रहेंगे । सम्पत्ति क्या जघन्य बुराई की जड़ नही ? नारी पर सम्पत्ति के बल पर, उसकी सुरक्षा का भय दिखा कर, पुरुष ने अनादि काल से ही कितना अत्याचार किया । पुरुष ने यह कब समझा कि नारी के बिना उसकी जाति मिट जायेगी । नारी मां है, मानव मात्र की आदि शक्ति । उस नारी पर इतना अत्याचार ?

कमलेश सदा ज्ञात या अज्ञात रूप मे पुरुष वृत्ति के विरोध मे संघर्ष करती रही । कोई भी पूंजीपति उसे लाख कोशिश कर अपने चंगुल में नही फँसा पाया । वह फँसी एक ऐसे से जो अपना पेट भरने के लिए देश से गद्दारी करता है । गद्दार शब्द का ध्यान आते ही वह चौंक उठी । गद्दार काफिर होता है—महाघृणित । उसको जीने का अधिकार नहीं होना चाहिए ।

कमलेश रात भर अपने ताने बाने बुनती रही । सबेरे आँखें झपकी । हावड़ा जल्दी ही आ गया ।

वह होटल गयी । मुकुवि अभी नहीं पहुँचे थे । दिन भर वह सोती रही । नीद मे सफर की थकावट मिटी । शाम को तरो ताजा हो होटल से बाहर धर्मतल्ला की ट्राम पर आ बैठी । हावड़ा के पुल से भागीरथी के चौड़े पाट मे जहाजों, अग्नि-बोटों और नौकाओं का बिखराव उसे अच्छा लगा । कलकत्ता की घनी आबादी विश्व युद्ध के कारण छोर छू रही थी । बसों, ट्रामों, मोटरो, ट्रकों, घोड़ागाडियो के साथ-साथ रास्तों पर पैदल चलने वालो की भीड़ का धक्कमधुक्का भयावना नही तो लोमहर्षक था । ट्राम चींटी की चाल मे रुक-रुक कर चल रही थी । धर्मतल्ला पहुँचने मे दो घण्टे लगे ।

ट्राम से उतर वह चौरंगी के रेले-पेले मे ह्वाइटवे लाइला वाले चौराहे के पास खड़ी सोच रही थी कि क्या करे या किधर जाय कि एक फौजी गाडी उसके ठीक सामने आ कर रुकी । कैप्टन सिमली थीं । उन्होंने गाडी का फाटक खोला । कमलेश उसमे जा बैठी ।

अलीपुर के चिड़ियाखाने मे ज़रा आगे आम रास्ते पर जो सड़क बायें मुड़ती है उस पर फौजी अधिकारियों के निवास थे । सिमली वहीं एक रमणीक बंगले मे रहती थीं ।

शाम ढल चुकी थी । बत्तियाँ जगमगा रही थीं । कैप्टन सिमली के गोल कमरे में कई जोड़े गिलासों मे रंगीन पेय ढाले आमोद-प्रमोद मे जुटे थे । कमलेश को लगा कि औरत-मर्द सभी शराब पी रहे हैं । क्या युद्ध जनित भीषण तनाव से शराब राहत दिलाती —

प्रतिकार कैसे होगा ? कमलेश भावों के तूफान में बहने लगी।

देर में जब वह सँभली तब उसने देखा कि कैप्टन पिल्ले मोनिका से लिपटे उसे चूम रहे थे—बार-बार चूम रहे थे। उसका मन हँस पड़ा। बुड्ढे और अधेड़ प्रेम-प्रदर्शन के लिए चूमते बहुत हैं।

वह जाने को उठ खड़ी हुई। कैप्टन सिमली से भेंट कर उन्हें धन्यवाद देकर वह जाना चाहती थी। वह उठी, भीतर न जाकर बाहर आई। बाहर फौजी ड्राइवर ने उनसे कहा,—"कैप्टन साहब ने आपको छोड़ आने को कहा है।"

"क्या मैं कैप्टन साहब से एक मिनट को मिल सकती हूँ ?"

कैप्टन सिमली ड्रेसिंग गाउन बाँधे स्वयं आ गयी। बोली,—"एक बात कहनी थी। अगर चाहो तो उन मेजर साहब से जो तंत्र जगाने के लिए मुझे कामाख्या ले गये थे मिल लेना। निज़ाम हाउस में रहते हैं। उनका तंत्र सफल हुआ है। उन्हें मिलिटरी क्रास किसी अज्ञात बहादुरी के लिए मिला है। तंत्र के लिए नित नूतन चाहिए।"

"इतने बहादुर हैं ?"—कमलेश ने परिहास किया।

"तुम्हें पूछ रहे थे। अपने को छत्रसाल का वंशज बताते हैं। महाराजा भूपेन्द्र के दामाद हैं। ससुर की तरह ही सैंकड़ों का हरम रखते हैं। मैं तो किसी घाट बँधती नहीं। तुम जैसा चाहो। एक बात जरूर है। उनके रनिवास में रहने पर जागीर मिलेगी। अगर हिन्दुस्तान को औपनिवेशिक स्वराज भी मिला तो रियासतें स्वतंत्र हो जायगी। जागीरें भी स्वतंत्र होंगी।"

"इतने बड़े रनिवास की कितनी जागीरें और कितनी स्वतंत्र रियासतें होंगी ? तीन या चार सौ तो पहले से ही है।"

ड्राइवर गाड़ी ले आया। सिमली ड्रेसिंग गाउन के भीतर से अपना सीना झलकाती भीतर जाने वाली ही थी कि एक टैक्सी से एक जोड़ा उतरा। "आओ, आओ।"—कहते हुए कमलेश से नवागतों का उन्होंने परिचय कराया,—"मेजर साहब की नवीनतम खोज़ मिस अतिया मेहरुन्निसा। इन्हें बिलारी की जागीर अभी से लिख दी गयी है। इनके चचाजात भाई मेराज अली मेजर साहब के अंग-रक्षक हैं।"

वे दोनों कमलेश पर एक नजर डाल भीतर चले गये। कैप्टन सिमली भी चली गयी। कमलेश यंत्र चालित सी गाड़ी में बैठी। गाड़ी उसे हावड़ा छोड़ गयी। उस रात वह संसार के सबसे पुराने पेशे शरीर के व्यापार की वृत्तियों के कारणों में उलझी रही।

कवि जी दूसरे दिन आ पहुँचे। कमलेश खुश हुई, साथ ही अचकचाई। गद्दारी ने सुकवि को कितना संवार दिया था। वे भरे पूरे, मोटे ताज़े, सम्पन्न लग रहे थे।

कवि जी कुछ खिंचे थे। बोले,—"बड़ी मुश्किल से सात दिन की छुट्टी मिली। इधर हिन्दू मुसलिम दंगों की अफवाह है।"

प्रतिकार कैसे होगा ? कमलेश भावो के तूफान मे बहने लगी।

देर में जब वह सँभली तब उसने देखा कि कैप्टन पिल्ले मोनिका से लिपटे उसे चूम रहे थे—बार-बार चूम रहे थे। उसका मन हँस पड़ा। बुड्ढे और अधेड प्रेम-प्रदर्शन के लिए घूमते बहुत हैं।

वह जाने को उठ खड़ी हुई। कैप्टन सिमली से भेंट कर उन्हे धन्यवाद देकर वह जाना चाहती थी। वह उठी, भीतर न जाकर बाहर आई। बाहर फौजी ड्राइवर ने उनसे कहा,—"कैप्टन साहब ने आपको छोड आने को कहा है।"

"क्या मैं कैप्टन साहब से एक मिनट को मिल सकती हूँ ?"

कैप्टन सिमली ड्रेसिंग गाउन बाँधे स्वयं आ गयी। बोली,—"एक बात कहनी थी। अगर चाहो तो उन मेजर साहब से जो तंत्र जगाने के लिए मुझे कामाख्या ले गये थे मिल लेना। निज़ाम हाउस में रहते है। उनका तंत्र सफल हुआ है। उन्हें मिलिटरी क्रास किसी अज्ञात बहादुरी के लिए मिला है। तंत्र के लिए नित नूतन चाहिए।"

"इतने बहादुर हैं ?"—कमलेश ने परिहास किया।

"तुम्हे पूछ रहे थे। अपने को छत्रसाल का वंशज बताते हैं। महाराजा भूपेन्द्र के दामाद हैं। ससुर की तरह ही सैकडो का हरम रखते हैं। मैं तो किसी घाट बँधती नही। तुम जैसा चाहो। एक बात जरूर है। उनके रनिवास मे रहने पर जागीर मिलेगी। अगर हिन्दुस्तान को औपनिवेशिक स्वराज भी मिला तो रियासतें स्वतंत्र हो जायगी। जागीरें भी स्वतंत्र होंगी।"

"इतने बड़े रनिवास की कितनी जागीरें और कितनी स्वतंत्र रियासतें होंगी ? तीन या चार सौ तो पहले से ही है।"

ड्राइवर गाडी ले आया। सिमली ड्रेसिंग गाउन के भीतर से अपना सीना झलकाती भीतर जाने वाली ही थी कि एक टैक्सी से एक जोड़ा उतरा। "आओ, आओ।"—कहते हुए कमलेश से नवागतों का उन्होंने परिचय कराया,—"मेजर साहब की नवीनतम खोज़ मिस अतिया मेहरुन्निसा। इन्हें बिलारी की जागीर अभी से लिख दी गयी है। इनके चचाजात भाई मेराज अली मेजर साहब के अंग-रक्षक हैं।"

वे दोनो कमलेश पर एक नजर डाल भीतर चले गये। कैप्टन सिमली भी चली गयी। कमलेश यंत्र चालित सी गाड़ी मे बैठी। गाडी उसे हावड़ा छोड गयी। उस रात वह संसार के सबसे पुराने पेशे शरीर के व्यापार की वृत्तियों के कारणो मे उलझी रही।

कवि जी दूसरे दिन आ पहुँचे। कमलेश खुश हुई, साथ ही अचकचाई। गद्दारी ने सुकवि को कितना संवार दिया था। वे भरे पूरे, मोटे ताज़े, सम्पन्न लग रहे थे।

कवि जी कुछ खिंचे थे। बोले,—"बड़ी मुश्किल से सात दिन की छुट्टी मिली। इधर हिन्दू मुसलिम दंगों की अफवाह है।"

रही। कल न पीने पर कैद न खाने पर।"

कवि जी ने कमलेश को बड़े गौर से देखा। कमलेश भी कनखियों से कवि जी की मुखमुद्रा देख रही थी। वह उसे निहायत घिनौना लगा।

कमलेश जान बूझ कर अकेले अपने होटल चली गयी। उसे बहुत कुछ सोचना समझना था, गम्भीर निर्णय लेना था।

होटल में वह रात भर उद्विग्न रही। सूर्योदय होते-होते उसकी आँख लगी। दोपहर बाद जब कवि जी आ पहुँचे तब उठी। कवि जी उस पहलवान की तरह जिसने काटे की कुश्ती जीतने की हर तैयारी की हो, विजय उल्लास से चमक रहे थे।

कमलेश ने तैयार होने में समय लगाया, सुरुचि से शृङ्गार किया। पाँच बजे शाम को वे टैक्सी से चौरंगी के लिए चले। सुकवि विदीर्ण चकित थे कि कमलेश आज दोनों हाथ से उलीच रही है। क्यों न उलीचे ? आज उसकी भी तो अहोरात्रि होगी। सुकवि इस ख्याल से मुस्कुरा पड़े। अहोरात्रि के ध्यान ने उनकी प्यास जगा दिया। वह पीने के लिए चौरंगी में कोई वार ढूँढने लगे। उन्हें सस्ता बार दिखायी नहीं पड़ा। तब उन्होंने कमलेश से कहा,—'ब्रिस्टल चलें ?'

"चलें।"

वे ब्रिस्टल आये। कवि जी ने कमरे के भीतर आलमारी की ओट में रम की बोतल में ही मुँह लगा दिया। कमलेश ने देख लिया। कहा,—"आज कोई पाबन्दी नहीं।"

कवि जी ने बोतल को कमलेश के शशिमुख के चारों ओर घुमा उसकी बलैयां लीं और लगभग आधी गिलास गटागट पी गये। तब उनका साहस लौटा। वे कमलेश के बालों, गालों, होठों से खेलते रहे।

कमलेश ने प्रतिकार नहीं किया, कहा,—"आठ बजने वाले हैं। पार्क रेस्टरा चलें।"

विक्टोरिया में वे पार्क रेस्टरां पहुँचे। रास्ते में कवि जी ने कमलेश के होठों को पान की तरह चाभा।

पार्क रेस्टरां तब भी कलकत्ते का बहुत ऊँचे दाम का होटल था। वहाँ का फ्रेन्च खाना मशहूर था। कवि जी ने इतने ऊँचे रेस्टरां को बाहर से भी नहीं देखा था। वहाँ पहुँच कर उनका दिमाग चक्कर काटने लगा। कमलेश ने उनकी मदद की, पूछा,—"क्या पियेंगे ?"

कवि जी कुछ कहना चाहते थे। उनकी घिग्घी बँध गयी। कमलेश ने उन पर दया की। उसने बेयरे से गहरा काकटेल बना लाने को कहा।

'काकटेल' क्या ?—कवि जी ने पूछा।

"कई शराबों को और फलों का जूस मिला कर बनता है। आप खुश होंगे ?"

रही। कल न पीने पर कंद न खाने पर।"

कवि जी ने कमलेश को बड़े गौर से देखा। कमलेश भी कनखियों से कवि जी की मुखमुद्रा देख रही थी। वह उसे निहायत घिनौना लगा।

कमलेश जान बूझ कर अकेले अपने होटल चली गयी। उसे बहुत कुछ सोचना समझना था, गम्भीर निर्णय लेना था।

होटल में वह रात भर उद्विग्न रही। सूर्योदय होते-होते उसकी आँख लगी। दोपहर बाद जब कवि जी आ पहुँचे तब उठी। कवि जी उस पहलवान की तरह जिसने काटे की कुश्ती जीतने की हर तैयारी की हो, विजय उल्लास से चमक रहे थे।

कमलेश ने तैयार होने में समय लगाया, सुरुचि से शृङ्गार किया। पाँच बजे शाम को वे टैक्सी से चौरंगी के लिए चले। सुकवि विदीर्ण चकित थे कि कमलेश आज दोनों हाथ से उलीच रही है। क्यों न उलीचे ? आज उसकी भी तो अहोरात्रि होगी। सुकवि इस ख्याल से मुस्कुरा पड़े। अहोरात्रि के ध्यान ने उनकी प्यास जगा दिया। वह पीने के लिए चौरंगी में कोई बार ढूँढने लगे। उन्हें सस्ता बार दिखायी नहीं पड़ा। तब उन्होंने कमलेश से कहा,—'ब्रिस्टल चलें ?'

"चलें।"

वे ब्रिस्टल आये। कवि जी ने कमरे के भीतर आलमारी की ओट में रम की बोतल में ही मुँह लगा दिया। कमलेश ने देख लिया। कहा,—"आज कोई पाबन्दी नहीं।"

कवि जी ने बोतल को कमलेश के शशिमुख के चारों ओर घुमा उसकी बलैयां लीं और लगभग आधी गिलास गटागट पी गये। तब उनका साहस लौटा। वे कमलेश के बालों, गालों, होठों से खेलते रहे।

कमलेश ने प्रतिकार नहीं किया, कहा,—"आठ बजने वाले हैं। पार्क रेस्टरां चलें।"

विक्टोरिया में वे पार्क रेस्टरां पहुँचे। रास्ते में कवि जी ने कमलेश के होठों को पान की तरह चाभा।

पार्क रेस्टरां तब भी कलकत्ते का बहुत ऊँचे दाम का होटल था। वहाँ का फ्रेन्च खाना मशहूर था। कवि जी ने इतने ऊँचे रेस्टरां को बाहर से भी नहीं देखा था। वहाँ पहुँच कर उनका दिमाग चक्कर काटने लगा। कमलेश ने उनकी मदद की, पूछा,—"क्या पियेंगे ?"

कवि जी कुछ कहना चाहते थे। उनकी घिग्घी बँध गयी। कमलेश ने उन पर दया की। उसने बेयरे से गहरा काकटेल बना लाने को कहा।

'काकटेल' क्या ?—कवि जी ने पूछा।

"कई शराबों को और फलों का जूस मिला कर बनता है। आप खुश होंगे ?"

के नीचे जा पड़े। छप की एक आवाज़—बस और कुछ नही। उसके बाद पूर्ववत प्रगाढ़ नीरवता।

कमलेश छप से स्तब्ध हुई। उसने पानी मे उठे भँवर को भी नही देखा। दस पन्द्रह मिनट तक वह स्तब्ध बैठी रही। फिर अदम्य साहस बटोर कर उठी और अंधेरे को पार करते हुए बस अड्डे पर पहुँची। हावड़ा को आखिरी बस छूटने ही वाली थी। वह उसमे बैठ गयी।

होटल मे अपने कमरे को भीतर बन्द कर वह संडास में गयी। औषधि की पुड़िया को उसने उसमे बहा दिया। पलग पर आकर लेट गयी। उसे गहरी नीद आई जो मिलन की परिपूर्णता मे ही आती है।

सवेरे उसने अखबार देखा। उसमे शंका का कोई समाचार नहीं था। होटल में भी किसी प्रकार के सदेह का कारण नही था। उसने अपने मन पर काबू किया, चेहरे पर हँसी ओढ़ा। नाश्ता किया। बाहर आ ढाकुरिया के बस मे बैठी। बस के अड्डे पर या झील के आस-पास किसी शक-शुबहे की बात नही थी। बंगाल के अकाल मे *झील के मगरमच्छों ने कवि जी के हाड़ चाम को भक्ष लिया होगा। कवि जी की* आत्मा-अगर वह होती है—देशद्रोह के रौरव पाप से आगे के लिए बच गयी। झील मे वह शान्ति से ही लुप्त हो गये। उन्हे नरक के रौरव कुंड मे नही जलना पड़ा। उनकी मौत परम शान्ति की मौत थी।

कमलेश उस क्षेत्र मे घण्टो रही। शाम को वह होटल ही नही कलकत्ता छोड़ आई। दूसरे सवेरे मुगलसराय के स्टेशन पर बनारस के दैनिक समाचार-पत्र से उसे मालूम हुआ कि बालीगंज के गड़ियाहाटा मुहल्ले मे हिन्दू मुसलिम दंगा हो गया है। कल रात छुटपुट जगहो और झील में हिन्दुओ और मुसलमानो की लाशें मिलीं। मुसलिम लीग को बढ़ावा देने की नीति की प्रतिक्रिया अंगरेजो पर होने लगी। उनके पक्षपाती—गद्दार—गायब होने लगे। उनकी वे सही जाच-पड़ताल भी नही करा पाये।

कमलेश को बनारस जाने के लिए वही उतरना था। वह उसी ट्रेन से इलाहाबाद गयी।

•

के नीचे जा पड़े। छप की एक आवाज—बस और कुछ नही। उसके बाद पूर्ववत प्रगाढ़ नीरवता।

कमलेश छप से स्तब्ध हुई। उसने पानी मे उठे भँवर को भी नही देखा। दस पन्द्रह मिनट तक वह स्तब्ध बैठी रही। फिर अदम्य साहस बटोर कर उठी और अंधेरे को पार करते हुए बस अड्डे पर पहुँची। हावड़ा को आखिरी बस छूटने ही वाली थी। वह उसमे बैठ गयी।

होटल मे अपने कमरे को भीतर बन्द कर वह संडास में गयी। औषधि की पुड़िया को उसने उसमे बहा दिया। पलग पर आकर लेट गयी। उसे गहरी नीद आई जो मिलन की परिपूर्णता मे ही आती है।

सवेरे उसने अखबार देखा। उसमे शंका का कोई समाचार नहीं था। होटल में भी किसी प्रकार के सदेह का कारण नही था। उसने अपने मन पर काबू किया, चेहरे पर हँसी ओढ़ा। नाश्ता किया। बाहर आ धाकुरिया के बस मे बैठी। बस के अड्डे पर या झील के आस-पास किसी शक-शुबहे की बात नही थी। बंगाल के अकाल मे झील के मगरमच्छों ने कवि जी के हाड़ चाम को भक्ष लिया होगा। कवि जी की आत्मा-अगर वह होती है—देशद्रोह के रौरव पाप से आगे के लिए बच गयी। झील मे वह शान्ति से ही लुप्त हो गये। उन्हे नरक के रौरव कुंड मे नही जलना पड़ा। उनकी मौत परम शान्ति की मौत थी।

कमलेश उस क्षेत्र मे घण्टो रही। शाम को वह होटल ही नही कलकत्ता छोड़ आई। दूसरे सवेरे मुगलसराय के स्टेशन पर बनारस के दैनिक समाचार-पत्र से उसे मालूम हुआ कि बालीगंज के गडियाहाटा मुहल्ले मे हिन्दू मुसलिम दंगा हो गया है। कल रात छुटपुट जगहो और झील में हिन्दुओ और मुसलमानो की लाशें मिली। मुसलिम लीग को बढ़ावा देने की नीति की प्रतिक्रिया अंगरेजो पर होने लगी। उनके पक्षपाती—गद्दार—गायब होने लगे। उनकी वे सही जाच-पड़ताल भी नही करा पाये।

कमलेश को बनारस जाने के लिए वही उतरना था। वह उसी ट्रेन से इलाहाबाद गयी।

•

पर ग्रैंड होटल के अपने कमरे में अमेरिकन ब्रिगेडियर जेनरल डिक डैरिंगटन आगबबूल हो शराब के जाम पर जाम पिये जा रहा था। पूर्वी कमाण्ड के कर्नल फ्रेजर और हिन्दुस्तानी सम्पर्क अधिकारी कैप्टन रज़ी उसे मनाने आये थे।

कर्नल फ्रेजर कह रहा था,—"उस चुड़ैल की हम खाल खिचवा कर उसका अस्थिपंजर आपके सामने पेश करेंगे। उसमे इतना साहस ?" उनकी बात काट कर डैरिंगटन बोला,—"मैं ऐंग्लो इंडियन क्या किसी हिन्दुस्तानी नस्ल वाली छोकड़ी का पहले से ही विश्वास नही करता था। वह मेरा पाँच सौ डालर चुरा ले गयी।"

कैप्टन रज़ी की ओर इशारा कर उसने और अधिक गुस्से से कहा,—"यह क्या सम्पर्क अधिकारी है। लाहौर से यहाँ तक एक भी हिन्दुस्तानी छोकडी नही पेश कर सका। मुझे गन्दी गलियो मे ले जाने को कहता रहा। हम अमेरिकन सोहो जैसे मोहल्ले भी अपने यहाँ नही होने देते है। हमारी मनोरंजन की छोकडियाँ होटलो में शरीफों की तरह आती जाती हैं, रहती हैं। हमारे 'स्टिप टीज' भी खुले आम होते हैं। उसमें छोकडियाँ वस्त्र-विहीन होकर घण्टो नाचती हैं। कही कोई भद्दापन नही आने पाता है। हमारी सारी फौज यहाँ असन्तोष से भभक रही है।"

"हम जाँच कर रहे हैं। उस कराया रोड वाली ने कसम खा कर कहा है कि उसने डालर नहीं चुराये।"—कर्नल फ्रेजर को विश्वास था कि डैरिंगटन के डालर कही गिर गये थे।

"मैं बच्चा नही कर्नल। तीन दिन तीन रात से बराबर वही मेरे साथ रही। उसके अलावे कोई चुरा ही नही सकता है। ये हिन्दुस्तानी नस्ल की छोकडियाँ पूरी कस्बिन हैं। यहाँ जापानी आते तब मजा चखाते। वे आ ही गये होते अगर हम न आये होते।"

कर्नल फ्रेजर और रज़ी डैरिंगटन को हर कोशिश करके भी मना नही सके। वह पिये जा रहा था। उसने इन लोगो से औपचारिकता के लिए भी पूछा तक नही था। उसका व्यवहार, बोली, नितात अशिष्ट थे। ये लोग मनमारे कड़ुआ घूँट पीने को विवश थे क्योंकि अब अमेरिकन जेनरल सेनाध्यक्ष था, शक्ति उनके हाथ में थी।

डैरिंगटन ने अपनी गिलास में नयी बोतल से नयी कनेडियन ह्विस्की पूरी भरी। उसका घूँट दो घूँट पीकर आग्नेय नेत्रों से फ्रेजर और रज़ी से चिल्ला कर बोला, —"अब तुम लोग जाओ। मेरा दिमाग मत चाटो।"

लडाई तेज़ी से पलटा खा रही थी। आजाद हिन्द फौज को मनीपुर कोहिमा क्षेत्र में लगातार बरसात मे पहले आक्रमण मे जो विनाशकारी नुकसान उठाना पडा उससे वे संभल नहीं पाये थे। अभेद्य प्रकृति उनके लिए फिर उतार पर थी—जापानी बर्मा छोडने को उद्यत थे।

नेता जी का आदेश अब ही यही था कि ज्वार भाटा मे हमें अपना लक्ष्य आँखो से ओझल नही होने देना है। हमे हिन्दुस्तान के बाहर और भीतर लडते रहना है। अंगरेजो के दिन अब न गये।

पर ग्रैंड होटल के अपने कमरे में अमेरिकन ब्रिगेडियर जेनरल डिक डैरिंगटन आगवबूल हो शराब के जाम पर जाम पिये जा रहा था। पूर्वी कमाण्ड के कर्नल फ्रेजर और हिन्दुस्तानी सम्पर्क अधिकारी कैप्टन रज़ी उसे मनाने आये थे।

कर्नल फ्रेजर कह रहा था,—"उस चुड़ैल की हम खाल खिचवा कर उसका अस्थिपंजर आपके सामने पेश करेंगे। उसमे इतना साहस ?" उनकी बात काट कर डैरिंगटन बोला,—"मैं ऐंग्लो इंडियन क्या किसी हिन्दुस्तानी नस्ल वाली छोकड़ी का पहले से ही विश्वास नही करता था। वह मेरा पांच सौ डालर चुरा ले गयी।"

कैप्टन रज़ी की ओर इशारा कर उसने और अधिक गुस्से से कहा,—"यह क्या सम्पर्क अधिकारी है। लाहौर से यहाँ तक एक भी हिन्दुस्तानी छोकडी नही पेश कर सका। मुझे गन्दी गलियो मे ले जाने को कहता रहा। हम अमेरिकन सोहो जैसे मोहल्ले भी अपने यहाँ नही होने देते है। हमारी मनोरंजन की छोकडियाँ होटलो में शरीफों की तरह आती जाती हैं, रहती हैं। हमारे 'स्टिप टीज' भी खुले आम होते हैं। उसमें छोकडियाँ वस्त्र-विहीन होकर घण्टो नाचती हैं। कही कोई भद्दापन नही आने पाता है। हमारी सारी फौज यहाँ असन्तोष से भभक रही है।"

"हम जाँच कर रहे हैं। उस कराया रोड वाली ने कसम खा कर कहा है कि उसने डालर नहीं चुराये।"—कर्नल फ्रेजर को विश्वास था कि डैरिंगटन के डालर कही गिर गये थे।

"मैं बच्चा नही कर्नल। तीन दिन तीन रात से बराबर वही मेरे साथ रही। उसके अलावे कोई चुरा ही नही सकता है। ये हिन्दुस्तानी नस्ल की छोकडियाँ पूरी कस्विन हैं। यहाँ जापानी आते तब मजा चखाते। वे आ ही गये होते अगर हम न आये होते।"

कर्नल फ्रेजर और रज़ी डैरिंगटन को हर कोशिश करके भी मना नही सके। वह पिये जा रहा था। उसने इन लोगो से औपचारिकता के लिए भी पूछा तक नही था। उसका व्यवहार, बोली, नितात अशिष्ट थे। ये लोग मनमारे कड़आ घूंट पीने को विवश थे क्योंकि अब अमेरिकन जेनरल सेनाध्यक्ष था, शक्ति उनके हाथ मे थी।

डैरिंगटन ने अपनी गिलास में नयी बोतल से नयी कनेडियन ह्विस्की पूरी भरी। उसका घूंट दो घूंट पीकर आग्नेय नेत्रों से फ्रेजर और रज़ी से चिल्ला कर बोला,—"अब तुम लोग जाओ। मेरा दिमाग मत चाटो।"

लडाई तेज़ी से पलटा खा रही थी। आजाद हिन्द फौज को मनीपुर कोहिमा क्षेत्र में लगातार बरसात मे पहले आक्रमण मे जो विनाशकारी नुकसान उठाना पडा उससे वे संभल नहीं पाये थे। अभेद्य प्रकृति उनके लिए फिर उतार पर थी—जापानी बर्मा छोडने को उद्यत थे।

नेता जी का आदेश अब ही यही था कि ज्वार भाटा मे हमें अपना लक्ष्य आँखो से ओझल नही होने देना है। हमे हिन्दुस्तान के बाहर और भीतर लडते रहना है। अंगरेजो के दिन अब न गये।

कुछ ही शहीद हुए थे। बाकी सभी कैद मे पेगू लाये गये। वहाँ कमांडर श्याम सिंह को सबसे अलग कर एक अंगरेज ब्रिगेडियर ने पूछा,—"तुम क्यों लड़ रहे थे ?"

"हम अपनी देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे।"

"तुमने बादशाह सलामत के प्रति वफादारी का शपथ लिया था ?"

"स्वदेश की आज़ादी के सामने विदेशी बादशाह के प्रति मजबूरी में लिया गया शपथ बेमानी है।"

ब्रिगेडियर चिढ गया। गुस्से से चिल्लाते हुए बोला,—"अगर तुम्हें हिन्दुस्तान ले जाकर छोड़ दिया जाय तो क्या करोगे ?"

"हम स्वतंत्रता की लडाई जारी रखेंगे ?"

"तुमको जापानी क्या तनख्वाह देते थे ?"

"हमे जापानी नहीं आज़ाद हिन्द सरकार गुजारे भर के लिए वेतन देती थी। हम अंगरेजों की हिन्दुस्तानी फौजों की तरह भाड़े के टट्टू नही।"

ब्रिगेडियर सह नही सका। चिल्लाया,—"तुम्हें तोप के मुँह से बाँध कर उडाया जायगा।"

उसकी तबियत तो उसी समय श्याम सिंह को अपने रिवाल्वर से उड़ा देने को हुई। उसने आदेश वश ऐसा किया नही।

कमांडर श्याम सिंह से पूछताछ की खबर जंगल की आग की तरह चारों ओर अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना में फैली। अंगरेजो ने हिन्दुस्तानी सेनाओ मे यह प्रचार किया था कि आज़ाद हिन्द सेना जापानियों की सेना है। ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना को आँखें खुल गयी। भाड़े के टट्टू वे हैं। जो हिन्दुस्तान की स्वायत्तता की माँग के खिलाफ अंगरेजो की ओर से लड़ रहे थे। कइयों ने यह कहा कि अगर समय से उन्हें सही स्थिति मालूम हो गयी होती तो वे भी आज़ादी के लिए लडते। कइयों ने निश्चय किया कि अनुकूल अवसर आते ही वह देश के लिए जूझ कर अपना कलंक धो देंगे।

पंजाब पल्टन के सूबेदार सरदार खाँ ने श्याम सिंह को उस रात बहुत अच्छा खाना खिलाया। उन्ही की कम्पनी की सुरक्षा मे श्याम सिंह कैद मे रखा गया था। यही नही उन्होने श्याम सिंह को रातोंरात सुरक्षित स्थान पर भाग जाने में मदद की। उन्हें डर था कि अंगरेज उसे मार डालेंगे।

जेनरल शाहनवाज़ को उनके साथियों के साथ दूसरे ही दिन रंगून भेज दिया गया। जेनरल को वहाँ से हवाई जहाज से कलकत्ता पहुँचाया गया। क्रान्तिकारियो और नेता जी की नगरी मे उन्हे एक दिन कैद मे भी नही ठहरने दिया गया। कड़े गोरखा गार्ड मे रेल के सुरक्षित डब्बे से उन्हे उसी दिन दिल्ली भेजा गया। उनके डब्बे के बाहर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—'खतरनाक कैदी। कोई अन्दर नही जा सकता।' डब्बे के अन्दर गोरखा सतरियों को हर क्षण बहुत चौकन्ना रहने को कहा

कुछ ही शहीद हुए थे। बाकी सभी कैद मे पेगू लाये गये। वहाँ कमाडर श्याम सिंह को सबसे अलग कर एक अंगरेज ब्रिगेडियर ने पूछा,—"तुम क्यो लड़ रहे थे?"

"हम अपनी देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे थे।"

"तुमने बादशाह सलामत के प्रति वफादारी का शपथ लिया था?"

"स्वदेश की आजादी के सामने विदेशी बादशाह के प्रति मजबूरी में लिया गया शपथ बेमानी है।"

ब्रिगेडियर चिढ गया। गुस्से से चिल्लाते हुए बोला,—"अगर तुम्हें हिन्दुस्तान ले जाकर छोड़ दिया जाय तो क्या करोगे?"

"हम स्वतंत्रता की लडाई जारी रखेंगे?"

"तुमको जापानी क्या तनख्वाह देते थे?"

"हमे जापानी नहीं आजाद हिन्द सरकार गुजारे भर के लिए वेतन देती थी। हम अंगरेजों की हिन्दुस्तानी फौजों की तरह भाड़े के टट्टू नही।"

ब्रिगेडियर सह नही सका। चिल्लाया,—"तुम्हें तोप के मुँह से बाँध कर उड़ाया जायगा।"

उसकी तबियत तो उसी समय श्याम सिंह को अपने रिवाल्वर से उड़ा देने को हुई। उसने आदेश वश ऐसा किया नही।

कमांडर श्याम सिंह से पूछताछ की खबर जंगल की आग की तरह चारों ओर अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना में फैली। अंगरेजो ने हिन्दुस्तानी सेनाओ मे यह प्रचार किया था कि आजाद हिन्द सेना जापानियों की सेना है। ब्रिटिश हिन्दुस्तानी सेना को आँखें खुल गयी। भाड़े के टट्टू वे हैं। जो हिन्दुस्तान की स्वायत्तता की माँग के खिलाफ अंगरेजो की ओर से लड़ रहे थे। कइयों ने यह कहा कि अगर समय से उन्हें सही स्थिति मालूम हो गयी होती तो वे भी आजादी के लिए लडते। कइयों ने निश्चय किया कि अनुकूल अवसर आते ही वह देश के लिए जूझ कर अपना कलंक धो देंगे।

पंजाब पल्टन के सूबेदार सरदार खाँ ने श्याम सिंह को उस रात बहुत अच्छा खाना खिलाया। उन्ही की कम्पनी की सुरक्षा मे श्याम सिंह कैद मे रखा गया था। यही नहीं उन्होने श्याम सिंह को रातोंरात सुरक्षित स्थान पर भाग जाने में मदद की। उन्हे डर था कि अंगरेज उसे मार डालेंगे।

जेनरल शाहनवाज को उनके साथियों के साथ दूसरे ही दिन रंगून भेज दिया गया। जेनरल को वहाँ से हवाई जहाज से कलकत्ता पहुँचाया गया। क्रान्तिकारियो और नेता जी की नगरी मे उन्हे एक दिन कैद मे भी नही ठहरने दिया गया। कडे गोरखा गार्ड मे रेल के सुरक्षित डब्बे से उन्हे उसी दिन दिल्ली भेजा गया। उनके डब्बे के बाहर बड़े-बडे अक्षरो मे लिखा था—'खतरनाक कैदी। कोई अन्दर नही जा सकता।' डब्बे के अन्दर गोरखा सतरियों को हर क्षण बहुत चौकन्ना रहने को कहा

अंगरेज बहुत बदमाश है '?

जेनरल ने उँगली से ऊपर की ओर इशारा कर कहा,—"उसकी मर्जी। जब तक नेता जी हैं हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई जारी रहेगी। स्वतंत्र होकर हम गरीबी, अँगूठा और ऊंच-नीच को मिटा कर सुखी और समृद्ध बन सकेंगे।"

भाग्य जेनरल स्लिम का साथ दे रहा था। रंगून पर कब्जा होते ही जापानी तेजी से बर्मा छोड़ने लगे। आजाद हिन्द सरकार का बहुत चिन्तित होना स्वाभाविक था।

पुखराज ने नरेन्द्र से पूछा,—"यह क्या हुआ ?" नरेन्द्र भी घटना क्रम के मोड़ से विचलित था। उसने कहा,—"भविष्य आसान कदापि नहीं है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि भारत का संघर्ष जारी रहेगा और मैं तुम पर जान देता रहूँगा।"

पुखराज लाज से भर आई। उसका चेहरा गंभीर हो उठा। उसकी आन्तरिक इच्छा कब से हिन्दुस्तान पहुंचने की थी। स्वदेश की यह ममता उसकी सांस बन गयी थी। उसने नरेन्द्र की आँखों में प्यार उड़ेलते हुए कहा,—"मैं वेभेल की घोषणा के बारे में पूछ रही थी। ब्रिटिश सरकार अब कौन चाल चल रही है।"

दूसरी सांस में उसने कहा,—"सुना महात्मा जी जेल से रिहा कर दिए गये हैं।"

"जर्मनी के आत्म-समर्पण करते ही चर्चिल ने नये चुनाव कराने के लिए त्यागपत्र दे दिया है। हिटलर की हार का लाभ उठा कर वह नयी सरकार बनाने का सपना देख रहा है। जीत कर वह और अधिक निरंकुश होगा। अंगरेजी जनता दम तोड़ रही है। वह अब न आर्थिक भार संभाल सकती है न युद्ध का खर्च। जापान से जाने कब तक युद्ध हो। अंगरेज युवक युवती भी अब भर्ती के लिए नहीं मिल रहे हैं। चर्चिल के सामने आल्पस् की ऊंचाई जैसी समस्या आ खड़ी है ?"

"अब तो युद्ध का संचालन अमेरिका कर रहा है ?—" पुखराज ने पूछा।"

"अमेरिका और रूस की होड़ चर्चिल के लिए कम सिरदर्द नहीं। इस होड़ में वह उड़ जायगा।"

"अब अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना भी सच्चाई को जान कर आजाद फौज का महत्व समझने लगी है। बकरे की मां कब तक खैर मनायेगी ?"

"वेभेल का प्रस्ताव हास्यास्पद है। वाइसराय की कार्य समिति में हिन्दुस्तानी सदस्य रखने की योजना क्रिप्स प्रस्ताव में भी थी। विदेश विभाग और सेना अब भी हिन्दुस्तानियों को नहीं सौंपना चाहते।"

"यह क्या स्वायत्तता हुई ? जिसकी लाठी उसकी भैंस।"—पुखराज ने नरेन्द्र के शब्दों को छीन लिया।

"अंगरेज सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी सेना को नहीं चला सकते।"

अंगरेज बहुत बदमाश हैं ?

जेनरल ने उँगली से ऊपर की ओर इशारा कर कहा, —"उसकी मर्जी। जब तक नेता जी हैं हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई जारी रहेगी। स्वतंत्र होकर हम गरीबी, अँगूठा और ऊंच-नीच को मिटा कर सुखी और समृद्ध बन सकेंगे।"

भाग्य जेनरल स्लिम का साथ दे रहा था। रंगून पर कब्जा होते ही जापानी तेजी से बर्मा छोड़ने लगे। आजाद हिन्द सरकार का बहुत चिन्तित होना स्वाभाविक था।

पुखराज ने नरेन्द्र से पूछा,—"यह क्या हुआ ?" नरेन्द्र भी घटना क्रम के मोड़ से विचलित था। उसने कहा,—"भविष्य आसान कदापि नहीं है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि भारत का संघर्ष जारी रहेगा और मैं तुम पर जान देता रहूँगा।"

पुखराज लाज से भर आई। उसका चेहरा गंभीर हो उठा। उसकी आन्तरिक इच्छा कब से हिन्दुस्तान पहुंचने की थी। स्वदेश की यह ममता उसकी सांस बन गयी थी। उसने नरेन्द्र की आँखों में प्यार उड़ेलते हुए कहा,—"मैं वेभेल की घोषणा के बारे में पूछ रही थी। ब्रिटिश सरकार अब कौन चाल चल रही है।"

दूसरी सांस में उसने कहा,—"सुना महात्मा जी जेल से रिहा कर दिए गये हैं।"

"जर्मनी के आत्म-समर्पण करते ही चर्चिल ने नये चुनाव कराने के लिए त्यागपत्र दे दिया है। हिटलर की हार का लाभ उठा कर वह नयी सरकार बनाने का सपना देख रहा है। जीत कर वह और अधिक निरंकुश होगा। अंगरेजी जनता दम तोड़ रही है। वह अब न आर्थिक भार संभाल सकती है न युद्ध का खर्च। जापान से जाने कब तक युद्ध हो। अंगरेज युवक युवती भी अब भर्ती के लिए नहीं मिल रहे हैं। चर्चिल के सामने आल्पस् की ऊंचाई जैसी समस्या आ खड़ी है ?"

"अब तो युद्ध का संचालन अमेरिका कर रहा है ?—" पुखराज ने पूछा।"

"अमेरिका और रूस की होड़ चर्चिल के लिए कम सिरदर्द नहीं। इस होड़ में वह उड़ जायगा।"

"अब अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना भी सच्चाई को जान कर आजाद फौज का महत्व समझने लगी है। बकरे की मां कब तक ख़ैर मनायेगी ?"

"वेभेल का प्रस्ताव हास्यास्पद है। वाइसराय की कार्य समिति में हिन्दुस्तानी सदस्य रखने की योजना क्रिप्स प्रस्ताव में भी थी। विदेश विभाग और सेना अब भी हिन्दुस्तानियों को नहीं सौंपना चाहते।"

"यह क्या स्वायत्तता हुई ? जिसकी लाठी उसकी भैंस।"—पुखराज ने नरेन्द्र के शब्दों को छीन लिया।

"अंगरेज सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी सेना को नहीं चला सकते।"

अंगरेज बहुत बदमाश हैं '?

जेनरल ने उँगली से ऊपर की ओर इशारा कर कहा,—"उसकी मर्जी। जब तक नेता जी हैं हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई जारी रहेगी। स्वतंत्र होकर हम गरीबी, अँगूठा और ऊंच-नीच को मिटा कर सुखी और समृद्ध बन सकेंगे।"

भाग्य जेनरल स्लिम का साथ दे रहा था। रंगून पर कब्जा होते ही जापानी तेजी से वर्मा छोड़ने लगे। आजाद हिन्द सरकार का बहुत चिन्तित होना स्वाभाविक था।

पुखराज ने नरेन्द्र से पूछा,—"यह क्या हुआ?" नरेन्द्र भी घटना क्रम के मोड़ से विचलित था। उसने कहा,—"भविष्य आसान कदापि नहीं है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि भारत का संघर्ष जारी रहेगा और मैं तुम पर जान देता रहूँगा।"

पुखराज लाज से भर आई। उसका चेहरा गंभीर हो उठा। उसकी आन्तरिक इच्छा कब से हिन्दुस्तान पहुंचने की थी। स्वदेश की यह ममता उसकी सांस बन गयी थी। उसने नरेन्द्र की आँखों में प्यार उड़ेलते हुए कहा,—"मैं वेभेल की घोषणा के बारे में पूछ रही थी। ब्रिटिश सरकार अब कौन चाल चल रही है।"

दूसरी सांस में उसने कहा,—"सुना महात्मा जी जेल से रिहा कर दिए गये हैं।"

"जर्मनी के आत्म-समर्पण करते ही चर्चिल ने नये चुनाव कराने के लिए त्यागपत्र दे दिया है। हिटलर की हार का लाभ उठा कर वह नयी सरकार बनाने का सपना देख रहा है। जीत कर वह और अधिक निरंकुश होगा। अंगरेजी जनता दम तोड़ रही है। वह अब न आर्थिक भार संभाल सकती है न युद्ध का खर्च। जापान से जाने कब तक युद्ध हो। अंगरेज युवक युवती भी अब भर्ती के लिए नहीं मिल रहे हैं। चर्चिल के सामने आल्पस् की ऊंचाई जैसी समस्या आ खड़ी है?"

"अब तो युद्ध का संचालन अमेरिका कर रहा है?—" पुखराज ने पूछा।"

"अमेरिका और रूस की होड़ चर्चिल के लिए कम सिरदर्द नहीं। इस होड़ में वह उड़ जायगा।"

"अब अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना भी सच्चाई को जान कर आजाद फौज का महत्व समझने लगी है। बकरे की मा कब तक खैर मनायेगी?"

"वेभेल का प्रस्ताव हास्यास्पद है। वाइसराय की कार्य समिति में हिन्दुस्तानी सदस्य रखने की योजना क्रिप्स प्रस्ताव मे भी थी। विदेश विभाग और सेना अब भी हिन्दुस्तानियो को नहीं सौंपना चाहते।"

"यह क्या स्वायत्तता हुई? जिसकी लाठी उसकी भैंस।"—पुखराज ने नरेन्द्र के शब्दो को छीन लिया।

"अंगरेज सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी सेना को नही चला सकते।"

अंगरेज बहुत बदमाश हैं '?

जेनरल ने उँगली से ऊपर की ओर इशारा कर कहा, —"उसकी मर्जी। जब तक नेता जी हैं हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई जारी रहेगी। स्वतंत्र होकर हम गरीबी, अँगूठा और ऊंच-नीच को मिटा कर सुखी और समृद्ध बन सकेंगे।"

भाग्य जेनरल स्लिम का साथ दे रहा था। रंगून पर कब्जा होते ही जापानी तेजी से वर्मा छोड़ने लगे। आजाद हिन्द सरकार का बहुत चिन्तित होना स्वाभाविक था।

पुखराज ने नरेन्द्र से पूछा,—"यह क्या हुआ?" नरेन्द्र भी घटना क्रम के मोड़ से विचलित था। उसने कहा,—"भविष्य आसान कदापि नहीं है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि भारत का संघर्ष जारी रहेगा और मैं तुम पर जान देता रहूँगा।"

पुखराज लाज से भर आई। उसका चेहरा गंभीर हो उठा। उसकी आन्तरिक इच्छा कब से हिन्दुस्तान पहुंचने की थी। स्वदेश की यह ममता उसकी सांस बन गयी थी। उसने नरेन्द्र की आँखो में प्यार उड़ेलते हुए कहा, —"मैं वेभेल की घोषणा के बारे में पूछ रही थी। ब्रिटिश सरकार अब कौन चाल चल रही है।"

दूसरी सांस में उसने कहा, —"सुना महात्मा जी जेल से रिहा कर दिए गये हैं।"

"जर्मनी के आत्म-समर्पण करते ही चर्चिल ने नये चुनाव कराने के लिए त्यागपत्र दे दिया है। हिटलर की हार का लाभ उठा कर वह नयी सरकार बनाने का सपना देख रहा है। जीत कर वह और अधिक निरंकुश होगा। अंगरेजी जनता दम तोड़ रही है। वह अब न आर्थिक भार संभाल सकती है न युद्ध का खर्च। जापान से जाने कब तक युद्ध हो। अंगरेज युवक युवती भी अब भर्ती के लिए नहीं मिल रहे हैं। चर्चिल के सामने आल्पस् की ऊंचाई जैसी समस्या आ खडी है?"

"अब तो युद्ध का संचालन अमेरिका कर रहा है?—" पुखराज ने पूछा।"

"अमेरिका और रूस की होड़ चर्चिल के लिए कम सिरदर्द नहीं। इस होड़ में वह उड़ जायगा।"

"अब अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना भी सच्चाई को जान कर आजाद फौज का महत्व समझने लगी है। बकरे की मा कब तक खैर मनायेगी?"

"वेभेल का प्रस्ताव हास्यास्पद है। वाइसराय की कार्य समिति में हिन्दुस्तानी सदस्य रखने की योजना क्रिप्स प्रस्ताव मे भी थी। विदेश विभाग और सेना अब भी हिन्दुस्तानियो को नहीं सौंपना चाहते।"

"यह क्या स्वायत्तता हुई? जिसकी लाठी उसकी भैंस।"—पुखराज ने नरेन्द्र के शब्दो को छीन लिया।

"अंगरेज सोचते हैं कि हिन्दुस्तानी सेना को नही चला सकते।"

से बाज आये । लड़ाई बहादुरों की तरह लड़े, अगर उसे लड़ना ही हो ।"

स्तब्ध जनसमूह जैसे मुर्दा हो गया था । अपार मलायावासियों की सभा में श्मशान की चुप्पी छायी थी । अणुबम दुनिया को श्मशान बनाने का शस्त्र था । शान्ति स्थापित करने के लिए उसका प्रयोग वीभत्स था ।

अमेरिका को आशा थी कि जापान उसी दिन हथियार डाल देगा । ऐसा हुआ नहीं । तब चौथे दिन अमेरिका ने दूसरे अणुबम का विस्फोट नागासाकी पर किया । हिरोशिमा तो तबाह हो ही चुका था नागासाकी में सत्तर हजार लोग अणुबम से मरे । उससे जो घायल हुए और चपेट में आये उसकी संख्या अलग ।

अमेरिका के इस दुस्साहस को दुनिया आँखें फाड़े देखती रह गयी । बुद्ध धर्म की गौरव गरिमा में पले जापान को भी सोचना पड़ा । सवाल जापान का ही नही, पूरी मानवता का था । जापान के मर्म पर अमेरिका के पाशविक कुकृत्य से वही चोट पहुँची जो कलिंग युद्ध मे रक्त की नदियाँ बहती देख कर प्रियदर्शी अशोक को मिली थी । जापान ने नागासाकी के विस्फोट के दो दिन बाद, अगस्त ग्यारह सन् पैंतालीस को, हथियार डाल देने की घोषणा कर दी । सुदूर पूरब की लड़ाई में जेनरल स्लिम की फौजें बर्मा के अलावे अभी कही पहुँची नही थी । मलेशिया, इंडोनेशिया आदि देश स्वतन्त्र हो चुके थे । जापान चाहता तो अभी वर्षों लड़ सकता था । मगर मानवता की पीढियों को रौरव नरक के अग्निकुंड से बचाने के लिए जापान ने बुद्ध धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप हथियार डालने की घोषणा कर अपनी महानता को प्रकट किया ।

इतिहास के कायापलट से सब चकित रह गये । नेता जी बोस ने आजाद सरकार और फौज से कहा,—"हम क्रान्तिकारी सेना की तरह बिना खाये, बिना गोला बारूद के, नारकीय कष्ट सह कर भी अंगरेजो के विरुद्ध तब तक लड़ते रहेंगे जब तक वे हिन्दुस्तान की पवित्र धरती से भाग नही जाते । हमारी लड़ाई जारी रहेगी ।

आजाद हिन्द फौज के जेनरलो को अपने दिव्य पेशवा को सुरक्षित रखने की चिन्ता लगी । देश की आजादी के लिए उस ज्योति को सुरक्षित रखना जरूरी था । उन्होने नेता जी को जापान जाने के लिए विवश किया । समूह की शक्ति को नेता जी से अधिक कौन पहचानता था ? सत्तरह अगस्त को एक जापानी हवाई जहाज पर वे अपने निजी सचिव आबिद अली और स्टाफ अफसर कर्नल हबीबुर रहमान के साथ टोकियो के लिए रवाना हुए । दूसरे दिन फोरमोसा के ऊपर वह हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया । नेता जी बुरी तरह घायल हुए । वहाँ के अस्पताल में उनकी हर सम्भव चिकित्सा की गयी । लेकिन जो यहा का नही था वह अपने दिव्यलोक को चला गया ।

कर्नल हबीबुर रहमान वह भाग्यशाली व्यक्ति थे जो नेता जी के अन्तिम क्षणों में उनकी सेवा कर सके । नेता जी ने अपने अन्तिम सन्देश में उनसे कहा था— "हमारे प्रत्येक देशवासी को बता देना कि सुभाष अपने जीवन की आखिरी सास तक

से बाज आये। लड़ाई बहादुरों की तरह लडे, अगर उसे लड़ना ही हो।"

स्तब्ध जनसमूह जैसे मुर्दा हो गया था। अपार मलायावासियो की सभा मे श्मशान की चुप्पी छायी थी। अणुबम दुनिया को श्मशान बनाने का शस्त्र था। शान्ति स्थापित करने के लिए उसका प्रयोग वीभत्स था।

अमेरिका को आशा थी कि जापान उसी दिन हथियार डाल देगा। ऐसा हुआ नहीं। तब चौथे दिन अमेरिका ने दूसरे अणुबम का विस्फोट नागासाकी पर किया। हिरोशिमा तो तबाह हो ही चुका था नागासाकी मे सत्तर हज़ार लोग अणुबम से मरे। उससे जो घायल हुए और चपेट में आये उसकी संख्या अलग।

अमेरिका के इस दुस्साहस को दुनिया आँखें फाड़े देखती रह गयी। युद्ध धर्म की गौरव गरिमा मे पले जापान को भी सोचना पडा। सवाल जापान का ही नही, पूरी मानवता का था। जापान के मर्म पर अमेरिका के पाशविक कुकृत्य से वही चोट पहुँची जो कलिंग युद्ध मे रक्त की नदियाँ बहती देख कर प्रियदर्शी अशोक को मिली थी। जापान ने नागासाकी के विस्फोट के दो दिन बाद, अगस्त ग्यारह सन् पैंतालीस को, हथियार डाल देने की घोषणा कर दी। सुदूर पूरब की लडाई में जेनरल स्लिम की फौजें वर्मा के अलावे अभी कही पहुँची नही थी। मलेशिया, इंडोनेशिया आदि देश स्वतन्त्र हो चुके थे। जापान चाहता तो अभी वर्षों लड सकता था। मगर मानवता की पीढ़ियो को रौरव नरक के अग्निकुंड से बचाने के लिए जापान ने युद्ध धर्म के सिद्धान्तो के अनुरूप हथियार डालने की घोषणा कर अपनी महानता को प्रकट किया।

इतिहास के कायापलट से सब चकित रह गये। नेता जी बोस ने आज़ाद सरकार और फौज से कहा,—"हम क्रान्तिकारी सेना की तरह बिना खाये, बिना गोला बारूद के, नारकीय कष्ट सह कर भी अंगरेजो के विरुद्ध तब तक लड़ते रहेंगे जब तक वे हिन्दुस्तान की पवित्र धरती से भाग नही जाते। हमारी लडाई जारी रहेगी।

आजाद हिन्द फौज के जेनरलो को अपने दिव्य पेशवा को सुरक्षित रखने की चिन्ता लगी। देश की आज़ादी के लिए उस ज्योति को सुरक्षित रखना जरूरी था। उन्होने नेता जी को जापान जाने के लिए विवश किया। समूह की शक्ति को नेता जी से अधिक कौन पहचानता था? सत्तरह अगस्त को एक जापानी हवाई जहाज पर वे अपने निजी सचिव आबिद अली और स्टाफ अफसर कर्नल हबीबुर रहमान के साथ टोकियो के लिए रवाना हुए। दूसरे दिन फोरमोसा के ऊपर वह हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो गया। नेता जी बुरी तरह घायल हुए। वहाँ के अस्पताल मे उनकी हर सम्भव चिकित्सा की गयी। लेकिन जो यहा का नही था वह अपने दिव्यलोक को चला गया।

कर्नल हबीबुर रहमान वह भाग्यशाली व्यक्ति थे जो नेता जी के अन्तिम क्षणों मे उनकी सेवा कर सके। नेता जी ने अपने अन्तिम सन्देश में उनसे कहा था— "हमारे प्रत्येक देशवासी को बता देना कि सुभाष अपने जीवन की आखिरी सास तक

दूर उत्तर के अन्तरिक्ष में एक पहाड़ दिखाया। वहाँ से टियूलसियाग के रास्ते तुम गेला पहुँच जाओगे। यहाँ जब तक हो घर से बाहर मत निकलना।" उसने श्याम सिंह को घर के अन्दर की एक कोठरी के तहखाने में छिपा दिया और बाहर से कोठरी पर ताला लगा दिया।

श्याम सिंह चौंका कि कहीं वह फँस तो नहीं गया। जाने बुड्ढा अंगरेजों को उसे सौंप दे। अब वह कर ही क्या सकता था? कमरे में बांस की चटाई बिछी थी। श्याम सिंह थका मादा था। उसने पहले अपने इष्टदेव से मन ही मन प्रार्थना की फिर सो गया। वह सोता ही रहता अगर तुंग्नीरा कोठरी के अन्दर उसे खाना देने न आती।

तुंग्नीरा ने उसे हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वह दुश्मन के हाथों में नहीं प्रत्युत निरापद है। श्याम सिंह को मांड से भात खाने को मिला। खा कर उसने लोटा भर पानी पिया। तुंग्नीरा से उसने कहा,—"मैं जीवन भर तुम लोगों का उपकार नहीं भूलूँगा।"

तुंग्नीरा ने उसे समझा। उसने कुछ कहा नहीं। वह बर्तन ले कोठरी को बन्द कर जैसे निर्भाव आयी थी वैसे ही चली गयी।

सबेरे रात रहते फिर आई। श्याम सिंह को बाहर जंगल में एक पहाड़ी नाले के पास ले गयी। श्याम सिंह फारिग हुआ, दातुन-कुल्ला किया और अंजुली में बहता पानी भर-भर नहाया। तुंग्नीरा कहीं ओट में चली गयी थी। श्याम सिंह जब नहा-धो चुका तब तुंग्नीरा उसको घर लायी। वहाँ कोठरी में उसके पास आ कर चटाई पर बैठ गयी।

अपने आंचल से उसने एक रोटी निकाल कर श्याम सिंह को देते हुए कहा,—"हम एक ही वक्त शाम को खाते हैं।"

"मैं जब मिल जाय तब वाला हूँ। दो तीन दिन तक कोई बात नहीं।"

तुंग्नीरा उसे टुकुर-टुकुर ताकती रही। तब तक श्याम सिंह ने पूछा,—"हम उस पहाड़ के पार कब चलेंगे?"

तुंग्नीरा दुःखी हुई। बोली,—"यहाँ आये नहीं कि ऊब गये।"

"ऊबा नहीं। मुझे बहुत जरूरी काम करना है।"

तुंग्नीरा ने समझा। वह अचानक बहुत उदास हो गयी। श्याम सिंह ने उससे फिर चलने के बारे में कभी पूछा नहीं।

महीने भर तक श्याम सिंह को उस कोठरी में छिपे रहना पड़ा। इसी बीच तुंग्नीरा से ही उसे पता चला कि उसका आश्रयदाता तुंग्नीरा का बुड्ढा बाप मलेत्याग कत्ल के अपराध में चौदह साल की जेल में कठोर यातना झेल कर लड़ाई के शुरू में लौट आया। उसकी पत्नी उसके जेल से लौटने के ठीक एक दिन पहले उसकी राह देखते-देखते मर गयी। मलेत्याग इस पूरे करेन क्षेत्र का शातिर बदमाश था। लोग उसके नाम से कांपते थे। पत्नी से भेंट न होने के कारण और तुंग्नीरा

दूर उत्तर के अन्तरिक्ष मे एक पहाड़ दिखाया। वहाँ से रियुनसियाग के रास्ते तुम गेला पहुँच जाओगे। यहाँ जब तक हो घर से बाहर मत निकलना।" उसने श्याम सिंह को घर के अन्दर की एक कोठरी के तहखाने मे छिपा दिया और बाहर से कोठरी पर ताला लगा दिया।

श्याम सिंह चौंका कि कहीं वह फँस तो नही गया। जाने बुड्ढा अंगरेजो को उसे सौंप दे। अब वह कर ही क्या सकता था? कमरे में बांस की चटाई बिछी थी। श्याम सिंह थका मादा था। उसने पहले अपने इष्टदेव से मन ही मन प्रार्थना की फिर सो गया। वह सोता ही रहता अगर तुंग्नीरा कोठरी के अन्दर उसे खाना देने न आती।

तुग्नीरा ने उसे हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वह दुश्मन के हाथों में नहीं प्रत्युत निरापद है। श्याम सिंह को मांड से भात खाने को मिला। खा कर उसने लोटा भर पानी पिया। तुंग्नीरा से उसने कहा,—"मैं जीवन भर तुम लोगो का उपकार नही भूलूंगा।"

तुंग्नीरा ने उसे समझा। उसने कुछ कहा नही। वह बर्तन ले कोठरी को बन्द कर जैसे निर्भाव आयी थी वैसे ही चली गयी।

सबेरे रात रहते फिर आई। श्याम सिंह को बाहर जंगल मे एक पहाड़ी नाले के पास ले गयी। श्याम सिंह फारिग हुआ, दातुन-कुल्ला किया और अंजुली में बहता पानी भर-भर नहाया। तुंग्नीरा कही ओट में चली गयी थी। श्याम सिंह जब नहा-धो चुका तब तुग्नीरा उसको घर लायी। वहाँ कोठरी मे उसके पास आ कर चटाई पर बैठ गयी।

अपने आचल से उसने एक रोटी निकाल कर श्याम सिंह को देते हुए कहा, —"हम एक ही वक्त शाम को खाते हैं।"

"मैं जब मिल जाय तब खाला हूँ। दो तीन दिन तक कोई बात नही।"

तुंग्नीरा उसे टुकुर-टुकुर ताकती रही। तब तक श्याम सिंह ने पूछा,—"हम उस पहाड़ के पार कब चलेंगे?"

तुंग्नीरा दु खी हुई। बोली,—"यहाँ आये नहीं कि ऊब गये।"

"ऊबा नही। मुझे बहुत जरूरी काम करना है।"

तुग्नीरा ने समझा। वह अचानक बहुत उदास हो गयी। श्याम सिंह ने उससे फिर चलने के बारे मे कभी पूछा नहीं।

महीने भर तक श्याम सिंह को उस कोठरी मे छिपे रहना पडा। इसी बीच तुंग्नीरा से ही उसे पता चला कि उसका आश्रयदाता तुग्नीरा का बुड्ढा बाप मलेल्याग कत्ल के अपराध मे चौदह साल की जेल में कठोर यातना झेल कर लड़ाई के शुरू में लौट आया। उसकी पत्नी उसके जेल से लौटने के ठीक एक दिन पहले उसकी राह देखते-देखते मर गयी। मलेल्याग इस पूरे करेन क्षेत्र का शातिर बदमाश था। लोग उसके नाम से कांपते थे। पत्नी से भेंट न होने के कारण और तुंग्नीरा

दूर उत्तर के अन्तरिक्ष में एक पहाड़ दिखाया। वहाँ से तियूनसियाग के रास्ते तुम गेला पहुँच जाओगे। यहाँ जब तक हो घर से बाहर मत निकलना।" उसने श्याम सिंह को घर के अन्दर की एक कोठरी के तहखाने में छिपा दिया और बाहर से कोठरी पर ताला लगा दिया।

श्याम सिंह चौंका कि कहीं वह फँस तो नहीं गया। जाने बुड्ढा अंगरेजों को उसे सौंप दे। अब वह कर ही क्या सकता था? कमरे मे बांस की चटाई बिछी थी। श्याम सिंह थका मांदा था। उसने पहले अपने इष्टदेव से मन ही मन प्रार्थना की फिर सो गया। वह सोता ही रहता अगर तुंग्नीरा कोठरी के अन्दर उसे खाना देने न आती।

तुंग्नीरा ने उसे हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वह दुश्मन के हाथों मे नही प्रत्युत निरापद है। श्याम सिंह को माड से भात खाने को मिला। खा कर उसने लोटा भर पानी पिया। तुंग्नीरा से उसने कहा,—"मैं जीवन भर तुम लोगों का उपकार नहीं भूलूँगा।"

तुंग्नीरा ने उसे समझा। उसने कुछ कहा नहीं। वह बर्तन ले कोठरी को बन्द कर जैसे निर्भाव आयी थी वैसे ही चली गयी।

सवेरे रात रहते फिर आई। श्याम सिंह को बाहर जंगल में एक पहाड़ी नाले के पास ले गयी। श्याम सिंह फारिग हुआ, दातुन-कुल्ला किया और अंजुली में बहता पानी भर-भर नहाया। तुंग्नीरा कहीं ओट में चली गयी थी। श्याम सिंह जब नहा-धो चुका तब तुंग्नीरा उसको घर लायी। वहाँ कोठरी में उसके पास आ कर चटाई पर बैठ गयी।

अपने आचल से उसने एक रोटी निकाल कर श्याम सिंह को देते हुए कहा, —"हम एक ही वक्त शाम को खाते हैं।"

"मैं जब मिल जाय तब खाला हूँ। दो तीन दिन तक कोई बात नही।"

तुंग्नीरा उसे टुकुर-टुकुर ताकती रही। तब तक श्याम सिंह ने पूछा,—"हम उस पहाड के पार कब चलेंगे?"

तुग्नीरा दु.खी हुई। बोली,—"यहाँ आये नहीं कि ऊब गये।"

"ऊबा नही। मुझे बहुत जरूरी काम करना है।"

तुंग्नीरा ने समझा। वह अचानक बहुत उदास हो गयी। श्याम सिंह ने उससे फिर चलने के बारे मे कभी पूछा नही।

महीने भर तक श्याम सिंह को उस कोठरी मे छिपे रहना पड़ा। इसी बीच तुंग्नीरा से ही उसे पता चला कि उसका आश्रयदाता तुंग्नीरा का बुड्ढा बाप मलेल्याग कत्ल के अपराध मे चौदह साल की जेल में कठोर यातना झेल कर लडाई के शुरू में लौट आया। उसकी पत्नी उसके जेल से लौटने के ठीक एक दिन पहले उसकी राह देखते-देखते मर गयी। मलेल्यांग इस पूरे करेन क्षेत्र का शातिर बदमाश था। लोग उसके नाम से कांपते थे। पत्नी से भेंट न होने के कारण और तुग्नीरा के भविष्य को

दूर उत्तर के अन्तरिक्ष में एक पहाड़ दिखाया । वहाँ से रियूनसियाग के रास्ते तुम गेला पहुँच जाओगे । यहाँ जब तक हो घर से बाहर मत निकलना ।" उसने श्याम सिंह को घर के अन्दर की एक कोठरी के तहखाने में छिपा दिया और बाहर से कोठरी पर ताला लगा दिया ।

श्याम सिंह चौंका कि कहीं वह फँस तो नहीं गया । जाने बुड्ढा अंगरेजों को उसे सौंप दे । अब वह कर ही क्या सकता था ? कमरे में बांस की चटाई बिछी थी । श्याम सिंह थका मांदा था । उसने पहले अपने इष्टदेव से मन ही मन प्रार्थना की फिर सो गया । वह सोता ही रहता अगर तुंग्नीरा कोठरी के अन्दर उसे खाना देने न आती ।

तुंग्नीरा ने उसे हर प्रकार से विश्वास दिलाया कि वह दुश्मन के हाथों में नहीं प्रत्युत निरापद है । श्याम सिंह को माड से भात खाने को मिला । खा कर उसने लोटा भर पानी पिया । तुंग्नीरा से उसने कहा,—"मैं जीवन भर तुम लोगों का उपकार नहीं भूलूंगा ।"

तुंग्नीरा ने उसे समझा । उसने कुछ कहा नहीं । वह बर्तन ले कोठरी को बन्द कर जैसे निर्भाव आयी थी वैसे ही चली गयी ।

सवेरे रात रहते फिर आई । श्याम सिंह को बाहर जंगल में एक पहाड़ी नाले के पास ले गयी । श्याम सिंह फारिग हुआ, दातुन-कुल्ला किया और अंजुली में बहता पानी भर-भर नहाया । तुंग्नीरा कहीं ओट में चली गयी थी । श्याम सिंह जब नहा-धो चुका तब तुंग्नीरा उसको घर लायी । वहाँ कोठरी में उसके पास आ कर चटाई पर बैठ गयी ।

अपने आचल से उसने एक रोटी निकाल कर श्याम सिंह को देते हुए कहा, —"हम एक ही वक्त शाम को खाते हैं ।"

"मैं जब मिल जाय तब वाला हूँ । दो तीन दिन तक कोई बात नहीं ।"

तुंग्नीरा उसे टुकुर-टुकुर ताकती रही । तब तक श्याम सिंह ने पूछा,—"हम उस पहाड के पार कब चलेंगे ?"

तुग्नीरा दु.खी हुई । बोली,—"यहाँ आये नहीं कि ऊब गये ।"

"ऊबा नहीं । मुझे बहुत जरूरी काम करना है ।"

तुंग्नीरा ने समझा । वह अचानक बहुत उदास हो गयी । श्याम सिंह ने उससे फिर चलने के बारे मे कभी पूछा नहीं ।

महीने भर तक श्याम सिंह को उस कोठरी मे छिपे रहना पड़ा । इसी बीच तुंग्नीरा से ही उसे पता चला कि उसका आश्रयदाता तुंग्नीरा का बुड्ढा बाप मलेल्याग कत्ल के अपराध मे चौदह साल की जेल में कठोर यातना झेल कर लडाई के शुरू में लौट आया । उसकी पत्नी उसके जेल से लौटने के ठीक एक दिन पहले उसकी राह देखते-देखते मर गयी । मलेल्यांग इस पूरे करेन क्षेत्र का शातिर बदमाश था । लोग उसके नाम से कांपते थे । पत्नी से भेंट न होने के कारण और तुग्नीरा के भविष्य को

ने कहा,—"गाँव बूढ़े के लड़के का दल है। वे आगे चले गये। हम निरापद हैं। वैसे मैं उसकी आँखें कभी जरूर फोड़ूँगी।"

उत्तर वाला अन्तरिक्ष की ओट का पहाड़ तेज चाल से पूरे बीस दिन की दूरी पर था। तुग्नीरा अगर साथ नहीं आई होती तो उस जंगल-पहाड़ में श्याम सिंह चवन ऋषि की तरह भभूरो और घास पात से दब गया होता। तुग्नीरा अपने न रा कर उसे *जंगलों से जड़ी बूटिया, कंद मूल फल लाकर खिलाती थी। सुविधा से* दूर झोपड़ियों से चावल माम लाती थी। उसे पकाती थी। श्याम सिंह जब थक जाता तब उसके तलवे सहलाती थी, उसमें गड़ें काटे निकालती थी। जब वह सो जाता तो उस पर पहरा देती और उसे निहारती रहती थी। उसे अपनी बिलकुल नही और श्याम सिंह की बहुत परवाह थी।

श्याम सिंह तुग्नीरा की भावनाओं से बेखबर नहीं था। कमांडर आदमी वह उन भावनाओं से खेलना नहीं चाहता था। उसकी विवशता थी। दूर, कहीं बहुत दूर, *उन पहाड़ों के पार, उन बादलों के पार,* कोई उसकी *अनिमेष प्रतीक्षा कर रहा था।*

बीसवें दिन वे गन्तव्य पहाड़ पर पहुँचे। उसकी ऊँची चोटी से श्याम सिंह ने चारों ओर देखा—पहाड़ों में दूर चमकते टेढ़ी-मेढ़ी पतली सड़कों पर फौजी सामानों के ट्रक और दूसरी बड़ी गाड़ियां आ जा रही थीं। तीन सड़कों का वहाँ मिलाप था जो तीन दिशाओं में जा रही थीं। तुग्नीरा ने पूरब वाली सड़क को दिखा कर कहा, -"वह चीन को जाती है।"

लीडो रोड, सहसा श्याम सिंह को ध्यान आया। बीच वाली सड़क *त्यिुन-सियांग को जाती होगी,—हिन्दुस्तान को, स्वर्ग से भी गरीयसी जन्म भूमि को।* उसकी आखें भर आयीं। उसने एक अप्रत्याशित काम किया। उसने तुग्नीरा को कठोर आलिंगन में बांध एक शिशु सा उसे दुलारने लगा और फूट-फूट कर रोने लगा।

रात भर वे पहाड़ पर एक दूसरे का हाथ हाथ में लिए मौन निस्पद बैठे रहे। सवेरे पहाड़ के उत्तर में रास्तों की सीध में उतर कर तुग्नीरा ने कहा,—"मैंने पहुँचा दिया। बूढ़ा बाप मेरी राह देख रहा होगा। मैं अब चली जाऊँगी।"

श्याम सिंह जैसे जन्म का गूंगा हो, मौन बना रहा। तुग्नीरा ही बोली, —"यह लो। एक अपने पास रख लो। एक पर अपना नाम ठिकाना लिख दो।"

श्याम सिंह थोड़ी दूर पर रास्ते के किनारे एक झोपड़ी में भागा भागा गया। वहां के लोगों से कलम माँग कर उसने अपना पता लिखा। किसी ने मुस्कुरा कर पूछा,—"प्रेमी प्रेमिका हो?"

श्याम सिंह भाग कर आया। पता उसने *तुग्नीरा* को दे *दिया।* वह उठी, बोली,— "शायद फिर कभी भेंट हो। नहीं तो जितना पाया उसी पर जीवन बिता दूंगी।"

वह तेजी से वापस चलने लगी। श्याम सिंह उसे भरी आखों से तब तक

ने कहा,—"गाँव बूढे के लडके का दल है। वे आगे चले गये। हम निरापद हैं। वैसे मैं उसकी आँखें कभी जरूर फोड़ूँगी।"

उत्तर वाला अन्तरिक्ष की ओट का पहाड तेज चाल से पूरे बीस दिन की दूरी पर था। तुंगीरा अगर साथ नही आई होती तो उस जंगल-पहाड में श्याम सिंह चवन ऋषि की तरह भभूरो और घास पात से दब गया होता। तुंगीरा अपने न खा कर उसे जंगलों से जड़ी बूँटियां, कंद मूल फल लाकर खिलाती थी। सुविधा से दूर झोपडियो से चावल माग लाती थी। उसे पकाती थी। श्याम सिंह जब थक जाता तब उसके तलवे महलाती थी, उसमे गडे काटे निकालती थी। जब वह सो जाता तो उस पर पहरा देती और उसे निहारती रहती थी। उसे अपनी बिलकुल नही और श्याम सिंह की बहुत परवाह थी।

श्याम सिंह तुंगीरा की भावनाओ से बेखबर नही था। कमांडर आदमी वह उन भावनाओ से खेलना नही चाहता था। उसकी विवशता थी। दूर, कही बहुत दूर, उन पहाड़ो के पार, उन बादलो के पार, कोई उसकी अनिमेष प्रतीक्षा कर रहा था।

बीसवें दिन वे गन्तव्य पहाड पर पहुँचे। उसकी ऊंची चोटी से श्याम सिंह ने चारो ओर देखा—पहाडो मे दूर चमकते टेढी-मेढी पतली सडको पर फौजी सामानों के ट्रक और दूसरी बडी गाडिया आ जा रही थी। तीन सडको का वहाँ मिलाप था जो तीन दिशाओ मे जा रही थी। तुंगीरा ने पूरब वाली सडक को दिखा कर कहा, -"वह चीन को जाती है।"

लीडो रोड, सहसा श्याम सिंह को ध्यान आया। बीच वाली सडक त्यिून-मियांग को जाती होगी,—हिन्दुस्तान को, स्वर्ग से भी गरीयसी जन्म भूमि को। उसकी आखे भर आयी। उसने एक अप्रत्याशित काम किया। उसने तुंगीरा को कठोर आलिंगन मे बांध एक शिशु सा उसे दुलारने लगा और फूट-फूट कर रोने लगा।

रात भर वे पहाड पर एक दूसरे का हाथ हाथ मे लिए मौन निस्पंद बैठे रहे। सबेरे पहाड के उत्तर में रास्तो की सीध मे उतर कर तुंगीरा ने कहा, —"मैंने पहुँचा दिया। बूढ़ा बाप मेरी राह देख रहा होगा। मैं अब चली जाऊँगी।"

श्याम सिंह जैसे जन्म का गूंगा हो, मौन बना रहा। तुंगीरा ही बोली, —"यह लो। एक अपने पास रख लो। एक पर अपना नाम ठिकाना लिख दो।"

श्याम सिंह थोड़ी दूर पर रास्ते के किनारे एक झोपडी मे भागा भागा गया। वहां के लोगो से कलम माँग कर उसने अपना पता लिखा। किसी ने मुस्कुरा कर पूछा,—"प्रेमी प्रेमिका हो?"

श्याम सिंह भाग कर आया। पता उसने तुंगीरा को दे दिया। वह उठी, बोली,—"शायद फिर कभी भेंट हो। नहीं तो जितना पाया उसी पर जीवन बिता दूंगी।"

वह तेजी से वापस चलने लगी। श्याम सिंह उसे भरी आखो से तब तक

लड़ाई खत्म होने के पहले ही मुशी बाबू अपनी काशी की बडी हवेली छोड कर वृन्दाबन धाम गये। वहा कांधा ने उन्हें ऊपर गोलोक मे बुला लिया। वे अंग-रेजों का दश्वाश्वमेध पर मनाया गया विजय दिवस नही देख पाये। शायद वे होते तब भी उसे नही देखते। क्योंकि चंद गद्दारो और सरकारी कर्मचारियों के अतिरिक्त उसमें कोई शरीक नहीं हुआ। दश्वाश्वमेध की भीड और पुलिस के परेड की फोटो जरूर अखबारो में छपी।

मुशी बाबू की हवेली उनके संग नही गयी। वहाँ उनके एकमात्र सुपुत्र विपिन कुमार का बोलबाला था। उन्होने ही मुंशी बाबू की पगडी सभाली थी। वे अपने स्वर्गीय पिता के परम्परा को भरसक निभाने की कोशिश करते थे। पहले वाली बात जरूर नही थी। वह रहती कैसे? दुनिया बदलती रहती है।

तो चौकड़ी जमी थी। घुण्टे मेहरा कह रहे थे,—"अगरेज ने क्या गोट बिछाया? हिटलर को रूस से भिड़ा कर मारा। अमेरिका ने जापान को सर कर लिया।" त्रिभुवन दास पण्डा बोले,—"अंगरेज कही का नही रहा। मित्र राष्ट्र जीते, इंग्लैण्ड हारा। लड़ाई का बाकी यही निकला।"

"चर्चिल की हैकड़ी मिटी नही। वेभेल का प्रस्ताव छलना है। चर्चिल जाने किसकी आँखो में धूल झोक रहा है? परसों नेहरू छोड दिए गये। अब सभी छूट जायेंगे। जो कभी नही छोडा जाता वह फोरमोसा मे काल कवलित हो गया।"

कालिका राय अपने तस्कर व्यापार के जोम मे बैठे थे। विपिन कुमार उस व्यापार मे साझीदार होने की कोशिश में अर्से से लगे थे। राय ने सहज शान दिखाते हुए कहा,—"अब हिन्दुस्तान को गारत करने की तैयारी है। फौज मे भी हिन्दू मुसलिम भेद का विष फैल गया है। चाँदपुर मे पंजाब बैटेलियन के गार्ड ने मुसलिम लोग का झण्डा फहराया।"

विपिन कुमार नयी पीढी के जोश से बोले,—"आजाद हिन्द फौज में मुसलमान जेनरल ही अधिक थे। वहाँ बिलकुल एका था। हिन्दू, मुसलमान घर में पूजा की विधि है। बाहर देश-समाज में सब हिन्दुस्तानी हैं।"

"वह नेता जी का व्यक्तित्व था कि मलाया मे मुसलमानो ने अपनी सारी सम्पत्ति उन्हे दान में दे दी। यहाँ वैसा कब हो सकता है? चर्चिल अब फौजो को एक दूसरे के खिलाफ उभाड़ेगा। हिन्दुस्तान को वह आजादी के करीब भी नही

लड़ाई खत्म होने के पहले ही मुशी बाबू अपनी काशी की बडी हवेली छोड कर वृन्दाबन धाम गये। वहा कांधा ने उन्हें ऊपर गोलोक मे बुला लिया। वे अंग-रेजों का दशवाश्वमेघ पर मनाया गया विजय दिवस नही देख पाये। शायद वे होते तब भी उसे नही देखते। क्योंकि चंद गद्दारो और सरकारी कर्मचारियो के अतिरिक्त उसमें कोई शरीक नहीं हुआ। दशवाश्वमेघ की भीड और पुलिस के परेड की फोटो जरूर अखबारो में छपी।

मुशी बाबू की हवेली उनके संग नही गयी। वहाँ उनके एकमात्र सुपुत्र विपिन कुमार का बोलबाला था। उन्होने ही मुंशी बाबू की पगडी सभाली थी। वे अपने स्वर्गीय पिता के परम्परा को भरसक निभाने की कोशिश करते थे। पहले वाली बात जरूर नही थी। वह रहती कैसे? दुनिया बदलती रहती है।

तो चौकड़ी जमी थी। घुण्टे मेहरा कह रहे थे, —"अगरेज ने क्या गोट बिछाया? हिटलर को रूस से भिड़ा कर मारा। अमेरिका ने जापान को सर कर लिया।" त्रिभुवन दास पण्डा बोले,—"अंगरेज कही का नही रहा। मित्र राष्ट्र जीते, इंग्लैण्ड हारा। लड़ाई का बाकी यही निकला।"

"चर्चिल की हैकड़ी मिटी नही। वेभेल का प्रस्ताव छलना है। चर्चिल जाने किसकी आँखो में धूल झोंक रहा है? परसों नेहरू छोड दिए गये। अब सभी छूट जायेंगे। जो कभी नही छोडा जाता वह फोरमोसा मे काल कवलित हो गया।"

कालिका राय अपने तस्कर व्यापार के जोम मे बैठे थे। विपिन कुमार उस व्यापार मे साझीदार होने की कोशिश में अर्से से लगे थे। राय ने सहज शान दिखाते हुए कहा,—"अब हिन्दुस्तान को गारत करने की तैयारी है। फौज मे भी हिन्दू मुसलिम भेद का विष फैल गया है। चांदपुर मे पंजाब बैटेलियन के गार्ड ने मुसलिम लोग का झण्डा फहराया।"

विपिन कुमार नयी पीढी के जोश से बोले,—"आजाद हिन्द फौज में मुसलमान जेनरल ही अधिक थे। वहाँ बिलकुल एका था। हिन्दू, मुसलमान घर में पूजा की विधि है। बाहर देश-समाज में सब हिन्दुस्तानी हैं।"

"वह नेता जी का व्यक्तित्व था कि मलाया मे मुसलमानो ने अपनी सारी सम्पत्ति उन्हे दान में दे दी। यहाँ वैसा कब हो सकता है? चर्चिल अब फौजो को एक दूसरे के खिलाफ उभाड़ेगा। हिन्दुस्तान को वह आजादी के करीब भी नही

रही हैं।"

कालिका राय अपने पर क्षुब्ध हुआ कि उसने कमलेश से बात ही क्यों की? दीदी तब तक उससे बोली,—"कल आपकी दुकान पर सर्वदा दादा के संग आयेंगे।"

सर्वदा दादा बनारस के शिरमौर कांग्रेसी विद्वान सम्पूर्णानंद जी के सुपुत्र थे। वणिक कालिका राय देशकाल पहचानने में कम बुद्धि का नही था। आज़ाद हिन्द फौज से भी अधिक लगाव उसे सर्वदा दादा से था। देश काल जाने कब बदल गया। कलकत्ता मे उसने सुना था कि आज़ाद हिन्द फौज का बलिदान रंग लायेगा। क्या रंग लायेगा यह वह नही जानता था। उसने दीदी से कहा,—"हम आपके साथ सब दुकानो पर चलेंगे।"

"कल सवेरे ग्यारह बजे।"—कह कर दीदी ने नमस्कार किया और चलती बनी।

दूसरे दिन ठीक ग्यारह बजे दीदी, कमलेश, हरदेवी और सर्वदा दादा कालिका राय की सोने चादी की दुकान पर पहुँचे। वहा विपिन कुमार जी भी आ गये थे। आज वे खद्दर के जोडे मे थे। काग्रेसियों की वर्दी खद्दर थी। बडा लाट काग्रेसियो से ही अधिकार देने न देने की बात कर रहा था।

कालिका राय इतने लोगों को देख कर चकराया। दीदी ने रसीद बही खोल ली। कालिका राय का दिमाग तेज़ी से चंदा की धनराशि तय कर रहा था। वह पाच सौ एक कहने ही जा रहा था कि सर्वदा दादा और हरदेवी ने प्राय. साथ ही कहा,—"आपको एक लाख दिलाना है। व्यक्तिगत आपका एक हज़ार हो। यही से श्री गणेश हो रहा है।"

कालिका राय ने काटो तो खून नही हो कर एक हजार की नोट और एक रुपया अपनी लक्ष्मी तिजोरी से निकाल कर दीदी को दिया। हरदेवी ने उससे कहा,—"आप यहाँ सबके यहाँ ले चलें।"

दल का दल उस गली की सोने चादी और बनारसी साडियों की दुकानो पर गया। नकद पन्द्रह हज़ार मिले। चेक तीस हज़ार के मिले। खा साहब अब्दुल समद खां बनारसी साडियो के बडे थोक व्यापारी थे। मऊ और मुबारकपुर के जुलाहो पर उनका एक-छत्र अधिकार था। वे मुसलिम लीग के सूबा कमेटी के कार्यकारिणी के सदस्य थे। अंग्रेज कलक्टरो और कमिश्नरो को वे मुबारकपुर मे दावत देते थे। आनरेरी मैजिस्ट्रेट बनने के प्रत्याशी थे। उन्होने दो हजार एक दिया और कहा,—"हम भी पहले के राजपूत है। बहादुरी हमारे खून मे है।" उनके चचेरे भाई ने, जिनका कारबार अलग था, उतना ही दिया। सेठ गिरधर दास (लोग उन्हें 'दी ऐस' कहते थे), घी वाले ने पाच हज़ार का चेक दिया। चेक देकर उन्होंने विपिन कुमार की चुटकी लेते हुए, कहा,—"भइया, तुमने खूब चोला बदला। यह काम आयेगा। हमें भूलना मत।"

विपिन कुमार 'दी ऐस' का भाव समझ नही सके। वे दात निपोरते रहे।

रही हैं।"

कालिका राय अपने पर क्षुब्ध हुआ कि उसने कमलेश से बात ही क्यों की? दीदी तब तक उससे बोली,—"कल आपकी दुकान पर सर्वदा दादा के संग आयेंगे।"

सर्वदा दादा बनारस के शिरमौर कांग्रेसी विद्वान सम्पूर्णानंद जी के सुपुत्र थे। वणिक कालिका राय देशकाल पहचानने में कम बुद्धि का नहीं था। आज़ाद हिन्द फौज से भी अधिक लगाव उसे सर्वदा दादा से था। देश काल जाने कब बदल गया। कलकत्ता में उसने सुना था कि आज़ाद हिन्द फौज का बलिदान रंग लायेगा। क्या रंग लायेगा यह वह नहीं जानता था। उसने दीदी से कहा,—"हम आपके साथ सब दुकानों पर चलेंगे।"

"कल सवेरे ग्यारह बजे।"—कह कर दीदी ने नमस्कार किया और चलती बनी।

दूसरे दिन ठीक ग्यारह बजे दीदी, कमलेश, हरदेवी और सर्वदा दादा कालिका राय की सोने चादी की दुकान पर पहुँचे। वहा विपिन कुमार जी भी आ गये थे। आज वे खद्दर के जोड़े में थे। कांग्रेसियों की वर्दी खद्दर थी। बडा लाट कांग्रेसियों से ही अधिकार देने न देने की बात कर रहा था।

कालिका राय इतने लोगों को देख कर चकराया। दीदी ने रसीद बही खोल ली। कालिका राय का दिमाग तेज़ी से चंदा की धनराशि तय कर रहा था। वह पाच सौ एक कहने ही जा रहा था कि सर्वदा दादा और हरदेवी ने प्राय. साथ ही कहा,—"आपको एक लाख दिलाना है। व्यक्तिगत आपका एक हज़ार हो। यहीं से श्री गणेश हो रहा है।"

कालिका राय ने काटो तो खून नहीं हो कर एक हज़ार की नोट और एक रुपया अपनी लक्ष्मी तिजोरी से निकाल कर दीदी को दिया। हरदेवी ने उससे कहा,—"आप यहां सबके यहां ले चलें।"

दल का दल उस गली की सोने चादी और बनारसी साड़ियों की दुकानों पर गया। नकद पन्द्रह हज़ार मिले। चेक तीस हज़ार के मिले। खां साहब अब्दुल समद खां बनारसी साड़ियों के बड़े थोक व्यापारी थे। मऊ और मुबारकपुर के जुलाहों पर उनका एक-छत्र अधिकार था। वे मुसलिम लीग के सूबा कमेटी के कार्यकारिणी के सदस्य थे। अंगरेज कलक्टरों और कमिश्नरों को वे मुबारकपुर मे दावत देते थे। आनरेरी मैजिस्ट्रेट बनने के प्रत्याशी थे। उन्होंने दो हज़ार एक दिया और कहा,—"हम भी पहले के राजपूत हैं। बहादुरी हमारे खून में है।" उनके चचेरे भाई ने, जिनका कारबार अलग था, उतना ही दिया। सेठ गिरधर दास (लोग उन्हें 'दी ऐस' कहते थे), घी वाले ने पाच हज़ार का चेक दिया। चेक देकर उन्होंने विपिन कुमार की चुटकी लेते हुए, कहा,—"भइया, तुमने खूब चोला बदला। यह काम आयेगा। हमें भूलना मत।"

विपिन कुमार 'दी ऐस' का भाव समझ नहीं सके। वे दात निपोरते रहे।

था। रहने के मकानों को अंगरेजों ने मुक्त कर रक्खा था। श्रीमंत, चोरबाजारिये व्यापारी; सामन्ती राजा नवाब, ऊँचे पेशे के आमदनी वाले दर्जनों कमरों के मकानों में अकेले रहते थे और लाखो करोड़ों को दरी फैलाने भर की जगह नहीं मिलती थी। भेड़ बकरी की तरह मकानो में, प्लेटफारमो पर, फुटपाथो पर, पार्कों में वह ठसे रहते थे। किस तरह संक्रामक रोगो से इन्हें बचाया जा सकेगा ? क्या स्वतंत्र होने पर यह व्यवस्था बदलेगी ? नब्बे से अधिक लोग घोर अमावस्या मे और दस को अमावस्या में भी प्रखर दोपहरी का उजाला — अन्याय का यह पाप कब मिटेगा ?

अगर स्वराज्य के बाद भी यही रहा तब ? उसे दीदी की बात याद आती कि नेता जी की क्रान्ति से प्राप्त आजादी से आदमी का शोषण बन्द हो जाता। दान की आजादी से पाने वालो के शक्ति संचय के अलावे और क्या होगा ?

कभी-कभी कमलेश इन विचारों की उफान मे सुकवि विदीर्ण की तरह ही गंगा में डूब जाना चाहती। वह गरीब थी, देश के नब्बे प्रतिशत लोग गरीब थे। ग़रीबी क्या मिटेगी ? आदमी आदमी क्या बराबर होंगे ?

एक दिन मण्डी में चंदा लेते गयी थी कि हरदेवी जी से भेंट हो गयी। देश काल की चर्चा चल पड़ी। हरदेवी जी से उसने कहा,—"मजदूर दल की नयी सरकार शायद हिन्दुस्तान के लिए कुछ करे।"

हरदेवी उच्च शिक्षित थीं, गांधी जी के आन्दोलन मे भाग लेती थीं, राजनीति के धुरंधरों का संग था। उन्होंने कहा,—"हिन्दुस्तान के मामले मे हर अंगरेज चर्चिल की तरह सोचता है। वेभेल की प्रस्तावित योजना शुद्ध मजाक है।"

"कल विश्वविद्यालय मे जलूस निकला था। विद्यार्थी बहुत उग्र थे। पुलिस जलूस के आगे पीछे चल रही थी।"

"पुलिस कितनों के पीछे चलेगी ? आजाद हिन्द फौजियों ने अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना में जान फूंक दिया है।"

कमलेश सांस लेकर आगे बोली,—"आजाद हिन्द फौजियो के साथ अंगरेजो का जो व्यवहार होगा उसी से इंगलैंड की नयी सरकार की नीति साफ हो जायगी।"

"नेहरू ने कहा है कि नेता जी के नेतृत्व मे आजाद हिन्द फौज स्वदेश की आजादी के लिए लडी। उन्हें फौजी कानून के अन्तर्गत कठोर सजा देना बहुत दु ख पूर्ण होगा। हिन्दुस्तानियो को इससे गहरा घाव लगेगा और हिन्दुस्तान इगलैण्ड के बीच की खाई कभी पट नहीं सकेगी।"

"नेहरू ने इंगलैण्ड को सही सलाह दी है। आजाद हिन्द फौज ने हिन्दुस्तान का नया इतिहास लिखा है, हिन्दुस्तान सेना के दो सदियो के कलंक को धोने की कोशिश की है। उसकी सुकीर्ति अमिट रहेगी।"—कमलेश का आवेश देखने लायक था।

आजाद हिन्द फौज की विस्तृत जानकारी तब तक देश मे फैल चुकी थी। अंगरेजी सरकार के सामने एक नयी समस्या आ खडी हुई। देश का कोई

या। रहने के मकानो को अंगरेजों ने मुक्त कर रक्खा था। श्रीमंत, चोरबाजारिये व्यापारी; सामन्ती राजा नवाब, ऊँचे पेशे के आमदनी वाले दर्जनों कमरों के मकानों में अकेले रहते थे और लाखो करोड़ों को दरी फैलाने भर की जगह नही मिलती थी। भेड़ बकरी की तरह मकानो में, प्लेटफारमो पर, फुटपाथो पर, पार्कों में वह ठसे रहते थे। किस तरह संक्रामक रोगो से इन्हें बचाया जा सकेगा ? क्या स्वतंत्र होने पर यह व्यवस्था बदलेगी ? नब्बे से अधिक लोग घोर अमावस्या मे और दस को अमावस्या में भी प्रखर दोपहरी का उजाला—अन्याय का यह पाप कब मिटेगा ?

अगर स्वराज्य के बाद भी यही रहा तब ? उसे दीदी की बात याद आती कि नेता जी की क्रान्ति से प्राप्त आज़ादी से आदमी का शोषण बन्द हो जाता। दान की आजादी से पाने वालो के शक्ति संचय के अलावे और क्या होगा ?

कभी-कभी कमलेश इन विचारों की उफान मे सुकवि विदीर्ण की तरह ही गंगा में डूब जाना चाहती। वह गरीब थी, देश के नब्बे प्रतिशत लोग गरीब थे। ग़रीबी क्या मिटेगी ? आदमी आदमी क्या बराबर होगे ?

एक दिन मण्डी में चंदा लेने गयी थी कि हरदेवी जी से भेंट हो गयी। देश काल की चर्चा चल पड़ी। हरदेवी जी से उसने कहा,—"मज़दूर दल की नयी सरकार शायद हिन्दुस्तान के लिए कुछ करे।"

हरदेवी उच्च शिक्षित थीं, गांधी जी के आन्दोलन मे भाग लेती थीं, राजनीति के धुरंधरों का संग था। उन्होंने कहा,—"हिन्दुस्तान के मामले मे हर अंगरेज चर्चिल की तरह सोचता है। वेभेल की प्रस्तावित योजना शुद्ध मजाक है।"

"कल विश्वविद्यालय मे जलूस निकला था। विद्यार्थी बहुत उग्र थे। पुलिस जलूस के आगे पीछे चल रही थी।"

"पुलिस कितनों के पीछे चलेगी ? आज़ाद हिन्द फौजियों ने अंगरेजों की हिन्दुस्तानी सेना में जान फूंक दिया है।"

कमलेश सांस लेकर आगे बोली,—"आज़ाद हिन्द फौजियो के साथ अंगरेजो का जो व्यवहार होगा उसी से इंगलैंड की नयी सरकार की नीति साफ हो जायगी।"

"नेहरू ने कहा है कि नेता जी के नेतृत्व मे आज़ाद हिन्द फौज स्वदेश की आज़ादी के लिए लडी। उन्हें फौजी कानून के अन्तर्गत कठोर सजा देना बहुत दुःख पूर्ण होगा। हिन्दुस्तानियो को इससे गहरा घाव लगेगा और हिन्दुस्तान इगलैण्ड के बीच की खाई कभी पट नहीं सकेगी।"

"नेहरू ने इंगलैण्ड को सही सलाह दी है। आज़ाद हिन्द फौज ने हिन्दुस्तान का नया इतिहास लिखा है, हिन्दुस्तान सेना के दो सदियो के कलंक को धोने की कोशिश की है। उसकी सुकीर्ति अमिट रहेगी।"—कमलेश का आवेश देखने लायक था।

आज़ाद हिन्द फौज की विस्तृत जानकारी तब तक देश मे फैल चुकी थी। अंगरेजी सरकार के सामने एक नयी समस्या आ खडी हुई। देश का कोई

को लाल किले में कोर्ट मार्शल की कार्यवाही शुरु हुई उसी तारीख को कलकत्ता के दमदम सैनिक हवाई अड्डे पर हिन्दुस्तानी अफसरों और जवानो ने अगरेजो के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। अंगरेज कमांडर, उप कमाडर, स्टाफ अधिकारी आदि फिरंगी अफसर जो सामने पड़े मौत के घाट उतार दिए गये। कलकत्ता से चिनगारी दूसरे अड्डो पर यहा तक कि मध्य एशिया मे भी जहा अभी भारतीय वायुयान सैनिक थे, पहुँची। इंगलैण्ड की सरकार दहल गयी। चिनगारी दबा दी गयी पर आग बुझी नही। इस विद्रोह के नेता थे अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के पहले अध्यक्ष श्री रास विहारी बोस के निजी अफसर विंग कमाडर वलराज सिन्हा। अगरेजी फौज की पूरी ब्रिगेड ने उन्हे जीवित या मृत पकड़ने के लिए दमदम और वारकपुर को घेरा। वे घेरा तोड कर भाग निकले।

मजदूर दल की नयी सरकार ने वाइसराय वेभेल से हिन्दुस्तान को स्वायत्त अधिकार देने की तेजी पर जोर दिया। वेभेल अनुदार दल के थे। वैसे वे कुशल लेखक और अच्छे जेनरल थे। वे स्वायत्तता देने के पक्ष में नही थे। उन्होने और बंटवारे पर *आधारित वाइसराय की कार्यवाही समिति को हिन्दू मुसलमान मे बराबर बाँटने* का प्रस्ताव रखा। यह स्वराज नही था। देश को सदा के लिए कमजोर करने की चाल थी जिससे अँगरेज सदा यहाँ बने रहे।

दीमापुर मे सुदर्शन चोपड़ा के पिता का बड़ा कारखाना था। श्याम सिह वहां पहुचा। पहुँचते ही श्याम सिह ने वहाँ कर्नल रोडरिग्स को देखा। कर्नल रोडरिग्स वहाँ मिस्टर रोडरिग्स वन कर वम्बई से खरीद फरोख्त करने आये थे। वे थे ईसाई। उनका रग गोरा था। इसलिए वे अपने को एग्लो इडियन बताते थे। उनके वंश का अंगरेज खून शेक्सपियर से था और हिन्दुस्तानी मीर तकी मीर से। पर न वे कवि थे, न नाटककार। देश भक्त जरूर वे बहुत वडे थे। सिंगापुर मे श्याम सिह उन्हे छापामार दस्तों के कुशल प्रशिक्षक के रूप मे जानता था। वही से उनसे वह अच्छी तरह परिचित था।

मिस्टर रोडरिग्स श्याम सिह के सलाम पर चकित नही हुए। वे बोले, —"शाबास। जापान ने हार मान लिया। हम क्रान्तिकारी लोग हार मानना नही जानते हैं।"

"हा, सर।"

"यहा कई दूसरे भी है।"

"कोई हुक्म, सर्।"

"वताऊँगा। इन नक्शो को तब तक समझो। आस पास की गोरी पल्टनो की टोह लो।"

"अच्छा, सर्।"

को लाल किले में कोर्ट मार्शल की कार्यवाही शुरू हुई उसी तारीख को कलकत्ता के दमदम सैनिक हवाई अड्डे पर हिन्दुस्तानी अफसरों और जवानो ने अंगरेजो के विरुद्ध विद्रोह शुरू कर दिया। अंगरेज कमांडर, उप कमांडर, स्टाफ अधिकारी आदि फिरंगी अफसर जो सामने पड़े मौत के घाट उतार दिए गये। कलकत्ता से चिनगारी दूसरे अड्डों पर यहा तक कि मध्य एशिया मे भी जहा अभी भारतीय वायुयान सैनिक थे, पहुँची। इंगलैण्ड की सरकार दहल गयी। चिनगारी दबा दी गयी पर आग बुझी नही। इस विद्रोह के नेता थे अस्थायी आजाद हिन्द सरकार के पहले अध्यक्ष श्री रास विहारी बोस के निजी अफसर विंग कमाडर बलराज सिन्हा। अंगरेजी फौज की पूरी ब्रिगेड ने उन्हे जीवित या मृत पकड़ने के लिए दमदम और वारकपुर को घेरा। वे घेरा तोड कर भाग निकले।

मजदूर दल की नयी सरकार ने वाइसराय वेभेल से हिन्दुस्तान को स्वायत्त अधिकार देने की तेजी पर जोर दिया। वेभेल अनुदार दल के थे। वैसे वे कुशल लेखक और अच्छे जेनरल थे। वे स्वायत्तता देने के पक्ष में नही थे। उन्होने और बंटवारे पर आधारित वाइसराय की कार्यवाही समित को हिन्दू मुसलमान मे बराबर बांटने का प्रस्ताव रखा। यह स्वराज नही था। देश को सदा के लिए कमजोर करने की चाल थी जिससे अँगरेज सदा यहाँ बने रहे।

दीमापुर मे सुदर्शन चोपड़ा के पिता का बड़ा कारखाना था। श्याम सिंह वहां पहुचा। पहुँचते ही श्याम सिंह ने वहाँ कर्नल रोडरिग्स को देखा। कर्नल रोडरिग्स वहाँ मिस्टर रोडरिग्स बन कर बम्बई से खरीद फरोख्त करने आये थे। वे थे ईसाई। उनका रग गोरा था। इसलिए वे अपने को एग्लो इडियन बताते थे। उनके वंश का अंगरेज खून शेक्सपियर से था और हिन्दुस्तानी मीर तकी मीर से। पर न वे कवि थे, न नाटककार। देश भक्त जरूर वे बहुत बडे थे। सिंगापुर मे श्याम सिंह उन्हे छापामार दस्तों के कुशल प्रशिक्षक के रूप मे जानता था। वही से उनसे वह अच्छी तरह परिचित था।

मिस्टर रोडरिग्स श्याम सिंह के सलाम पर चकित नही हुए। वे बोले,—"शाबास। जापान ने हार मान लिया। हम क्रान्तिकारी लोग हार मानना नही जानते हैं।"

"हा, सर।"

"यहा कई दूसरे भी है।"

"कोई हुक्म, सर्।"

"बताऊँगा। इन नक्शो को तब तक समझो। आस पास की गोरी पल्टनो की टोह लो।"

"अच्छा, सर्।"

रवाना होगी। टाम उन्हें कलकत्ता पहुँचा कर चाय बागान में चला जायगा। पहले रूपसी के चाय बागान का वह मैनेजर था। उसे बेदाग नहीं जाने देना है। रोडरीग्स बहुत दुखी होगा।"

"करना क्या है?"—श्याम सिंह ने पूछा।

लायल ने उसे नक्शे पर एक जगह दिखा कर कहा,—"यहाँ की जाँच पड़-ताल कर आओ।"

शनिवार को मनियारी क्षेत्र की जाच पड़ताल कर श्याम सिंह लौट आया। लायल को उसने अपनी रिपोर्ट दी। शाम को मिस्टर रोडरीग्स ने कहा,—"पाँचवें दिन विशेष रेल से बटालियन पाण्डुघाट के लिए रवाना हो रही है। इसने बर्मा में विषैले विस्फोटक का प्रयोग किया। उस विस्फोटक से फैली गैस शरीर को कहीं भी छू लेती थी तो पूरे शरीर पर खुजली के बड़े दाने उभर आते थे। आदमी दर्द से या तो मर जाता था या आत्म-हत्या कर लेता था। हमें इस पुल पर उसका बदला चुकाना है।"

रोडरीग्स ने नक्शे पर कैप्टन लायल और उसको वह पुल दिखाया और दोनों को आदेश दिया,—"मनियारी से उनकी ट्रेन रवाना हो कर साढ़े नौ बजे रात के करीब पुल पर पहुँचेगी। ट्रेन के पहुँचते के साथ ही उस पुल को ऐसे उड़ाना है कि ट्रेन क्षत-विक्षत हो जाय। काम आप दोनों को एक जुट होकर करना है। मदद के लिए सिकन्दर खाँ होगा।"

"क्या सिकन्दर खाँ भी यहीं है?"—श्याम सिंह ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ वह वीतरागी बाबा के नाम से उस कब्रगाह में रहता है। तुम उसे पहचान नहीं पाओगे।"

श्याम सिंह कब्रगाह पर आया। फकीरों के भेष में खटक जाति के पंजाबी युवक को पहचानना असंभव था। उसने श्याम सिंह का स्वागत किया और कहा,—"मैं समय से पुल पर पहुँच जाऊँगा। पुल के उड़ते ही आगे के चार-पाँच डब्बे नदी में गिर कर डूब जायेंगे। पीछे वालों को मार करने के लिए हमारा दस्ता काफी होगा।"

सिकन्दर खाँ ने यह भी बताया कि मिस्टर रोडरीग्स टाम को भरसक जीवित पकड़ना चाहते हैं। उसका डब्बा ट्रेन में सब से पीछे गार्ड के डब्बे से लगा हुआ होगा।

बाद में, बहुत बाद में, श्याम सिंह को मालूम हुआ टाम रोडरीग्स की बीबी को भगा ले गया था। रोडरीग्स तब से उसके रक्त का प्यासा था। उसे ध्यान आया कि रोडरीग्स ने पुल के पास एक गड्ढा पहले से ही खोद लेने का हुक्म दिया था।

निश्चित तिथि और समय पर निर्दिष्ट पुल पर भयंकर विस्फोट हुआ। पुल टूटा और रेल के कई डब्बे नदी में गिर कर दलदल में धँस गये। बाकी डब्बों

रवाना होगी। टाम उन्हें कलकत्ता पहुँचा कर चाय बागान में चला जायगा। पहले रूपसी के चाय बागान का वह मैनेजर था। उसे बेदाग नहीं जाने देना है। रोडरीग्स बहुत दुखी होगा।"

"करना क्या है?"—श्याम सिंह ने पूछा।

लायल ने उसे नक्शे पर एक जगह दिखा कर कहा,—"यहाँ की जाँच पड़ताल कर आओ।"

शनिवार को मनियारी क्षेत्र की जाच पड़ताल कर श्याम सिंह लौट आया। लायल को उसने अपनी रिपोर्ट दी। शाम को मिस्टर रोडरीग्स ने कहा,—"पाँचवें दिन विशेष रेल से बटालियन पाण्डुघाट के लिए रवाना हो रही है। इसने बर्मा में विषैले विस्फोटक का प्रयोग किया। उस विस्फोटक से फैली गैस शरीर को कहीं भी छू लेती थी तो पूरे शरीर पर खुजली के बड़े दाने उभर आते थे। आदमी दर्द से या तो मर जाता था या आत्म-हत्या कर लेता था। हमें इस पुल पर उसका बदला चुकाना है।"

रोडरीग्स ने नक्शे पर कैप्टन लायल और उसको यह पुल दिखाया और दोनों को आदेश दिया,—"मनियारी से उनकी ट्रेन रवाना हो कर साढ़े नौ बजे रात के करीब पुल पर पहुँचेगी। ट्रेन के पहुँचने के साथ ही इस पुल को ऐसे उड़ाना है कि ट्रेन क्षत-विक्षत हो जाय। काम आप दोनों को एक जुट होकर करना है। मदद के लिए सिकन्दर खाँ होगा।"

"क्या सिकन्दर खाँ भी यहीं है?"—श्याम सिंह ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ वह वीतरागी बाबा के नाम से उस कब्रगाह में रहता है। तुम उसे पहचान नहीं पाओगे।"

श्याम सिंह कब्रगाह पर आया। फकीरों के भेष में पठान जाति के पंजाबी युवक को पहचानना असंभव था। उसने श्याम सिंह का स्वागत किया और कहा,—"मैं समय से पुल पर पहुँच जाऊँगा। पुल के उड़ते ही आगे के चार-पाँच डब्बे नदी में गिर कर डूब जायेंगे। पीछे वालों को मर करने के लिए हमारा दस्ता काफी होगा।"

सिकन्दर खाँ ने यह भी बताया कि मिस्टर रोडरीग्स टाम को भरसक जीवित पकड़ना चाहते हैं। उसका डब्बा ट्रेन में सब से पीछे गार्ड के डब्बे में लगा हुआ होगा।

बाद में, बहुत बाद में, श्याम सिंह को मालूम हुआ टाम रोडरीग्स की बीवी को भगा ले गया था। रोडरीग्स तब से उसके खून का प्यासा था। उसे ध्यान आया कि रोडरीग्स ने पुल के पास एक गड्ढा पहले से ही खोद लेने का हुक्म दिया था।

निश्चित तिथि और समय पर निर्धारित पुल पर भयंकर विस्फोट हुआ। पुल टूटा और रेल के कई डब्बे नदी में गिर कर दलदल में धंस गये। बाकी डब्बों

के साथ चली गयी थी। उसका रोडरिग्स से तलाक भी हो चुका था। टाम से नैन्सी को दो बच्चे भी थे। रोडरिग्स नैन्सी से मिलने को अब भी दीवाने थे। शायद इस कारण महान देश सेवा की भावना रखते हुए भी वह मलाया और बर्मा में उतना कुछ नहीं कर पाये थे जितना उनसे अपेक्षित था।

उन्हें पता चला था कि नैन्सी अलीपुर के फौजी अस्पताल में घायल सैनिक अधिकारियों के कल्याण कमेटी की अध्यक्ष है।

अलीपुर में उन्होंने बहुत पता लगाया। नैन्सी वहाँ नहीं मिली। किसी ने बताया कि वह पूना या बम्बई में अब रहती है।

रोडरिग्स निराश हुए। बम्बई वे जाना नहीं चाहते थे। वहाँ नैन्सी के संग उनके रोमास की कितनी स्मृतियाँ जुड़ी थीं।

विक्टोरिया मेमोरियल के मैदान में वे उदास बैठे थे कि बम्बई के दिनों के उनके एक साथी भिखाजी मिल गये। प्रेम से दोनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया। पिछली यादों की भावधारा में वे मेमोरियल की झील के किनारे एक बेंच पर बैठ गये। वहाँ भिखाजी ने कहा,—"आप तो सिंगापुर में कैद हो गये थे।"

"हाँ।"—अचरज से रोडरिग्स ने कहा।

"आप आजाद हिन्द फौज में शामिल नहीं हुए?"

"हुए।"

"वह तो जापानियों की भाड़े की फौज थी?"

"नहीं-नहीं। भाड़े के टट्टू हम तब थे जब अंगरेजों की फौज में थे। वह नेता जी की क्रान्तिकारी फौज थी। जापानियों का केवल साथ या सहयोग था। पहली लड़ाई में अंगरेज ने जापानियों से सहयोग लिया था।"

"फिर भी उनकी अधीनता तो थी ही?"—भिखाजी आश्चर्यचकित थे।

"सहयोग अगर अधीनता है तो अंगरेज आज अमेरिका के अधीन हैं।"

भिखाजी चुप हो गये। उन्होंने आजाद हिन्द फौज के बारे में अब तक जो सुना था वह झूठ साबित हो रहा था। रोडरिग्स ने उनके भावों का अनुमान कर आगे बताया,—"आजाद फौज पूरी स्वतंत्र सेना थी। उसका अपना अनुशासन और कानून था। अपने कोष से उसमें निर्वाह भत्ता दिया जाता था। अस्त्र-शस्त्र और रसद की आपूर्ति में जापानियों का सहयोग था। जापानियों को यह साफ-साफ बता दिया गया था कि हिन्दुस्तान के किसी भी भाग पर कब्जे के बाद अस्थायी आजाद हिन्द सरकार का ही वहाँ शासन होगा। नेता जी की दिव्यता से जापानी भी प्रभावित थे।"

भिखाजी ने प्रसन्न भाव से कहा,—"एक भारी भ्रम दूर हुआ। आजाद हिन्द फौज में तो मुसलमान कमाण्डर ही सर्वाधिक थे। प्रवासी भारतीय मुसलमानों ने ही अपना सर्वस्व आजाद फौज के लिए दान में दिया, यहाँ क्यों इसके विपरीत हो रहा है?"

के साथ चली गयी थी। उसका रोडरिग्स से तलाक भी हो चुका था। टाम से नैन्सी को दो बच्चे भी थे। रोडरिग्स नैन्सी से मिलने को अब भी दीवाने थे। शायद इस कारण महान देश सेवा की भावना रखते हुए भी वह मलाया और वर्मा में उतना कुछ नहीं कर पाये थे जितना उनसे अपेक्षित था।

उन्हें पता चला था कि नैन्सी अलीपुर के फौजी अस्पताल में घायल सैनिक अधिकारियों के कल्याण कमेटी की अध्यक्ष है।

अलीपुर में उन्होंने बहुत पता लगाया। नैन्सी वहाँ नहीं मिली। किसी ने बताया कि वह पूना या बम्बई में अब रहती है।

रोडरिग्स निराश हुए। बम्बई वे जाना नहीं चाहते थे। वहाँ नैन्सी के संग उनके रोमास की कितनी स्मृतियाँ जुड़ी थीं।

विक्टोरिया मेमोरियल के मैदान में वे उदास बैठे थे कि बम्बई के दिनों के उनके एक साथी भिखाजी मिल गये। प्रेम से दोनों ने एक दूसरे का अभिवादन किया। पिछली यादों की भावधारा में वे मेमोरियल की झील के किनारे एक बेंच पर बैठ गये। वहाँ भिखाजी ने कहा,—"आप तो सिंगापुर में कैद हो गये थे।"

"हाँ।"—अचरज से रोडरिग्स ने कहा।

"आप आजाद हिन्द फौज में शामिल नहीं हुए?"

"हुए।"

"वह तो जापानियों की भाड़े की फौज थी?"

"नहीं-नहीं। भाड़े के टट्टू हम तब थे जब अंगरेजों की फौज मे थे। वह नेता जी की क्रान्तिकारी फौज थी। जापानियों का केवल साथ या सहयोग था। पहली लड़ाई में अंगरेज ने जापानियों से सहयोग लिया था।"

"फिर भी उनकी अधीनता तो थी ही?"—भिखाजी आश्चर्यचकित थे।

"सहयोग अगर अधीनता है तो अंगरेज आज अमेरिका के अधीन हैं।"

भिखाजी चुप हो गये। उन्होंने आजाद हिन्द फौज के बारे में अब तक जो सुना था वह झूठ साबित हो रहा था। रोडरिग्स ने उनके भावो का अनुमान कर आगे बताया,—"आजाद फौज पूरी स्वतंत्र सेना थी। उसका अपना अनुशासन और कानून था। अपने कोष से उसमें निर्वाह भत्ता दिया जाता था। अस्त्र-शस्त्र और रसद की आपूर्ति में जापानियों का सहयोग था। जापानियों को यह साफ-साफ बता दिया गया था कि हिन्दुस्तान के किसी भी भाग पर कब्जे के बाद अस्थायी आजाद हिन्द सरकार का ही वहाँ शासन होगा। नेता जी की दिव्यता से जापानी भी प्रभावित थे।"

भिखाजी ने प्रसन्न भाव से कहा,—"एक भारी भ्रम दूर हुआ। आजाद हिन्द फौज में तो मुसलमान कमाण्डर ही सर्वाधिक थे। प्रवासी भारतीय मुसलमानों ने ही अपना सर्वस्व आजाद फौज के लिए दान में दिया, यहाँ क्यों इसके विपरीत हो रहा है?"

नरेन्द्र पुखराज अजीतगढ़ आये। प्रजा ने, बुन्देले ठाकुरों ने, उनका अभूतपूर्व स्वागत किया।

वृद्ध दीवान बहादुर और नरेन्द्र की मां ने पोते का विधिवत मुंडन संस्कार सम्पन्न कराया। सारी प्रजा को अन्न वस्त्र बांटा गया। बिरादरी और राजपरिवार को ज्योनार का बड़हार हुआ। सभी आये—बड़े बूढ़े सरदार, राजपरिवार का हर सदस्य, नाते-रिश्तेदार, परिजन, पुरजन कहीं कोई छूटा नहीं। बालक के कीमती आभूषणों और वस्त्रों के उपहार से घर भर गया।

पुखराज मां जी, ननदों, भाभियों, रनिवास की रानियों से घिरी स्नेह से उमड़ आयी। स्वतंत्र हिन्दुस्तान में नारी की अधोगति मिटेगी, इसका उसे विश्वास हुआ।

भीड़ भड़क्का, खान पान, बाजे गाजे में दावत का दिन बीता। दूसरे दिन सवेरे सवेरे महाराज बिना सूचना के नरेन्द्र से मिलने आ गये, इस अनहोनी बात से दीवान बहादुर की हवेली में क्रान्ति मच गयी।

महाराज विशेष कारण से आये थे। उन्होंने नरेन्द्र से कहा,—"हिज हाईनेस पटियाला और भूपाल का फोन आया है। रजवाड़ों ने एकमत से तुम्हें ब्रिटिश सरकार से बात करने के लिए अपना प्रतिनिधि चुना है।"

नरेन्द्र इस खबर से स्तब्ध रह गया। उसने साहस कर महाराज से कहा,—"दादू, मैं आजाद हिन्द सरकार में था।"

"कौन आजाद हिन्द सरकार या सेना में नहीं होता? हमें प्रतिभा सम्पन्न कुशल प्रतिनिधि चाहिए जो हमारी वकालत कर सके।"

"दादू, सोचना पड़ेगा।"

"तुम सोचो। तुम अजीतगढ़ की माटी से बने यहीं के हो। तुम्हें इस भार से मैं मुक्त नहीं होने दूंगा। पन्द्रहवें दिन दिल्ली में रियासतों के संघ (चैम्बर आफ प्रिन्सेज़) की बैठक बुलायी गयी है। तुम उसमें शामिल होगे। मैंने पटियाला और भूपाल से कह दिया है।"

नरेन्द्र चुप रह गया। मौन को स्वीकृति मान महाराज ने उसे गले से लगा लिया। कुछ देर राम रहीम की बातें कर, साहब सलाम के बाद, महाराज चले गये।

नरेन्द्र सोच में खोया रह गया—पांच सौ पैंसठ अर्ध स्वतंत्र रियासतें हैं। इनमें हैदराबाद और कश्मीर समूचे योरोप के बराबर हैं। कोनराड कोरफील्ड

२१

नरेन्द्र पुखराज अजीतगढ़ आये। प्रजा ने, बुन्देले ठाकुरों ने, उनका अभूतपूर्व स्वागत किया।

वृद्ध दीवान बहादुर और नरेन्द्र की मां ने पोते का विधिवत मुंडन संस्कार सम्पन्न कराया। सारी प्रजा को अन्न वस्त्र बांटा गया। बिरादरी और राजपरिवार को ज्योनार का बड़हार हुआ। सभी आये—बड़े बूढ़े सरदार, राजपरिवार का हर सदस्य, नाते-रिश्तेदार, परिजन, पुरजन कहीं कोई छूटा नहीं। बालक के कीमती आभूषणों और वस्त्रों के उपहार से घर भर गया।

पुखराज मां जी, ननदों, भाभियों, रनिवास की रानियों से घिरी स्नेह से उमड़ आयी। स्वतंत्र हिन्दुस्तान में नारी की अधोगति मिटेगी, इसका उसे विश्वास हुआ।

भीड़ भड़क्का, खान पान, बाजे गाजे में दावत का दिन बीता। दूसरे दिन सबेरे सबेरे महाराज बिना सूचना के नरेन्द्र से मिलने आ गये, इस अनहोनी बात से दीवान बहादुर की हवेली में क्रान्ति मच गयी।

महाराज विशेष कारण से आये थे। उन्होंने नरेन्द्र से कहा,—"हिज हाईनेस पटियाला और भूपाल का फोन आया है। रजवाड़ों ने एकमत से तुम्हें ब्रिटिश सरकार से बात करने के लिए अपना प्रतिनिधि चुना है।"

नरेन्द्र इस खबर से स्तब्ध रह गया। उसने साहस कर महाराज से कहा,—"दादू, मैं आजाद हिन्द सरकार में था।"

"कौन आजाद हिन्द सरकार या सेना में नहीं होता? हमें प्रतिभा सम्पन्न कुशल प्रतिनिधि चाहिए जो हमारी वकालत कर सके।"

"दादू, सोचना पड़ेगा।"

"तुम सोचो। तुम अजीतगढ़ की माटी से बने यहीं के हो। तुम्हें इस भार से मैं मुक्त नहीं होने दूंगा। पन्द्रहवें दिन दिल्ली में रियासतों के संघ (चैम्बर आफ प्रिन्सेज) की बैठक बुलायी गयी है। तुम उसमें शामिल होगे। मैंने पटियाला और भूपाल से कह दिया है।"

नरेन्द्र चुप रह गया। मौन को स्वीकृति मान महाराज ने उसे गले से लगा लिया। कुछ देर राम रहीम की बातें कर, साहब सलाम के बाद, महाराज चले गये।

नरेन्द्र सोच में खोया रह गया—पांच सौ पैंसठ अर्ध स्वतंत्र रियासतें हैं। इनमें हैदराबाद और कश्मीर समूचे योरोप के बराबर हैं। कोनराड कोरफील्ड

गत मसपरापन्न जान कर वह स्वयं दीवानजी से लोट-पोट होने को आया। इन रियासतों को जीवित करने का एक ही उपाय था। उस उपाय के खिलाफ हर रियासत कमर कसे तैयार थी।

महाराज झालावाड ने रियासतों की आम बैठक में कहा,—"हम ब्रिटिश सरकार के संधि द्वारा सहयोगी थे। उनके हटते ही भारत से हमारा सम्बन्ध बिलकुल स्वतंत्र हो जायगा। हमें सोचना है कि विलायत के ताज से हमारा क्या सम्बन्ध रहे।"

महाराजा नाभा की ओर से उनकी अंगरेज रानी ने एक घोषणा पत्र ही पढ डाला कि अगर कठिनाई पडी तो वह नाभा के बदले में विलायत में ही राज्य की मांग करेंगे।

नरेन्द्र ने अधिकाश सधि पत्रों को पढ लिया था। रियासतों के ढुलमुल व्यक्तिवादी आकांक्षी शासकों से उसे भारतीय एकता को बड़ा खतरा नहीं दिखायी पडा। उनके सम्बन्धों की कडी को बडी कोमलता से निभाना जरूरी था।

सारे देश में लाल किले के कोर्ट मार्शल के फैसले से नयी उत्तेजना छा गयी। कोर्ट मार्शल ने तीनों जेनरलों—सहगल, ढिल्लो, शाहनवाज़—को आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया। फेडरल कोर्ट के वकीलों के संग संग पुखराज उमड़ी। उसने नरेन्द्र से तमतमा कर कहा, —"यह क्या हुआ ?"

"अंगरेजों की विदाई के यज्ञ में यह आहुति है। उन्होंने अपने कानून का पालन किया। जनता उन्हें उखाड फेंकेगी।"

पुखराज ने समझा या नहीं नरेन्द्र के शान्त गम्भीर मुखमुद्रा से उसने आगे कुछ नहीं कहा।

लाल किले के मुकदमे से उठी लहर उसके फैसले से उत्तेजित हो नगर-नगर ग्राम-ग्राम नया आन्दोलन जगा बैठी। अंगरेज ने उस जन शक्ति को पहचाना। अंगरेज प्रधान सेनापति ने अपने विशेषधिकार से आजन्म कारावास के दण्ड को रद्द कर दिया। आज़ाद हिन्द फौज की स्वतंत्रता मान ली गयी।

लगभग उसी समय रेडियो में ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि वह जून अडतालीस के पहले हिन्दुस्तान को जिसे चाहे अधिकार सौंप कर वापस चली जायगी। हिन्दुस्तान की आज़ादी इस तरह मान ली गयी। नेता जी की बात सच हुई।

आज़ाद हिन्द फौज के कैप्टन दुर्रानी का भी कोर्ट मार्शल होने वाला था। वह अब रद्द कर दिया गया। पुखराज ने यह सुन कर नरेन्द्र से कहा,— "नेता जी की हर बात सच हो रही है। मगर ये मुसलमान अफसर अब लीगी क्यों होते जा रहे है ?"

"पाकिस्तान के गुब्बारे के कारण। यह तो नहीं जानते कि इस गुब्बारे को बड़ी ताकतें मन माना ढंग से उडा देंगी, उसे कहीं टिकने नहीं देंगी। इगलैंड

गत मसखरापन जान कर वह स्वयं दीवानजी से लोट-पोट होने को आया। इन रियासतों को जीवित करने का एक ही उपाय था। उस उपाय के खिलाफ हर रियासत कमर कसे तैयार थी।

महाराज झालावाड ने रियासतों की आम बैठक मे कहा,—"हम ब्रिटिश सरकार के संधि द्वारा सहयोगी थे। उनके हटते ही भारत से हमारा सम्बन्ध बिलकुल स्वतंत्र हो जायगा। हमे सोचना है कि विलायत के ताज से हमारा क्या सम्बन्ध रहे।"

महाराजा नाभा की ओर से उनकी अंगरेज रानी ने एक घोषणा पत्र ही पढ डाला कि अगर कठिनाई पडी तो वह नाभा के बदले मे विलायत मे ही राज्य की मांग करेंगे।

नरेन्द्र ने अधिकाश सधि पत्रों को पढ लिया था। रियासतों के ढुलमुल व्यक्तिवादी आकाक्षी शासकों से उसे भारतीय एकता को बड़ा खतरा नहीं दिखायी पडा। उनके सम्बन्धो की कडी को बडी कोमलता से निभाना जरूरी था।

सारे देश मे लाल किले के कोर्ट मार्शल के फैसले से नयी उत्तेजना छा गयी। कोर्ट मार्शल ने तीनों जेनरलों—सहगल, ढिल्लो, शाहनवाज—को आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया। फेडरल कोर्ट के वकीलों के सग संग पुखराज उमडी। उसने नरेन्द्र से तमतमा कर कहा,—"यह क्या हुआ?"

"अंगरेजो की विदाई के यज्ञ मे यह आहुति है। उन्होंने अपने कानून का पालन किया। जनता उन्हे उखाड फेंकेगी।"

पुखराज ने समझा या नही नरेन्द्र के शान्त गम्भीर मुखमुद्रा से उसने आगे कुछ नहीं कहा।

लाल किले के मुकदमे से उठी लहर उसके फैसले से उत्तेजित हो नगर-नगर ग्राम-ग्राम नया आन्दोलन जगा बैठी। अंगरेज ने उस जन शक्ति को पहचाना। अंगरेज प्रधान सेनापति ने अपने विशेषधिकार से आजन्म कारावास के दण्ड को रद्द कर दिया। आजाद हिन्द फौज की स्वतंत्रता मान ली गयी।

लगभग उसी समय रेडियो से ब्रिटिश सरकार ने घोषणा की कि वह जून अड़तालीस के पहले हिन्दुस्तान को जिसे चाहे अधिकार सौंप कर वापस चली जायगी। हिन्दुस्तान की आजादी इस तरह मान ली गयी। नेता जी की बात सच हुई।

आजाद हिन्द फौज के कैप्टन दुर्रानी का भी कोर्ट मार्शल होने वाला था। वह अब रद्द कर दिया गया। पुखराज ने यह सुन कर नरेन्द्र से कहा,—"नेता जी की हर बात सच हो रही है। मगर ये मुसलमान अफसर अब लीगी क्यों होते जा रहे है?"

"पाकिस्तान के गुब्बारे के कारण। यह तो नही जानते कि इस गुब्बारे को बड़ी ताकतें मन माना ढंग से उडा देंगी, उसे कही टिकने नही देंगी। इगलैंड

"राजा जी ने पहले यही कहा था।"

"राजा जी ने जब कहा था तब देश से अंगरेज जा नहीं रहा था। यहाँ हिन्दुस्तानियों की कार्यकारिणी समिति बना रहा था। अब स्वराज या औपनवेशिक स्वराज की बात है।"

"क्या हिन्दू मुसलिम मिल कर बँटवारा रोक नहीं सकते?"—कमलेश ने पूछा।

पुखराज आ गयी थी। उसने विवाद का विषय सुन लिया था। वह बोली,—"अंगरेजो ने यह विष की बेलि बहुत पहले लगायी। मैं बचपन से देखती आ रही हूँ कि मुसलमान हिन्दू को काफिर मानते हैं। उनके धर्म की सीख है कि काफिर को मौका पाते ही मार दो, मुसलमान का कोई अहित मत करो।"

"यह हिन्दुस्तान के लिए हमेशा खतरा बना रहेगा।" नरेन्द्र आ गये। उन्होंने कहा,—"हर धर्म में देश सर्वोपरि है। बँटवारा हुआ भी तो यहाँ के मुसलमान हिन्दुस्तान के गौरव के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे।"

प्रफुल्ल ने पूछा,—"मिस्टर जिन्ना इस गूढ़ तत्व को क्यों नहीं समझते?"

"उनका धर्म से क्या नाता? पहले वह किसी के इशारे पर थे। अब राष्ट्रपिता होने के स्वार्थ से ग्रसित हैं।"

चाय आ गयी। वातावरण हल्का हो आया। चाय का एक घूंट पीकर दीदी ने नरेन्द्र से पूछा,—"रियासतों का क्या हो रहा है?"

"रियासतें भारतीय संघ में शामिल होंगी। स्वराज का रूप साफ होते ही निर्णय हो जायगा।"

"बहुत अच्छा होगा। तब बँटवारा बेमानी है।"

"वह एक आदमी की जिद के कारण होगा। अमेरिका को इस भू-भाग में पाँव रखने की जगह चाहिए।"

नरेन्द्र पुखराज का इम्पेरियल होटल में महाराजा अजीतगढ़ के यहाँ रात का खाना था। वहाँ महाराज से बात-व्रात में नरेन्द्र ने कहा,—"हमें इस महान देश को सैकड़ों टुकड़ों में नहीं बाँटना है।"

"यह देश सदा कई राज्यों में विभक्त रहा।"

"तब यातायात के साधन नहीं थे। शासकीय सुविधा उसी में थी। फिर भी देश एक था। अब वैसा करना अपने को कमजोर करना है।"

हिज हाईनेस पटियाला उसी समय पधारे। महाराजा अजीतगढ़ ने उनकी राय जाननी चाही। महाराजा बोले,—"मैं रियासतों के चेम्बर का अध्यक्ष हूँ। मैं सबके साथ रहूँगा। व्यक्तिगत रूप से सिख हूँ। हमारे पवित्र स्थान, लाहौर, ननकाना साहब, पंजा साहब, गुरुद्वारा डेरा साहब, सब बँटवारे में पाकिस्तान में पड़ेंगे। यह सिखों के लिए मिट जाने के बराबर है।"

"भाई-भाई का बँटवारा कल नहीं परसों समाप्त हो जायगा।"

"राजा जी ने पहले यही कहा था।"

"राजा जी ने जब कहा था तब देश से अंगरेज जा नहीं रहा था। वहाँ हिन्दुस्तानियों की कार्यकारिणी समिति बना रहा था। अब स्वराज या औपनवेशिक स्वराज की बात है।"

"क्या हिन्दू मुसलिम मिल कर बँटवारा रोक नहीं सकते?"—कमलेश ने पूछा।

पुखराज आ गयी थी। उसने विवाद का विषय सुन लिया था। वह बोली,—"अंगरेजों ने यह विष की बेलि बहुत पहले लगायी। मैं बचपन से देखती आ रही हूँ कि मुसलमान हिन्दू को काफिर मानते हैं। उनके धर्म की सीख है कि काफिर को मौका पाते ही मार दो, मुसलमान का कोई अहित मत करो।"

"यह हिन्दुस्तान के लिए हमेशा खतरा बना रहेगा।" नरेन्द्र आ गये। उन्होंने कहा,—"हर धर्म में देश सर्वोपरि है। बँटवारा हुआ भी तो यहाँ के मुसलमान हिन्दुस्तान के गौरव के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे।"

प्रफुल्ल ने पूछा,—"मिस्टर जिन्ना इस गूढ़ तत्व को क्यों नहीं समझते?"

"उनका धर्म से क्या नाता? पहले वह किसी के इशारे पर थे। अब राष्ट्र-पिता होने के स्वार्थ से ग्रसित हैं।"

चाय आ गयी। वातावरण हल्का हो आया। चाय का एक घूँट पीकर दीदी ने नरेन्द्र से पूछा,—"रियासतों का क्या हो रहा है?"

"रियासतें भारतीय संघ में शामिल होंगी। स्वराज का रूप साफ होते ही निर्णय हो जायगा।"

"बहुत अच्छा होगा। तब बँटवारा बेमानी है।"

"वह एक आदमी की जिद के कारण होगा। अमेरिका को इस भू-भाग में पाँव रखने की जगह चाहिए।"

नरेन्द्र पुखराज का इम्पेरियल होटल में महाराजा अजीतगढ़ के यहाँ रात का खाना था। वहाँ महाराज से बात-बात में नरेन्द्र ने कहा,—"हमें इस महान देश को सैकड़ों टुकड़ों में नहीं बाँटना है।"

"यह देश सदा कई राज्यों में विभक्त रहा।"

"तब यातायात के साधन नहीं थे। शासकीय सुविधा उसी में थी। फिर भी देश एक था। अब वैसा करना अपने को कमजोर करना है।"

हिज हाईनेस पटियाला उसी समय पधारे। महाराजा अजीतगढ़ ने उनकी राय जाननी चाही। महाराजा बोले,—"मैं रियासतों के चेम्बर का अध्यक्ष हूँ। मैं सबके साथ रहूँगा। व्यक्तिगत रूप से सिख हूँ। हमारे पवित्र स्थान, लाहौर, ननकाना साहब, पंजा साहब, गुरुद्वारा डेरा साहब, सब बँटवारे में पाकिस्तान में पड़ेंगे। यह सिखों के लिए मिट जाने के बराबर है।"

"भाई-भाई का बँटवारा कल नहीं परसों समाप्त हो जायगा।"

के घर परिवार वालो का वहाँ लोगो ने नाम सुना था। उसका कोई निशान बाकी नही था। चकझूमरा आकर उसकी प्रतिज्ञा पूरी हो गयी। यहाँ उसे प्रस्तावित बँटवारे की लोमहर्षक विभीषिका का नमूना देखने को मिला। वह उससे काँप गयी।

पंजाब में हिन्दू मुसलमानों की मिली-जुली 'यूनियनिस्ट दल' की सरकार थी। मतगणना संग्रह में पंजाब ने बँटवारे का समर्थन किया। सीमा प्रान्त ने भी जहाँ कांग्रेस पार्टी की सरकार थी बँटवारे का पक्ष लिया। मुसलिम लीग को इन प्रान्तो मे जमने का मौका मिल गया। हिन्दू काफिर है, काफिर को मौका पाते ही मार डालना धर्म है—इसकी जिहाद छिड गयी। गाँव-गाँव, शहर-शहर आग लगने लगी। चकझूमरा मे आग पहुँची।

चकझूमरा के लम्बरदार का लड़का खान अब्दुल अजीज था। वह शातिर गुण्डा था। उस क्षेत्र मे लोग उसकी छाया से भागते थे। वह इलाके के मुसलिम लीग का पेशवा बन गया। मेरिया जब से मेहर सिंह के संग आई थी तभी से वह उसकी आँखो मे गड़ी थी। उसने अफवाह फैला दी थी कि मेहर सिंह मेरिया को बर्मा या स्याम से भगा कर लाया था। मेहर सिंह अगर बूढा न होता तो वह उसकी पोष्य-पुत्री को लेकर आने क्या न कहता?

जब इलाके मे मुसलिम लीग ने हिन्दुओ और सिखो के खिलाफ जेहाद का फतवा दिया तब अब्दुल अजीज ने एक रात अपने हमजोलियो के साथ मेहर सिंह का घर घेर लिया। अड़ोस-पडोस के हिन्दू-सिखों ने मेहर सिंह का साथ दिया। गुण्डो का पलड़ा भारी था। उन्होने मेहर सिंह समेत कई हिन्दुओ का कत्ल कर उनके मकानो मे आग लगा दिया। मेरिया भी लड़ी। मगर उसे वे पकड ले गये।

मेरिया के संग अब्दुल अजीज उसी रात लाहौर पहुँचा। अपने साथियो की उसने वहाँ शानदार दावत की और मेरिया से उसने आँखें तरेर कर कहा,—"आज तुमसे मुताह कर रहा हूँ। अगर मानी नही तो यह तमचा तुम्हारे सीनो को उड़ा देगा।" उसने देशी नली का अपना तमंचा मेज पर रख दिया और मेरिया के सीनो को पकड उसे झकझोर दिया।

मेरिया घोर सकट मे भी हिम्मत खोने वाली युवती नही थी। वह मौन साधे रही। अब्दुल अजीज ने अपनी तैश मे समझा कि मेरिया डर गयी। उसने एक और युवती को कमरे मे बुलवाया। उसके बारे मे उसने कहा कि यह लायलपुर के चक अठारह के सरदार गुरनाम हकीम की बेटी है। कल रात इसमे हमारे पाच साथियो ने मुताह किया। अब यह रहीमा से निकाह करने को तैयार हो गयी है। रहीमा अब्दुल अजीज का निजी नौकर था।

मेरिया ने छिपी नजरो से उस युवती को देखा। वह भय और अत्याचार से कातर थी। उसकी आँखें खुल नही रही थीं और उसकी जीभ जैसे ऐंठ गयी थी। मेरिया का मन काँप गया मगर वह डरी नही। तब अब्दुल अजीज ने कहा,

के घर परिवार वालो का वहाँ लोगो ने नाम सुना था। उसका कोई निशान बाकी नही था। चकझूमरा आकर उसकी प्रतिज्ञा पूरी हो गयी। यहाँ उसे प्रस्तावित बँटवारे की लोमहर्षक विभीषिका का नमूना देखने को मिला। वह उससे काँप गयी।

पंजाब में हिन्दू मुसलमानों की मिली-जुली 'यूनियनिस्ट दल' की सरकार थी। मतगणना संग्रह में पंजाब ने बँटवारे का समर्थन किया। सीमा प्रान्त ने भी जहाँ काग्रेस पार्टी की सरकार थी बँटवारे का पक्ष लिया। मुसलिम लीग को इन प्रान्तो मे जमने का मौका मिल गया। हिन्दू काफिर है, काफिर को मौका पाते ही मार डालना धर्म है—इसकी जिहाद छिड गयी। गाँव-गाँव, शहर-शहर आग लगने लगी। चकझूमरा मे आग पहुँची।

चकझूमरा के लम्बरदार का लड़का खान अब्दुल अजीज था। वह शातिर गुण्डा था। उस क्षेत्र मे लोग उसकी छाया से भागते थे। वह इलाके के मुसलिम लीग का पेशवा बन गया। मेरिया जब से मेहर सिंह के संग आई थी तभी से वह उसकी आँखो मे गडी थी। उसने अफवाह फैला दी थी कि मेहर सिंह मेरिया को बर्मा या स्याम से भगा कर लाया था। मेहर सिंह अगर बूढा न होता तो वह उसकी पोष्य-पुत्री को लेकर आने क्या न कहता ?

जब इलाके मे मुसलिम लीग ने हिन्दुओ और सिखो के खिलाफ जेहाद का फतवा दिया तब अब्दुल अजीज ने एक रात अपने हमजोलियो के साथ मेहर सिंह का घर घेर लिया। अडोस-पडोस के हिन्दू-सिखों ने मेहर सिंह का साथ दिया। गुण्डो का पलड़ा भारी था। उन्होने मेहर सिंह समेत कई हिन्दुओ का कत्ल कर उनके मकानो मे आग लगा दिया। मेरिया भी लड़ी। मगर उसे वे पकड ले गये।

मेरिया के संग अब्दुल अजीज उसी रात लाहौर पहुँचा। अपने साथियो की उसने वहाँ शानदार दावत की और मेरिया से उसने आँखें तरेर कर कहा,—"आज तुमसे मुताह कर रहा हूँ। अगर मानी नही तो यह तमचा तुम्हारे सीनो को उड़ा देगा।" उसने देशी नली का अपना तमंचा मेज पर रख दिया और मेरिया के सीनो को पकड उसे झकझोर दिया।

मेरिया घोर सकट मे भी हिम्मत खोने वाली युवती नही थी। वह मौन साधे रही। अब्दुल अजीज ने अपनी तैश मे समझा कि मेरिया डर गयी। उसने एक और युवती को कमरे मे बुलवाया। उसके बारे मे उसने कहा कि यह लायलपुर के चक अठारह के सरदार गुरुनाम हकीम की बेटी है। कल रात इसमें हमारे पाच साथियो ने मुताह किया। अब यह रहीमा से निकाह करने को तैयार हो गयी है। रहीमा अब्दुल अजीज का निजी नौकर था।

मेरिया ने छिपी नजरो से उस युवती को देखा। वह भय और अत्याचार से कातर थी। उसकी आँखें खुल नहीं रही थीं और उसकी जीभ जैसे ऐंठ गयी थी। मेरिया का मन काँप गया मगर वह डरी नही। तब अब्दुल अजीज ने कहा,

चालक ने समझा। उसने गाड़ी की रफ्तार तेजतम कर दी।

कुछ देर के बाद मेरिया ने चालक से पूछा,—"आप कहां जा रहे हैं ?"

"दिल्ली जाना है। अमृतसर मे सवेरे हर गुरु मन्दिर साहब का दर्शन करूंगा। वाहे गुरु अकाल पुरुष ही सबकी रक्षा करते हैं।"

सांस लेकर चालक ने आगे कहा,—"आप फिक्र न करें। मैं सिख हूं। जान देकर हम शरणागत की रक्षा करते है।"

अमृतसर में मेरिया ड्राइवर को धन्यवाद दे उतर गयी। पुरुष भेष में ही वह स्टेशन पहुंची। पौ फट गयी थी पर सवेरा नहीं हुआ था। दिल्ली को जाने वाली एक तेज पैसेंजर ट्रेन खड़ी थी। मेरिया उसके जनाने डब्बे मे बैठ गयी।

उसके पास टिकट नही था। वह कही भी उतारी जाने के लिए तैयार थी। दिल्ली तक कोई टिकट जाचने वाला आया ही नही। दूसरे दिन शाम को वह दिल्ली पहुंच गयी।

दिल्ली के स्टेशन पर उसे पता चला कि आजाद हिन्द फौजियो को सेवामुक्त कर छोड़ दिया गया है। वे अपने घरो को या कही भी आने-जाने को अब स्वतंत्र थे।

मेरिया आजाद हिन्द फौज की होकर भी किसी पल्टन विशेष की नही थी। अपनी परिस्थितियों मे वह चक्कूमरा जाने के लिए बहुत खतरा मोल ले कर हिन्दुस्तान आयी थी। यहां उसे ज्ञान सिंह से मिलना था। आजाद हिन्द फौज ही नही आयी तो ज्ञान सिंह कैसे आता ? यहा हिन्दुस्तान का नक्शा बदल रहा था। उसका उसे इतना भयानक अनुभव हुआ कि उसका अन्तर डोल गया। ऐसे बंटवारे मे मुसलिम लीग के नेताओं को क्षणिक वाहवाही के और क्या मिलेगा ? वे अंगरेजो की चाल को क्यो नहीं समझ पा रहे हैं ? क्या बंटवारा रोका जा सकता है ?

स्टेशन से बाहर जाने के लिए वह तनी हुई टिकट चेकर के पास मे निकली। उसने कहा,—"जय हिन्द।" टिकट कलेकटर ने जय हिन्द कह कर उसे सलाम कर लिया। वह फाटक से बाहर आ गयी।

बाहर एक ओर खड़ी होकर वह यह सोचने लगी कि वह कहा जाय। अपने अज्ञातवास में वह दिल्ली आई थी। वहां ठहरी नहीं थी। उसके पास एक कौड़ी नहीं थी। अचानक सामने एक कार में बैठते हुए यात्रियों पर उसकी नजर पड़ी। रानी झासी रेजिमेंट की प्रख्यात बहादुर बेला दत्त किसी सुदर्शनीय नौजवान के संग कार में सवार हो रही थी।

झासी की रानी रेजीमेंट आजाद हिन्द फौज की औरतो की एक मात्र लडाकू सेना थी। मैम्योगी के अस्पताल मे परिचारिकाओ की कमी और घायल सैनिको की संख्या बहुत अधिक हो जाने के कारण लड़ाकू रेजिमेंट का एक सेक्शन परिचारिका के काम पर आ डटा था। अठारह वर्ष की बेला दत्त उनमे से एक थी। वह तेज पेचिस मे पीड़ित पचासी सैनिको की देख भाल की जिम्मेदार थी। वह उनके कपडे धोती, उनको स्पंज से पोछती और कपड़े पहनने मे सहायता देती थी। नेता जी इस

चालक ने समझा। उसने गाड़ी की रफ्तार तेजतम कर दी।

कुछ देर के बाद मेरिया ने चालक से पूछा,—"आप कहां जा रहे हैं ?"

"दिल्ली जाना है। अमृतसर में सवेरे हर गुरु मन्दिर साहब का दर्शन करूंगा। वाहे गुरु अकाल पुरुष ही सबकी रक्षा करते हैं।"

सांस लेकर चालक ने आगे कहा,—"आप फिक्र न करें। मैं सिख हूं। जान देकर हम शरणागत की रक्षा करते है।"

अमृतसर में मेरिया ड्राइवर को धन्यवाद दे उतर गयी। पुरुष भेष में ही वह स्टेशन पहुंची। पौ पट गयी थी पर सवेरा नहीं हुआ था। दिल्ली को जाने वाली एक तेज पैसेंजर ट्रेन खड़ी थी। मेरिया उसके जनाने डब्बे मे बैठ गयी।

उसके पास टिकट नहीं था। वह कहीं भी उतारी जाने के लिए तैयार थी। दिल्ली तक कोई टिकट जांचने वाला आया ही नहीं। दूसरे दिन शाम को वह दिल्ली पहुंच गयी।

दिल्ली के स्टेशन पर उसे पता चला कि आजाद हिन्द फौजियों को सेवामुक्त कर छोड़ दिया गया है। वे अपने घरों को या कहीं भी आने-जाने को अब स्वतंत्र थे।

मेरिया आजाद हिन्द फौज की होकर भी किसी पल्टन विशेष की नहीं थी। अपनी परिस्थितियों में वह चकझूमरा जाने के लिए बहुत खतरा मोल ले कर हिन्दुस्तान आयी थी। यहां उसे ज्ञान सिंह से मिलना था। आजाद हिन्द फौज ही नहीं आयी तो ज्ञान सिंह कैसे आता ? यहां हिन्दुस्तान का नक्शा बदल रहा था। उसका उसे इतना भयानक अनुभव हुआ कि उसका अन्तर डोल गया। ऐसे बंटवारे मे मुसलिम लीग के नेताओं को क्षणिक वाहवाही के और क्या मिलेगा ? वे अंगरेजों की चाल को क्यों नहीं समझ पा रहे हैं ? क्या बंटवारा रोका जा सकता है ?

स्टेशन से बाहर जाने के लिए वह तनी हुई टिकट चेकर के पास से निकली। उसने कहा,—"जय हिन्द।" टिकट कलेक्टर ने जय हिन्द कह कर उसे सलाम कर लिया। वह फाटक से बाहर आ गयी।

बाहर एक ओर खड़ी होकर वह यह सोचने लगी कि वह कहां जाय। अपने अज्ञातवास में वह दिल्ली आई थी। वहां ठहरी नहीं थी। उसके पास एक कौड़ी नहीं थी।अचानक सामने एक कार में बैठते हुए यात्रियों पर उसकी नजर पड़ी। रानी झांसी रेजिमेंट की प्रख्यात बहादुर बेला दत्त किसी सुदर्शनीय नौजवान के संग कार में सवार हो रही थी।

झांसी की रानी रेजीमेंट आजाद हिन्द फौज की औरतों की एक मात्र लड़ाकू सेना थी। मैम्योगी के अस्पताल मे परिचारिकाओं की कमी और घायल सैनिकों की संख्या बहुत अधिक हो जाने के कारण लड़ाकू रेजिमेंट का एक सेक्शन परिचारिका के काम पर आ डटा था। अठारह वर्ष की बेला दत्त उनमे से एक थी। वह तेज पेचिस से पीड़ित पचासी सैनिकों की देख भाल की जिम्मेदार थी। वह उनके कपड़े धोती, उनको स्पंज से पोंछती और कपड़े पहनने मे सहायता देती थी। नेता जी इस

जिसके पीछे मेरिया ने सिंगापुर से अब तक का अपना सारा जीवन न जाने किन-किन शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से बिताया उसके अमर हो जाने के शौर्य पर वह अपने अन्तराल के तूफान को पी कर रह गयी। चेहरे पर विचलित होने का उसने एक भी लक्षण प्रकट नहीं होने दिया।

बेला दत्त ने उसके दुःख को समझा। भरे हृदय से वह बोली,—"आजाद हिन्द फौज क्या किसी फौज में ज्ञान सिंह जैसा बहादुर हजारों में एक मिले तो मिले।"

मेरिया दूसरे दिन दुबारा मतवत कौर बन कर गुरुद्वारा शीश महल मत्था टेकने गयी। ग्रन्थी से उसने अपने दिवंगत पति के आनन्द लाभ के लिए अरदास कराया, भोग का प्रसाद बाँटा, रो-रो कर मत्था टेका।

तीसरे दिन उसने बेला-दत्त से कहा,—"यहाँ के बौद्ध विहार में ठहरने का प्रबन्ध कर दो।"

"नहीं, नहीं, तुम्हें भिक्षुणी नहीं बनने दूंगी। तुम्हें ज्ञान सिंह के सारे अधूरे काम पूरे करने हैं।"

मेरिया ने पूछा,—"कौन काम ?"

"बँटवारे में यहाँ वहाँ औरतों की रक्षा का अभूतपूर्व काम करना होगा। बँटवारे का पागलपन अभी शुरू हुआ है। उसका रूप ऐसा होगा जिसका वर्णन—सम्भव नहीं।"

मेरिया ठिठकी। प्रस्तावित काम के महत्व को उससे अधिक कौन जानता था।

"मैं इस बारे में तरुणियों का एक संगठन बनाऊँगी। एक स्थान दिलाना होगा।"

"स्थान हो जायगा। जल्दी ही आजाद हिन्द फौजियों का समागम होने वाला है।"

मेरिया का बौद्ध विहार में जाना रुक गया।

महात्मा गांधी उन दिनों दिल्ली की भंगी कालोनी में ठहरे थे। रोज शाम को उनकी प्रार्थना सभा होती थी। उसमें सभी आते थे—जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, खान अब्दुल गफ्फार खाँ आदि सभी जो कांग्रेस की राज-नीति के निर्णायक थे। मेरिया भी सभा में बिला नागा रोज जाने लगी।

'देश का बँटवारा मेरी देह के टुकड़े करके ही होगा।' गांधी जी के उक्त वचन से मेरिया का पीड़ित अन्तर नाच उठा था। लेकिन घटना क्रम तेजी से अज्ञात दिशा में बढ़ रहा था।

कैबिनेट मिशन की योजना कि स्वतंत्र भारत में संघीय हिन्दू बहुल प्रान्त और मुसलिम बहुल प्रान्त की इकाइयाँ होंगी, कांग्रेस और मुसलिम लीग के मिस्टर जिन्ना—दोनों ने मान लिया था। केन्द्र के पास विदेश, वित्त, यातायात और फौज के विभाग होंगे। सूबों की इकाइयाँ अपने आन्तरिक मामलों में पूरी स्वतन्त्र होंगी।

जिसके पीछे मेरिया ने सिंगापुर से अब तक का अपना सारा जीवन न जाने किन-किन शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से बिताया उसके अमर हो जाने के शौर्य पर वह अपने अन्तराल के तूफान को पी कर रह गयी। चेहरे पर विचलित होने का उसने एक भी लक्षण प्रकट नहीं होने दिया।

वेला दत्त ने उसके दुःख को समझा। भरे हृदय से वह बोली,—"आज़ाद हिन्द फौज क्या किसी फौज में ज्ञान सिंह जैसा बहादुर हजारों में एक मिले तो मिले।"

मेरिया दूसरे दिन दुबारा मतवंत कौर बन कर गुरुद्वारा शीश महल मत्था टेकने गयी। ग्रन्थी से उसने अपने दिवंगत पति के आनन्द लाभ के लिए अरदास कराया, भोग का प्रसाद बांटा, रो-रो कर मत्था टेका।

तीसरे दिन उसने वेला-दत्त से कहा,—"यहां के बौद्ध विहार में ठहरने का प्रबन्ध कर दो।"

"नहीं, नहीं, तुम्हें भिक्षुणी नहीं बनने दूंगी। तुम्हें ज्ञान सिंह के सारे अधूरे काम पूरे करने हैं।"

मेरिया ने पूछा,—"कौन काम?"

"बँटवारे में यहाँ वहाँ औरतों की रक्षा का अभूतपूर्व काम करना होगा। बंटवारे का पागलपन अभी शुरू हुआ है। उसका रूप ऐसा होगा जिसका वर्णन— सम्भव नहीं।"

मेरिया ठिठकी। प्रस्तावित काम के महत्त्व को उससे अधिक कौन जानता था।

"मैं इस बारे में तरुणियों का एक संगठन बनाऊँगी। एक स्थान दिलाना होगा।"

"स्थान हो जायगा। जल्दी ही आज़ाद हिन्द फौजियों का समागम होने वाला है।"

मेरिया का बौद्ध विहार में जाना रुक गया।

महात्मा गांधी उन दिनों दिल्ली की भंगी कालोनी में ठहरे थे। रोज शाम को उनकी प्रार्थना सभा होती थी। उसमें सभी आते थे—जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद, खान अब्दुल गफ्फार खाँ आदि सभी जो कांग्रेस की राजनीति के निर्णायक थे। मेरिया भी सभा में बिला नागा रोज जाने लगी।

'देश का बँटवारा मेरी देह के टुकड़े करके ही होगा।' गांधी जी के उक्त वचन से मेरिया का पीड़ित अन्तर नाच उठा था। लेकिन घटना क्रम तेजी से अज्ञात दिशा में बढ़ रहा था।

कैबिनेट मिशन की योजना कि स्वतंत्र भारत में संघीय हिन्दू बहुल प्रान्त और मुसलिम बहुल प्रान्त की इकाइयाँ होंगी, कांग्रेस और मुसलिम लीग के मिस्टर जिन्ना—दोनों ने मान लिया था। केन्द्र के पास विदेश, वित्त, यातायात और फौज के विभाग होंगे। सूबों की इकाइयाँ अपने आन्तरिक मामलों में पूरी स्वतन्त्र होंगी।

घर था। वह भी उजड़ा लग रहा था। पुरवा में वरियार खाँ के टोल से होकर उसे घर पहुँचना था। उस टोल में उसे कोई परिचित चेहरा नहीं दिखायी पड़ा। एकाध लोग दिखायी भी पड़े तो किसी ने उससे राम रहीम नहीं किया। शायद उम्र से उनकी स्मृति कम हो गयी थी या श्याम सिंह को वे पहचान नहीं सके। अपने टोले में घर के पास उसे बहुत उजाड़-उजाड़ लगा। एक खण्डहर में एकाध बच्चे चिट्टी पहने विलबिला रहे थे। जो बच्चे गुमसुम बैठे थे वे उसे हैरानी से देख रहे थे। अपने घर के सामने के नीम से उसने घर की जगह को पहचाना। घर अब खण्डहर भी नहीं रह गया था। उसका कलेजा काँपने लगा। वह नीम के पेड़ के नीचे धक सा बैठ गया।

पास पड़ोस की एकाध बूढ़ी औरतें अपने खण्डहरों से झाक कर उसे देखने लगीं। देर में उसका साहस लौटा। उसने पड़ोस की फेंकू दादी को पहचाना। उनसे पूछा,—"मैया, इस घर के लोग कहाँ गये?"

एक बूढ़े बाबा कोई पुरानी परिचित आवाज को बरसों बाद सुन कर लाठी के सहारे अपने खण्डहर के बाहर आये। आँखों से उन्हें सूझता कम था। उन्होंने पूछा,—"तुम कौन हो, भइया?"

"मैं श्यामू हूँ, दद्दा।"—कह कर वह तीव्र आशंका से विलखने लगा।

"कौन श्याम सिंह! दद्दा तुम्हारा ही नाम जपते-जपते चले गये।...।"—अब दद्दा के बिलखने की पारी आई।

पुरवे के कई औरत मर्द जुट गये। सब रोते, ढाढस बँधाते, भगवान की दुहाई देते, कोई कुछ कहता नहीं।

घण्टों ऐसा रहा। लोग आते-जाते रहे, रोते बिलखते रहे। शोक प्रकट करने की, दु:ख की भी सीमा होती है। लोग धीरे-धीरे छंटने लगे। तब बूढ़ी मैया ने एक लड़के से एक कटोरे में गुड़-सत्तू और लोटे में पानी भेज दिया।

श्याम सिंह पिता के जाने की सुन ही चुका था। उसे कुछ खाना था नहीं। उसने बूढ़े दादा से पूछा,—माई?"

"भौजी दद्दा के पहले चली गयीं थीं। सौभाग्यवती थीं। मैंने उन्हें बिमान मे बैठ कर जाते देखा था। भाई रामू कुएँ में डूब गया, लछमिनिया रेल से कट गयी।"

लड़ाई का हवाई अड्डा उसके गाँव को, घर को, परिवार को खा गया। उसे सचमुच की मूर्छा आ गयी।

पानी के छींटे मारे, बेने से हवा कर, उसके तलवों और हथेली को मल, उसकी मूर्छा छुड़ायी गयी। आँखें खोल कर वह विस्मित हुआ। शायद वह जगना नहीं चाहता था। उसने बूढ़ी काकी से पूछा,—"वहाँ एक चौरा बनवा लूँ, काकी।"

काकी ने समझा। उनकी आखें दुबारा बरसने लगीं। बोली,—"हम दोनों मिल कर कल चौरा बनायेंगे, अभी अराम कर लो।"

आराम कितनो के भाग्य में होता है? श्याम सिंह एक बांस की खटिया

घर था। वह भी उजड़ा लग रहा था। पुरवा में बरियार खाँ के टोल से होकर उसे घर पहुँचना था। उस टोल में उसे कोई परिचित चेहरा नहीं दिखायी पड़ा। एकाध लोग दिखायी भी पड़े तो किसी ने उससे राम रहीम नहीं किया। शायद उम्र से उनकी स्मृति कम हो गयी थी या श्याम सिंह को वे पहचान नहीं सके। अपने टोले में घर के पास उसे बहुत उजाड़-उजाड़ लगा। एक खण्डहर में एकाध बच्चे खिट्टी पहले खिलखिला रहे थे। जो बच्चे गुमसुम बैठे थे वे उसे हैरानी से देख रहे थे। अपने घर के सामने के नीम से उसने घर की जगह को पहचाना। घर अब खण्डहर भी नहीं रह गया था। उसका कलेजा काँपने लगा। वह नीम के पेड़ के नीचे धक सा बैठ गया।

पास पड़ोस की एकाध बूढ़ी औरतें अपने खण्डहरों से झाँक कर उसे देखने लगीं। देर में उसका साहस लौटा। उसने पड़ोस की फँकू दादी को पहचाना। उनसे पूछा,—"मैया, इस घर के लोग कहाँ गये?"

एक बूढ़े बाबा कोई पुरानी परिचित आवाज को बरसों बाद सुन कर लाठी के सहारे अपने खण्डहर के बाहर आये। आँखों से उन्हें सूझता कम था। उन्होंने पूछा,—"तुम कौन हो, भइया?"

"मैं श्यामू हूँ, दद्दा।"—कह कर वह तीव्र आशंका से बिलखने लगा।

"कौन श्याम सिंह! दद्दा तुम्हारा ही नाम जपते-जपते चले गये।...।"—अब दद्दा के बिलखने की पारी आई।

पुरवे के कई औरत मर्द जुट गये। सब रोते, ढाढ़स बँधाते, भगवान की दुहाई देते, कोई कुछ कहता नहीं।

घण्टों ऐसा रहा। लोग आते-जाते रहे, रोते बिलखते रहे। शोक प्रकट करने की, दु:ख की भी सीमा होती है। लोग धीरे-धीरे छँटने लगे। तब बूढ़ी मैया ने एक लड़के से एक कटोरे में गुड़-सत्तू और लोटे में पानी भेज दिया।

श्याम सिंह पिता के जाने की सुन ही चुका था। उसे कुछ खाना था नहीं। उसने बूढ़े दादा से पूछा,—माई?"

"भौजी दद्दा के पहले चली गयीं थीं। सौभाग्यवती थीं। मैंने उन्हें बिमान में बैठ कर जाते देखा था। भाई रामू कुएँ में डूब गया, लछमिनिया रेल से कट गयी।"

लड़ाई का हवाई अड्डा उसके गाँव को, घर को, परिवार को खा गया। उसे सचमुच की मूर्छा आ गयी।

पानी के छींटे मारे, बेने से हवा कर, उसके तलवों और हथेली को मल, उसकी मूर्छा छुड़ायी गयी। आँखें खोल कर वह विस्मित हुआ। शायद वह जगना नहीं चाहता था। उसने बूढ़ी काकी से पूछा,—"यहाँ एक चौरा बनवा लूँ, काकी।"

काकी ने समझा। उनकी आखें दुबारा बरसने लगीं। बोली,—"हम दोनों मिल कर कल चौरा बनायेंगे, अभी अराम कर लो।"

आराम कितनों के भाग्य में होता है? श्याम सिंह एक बांस की खटिया

फलेल को उस पहाड़ी के बारे में भी बताया जहां उसे दफना कर उसकी कब्र बनायी गयी

बूढ़ी काकी देर तक चुप रही। उनके आसू पहले ही रोते रोते सूख चुके थे। श्याम सिंह को एक शिशु सा दुलारते हुये वे बोली,—"बेटा, जब तक ये आखें मुंद न जाय तुम यहीं रहना। जाने के दिन से ही तुम और बरियार इन पुतलियों में बसे रहे हो।"

काकी और श्याम सिंह उस दिन चुपचाप अतीत के अवसाद में पड़े रहे। शाम को उसकी पट्टीदारी का एक युवक आया। जबलपुर में किसी फैक्टरी में काम करता था। उसने कहा,—"तुम्हार आना सुन कर छुट्टी ले दौड़ा चला आ रहा हूं। ये चिट्ठिया आई थीं।"

दोनों चिट्ठिया उसके स्वर्गीय पिता के नाम पंजाब पल्टन के केन्द्र लाहौर से आयी थीं। पहली में यह सूचना थी कि हवलदार श्याम सिंह लापता है। दूसरी दो साल बाद की थी। उसमें लिखा था कि श्याम सिंह की मृत्यु हो गयी।

युवक ने बताया,—"पहली चिट्ठी पर दादी गयीं। दूसरी के बाद दादा चले गये। तुम्हारे ससुर तभी तुम्हारे बहू को लिवा गये। वह अजान जाना नहीं चाहती थी। बहुत रोयी कलपी। तुम्हारे ससुर ने उसका दु:ख देख कर, बिरादरी की राय, लेकर उसकी शादी कर दी।"

श्याम सिंह की आखें ही नहीं सारा शरीर पत्थर बन गया। युवक कुछ और कहने तथा सुनने की हिम्मत नहीं कर सका। वह देर तक बैठा रहा। फिर चला गया। बूढ़ी काकी निर्जीव सी सूखे आसू बहाते बहाते वहीं लुढ़क कर सो गयीं।

उसके बाद श्याम सिंह की वही दशा हो गयी जो नींद में चलने वाले की होती है। आज़ाद हिन्द फौज का वह वीर सेनानी जो रहा था, चल रहा था, एक मुर्दे की तरह। उसके दु:ख को बाटने वाली बरियार की मां बूढ़ी काकी थी जिसका आचल पकड़ कर वह घण्टों रोता था। काकी भी तो मुर्दा थी।

जीवन और मौत एक ही द्रव के दो रूप हैं यद्यपि वे एक नहीं। जब तक सांस है तब तक जीना पड़ता है। संसार का राजरोग अपना काम करता ही है। एक दिन इम्तियाज आ पहुंचा। श्याम सिंह को उसने बताया,—"सातवें दिन विवाह है। बदाऊँ की कचहरी में होगा। रीटा भी आई है। बनारस में उसके मामा हैं। वहीं रुके हैं। साड़ियां आदि खरीदने आये हैं। तुम विवाह के गवाह हो। बदाऊँ चलना पड़ेगा।"

इम्तियाज ने काकी से कहा,—"हम लोगों का, जो आज़ाद हिन्द फौज बना कर स्वदेश की आज़ादी के लिए अंगरेजों से लड़ रहे थे, दिल्ली में समागम है। उसमें भी जाना जरूरी है। देश का बंटवारा हो रहा है। उसे अब शायद हम रोक नहीं सकते। उससे उत्पन्न खतरों से हम देश के दोनों हिस्सों को बचाने की पूरी कोशिश करेंगे।"

पलेत को उस पहाड़ी के बारे में भी बताया जहां उसे दफना कर उसकी कब्र बनायी गयी

बूढ़ी काकी देर तक चुप रही। उनके आंसू पहले ही रोते रोते सूख चुके थे। श्याम सिंह को एक शिशु सा दुलारते हुये वे बोली,—"बेटा, जब तक ये आखें मुंद न जाय तुम यहीं रहना। जाने के दिन से ही तुम और बरियार इन पुतलियों में बसे रहे हो।"

काकी और श्याम सिंह उस दिन चुपचाप अतीत के अवसाद में पड़े रहे। शाम को उसकी पट्टीदारी का एक युवक आया। जबलपुर में किसी फैक्टरी में काम करता था। उसने कहा,—"तुम्हार आना सुन कर छुट्टी ले दौड़ा चला आ रहा हूं। ये चिट्ठिया आई थीं।"

दोनों चिट्ठियां उसके स्वर्गीय पिता के नाम पंजाब पल्टन के केन्द्र लाहौर से आयी थीं। पहली में यह सूचना थी कि हवलदार श्याम सिंह लापता है। दूसरी दो साल बाद की थी। उसमें लिखा था कि श्याम सिंह की मृत्यु हो गयी।

युवक ने बताया,—"पहली चिट्ठी पर दादी गयीं। दूसरी के बाद दादा चले गये। तुम्हारे ससुर तभी तुम्हारे बहू को लिवा गये। वह अजान जाना नहीं चाहती थी। बहुत रोयी कलपी। तुम्हारे ससुर ने उसका दुःख देख कर, बिरादरी की राय, लेकर उसकी शादी कर दी।"

श्याम सिंह की आखें ही नहीं सारा शरीर पत्थर बन गया। युवक कुछ और कहने तथा सुनने की हिम्मत नहीं कर सका। वह देर तक बैठा रहा। फिर चला गया। बूढ़ी काकी निर्जीव सी सूखे आसू बहाते बहाते वहीं लुढ़क कर सो गयीं।

उसके बाद श्याम सिंह की वही दशा हो गयी जो नींद में चलने वाले की होती है। आजाद हिन्द फौज का वह वीर सेनानी जो रहा था, चल रहा था, एक मुर्दे की तरह। उसके दुःख को बाटने वाली बरियार की मां बूढ़ी काकी थी जिसका आचल पकड़ कर वह घण्टों रोता था। काकी भी तो मुर्दा थी।

जीवन और मौत एक ही द्रव के दो रूप हैं यद्यपि वे एक नहीं। जब तक सांस है तब तक जीना पड़ता है। संसार का राजरोग अपना काम करता ही है। एक दिन इम्तियाज आ पहुंचा। श्याम सिंह को उसने बताया,—"सातवें दिन विवाह है। बदाऊं की कचहरी में होगा। रीटा भी आई है। बनारस में उसके मामा हैं। वहीं रुके हैं। साड़ियां आदि खरीदने आये हैं। तुम विवाह के गवाह हो। बदाऊं चलना पड़ेगा।"

इम्तियाज ने काकी से कहा,—"हम लोगों का, जो आजाद हिन्द फौज बना कर स्वदेश की आजादी के लिए अंगरेजो से लड़ रहे थे, दिल्ली में समागम है। उसमें भी जाना जरूरी है। देश का बंटवारा हो रहा है। उसे अब शायद हम रोक नहीं सकते। उससे उत्पन्न खतरों से हम देश के दोनों हिस्सों को बचाने की पूरी कोशिश करेंगे।"

"यह दुरंगी नीति है।" —कोहाट के कैप्टन असलम गुलजार चिल्ला उठे।

मुर्दा श्याम सिंह गुस्से से भर कर तैश में बोला,—"जिन्ना अंगरेजो को बँटे हुए स्वदेश को भी आजादी न देने के लिए उनके हाथ में एक नया बहाना देना चाहते हैं।"

समागम मे आये दोनो ओर के आजाद फौज के सैनिक बँटवारा नही चाहते थे। रावलपिन्डी के सूबेदार मेजर सनावर खां और पेशावर के कर्नल असलम ने बँटवारे के खिलाफ जोरदार तकरीरें की। उन्होंने कहा कि जिनमे डर कर अंगरेज हिन्दुस्तान को आजाद कर रहा है उनकी आवाज कोई नही सुन रहा है। यही नही उनकी पेन्शनें जब्त कर ली गयी हैं और उन्हे स्वतंत्रता सेनानी का गौरव भी नही प्रदान किया जा रहा है। फिर भी स्वदेश के दोनो प्रस्तावित हिस्से हमे जान से भी अधिक प्यारे हैं। हमने हिन्दुस्तानी सेना के डेढ सौ साल के कलंक को धोया है। हम अपनी आखिरी सांस तक दोनो हिस्सो की सेवा करते रहेगे।

समागम ने बहस-मुबाहिसे के बाद एकमत से प्रस्ताव किया कि बँटवारे के बाद अंगरेजी प्रशासन और अंगरेज फौजी अफसर विनाश लीला की पराकाष्ठा करेंगे। यह दुनिया को दिखाने का उनकी आखिरी चाल होगी। इसलिए दोनो ओर के वरिष्ठतम आजाद फौज के कमांडरो को बँटवारे के दिनो का प्रशासन सौंपा जाय।

समागम के अन्तिम दिन बडा खाना हुआ, सब रो-रो कर गले मिल एक-दूसरे से विदा हुए। दोनों हिस्सों मे सेवा करने का उनका नया जोश था। लेकिन अस्थायी भारत सरकार ने, जवाहर लाल नेहरु और महम्मद अली जिन्ना ने, समागम के प्रशासन वाले प्रस्ताव पर ध्यान नही दिया। जो हुआ वह जग जाहिर है। इतिहास के शोधकर्त्ता विद्यार्थी आज नही तो कल इस तत्व की खोज जरूर करेंगे कि क्या विभाजन का अभूतपूर्व रक्तपात इधर जेनरल भोंसले और उधर जेनरल कियानी को सेवा का अधिकार देकर बचाया नहीं जा सकता था?

अंगरेजी प्रशासन और फिरंगी फौजी अफसरों को आखिरी बार दिखाना था कि हिन्दू मुसलमान एक साथ नही रह सकते। वह उन्होने वडी नृशंसता से कर दिखाया। काश, समागम की बात अस्थायी सरकार के नेता मान लिए होते।

दिल्ली के स्टेशन पर मेरिया और बेला दत्त पश्चिमी पंजाब और सीमा प्रांत मे समागम में आये हुए सैनिक भाई-बहनों को विदा कराने आये थे। सिपाही मुख्तार सिंह शेखपुरा से अपने बाल-बच्चो समेत आया था। उससे नायक नन्दराम ने मजाक किया,—"हट कभी मिला या नही? सुना वह लाहौर में है।"

मुख्तार सिंह समझ कर भी चुप रहा। इधर की, उधर की, सबकी आँखें सावन-भादो की झडी लगा रही थी। मेरिया मेजर फकरुल से कह रही थी,—'क्या होना था क्या हुआ? इतिहास प्रकृति की तरह अप्रत्याशित उल्कापात करता है जिससे बीती और आने वाली सदिया अपना रास्ता बदल देती हैं।"

"यह दुरंगी नीति है।" —कोहाट के कैप्टन असलम गुलजार चिल्ला उठे।

मुर्दा श्याम सिंह गुस्से से भर कर तैश में बोला,—"जिन्ना अंगरेजो को बँटे हुए स्वदेश को भी आजादी न देने के लिए उनके हाथ में एक नया बहाना देना चाहते हैं।"

समागम मे आये दोनो ओर के आजाद फौज के सैनिक बँटवारा नही चाहते थे। रावलपिण्डी के सूबेदार मेजर सनावर खां और पेशावर के कर्नल असलम ने बँटवारे के खिलाफ जोरदार तकरीरें की। उन्होंने कहा कि जिनमे डर कर अंगरेज हिन्दुस्तान को आजाद कर रहा है उनकी आवाज कोई नही सुन रहा है। यही नही उनकी पेन्शनें जब्त कर ली गयी हैं और उन्हे स्वतंत्रता सेनानी का गौरव भी नही प्रदान किया जा रहा है। फिर भी स्वदेश के दोनो प्रस्तावित हिस्से हमे जान से भी अधिक प्यारे हैं। हमने हिन्दुस्तानी सेना के डेढ सौ साल के कलंक को धोया है। हम अपनी आखिरी सांस तक दोनो हिस्सो की सेवा करते रहेंगे।

समागम ने बहस-मुबाहिसे के बाद एकमत से प्रस्ताव किया कि बँटवारे के बाद अंगरेजी प्रशासन और अंगरेज फौजी अफसर विनाश लीला की पराकाष्ठा करेंगे। यह दुनिया को दिखाने का उनकी आखिरी चाल होगी। इसलिए दोनो ओर के वरिष्ठतम आजाद फौज के कमांडरो को बँटवारे के दिनो का प्रशासन सौंपा जाय।

समागम के अन्तिम दिन बडा खाना हुआ, सब रो-रो कर गले मिल एक-दूसरे से विदा हुए। दोनों हिस्सों मे सेवा करने का उनका नया जोश था। लेकिन अस्थायी भारत सरकार ने, जवाहर लाल नेहरु और महम्मद अली जिन्ना ने, समागम के प्रशासन वाले प्रस्ताव पर ध्यान नही दिया। जो हुआ वह जग जाहिर है। इतिहास के शोधकर्ता विद्यार्थी आज नही तो कल इस तत्व की खोज जरूर करेंगे कि क्या विभाजन का अभूतपूर्व रक्तपात इधर जेनरल भोंसले और उधर जेनरल कियानी को सेवा का अधिकार देकर बचाया नहीं जा सकता था?

अंगरेजी प्रशासन और फिरंगी फौजी अफसरों को आखिरी बार दिखाना था कि हिन्दू मुसलमान एक साथ नही रह सकते। वह उन्होने बडी नृशंसता से कर दिखाया। काश, समागम की बात अस्थायी सरकार के नेता मान लिए होते।

दिल्ली के स्टेशन पर मेरिया और बेला दत्त पश्चिमी पंजाब और सीमा प्रात मे समागम में आये हुए सैनिक भाई-बहनों को विदा कराने आये थे। सिपाही मुख्तार सिंह शेखपुरा से अपने बाल-बच्चो समेत आया था। उससे नायक नन्दराम ने मजाक किया,—"हट कभी मिला या नही? सुना वह लाहौर में है।"

मुख्तार सिंह समझ कर भी चुप रहा। इधर की, उधर की, सबकी आँखें सावन-भादो की झडी लगा रही थी। मेरिया मेजर फकरुल से कह रही थी,—'क्या होना था क्या हुआ? इतिहास प्रकृति की तरह अप्रत्याशित उत्कापात करता है जिससे बीती और आने वाली सदिया अपना रास्ता बदल देती हैं।"

होगा।

उसी रात बारह बजे दिल्ली की संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए भारत के पहले प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरु ने कहा,—"हमने अपने संघर्ष के शुरू में एक प्रतिज्ञा की थी। उसे पूरा करने का समय आ गया। कल सवेरे रात का अँधेरा मिट जायगा। नया विहान जन-जन को जगमगा देगा। भुखमरी, ग़रीबी, अशिक्षा, अनैतिकता, ऊँच-नीच—सब मिटेंगे, सब बराबर होंगे। हम असन्तोष के कारणों का मूलोच्छेदन करेंगे जिससे भारत संसार को दुबारा वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ा सके।"

उसी दिन महात्मा गांधी ने रोते-रोते अपनी प्रार्थना सभा में कहा,—'जो नहीं होना था वह हुआ। आगे के लिए हम ऐसा करें कि भाई-भाई का प्रेम बना रहे।'

प्रार्थना सभा से इम्तियाज़ अपनी नव परिणीता रीटा के संग लौटा था। उसने श्याम सिंह से कहा,—"मैं गुजरावाला का हूँ, राजपूत मुसलमान हूँ। मैं हिन्दुस्तानी था हिन्दुस्तानी रहूँगा।"

उसकी बात सुन कर किसी ने कहा,—"बहुतों का यही विश्वास है। मुसलिम लीग को यह सह्य नहीं होगा।"

वे नयी दिल्ली के स्टेशन पर थे। एक ट्रेन आ गयी। उसमें पनाह गुज़ीन पश्चिमी पाकिस्तान जा रहे थे। एक सम्भ्रान्त परिवार आगरे से ट्रेन पर चढ़ा था। उसके सरगना मौलवी गजनफरुल्ला थे। बूढ़े हो चुके थे। बाल खिजाब से लाल थे। आखों मे मुरादाबादी सुरमा रचाये थे। उनकी चारों बीवियां और दर्जन भर बच्चे उन्हें कस कर पकड़े थे। वे दहाड़ें मार कर रो रहे थे और बक रहे थे,—"मैं यह बंटवारा मानता ही नहीं। ताजमहल तो बटा ही नहीं। मैं आगरा तब तक नहीं छोड़ूँगा जब तक ताज का आधा टुकड़ा लाहौर नहीं भेजा जाता।"

लोग उन्हें पागल समझ कर हंस रहे थे। वे पागल नहीं थे। वे बुजुर्ग थे जो बटवारे के खोखलेपन से चिढ़ उठे थे। मेरठ के लालकुर्ती वाले मशहूर खानदान के कुछ सदस्य मियांवाली जाने के लिए नयी दिल्ली से उसी ट्रेन पर सवार हुए। दर्जनों औरत मर्द उन्हें विदा करने आये थे। सब फूट-फूट कर रो रहे थे। मा बेटी मे कह रही थी,—'आना जाना तो लगा ही रहेगा। यह वहशीपन खत्म होते ही मैं तुम्हें लिवा लाने को तुम्हारे अब्बा को भेजूंगी या खुद चली आऊंगी।' बेटी रो रो कर सावन भादों बहा रही थी। मा ने अचानक बेटे को बुलाया। बेटा डब्बे मे उतर कर मेरिया ज्ञान सिंह से बातें करने चला गया था। वह पहली आजाद हिन्द फौज से ही आज़ाद फौज का कप्तान था। मेरिया को सिंगापुर से जानता था। उसने मेरिया को डब्बे के पास ले आकर अपनी मां से उसका परिचय कराया और कहा,—"ये आज़ाद फौज की वीर बांकुरा हैं। तुम लोगों को सही सलामत घर पहुंचा देंगी।"

होगा।

उसी रात बारह बजे दिल्ली की संविधान सभा को सम्बोधित करते हुए भारत के पहले प्रधान मन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरु ने कहा,—"हमने अपने संघर्ष के शुरू में एक प्रतिज्ञा की थी। उसे पूरा करने का समय आ गया। कल सवेरे रात का अँधेरा मिट जायगा। नया विहान जन-जन को जगमगा देगा। भुखमरी, ग़रीबी, अशिक्षा, अनैतिकता, ऊँच-नीच—सब मिटेंगे, सब बराबर होंगे। हम असन्तोष के कारणों का मूलोच्छेदन करेंगे जिससे भारत संसार को दुबारा वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ा सके।"

उसी दिन महात्मा गाँधी ने रोते-रोते अपनी प्रार्थना सभा में कहा,—'जो नहीं होना था वह हुआ। आगे के लिए हम ऐसा करें कि भाई-भाई का प्रेम बना रहे।'

प्रार्थना सभा से इम्तियाज़ अपनी नव परिणीता रीटा के संग लौटा था। उसने श्याम सिंह से कहा,—"मैं गुजरावाला का हूँ, राजपूत मुसलमान हूँ। मैं हिन्दुस्तानी था हिन्दुस्तानी रहूँगा।"

उसकी बात सुन कर किसी ने कहा,—"बहुतों का यही विश्वास है। मुसलिम लीग को यह सह्य नहीं होगा।"

वे नयी दिल्ली के स्टेशन पर थे। एक ट्रेन आ गयी। उसमें पनाह गुज़ीन पश्चिमी पाकिस्तान जा रहे थे। एक सम्भ्रान्त परिवार आगरे से ट्रेन पर चढ़ा था। उसके सरगना मौलवी गजनफरुल्ला थे। बूढ़े हो चुके थे। बाल खिज़ाब से लाल थे। आखों मे मुरादाबादी सुरमा रचाये थे। उनकी चारों बीवियां और दर्जन भर बच्चे उन्हें कस कर पकड़े थे। वे दहाड़ें मार कर रो रहे थे और बक रहे थे,—"मैं यह बंटवारा मानता ही नहीं। ताजमहल तो बटा ही नहीं। मैं आगरा तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक ताज का आधा टुकड़ा लाहौर नहीं भेजा जाता।"

लोग उन्हें पागल समझ कर हंस रहे थे। वे पागल नहीं थे। वे बुज़ुर्ग थे जो बटवारे के खोखलेपन से चिढ़ उठे थे। मेरठ के लालकुर्ती वाले मशहूर खानदान के कुछ सदस्य मियांवाली जाने के लिए नयी दिल्ली से उसी ट्रेन पर सवार हुए। दर्जनों औरत मर्द उन्हें विदा करने आये थे। सब फूट-फूट कर रो रहे थे। मा बेटी से कह रही थी,—'आना जाना तो लगा ही रहेगा। यह वहशीपन खत्म होते ही मैं तुम्हें लिवा लाने को तुम्हारे अब्बा को भेजूंगी या खुद चली आऊंगी।' बेटी रो रो कर सावन भादो बहा रही थी। मा ने अचानक बेटे को बुलाया। बेटा डब्बे से उतर कर मेरिया ज्ञान सिंह से बातें करने चला गया था। वह पहली आज़ाद हिन्द फौज से ही आज़ाद फौज का कप्तान था। मेरिया को सिंगापुर से जानता था। उसने मेरिया को डब्बे के पास ले आकर अपनी मां से उसका परिचय कराया और कहा,—"ये आज़ाद फौज की वीर बांकुरा हैं। तुम लोगों को सही सलामत घर पहुंचा देंगी।"

को बर्बरता से दबा कर इंग्लैण्ड की रानी को हिन्दुस्तान की महारानी घोषित किया गया। तब से सौ बरस भी नही बीत पाये थे कि उनकी सारी धोखाधड़ी खुल गयी। हिन्दुस्तान की जनता, आज़ाद हिन्द फौज और हिन्दुस्तानी फौज की आंखो में वे आगे धूल नही झोक सके। पन्द्रह अगस्त सैंतालीस को बम्बई और करांची के अरब सागर के किनारों से वे चले गये। जैसे बवने की तरह हाकिन्स नामक अंगरेज व्यापारी सन् सोलह सौ मे सूरत के बन्दरगाह पर उतरा था वैसे ही आज वे अपने टापू मे है। कोई भी वहां जाकर देख ले।

देश को वे बांट गये। भाई भाई भी बंटते हैं। मगर आज़ादी आई। उससे सभी खुश हुए। इसी के लिए देश ने, आज़ाद हिन्द के सैनिको ने और भारतमूलक प्रवासियों ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया था। आज़ाद हिन्द फौज के सभी, इधर या उधर, आज़ादी के प्रकाश से प्रसन्न थे। श्याम सिंह भी पन्द्रह अगस्त को खुश ही था।

उस रात सोते समय सिकंदर खां ने श्याम सिंह से कहा,—"उस्ताद, जाना ही पड़ रहा है। कल मैं लाहौर के लिए रवाना हो रहा हूं। अपना पता बता दो। जब आऊंगा तुम्हारे पास ठहरूंगा।"

श्याम सिंह खोया-सा था। उसने जवाब में कहा,—"मेरा गांव जरूर है। वहां एक मां भी मिल गयी है। पर वहां अब कभी जा न सकूंगा। दूसरी किसी जगह जाने का मुझे ठौर नही। यही या कहीं भी जो बन पड़ेगा वह करते करते अपनी सासें पूरा कर लूंगा।"

श्याम सिंह को मगर गाव के लिए कुछ ही दिनो में रवाना होना पड़ा। इम्तियाज़ खबर लाया कि काकी अब-तब हैं, उसे याद करती हैं। वह भागा। पहली ट्रेन से बनारस और वहा से पहली बस से गाव। काकी उसके पहुंचने के कुछ ही देर पहले अल्लाह को प्यारी हो चुकी थी।

वह रोया, खूब रोया। उसने काकी का जानाज़ा उठवाया, उन्हें कब्र दी, कब्र पक्की करायी और धूम धाम से शरियत के मुताबिक उनका चालीसवां किया।

सब कुछ करने के बाद उसने काकी की जमा-पूजी को जकात में बाट, अपने बुजुर्गो के चबूतरे पर मत्था टेक एक रात ढले तारों की आंखों से भी छिप कर उसने गांव छोड दिया। इस बार वह नेटुअवा बीर वाले महुए के पेड़ के नीचे नहीं रुका, सीधे बनारस पहुंचा।

बनारस स्टेशन पर मुंह हाथ धो वह सुस्ता रहा था कि एक प्रियदर्शी युवक ने उसका पाव छू कर उसे प्रणाम किया। उसके गोद मे एक सुन्दर शिशु था। युवक ने बालक शिशु से कहा,—"ताऊ जी हैं। इन्हे हाथ जोड़ कर प्रणाम कर।"

साथ ही उसने श्याम सिंह से कहा,—"इसकी मा ने भेजा है। वह चरण रज लेने के लिए आने की आज्ञा चाहती है। चिट्ठी आई थी कि···।"

श्याम सिंह बालक को देखते ही सब कुछ समझ गया था। मन मे तूफान का

को बर्बरता से दबा कर इंग्लैण्ड की रानी को हिन्दुस्तान की महारानी घोषित किया गया। तब से सौ बरस भी नहीं बीत पाये थे कि उनकी सारी धोखाधड़ी खुल गयी। हिन्दुस्तान की जनता, आज़ाद हिन्द फौज और हिन्दुस्तानी फौज की आंखों में वे आगे धूल नहीं झोंक सके। पन्द्रह अगस्त सैंतालीस को बम्बई और करांची के अरब सागर के किनारों से वे चले गये। जैसे बबने की तरह हाकिन्स नामक अंगरेज व्यापारी सन् सोलह सौ में सूरत के बन्दरगाह पर उतरा था वैसे ही आज वे अपने टापू में है। कोई भी वहां जाकर देख ले।

देश को वे बांट गये। भाई भाई भी बंटते हैं। मगर आज़ादी आई। उससे सभी खुश हुए। इसी के लिए देश ने, आज़ाद हिन्द के सैनिकों ने और भारतमूलक प्रवासियों ने अपना सब कुछ बलिदान कर दिया था। आज़ाद हिन्द फौज के सभी, इधर या उधर, आज़ादी के प्रकाश से प्रसन्न थे। श्याम सिंह भी पन्द्रह अगस्त को खुश ही था।

उस रात सोते समय सिकंदर खां ने श्याम सिंह से कहा,—"उस्ताद, जाना ही पड़ रहा है। कल मैं लाहौर के लिए रवाना हो रहा हूं। अपना पता बता दो। जब आऊंगा तुम्हारे पास ठहरूंगा।"

श्याम सिंह खोया-सा था। उसने जवाब में कहा,—"मेरा गांव जरूर है। वहां एक मां भी मिल गयी है। पर वहां अब कभी जा न सकूंगा। दूसरी किसी जगह जाने का मुझे ठौर नहीं। यहीं या कहीं भी जो बन पड़ेगा वह करते करते अपनी सांसें पूरी कर लूंगा।"

श्याम सिंह को मगर गांव के लिए कुछ ही दिनों में रवाना होना पड़ा। इम्तियाज़ खबर लाया कि काकी अब-तब हैं, उसे याद करती हैं। वह भागा। पहली ट्रेन से बनारस और वहां से पहली बस से गांव। काकी उसके पहुंचने के कुछ ही देर पहले अल्लाह को प्यारी हो चुकी थी।

वह रोया, खूब रोया। उसने काकी का जानाज़ा उठवाया, उन्हें कब्र दी, कब्र पक्की करायी और धूम धाम से शरियत के मुताबिक उनका चालीसवां किया।

सब कुछ करने के बाद उसने काकी की जमा- पूंजी को जकात में बांट, अपने बुजुर्गो के चबूतरे पर मत्था टेक एक रात ढले तारों की आंखों से भी छिप कर उसने गांव छोड़ दिया। इस बार वह नेटुअवा बीर वाले महुए के पेड़ के नीचे नहीं रुका, सीधे बनारस पहुंचा।

बनारस स्टेशन पर मुंह हाथ धो वह सुस्ता रहा था कि एक प्रियदर्शी युवक ने उसका पांव छू कर उसे प्रणाम किया। उसके गोद में एक सुन्दर शिशु था। युवक ने बालक शिशु से कहा,—"ताऊ जी हैं। इन्हें हाथ जोड़ कर प्रणाम कर।"

साथ ही उसने श्याम सिंह से कहा,—"इसकी मां ने भेजा है। वह चरण रज लेने के लिए आने की आज्ञा चाहती है। चिट्ठी आई थी कि···।"

श्याम सिंह बालक को देखते ही सब कुछ समझ गया था। मन में तूफान का